95

શ્રી [illegible]

Sar

1971-72

रजिस्टर्ड नं० १८४५

यह पञ्चाङ्ग गवर्नमेंट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है, अतः कोई महाशय इसके किसी भी मजमून की नकल करने का साहस न करे। रजिस्टर्ड नं० १८४५

॥ ॐ ॥

हृदन्तर-ज्ञानतमोवितान-निवारण पण्डित-मण्डलीडचम्।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड-पञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु॥

॥ श्रीशंकरः शं करोतु ॥

(ॐ नमः शिवाय)

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

श्रीगणेशाय नमः **सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग** श्रीलक्ष्म्यै नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सब का छिपे प्रकाश॥

राजा शनि

मन्त्री बुध

भारतस्य मूर्धन्यैः विद्वद्भिः धर्माचार्यैश्च प्रमाणितं बहुशः सम्मानितं च

वृहद्गोगढाक्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविभवैः

—::०::—

अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक
पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक

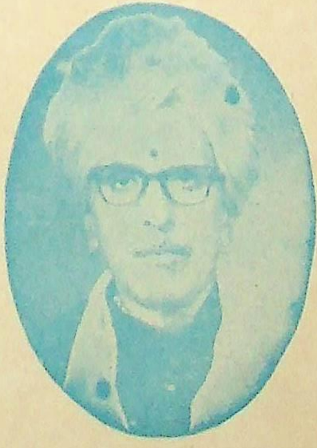

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
(कुराली पंजाब)

अध्ययनम् सर्वशास्त्रसम्मतं च

MARTAND **PANCHANG**

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम्

श्री विक्रमार्कीय सं. २०२८, शाके १८९३, सन् १९७१-७२ ई., जयहिन्द स. २८ : (१५ अगस्त से २५)

पञ्चाङ्ग प्रवर्तकाः—स्व० गणक-चक्र-चूडामणि श्रीगोविन्द सदाशिव आप्टे, श्री पं० केदारनाथ 'सिद्धान्त-पञ्चानन' शिष्याः पं० श्री मुकुन्द वल्लभ शर्माणो ज्योतिषाचार्याः,

पञ्चाङ्ग कर्त्तारः—श्री सत्यव्रत शास्त्री, साहित्याचार्यः, श्री शक्तिधर शास्त्री ज्योतिषाचार्यः M.Sc. Hons. School. Phys. [रिसर्च स्कालर (न्यूक्लिअर फिजिक्स) लारेन्स कनास यूनिवर्सिटी, अमेरिका], श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री M.A., संशोधकः—श्री प्रियव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्य-ज्योतिषाचार्य M.A.,

पौ० बा० ७५

बांकीपुर मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर दिल्ली-७ वाराणसी

पटना

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.–अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र) अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)

अं.–अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।

आव.–आवश्यकता में।

उ.–उपरान्त, उदित, उत्तर।

क.–करण, कर्क, कला।

कृ.–कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)

का.सा.–क्रान्तिसाम्य (महापात)।

गोधू.–गोधूलि (लग्न)।

घ.–घड़ी।

घं.–घण्टा।

चौ.–चौर (बाण)।

ति.–तिथि।

द.–दक्षिण।

दा.–दान-पूजन।

दि.–दिन।

दि. मा.–दिनमान।

न.–नक्षत्र।

नि.–निम्बार्कों के लिए।

नै.–[illegible]।

नृ.–नृप (बाण)।

प.–पल, परिघ (योग), पश्चिम।

प्र.–प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।

प्रा०–प्रारम्भ।

भ.–भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।

भा.–भाद्रपद।

मा.–मार्गी

मि.–मिनट, मिथुन।

मृ.–मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।

या.–यावत् (=तक)।

रा.–रात्रि, राशि

रो.–रोग (बाण), रोहिणी।

ल.–लग्न।

व.–वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र वरीयान् (योग)।

वा.–वार।

वि.–विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।

वि. मु.–विवाह मुहूर्त।

वै.–वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।

व्र.–व्रत।

व्र. स.–व्रत सबके लिए।

शु.–शुक्ल पक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ, शुक्ल (योग)।

स.–भारत सरकार द्वारा संचालित तारीख मास एवं संवत्।

स.–समाप्त।

सं.–संक्रान्ति (सौर), संवत्।

सांका.–साम्पातिक काल।

सा.–सायन।

स्मा.–स्मार्तों के लिए।

नोट—जिस सांकेतिक शब्द को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया गया है उसका विशेष स्थानों पर उपयुक्त अर्थ प्रसंगवश जाना जा सकता है।

इस पञ्चाङ्ग के लिये आवश्यक निर्देशन

(१) इस पंचांग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६।५३' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयण पद्धति को अपनाया गया है। जहां सायन गणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिये गए अयनांश चलन संस्कार संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पञ्चाङ्ग में केवल सूर्योदय-व्यापी ही करण लिये गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्र सञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घटी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चन्द्र-सञ्चार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भा. स्टै. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। सूर्योदयास्तकिरण वक्री भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए २ मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में दो मिनट जोड़ें।

(७) लस्टर में पञ्चक-भद्रा का प्रारम्भ समाप्ति ग्रहों के उदयास्त वक्र मार्ग तथा राशि नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल घटी-पलों में हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्ट ग्रहों के नीचे दैनिक गति उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र (जिसमें वह है) उसका निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदयकालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म गणित-पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस तिथि योग नक्षत्र के आगे (१०।०) लिखा हो, उस तिथि, योग, नक्षत्र की वृद्धि समझें।

संक्षिप्त विषय-सूची (वि० सं० २०२८)

विषय	पृष्ठांक
इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द, इस पंचांग के लिए आवश्यक निर्देशन	आवरण पृष्ठ २
विषय-सूची	१
यन्त्रमन्त्र एवं प्रश्न फल जानने की सरल पद्धति	२
चन्द्र-साधन सारणी	३-५
ओक्ला होमा यूनिवर्सिटी (U.S.A.) में श्री शक्तिधर के भाषण का संक्षिप्तांश	६
ग्रहण विवरण एवं लग्न यन्त्र	७-१०
आकाशी कौंसल का विचार	११-१३
शनि की साढ़सती, ढैया, राहु-गुरु का चार फल	१४
प्रसूति लग्न विचार अथ शय्या, शिर व पाद विचार	१५-१६
मृत्यु समय-ज्ञान, क्लीब-कुष्ठादि योग, बालक दन्तोत्पत्ति-फल, स्त्रीजातक	१७
भ्रातृ-कष्ट समय ज्ञान, माता की मृत्यु का समय जानना एवं गण्डमूलादि विचार	१८
स्त्री-पुरुष-कुण्डलियों में ग्रहों के भावफल, पिता-भ्राता एवं सन्तान-नाश-योग, कुछ नीच योग	१९
नक्षत्र-कष्टावली, विवाह-पुत्रादि-समय ज्ञान-	२०
रोगोत्पत्ती कुयोगाः, नवग्रह व्रतविधि	२१-२२
ग्रहों के अरिष्ट निवृत्यर्थ स्नानविधि	२३
गोचर ग्रहों के १२ भावों का फल, ग्रह-तुष्ट्यर्थं मणियें	२४
नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र	२५
बारह राशियों का मासिक फलादेश	२६-२९
चैत्र शु. १ को वर्षफल श्रवण	३०
वर्षराजादि फलविचार, लाभ व्यय चक्र	३१
वर्षा आदि के विश्वामान	३२
आपका यह वर्ष, दिन कैसा रहेगा ?	३३
अवकाश, मेले, सन्दिग्ध-व्रत-पर्व-निर्णय	३४
चैत्रादि १२ मासों का तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	३५-५८
भा. स्टै. टा. तिथ्यादि के लिए आवश्यक निर्देशन	५९
चन्द्र साधन एवं घन्टा मिनटात्मक तिथ्यादि पंचांग	६०-६६
इष्टकालिक सर्वथा शुद्ध ग्रह कैसे बनाएं ?	६७
दैनिक स्पष्टग्रह, विदेशी स्टै. टा. के ग्रह	६८-७९

विषय	पृष्ठांक
सूर्य-चन्द्र, भौमादि के क्रान्ति-शर वक्र-मार्ग, उदयास्त	८०-८३
चन्द्रोदयास्त, चन्द्रदर्शन	८४-८५
ग्रहों के निरयण-राशि नक्षत्र चरण चार	८६-८७
लघुरिक्थ कोष्ठक	८८
दैनिक लग्न सारणी एवं इसे देखने की रीति,	८९-९५
सूक्ष्म लग्न, दशम साधन विधि	९६-९७
अक्षांशादि सारणी	९८-९९
साम्पातिक काल कोष्ठक, अयनांश कोष्ठक	१००-१०१
लग्न-सारणी (सां का. द्वारा)	
लग्न सारणी (पलभा ७।१२), दशमलग्न सारणी	१०३-१०४
लग्न, सूर्योदयास्त, तिथ्यादि के समाप्तिकाल के परिवर्तन की विधि	१०५
पंचांग-परिवर्तन सारणी (१-२ भाग	१०६-१०७
भारत के प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त	१०८-१०९
हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त	११०
विंशोत्तरी दशा महादशा ज्ञान चक्र	१११
वर्ष प्रवेश सारणी	११२
ग्रहों का दृष्ट्यादि चक्र, भद्रा में कार्याकार्य निर्णय	११३-११४
गर्भाधान, मेधाजनन, भूम्युपवेशन, अन्नप्राशन, मुण्डन, अक्षरारम्भादि आवश्यक मुहूर्त	११५-११६
योनि नाड्यादि ज्ञान चक्र, मेलापक सारणी	११७-११९
ग्रह-मेलापक विचार, वर-कन्या वरण मुहूर्त	१२०
विवाहादौ त्रिबल शोधनम्, विवाहे दश-दोष विचार,	१२१
पातादि दोष ज्ञान, विवाह-लग्न शुद्धि चक्र	१२२
कर्त्तरी दोष, विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि, नव-वधू-प्रवेशादि मुहूर्त	१२३
शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः, दुकान खोलना, भर्तृ-गृह गमन, बही आदि शुरू करने के मुहूर्त	१२४
गृहादि निर्माण में आय विचारादि	१२५
सूर्यराशिवशात् खात-ज्ञानम्, ट्यूबवैल, नल तालाबादि के मुहूर्त	१२६
बीज-वपन, पशु खरीदना, मशीनरी चालू करने का मुहूर्त	१२७

विषय	पृष्ठांक
योगिनी वास चक्र, यात्रा काल ज्ञान एवं यात्रा में शुभाशुभ शकुन	१२८
घात चन्द्रवार चक्र, छिपकली गिरने एवं छींक का फल	१२९
सिद्ध होरा मुहूर्त	१३०
अङ्ग-स्फुरण एवं स्वप्न-फल	१३१-१३२
सुगम प्रश्न फल विचार	१३३-१३५
केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा फल	१३६
वि. सं. २०२८ में विवाह, उपनयन, वधू प्रवेश द्विरागमन, गृहप्रवेश, गृहारम्भ, देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त	१३७-१४०
१४ अप्रैल को वैशाखी क्यों ? (लेख)	१४१-१४६

इस वर्ष के नये विषय

(१) इष्ट कालिक चन्द्र स्पष्ट करने के लिए अद्भुत सारणी (पृ. ३-५)

(२) लग्न जानने लिए यन्त्र (पृ. ९-१०)

(३) १४ अप्रैल को वैशाखी क्यों ? (ज्योतिष के सायन-निरयणादि सिद्धान्तों को स्पष्ट करने वाला मौलिक लेख)। (१४१-१४६)

(४) आगामी १३० वर्षों की मेष संक्रान्तियों की तारीखें, वार और काल (भा. स्टै. टा.) " "

विशेष सूचना—(पृ. ३५ से ५८ तक) तिथ्यादि के आगे (लस्टर में) जहां व्रत-पर्व, ग्रह-चार आदि लिखे जाते हैं, वहां स्थान की कमी के कारण (शेष) बचे हुए मैटर को (क) (ख) आदि चिह्न लगाकर पाठकों की सुविधा के लिए तिथ्यादि के नीचे और पाक्षिक फलादेश के ठीक ऊपर दिया गया है,—आशा है, पाठक पसन्द करेंगे। अग्रिम वर्षों के लिए भी पाठक नोट कर लें।

सिद्धिर्भूषयते विद्याम्

'यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों का चमत्कार'—इस स्तम्भ में हम विगत-वर्षों की भान्ति अपने प्रिय-पाठकों के कल्याणार्थ यन्त्रमन्त्र दे रहे हैं। इन यन्त्र-मन्त्रों को ग्रहण के समय श्रद्धा-पूर्वक यथाविधि लिख कर सिद्ध कर लें। ध्यान रहे—यन्त्र-मन्त्र की सिद्धि दैवज्ञ को कहीं अधिक श्रद्धास्पद बना देती है।

आजकल अनेकत्र देखा गया है, कि—पति अन्यासक्त या क्रोधाभिभूत होने के कारण अपनी पत्नी को सम्मान नहीं देता एवं पति-पत्नी में संघर्ष रहता है। एतदर्थ हम एक **अनुभूत पति-वशीकरण मन्त्र** लिखते हैं;— "ॐक्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।" विधि—उल्लिखित मन्त्र को जपने से पूर्व साधक इस प्रकार ध्यान करे, कि—महामाया भगवती अपने दृढ़ पाश (रज्जु) से साध्य (पति) को बांध कर साधिका (मन्त्र करने वाली) के पैरों में डाल रही है, उस त्रिनेत्रों वाली भगवती के एक हाथ में तलवार है। —ऐसीं महामाया शक्तिरूपा दुर्गा को मैं पति वशीकरणार्थे नमस्कार करती हूँ। इस प्रकार ध्यान करके साधिका ४१ दिन तक दोनों समय ११००/११०० मन्त्र का जाप प्रातः पूर्वाभिमुख एवं सायं को उत्तराभिमुख होकर करे। अष्टमी एवं चतुर्दशी को तीन कन्या एवं एक बटुक को खीर-पूड़ी का भोजन करावें। निश्चय ही साधिका पति-वशीकरण में सफल होगी।

सौभाग्य-सुख वर्धक यन्त्र—निम्नलिखित यन्त्र को तांबे की प्लेट पर खुदवा कर सौभाग्य-सुख को चाहने वाली स्त्रियां इस यन्त्र को अपने सिर में पिछली ओर वेणी (गुत्त) के नीचे या जूड़े आदि में पिन से लगा रक्खे। ध्यान रहे—यन्त्र बिल्कुल चौरस होना चाहिए। यह यन्त्र स्त्रियों के सौभाग्य-सुख में वृद्धि करता है।

यन्त्र—

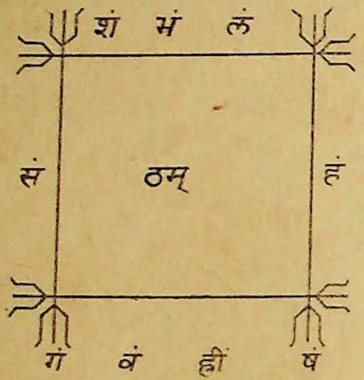

पशुओं के पैर म कीड़े रोग का मन्त्र—"अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः करीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥" विधिः—रोगी पशु को गुग्गल की धूनी दे और इस मन्त्र को २१ बार पढ़े। इसी प्रकार तीन दिन तक करे। इस मन्त्र को गंगाजल युक्त शुद्ध लाल चन्दन से अनार की कलम द्वारा भोज पत्र पर लिखे, फिर नारियल के साथ लाल वस्त्र में लपेट कर पशुखाने में छत में बांध दे। या २१ बार मन्त्र पढ़ कर गुग्गुल की धूप दे, तो निश्चय ही पशु रोगनष्ट हो। कुत्ते, बन्दर एवं बच्चों को मिठाई बांटे।

प्रश्न-फल जानने की सरल पद्धति

लग्न, सूर्य तथा चन्द्र की राशियों के अनुसार किसी भी प्रश्न का उत्तर देना काफी सरल है। प्रश्न के समय लग्न, सूर्य, और चन्द्रमा किस-किस राशि में हैं;—यह ज्ञात करो और उन राशियों की चर, स्थिर और द्वि-स्वभाव संज्ञाओं के अनुसार नीचे दिए गए कोष्ठक से प्रश्न का शुभ या अशुभ फल जान लो।

लग्नराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि	शुभ या अशुभ फल	लग्नराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि	शुभ या अशुभ फल
चर	चर	चर	शुभ	स्थिर	द्वि स्व.	स्थिर	शुभ
चर	चर	स्थिर	शुभ	स्थिर	चर	चर	अशुभ
चर	चर	द्वि.स्व.	अशुभ	स्थिर	चर	स्थिर	अशुभ
चर	स्थिर	स्थिर	अशुभ	स्थिर	चर	द्वि स्व.	शुभ
चर	स्थिर	द्वि स्व.	साधारण	द्वि. स्व	द्वि. स्व.	द्वि. स्व.	साधारण
चर	स्थिर	चर	शुभ	द्वि स्व.	द्वि स्व.	चर	शुभ
चर	द्वि स्व.	द्वि स्व.	शुभ	द्वि स्व.	द्वि स्व.	स्थिर	शुभ
चर	द्वि स्व.	चर	अशुभ	द्वि स्व.	चर	चर	शुभ
चर	द्वि स्व.	स्थिर	अशुभ	द्वि स्व.	चर	स्थिर	शुभ
स्थिर	स्थिर	स्थिर	शुभ	द्वि स्व.	चर	द्वि.स्व.	शुभ
स्थिर	स्थिर	द्वि स्व.	अशुभ	द्वि स्व.	स्थिर	स्थिर	शुभ
स्थिर	स्थिर	चर	शुभ	द्वि स्व.	स्थिर	चर	शुभ
स्थिर	द्वि स्व.	द्वि स्व.	शुभ	द्वि स्व.	स्थिर	द्वि स्व.	अशुभ
स्थिर	द्वि स्व.	चर	अशुभ				

(यहां साधारण फल का अभिप्राय शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के मिश्रित-फल से है।)

उदाहरण—मान लीजिए, कि—मुकद्दमे के प्रश्न के समय लग्न की राशि मेष (चर), सूर्य की राशि कन्या (द्विस्वभाव) और चन्द्रमा की राशि वृश्चिक (स्थिर) है। ऊपर कोष्ठक में इसका फल अशुभ लिखा है। अतः प्रश्न कर्त्ता की मुकद्मे में पराजय होगी।

यह तो सभी ज्योतिषी जानते हैं, कि—मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां चर, वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशियां स्थिर एवं मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशियां द्विस्वभाव कहलाती हैं।

पृष्ठ ८ का शेष

ग्रहण राशि फल—यह ग्रहण वृष, कन्या, तुला, कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ, मिथुन, वृश्चिक, मकर, मीन राशि वालों के लिए मध्यम और मेष, कर्क, सिंह धनु राशि वालों के लिए अशुभ है। कर्क राशि और पुष्य तथा आश्लेषा नक्षत्र वालों के लिए यह ग्रहण विशेष अशुभ है।

ग्रहण का अन्य फल—वर्षा एवं अन्नोत्पत्ति कम हो। जलोपजीवियों को पीड़ा हो।

चन्द्र साधन सारणी नं० (१)

(चन्द्र गति)

भभोग मिनट \ घण्टा	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
०		१५।१४	१४।३३	१३।५५	१३।२०	१२।४८	१२।१८	११।५१
१		१५।१४	१४।३२	१३।५४	१३।१९	१२।४८	१२।१८	११।५१
२		१५।१३	१४।३१	१३।५४	१३।१९	१२।४७	१२।१७	११।५०
३		१५।१२	१४।३१	१३।५३	१३।१८	१२।४७	१२।१७	११।५०
४		१५।११	१४।३०	१३।५२	१३।१८	१२।४६	१२।१७	११।४९
५		१५।११	१४।२९	१३।५२	१३।१७	१२।४६	१२।१६	११।४९
६		१५।१०	१४।२९	१३।५१	१३।१७	१२।४५	१२।१६	११।४८
७		१५। ९	१४।२८	१३।५१	१३।१६	१२।४५	१२।१५	११।४८
८		१५। ८	१४।२७	१३।५०	१३।१६	१२।४४	१२।१५	११।४८
९		१५। ८	१४।२७	१३।५०	१३।१५	१२।४३	१२।१४	११।४७
१०		१५। ७	१४।२६	१३।४९	१३।१४	१२।४३	१२।१४	११।४७
११		१५। ६	१४।२५	१३।४८	१३।१४	१२।४२	१२।१३	११।४६
१२		१५। ६	१४।२५	१३।४८	१३।१३	१२।४२	१२।१३	११।४६
१३		१५। ५	१४।२४	१३।४७	१३।१३	१२।४१	१२।१२	११।४५
१४		१५। ४	१४।२३	१३।४६	१३।१२	१२।४१	१२।१२	११।४५
१५		१५। ४	१४।२३	१३।४६	१३।१२	१२।४०	१२।११	११।४५
१६		१५। ३	१४।२२	१३।४५	१३।११	१२।४०	१२।११	११।४४
१७		१५। २	१४।२२	१३।४५	१३।११	१२।३९	१२।१०	११।४४
१८		१५। १	१४।२१	१३।४४	१३।१०	१२।३९	१२।१०	११।४३
१९		१५। १	१४।२०	१३।४३	१३।१०	१२।३८	१२।१०	११।४३
२०		१५। ०	१४।२०	१३।४३	१३। ९	१२।३८	१२। ९	११।४२
२१		१४।५९	१४।१९	१३।४२	१३। ९	१२।३७	१२। ९	११।४२
२२		१४।५९	१४।१८	१३।४२	१३। ८	१२।३७	१२। ८	११।४२
२३		१४।५८	१४।१८	१३।४१	१३। ७	१२।३६	१२। ८	११।४१
२४		१४।५७	१४।१७	१३।४०	१३। ७	१२।३६	१२। ७	११।४१
२५		१४।५७	१४।१६	१३।४०	१३। ६	१२।३५	१२। ७	११।४०
२६		१४।५६	१४।१६	१३।३९	१३। ६	१२।३५	१२। ६	११।४०
२७		१४।५५	१४।१५	१३।३९	१३। ५	१२।३४	१२। ६	
२८		१४।५४	१४।१५	१३।३८	१३। ५	१२।३४	१२। ५	
२९		१४।५४	१४।१४	१३।३८	१३। ४	१२।३३	१२। ५	
३०		१४।५३	१४।१३	१३।३७	१३। ४	१२।३३	१२। ५	
३१		१४।५२	१४।१३	१३।३६	१३। ३	१२।३२	१२। ४	
३२		१४।५२	१४।१२	१३।३६	१३। ३	१२।३२	१२। ४	
३३		१४।५१	१४।११	१३।३५	१३। २	१२।३१	१२। ३	
३४		१४।५०	१४।११	१३।३५	१३। २	१२।३१	१२। ३	
३५		१४।५०	१४।१०	१३।३४	१३। १	१२।३०	१२। २	
३६		१४।४९	१४। ९	१३।३४	१३। ०	१२।३०	१२। २	
३७		१४।४८	१४। ९	१३।३३	१३। ०	१२।३०	१२। १	
३८	१५।३०	१४।४७	१४। ८	१३।३२	१२।५९	१२।२९	१२। १	
३९	१५।३०	१४।४७	१४। ८	१३।३२	१२।५९	१२।२९	१२। ०	
४०	१५।२९	१४।४६	१४। ७	१३।३१	१२।५८	१२।२८	१२। ०	
४१	१५।२८	१४।४५	१४। ६	१३।३१	१२।५८	१२।२८	१२। ०	
४२	१५।२७	१४।४५	१४। ६	१३।३०	१२।५७	१२।२७	११।५९	
४३	१५।२७	१४।४४	१४। ५	१३।३०	१२।५७	१२।२७	११।५९	
४४	१५।२६	१४।४३	१४। ५	१३।२९	१२।५६	१२।२६	११।५८	
४५	१५।२५	१४।४३	१४। ४	१३।२८	१२।५६	१२।२६	११।५८	
४६	१५।२४	१४।४२	१४। ३	१३।२८	१२।५५	१२।२५	११।५७	
४७	१५।२४	१४।४१	१४। ३	१३।२७	१२।५५	१२।२५	११।५७	
४८	१५।२३	१४।४१	१४। २	१३।२७	१२।५४	१२।२४	११।५६	
४९	१५।२२	१४।४०	१४। १	१३।२६	१२।५४	१२।२४	११।५६	
५०	१५।२२	१४।३९	१४। १	१३।२६	१२।५३	१२।२३	११।५६	
५१	१५।२१	१४।३९	१४। ०	१३।२५	१२।५३	१२।२३	११।५५	
५२	१५।२०	१४।३८	१४। ०	१३।२४	१२।५२	१२।२२	११।५५	
५३	१५।१९	१४।३७	१३।५९	१३।२४	१२।५२	१२।२२	११।५४	
५४	१५।१९	१४।३७	१३।५८	१३।२३	१२।५१	१२।२१	११।५४	
५५	१५।१८	१४।३६	१३।५८	१३।२३	१२।५१	१२।२१	११।५३	
५६	१५।१७	१४।३५	१३।५७	१३।२२	१२।५०	१२।२०	११।५३	
५७	१५।१६	१४।३५	१३।५७	१३।२२	१२।५०	१२।२०	११।५२	
५८	१५।१६	१४।३४	१३।५६	१३।२१	१२।४९	१२।१९	११।५२	
५९	१५।१५	१४।३३	१३।५५	१३।२१	१२।४९	१२।१९	११।५२	

इष्टकालिक चन्द्रमा स्पष्ट करने की अद्‌भुत-सारणी

यहाँ हम इष्टकालिक चन्द्रमा स्पष्ट करने के लिए मौलिक सारणियां दे रहे हैं, इनके द्वारा आप मौलिक रूप से ही इष्टकालिक कलान्त सूक्ष्म-चन्द्रमा स्पष्ट कर सकते हैं। फलादेश के लिए स्पष्ट ग्रहों में, विशेष रूप से स्पष्ट चन्द्रमा में, विकलाएं अनावश्यक होती हैं—इसका तार्किक स्पष्टीकरण आप "गणक-मार्त्तण्ड" में पढ़ेंगे।

चन्द्र-साधन विधि—इष्ट काल में भयात-भभोग बनाइए। भयात, भभोग यदि घड़ी पलों में हों तो इन्हें घण्टा, मिनटों में बदल लीजिए। सारणी नं. (१) से भभोग के घण्टा मिनटों द्वारा चन्द्रगति ले लें। सारणी नं. (२) से चन्द्रगति की अंश-कला और भयात के घण्टा-मिनटों द्वारा प्राप्त किए गए चालनों को जोड़ लें। सारणी नं. (२) में १०-१० कलाओं के अन्तर पर चन्द्र गति का चालन दिया गया है। शेष १, २, ३ आदि चन्द्रगति की कलाओं का चालन पृ. ५ पर दी गई "सहायक सारणी" से लेकर इसे भी सारणी नं. (२) से प्राप्त चालन में जोड़ दें—यह 'इष्ट चालन' होगा। इष्ट कालिक वर्तमान नक्षत्र द्वारा "नक्षत्र-राश्यादि-बोधक सारणी" (पृ. ५) से ली गई राशि-अंश-कलाओं में इस "इष्ट चालन" को जोड़ने से इष्ट-कालिक चन्द्रमा स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए,—इष्ट काल में वर्तमान-नक्षत्र धनिष्ठा, भभोग २३ घं. ७ मि. और भयात १७ घं. ४६ मि. है। सारणी नं. (१) में २३ घं. के नीचे और ७ मि. के आगे चन्द्र गति १३ अं. ५१ क. है। सारणी नं. (२) में चन्द्रगति १३ अं. ५० क. के नीचे भयात घं. १७ के आगे ९ अं. ४८ क. और भयात मि. ४६ के आगे (चन्द्र गति १३ अं. ५० क. के ही नीचे) ० अं. २६ क. है। इन दोनों का योग १० अं. १४ क. चालन हुआ। यह चालन चन्द्रगति १३ अं. ५० क. का है। परन्तु हमें चन्द्रगति १३ अं. ५१ क. का चालन चाहिए। 'सहायक सारणी' में चन्द्रगति की शेष कला १ के नीचे भयात घं. १७ के आगे १ कला चालन मिला। इसे १० अं. १४ क. में जोड़ने पर १० अं. १५ क. इष्ट चालन हुआ। इसे वर्तमान नक्षत्र धनिष्ठा के राश्यादि (नक्षत्र राश्यादि बोधक सारणी से प्राप्त) ९।२३।२० में जोड़ने पर १० रा. ३ अं. ३५ क. इष्ट कालिक चन्द्रमा स्पष्ट हुआ।

यदि पंचांग में दैनिक स्पष्ट चन्द्रमा हो तो इष्ट काल से पिछले और अगले दिन के स्पष्ट चन्द्रमाओं का अन्तर करके चन्द्रगति निकाल लें। पंचांग में चन्द्रमा जिस समय का स्पष्ट हो उससे आपका इष्ट समय कितना आगे है, (अर्थात् —घण्टा-मिनटात्मक इष्ट क्या है)—यह जान लें। अब सारणी नं. (२) और 'सहायक सारणी' में भयात के घण्टा मिनटों को इष्ट काल के घण्टा मिनट मानकर पूर्ववत् इष्ट-चालन निकाल कर इसे इष्ट काल से पूर्ववर्ती पंचांगस्थ चन्द्रमा में जोड़िए—यह आपका इष्टकालिक चन्द्र स्पष्ट होगा।

भारतीय ज्योतिष का उद्गम स्वतन्त्र रूप से हुआ है

—श्री मार्तण्ड पंचांग के युवा सम्पादक श्री शक्तिधर शर्मा M.S.c. ज्योतिषाचार्य का अमेरिका के ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय में भाषण—

★

९-१० अप्रै. सन् १९७० को अमेरिका के ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय में Astro-physics की एक बृहत्सभा में श्री शक्तिधर शर्मा ने "Modern Astronomical Approach to the Religious Calendar of Hindus" पर सारगर्भित भाषण दिया, जिसमें उन्होंने वैदिक तथा ब्राह्मण ग्रन्थ कालिक नक्षत्र स्थिति तथा तत्कालीन पंचांग का विवरण उपस्थित किया। भारतीय ज्योतिष के उद्गम और विकास का विवरण देते हुए उन्होंने भारतीय पंचांग की Mayan और Red-Indian Calendars से तुलना की; कम्बोडिया, जावा, सुमात्रा आदि देश देशान्तरों के पंचांगों तथा भारतीय पंचांगों (उपलब्ध होने वाले आश्चर्य जनक सादृश्य का उद्घाटन किया, बेबीलोनियन तथा भारतीय पंचांगों) में मूलभूत अन्तरों पर भी प्रकाश डाला। भारतीय कुछ पंचांगों में गणित की भिन्नता आदि से उत्पन्न अधिक मास तथा संवत् संबन्धी मतभेदों की चर्चा करते हुए उन्होंने बतलाया—जूलियस सीजर के काल में रोम में अधिकमास की अव्यवस्थता तो और भी परिहासास्पद थी; उस समय पादरी लोग अपने सम्बन्धियों की सुविधा के अनुसार स्वेच्छा से ही अधिमास का निर्धारण किया करते थे, जिससे रोम के विभिन्न भागों में से गुजरता व्यक्ति एक ही समय में विभिन्न मासों तथा वर्षों में से गुजरता था। इस अव्यवस्था को दूर करने के लिए जूलियस सीजर ने कैलेण्डर को सौर बना दिया था। इधर भारतीय ज्योतिर्विदों ने "मेषादिस्थे सवितरि यो यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः..।" जैसी वैज्ञानिक व्यवस्था द्वारा सौरचान्द्र मास पद्धति को पहिले ही अपना लिया था। श्री शक्तिधर शर्मा ने अपने भाषण में उद्धरण पूर्वक यह बतलाया कि—वैदिक काल में ही भारतीयों को आकाशीय-नक्षत्र स्थिति एवं सूर्य चन्द्र की गतियों से सम्बद्ध सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान था, और उस समय से ही उनके लगभग सभी धार्मिक अनुष्ठान एवं पर्वों का निर्धारण उच्च ज्योतिष सिद्धान्तों पर ही अवलम्बित है।

इस सभा में वैदिक साहित्य एवं भारतीय ज्योतिष के लब्ध-प्रतिष्ठ वयोवृद्ध-विद्वान् डा. व्हिटनी भी उपस्थित थे। उन्होंने केई, कोल्ब्रुक, व्हूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के मत का समथन करते हुए इस बात पर बल दिया, कि—'भारतीयों ने ज्योतिष ग्रीक से ली है', परन्तु श्री शक्तिधर जी ने प्राचीन वैदिक एवं ज्योतिष ग्रन्थों के अनेक वाक्यों का गणितीय विश्लेषण करके डा. व्हिटनी के इस ग्रीक-पक्षपाती मत का प्रतिवाद किया, और सिद्ध किया कि—'शतपथ ब्राह्मण' आदि में मिलने वाले "कृत्तिकास्वग्नि मादधीत"—आदि अनेकों वाक्यों में प्राचीन भारतीयों का नक्षत्र सम्बन्धी स्वतन्त्र ज्ञान स्पष्ट रूप से उपलब्ध है। पर्याप्त विचार विमर्श के अनन्तर वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण तथा गणितीयन्यासों के समक्ष गुणग्राही वयोवृद्ध डा. व्हिटनी ने श्री शक्तिधर शर्मा के तर्कनिष्ठ मत को सहर्ष स्वीकार कर लिया। सभा विसर्जन के अनन्तर डा. व्हिटनी श्री शक्तिधर जी को अपने घर ले गए और वहां अपनी सुविशाल समृद्ध संस्कृत साहित्य की लाईब्रेरी से उन्हें अप्राप्य अनेक ज्यौतिष ग्रन्थ साशीर्वाद समर्पित किए, और कहा—"मैं वृद्ध हूँ, मैं समझता हूँ तुम इन ग्रन्थों को सम्भाल कर रखोगे।"

इस सभा में मध्य अमेरिका के १४ विश्वविद्यालयों से नाक्षत्र भौतिकी (Astro-physics) के अनेक विद्वानों ने भाग लिया। भारतीय ज्योतिष पर बोलने वाले केवल श्री शक्तिधर शर्मा ही थे। भारतीय ज्योतिष पर दिया गया उनका यह विस्तृत महत्त्वपूर्ण भाषण कुछ ही दिनों बाद भारत की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होगा। श्री मार्तण्ड पंचांग के पाठकों को ज्ञात ही है कि—श्री शक्तिधर शर्मा विगत तीन वर्षों से लारेंस (कैंसास) अमेरिका के विश्वविद्यालय में न्यूक्लिअर फिजिक्स पर अनुसन्धान कर रहे हैं, और यह अत्यन्त हर्ष की बात है, कि—अब उनका अनुसन्धानकार्य सम्पन्नप्राय है। नवम्बर (सन् १९७०) में ही वे Ph.D की उपाधि प्राप्त करके भारत लौट रहे हैं।

ग्रहण विवरण [वि. स. २०२८]

इस वर्ष (वि. सं. २०२८ में) भूमण्डल पर दो चन्द्र ग्रहण और तीन सूर्य ग्रहण होंगे। दोनों चन्द्र ग्रहण भारत में दिखाई देंगे लेकिन कोई भी सूर्य ग्रहण भारत में नहीं दीखेगा।

भारत में दिखाई न देने वाले सूर्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) **खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण** (२२ जुला., सन् १९७१ ई.) यह ग्रहण अलास्का (अमेरिका) के उत्तर पश्चिमी भाग, रूस के पूर्वी छोर एवं आर्क्टिक सागर में थोड़े से काल के लिए दिखाई देगा।

(२) **खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण** (२०-२१ अग. सन् १९७१ ई.) यह ग्रहण उत्तरी तथा पश्चिमी भाग के अलावा शेष पूरे आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, तथा उत्तरी एण्टार्क्टिका में दीखेगा। इस ग्रहण के समय भारत में २०-२१ अगस्त की मध्य रात्रि होगी।

(३) **कंकण सूर्य ग्रहण** (१६ जनवरी सन् १९७२ ई.)—इस ग्रहण को समस्त एण्टार्क्टिका, पश्चिमी-दक्षिणी आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी भाग में देखा जा सकेगा। इसकी कंकण आकृति एण्टार्क्टिका में दिखलाई पड़ेगी।

भारत में दिखाई पड़ने वाले दोनों चन्द्र ग्रहणों का विवरण इस भान्ति है।

(१) **खग्रास चन्द्र ग्रहण** (६-७ अगस्त सन् १९७१ ई.)—यह ग्रहण श्रावण पूर्णिमा शुक्रवार को ६-७ अगस्त की मध्यवर्ती रात्रि में समस्त भारत में दिखलाई देगा। इसके स्पर्श आदि के काल ये हैं—

	घं. मि.	
ग्रहण स्पर्श (प्रारम्भ)	११।२५	भा. स्टैं. टा. (रात्रि)
खग्रास प्रारम्भ	१२।२३	
ग्रहण मध्य	१।१३	
खग्रास समाप्त	२। ३	
ग्रहण समाप्त	३। १	

ग्रहणचित्र(१)

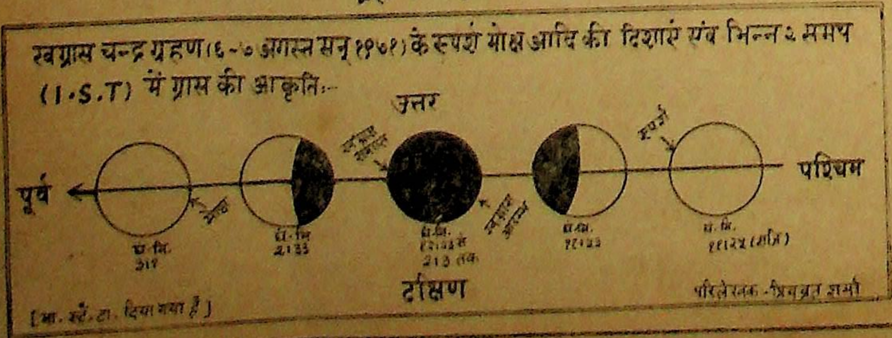

सूतक—इस ग्रहण का सूतक ६ अगस्त को दिन के २ बजकर २५ मि. पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण राशि फल—यह ग्रहण मेष, सिंह, वृश्चिक, मीन राशि वालों के लिए शुभ, वृष, कर्क, कन्या, धनु राशि वालों के लिए मध्यम, और मिथुन, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों के लिए अशुभ है। श्रवण नक्षत्र एवं मकरराशि वालों के लिए विशेष अशुभ है। जिनके लिए ग्रहण अशुभ हो उन्हें ग्रहण नहीं देखना चाहिए।

ग्रहण का अन्य फल—विश्व में कहीं सैनिक संघर्ष हो। श्वेत वस्त्र, चान्दी, मोती के भाव तेज हों। इस ग्रहण के बाद रुई में मन्दी आएगी। इस समय रुई खरीदने से ३ मास बाद अच्छा लाभ मिले।

(२) **ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्र ग्रहण** (३० जनवरी, सन् १९७२ ई.) यह ग्रहण माघ पूर्णिमा रविवार को सौराष्ट्र, मद्रास, मैसूर और केरल को छोड़कर भारतके अन्य सभी प्रदेशों में दिखाई देगा। इस ग्रहण के स्पर्श आदि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं—

	घं. मि.	
ग्रहण प्रारम्भ	२।४१	(दिन)
खग्रास प्रारम्भ	४। ५	"
ग्रहण मध्य	४।२३	"
खग्रास समाप्त	४।४१	"
ग्रहण समाप्त	६। ५	(सायं)

बर्मा के अन्तिम उत्तरी छोर, उत्तरी-पूर्वी थाईलैण्ड, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, फिलिप्पाइन्स एवं जापान में इस ग्रहण का खग्रास रूप अच्छी तरह दिखाई देगा। भारत में सर्वत्र ग्रस्त चन्द्रमा उदित होगा। ग्रहण चित्र (३) देखिए N P रेखा से दाईं ओर उत्तर-पूर्वी आसाम में खग्रास ग्रहण थोड़ी सी देर के लिए देखा जा सकेगा। A B. रेखा पर स्थित नगरों में चन्द्रोदय के समय ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा रेखा से बाईं ओर यह ग्रहण नहीं होगा। N.P. और A. B. रेखाओं के मध्यवर्ती स्थलोंपर खण्डग्रास दिखाई देगा। इस चित्र

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ग्रहणचित्र(२)

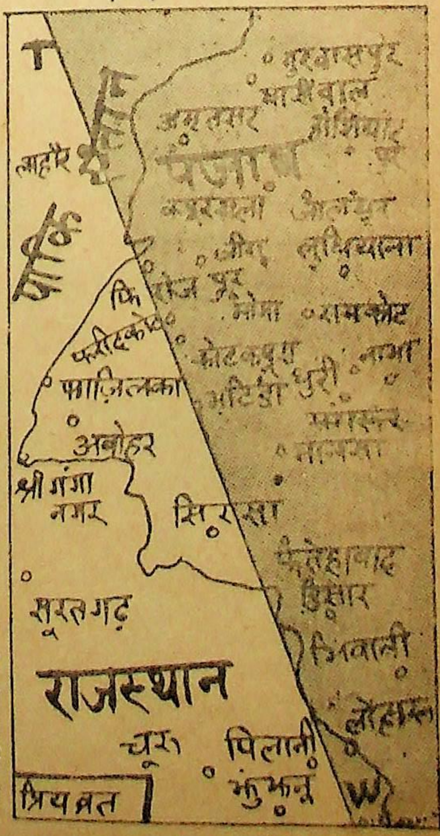

३० जनवरी सन् १९७२ को भारत के कुछ नगरों में चन्द्रोदय काल (भा. स्टैं. टा.) सायं

नगर	चन्द्रोदय घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय घं. मि.	पर्व काल घं.मि.
अमृतसर	६। ३	०। २	पटना	५।३०	०।३५
उज्जैन	६।१२	(०।७)	पटियाला	५।५८	०। ७
उदयपुर	६।१८	(०।१३)	पठानकोट	५।५८	०। ७
कलकत्ता	५।२१	०।४४	प्रयाग	५।४३	०।२२
काशी	५।३९	०।२६	बम्बई	६।३०	(०।२५)
कांगड़ा	५।५६	०। ९	मण्डी (हि.प्र.	५।५४	०।११
कुरुक्षेत्र	५।५८	०। ७	मद्रास	६। ८	(०। ३)
चम्बा	५।५५	०।१०	रोहतक	६। ०	०। ५
चण्डीगढ़	५।५६	०। ९	लुधियाना	६। ०	०। ५
जम्मू	६। ०	०। ५	शिमला	५।५४	०।११
जयपुर	६। ६	(०। १)	श्रीनगर	५।५८	०। ७
जालन्धर	६। १	०। ४	हरिद्वार	५।५२	०।१३
दिल्ली	५।५८	०। ७	हिसार	६। ३	०। २
नागपुर	६। २	०। ३			

चन्द्रोदय से मोक्ष तक के काल को यहां 'पर्वकाल' लिखा गया है। कोष्ठक में दिया गया 'पर्व काल' बतलाता है कि उस नगरमें चन्द्रोदय से इतना समय पहिले ही ग्रहण समाप्त हो चुकेगा।

३० जन. ७२ को भारत के प्रत्येक स्थान पर चन्द्रोदय (सायंकालिक भा. स्टैं. टा.)

पूर्व रेखांश	उ. अक्षां. १०	उ.अक्षां. १५	उ. अक्षां २०	उ. अक्षां. २५	उ.अक्षां. ३०	उअक्षां ३५
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
६८	७। ४	६।५७	६।५०	६।४२	६।३४	६।२६
७०	६।५६	६।४९	६।४२	६।३४	६।२६	६।१८
७२	६।४८	६।४१	६।३४	६।२६	६।१८	६।१०
७४	६।३९	६।३२	६।२५	६।१७	६। ९	६। १
७६	६।३१	६।२४	६।१७	६। ९	६। १	५।५३
७८	६।२३	६।१६	६। ९	६। १	५।५३	५।४५
८०	६।१४	६। ७	६। ०	५।५२	५।४४	५।३६
८२	६। ६	५।५९	५।५२	५।४४	५।३६	५।२८
८४	५।५८	५।५१	५।४४	५।३६	५।२८	५।२०
८६	५।४९	५।४२	५।३५	५।२७	५।१९	५।११
८८	५।४१	५।३४	५।२७	५।१९	५।११	५। ३
९०	५।३३	५।२६	५।१९	५।११	५। ३	४।५५
९२	५।२४	५।१७	५।१०	५। २	४।५४	४।४६

(पृष्ठ ७ का शेष)
मेंसायं ४घं.४१मि., ५घं.९मि.और ५घं. ३७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर चन्द्रोदय के समय ग्रास की आकृति भी दिखलाई गई है। पंजाब, हरियाणा के नगरों तथा दिल्ली में चन्द्रोदयके थोड़ी देर (अधिक से अधिक ९ मिनट) बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा, अतः इन प्रदेशों में पूर्वी क्षितिज पर्वत आदि से थोड़ा सा भी ढका होने पर ग्रहण दिखलाई देना असंभव है। हिमाचल के लगभग सभी नगरों में पूर्वक्षितिज पर्वत से ढका होने से यह ग्रहण नहीं देखा जा सकेगा। हरियाणाके फाजिल्का, अबोहर, डबवाली, सिरसा, घग्गर और श्रीगंगा नगर शहरों में चन्द्रमा के उदय से पहिले ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा, अतः वहां इस ग्रहण का पर्व नहीं मनाना चाहिए। पंजाब हरियाणा के किन २ नगरों में यह ग्रहण दिखलाई देगा और किन २ नगरों में नहीं, इसके लिए ग्रहण चित्र (२) देखें। इस चित्रमें खींची गई

ग्रहण चित्र (३)

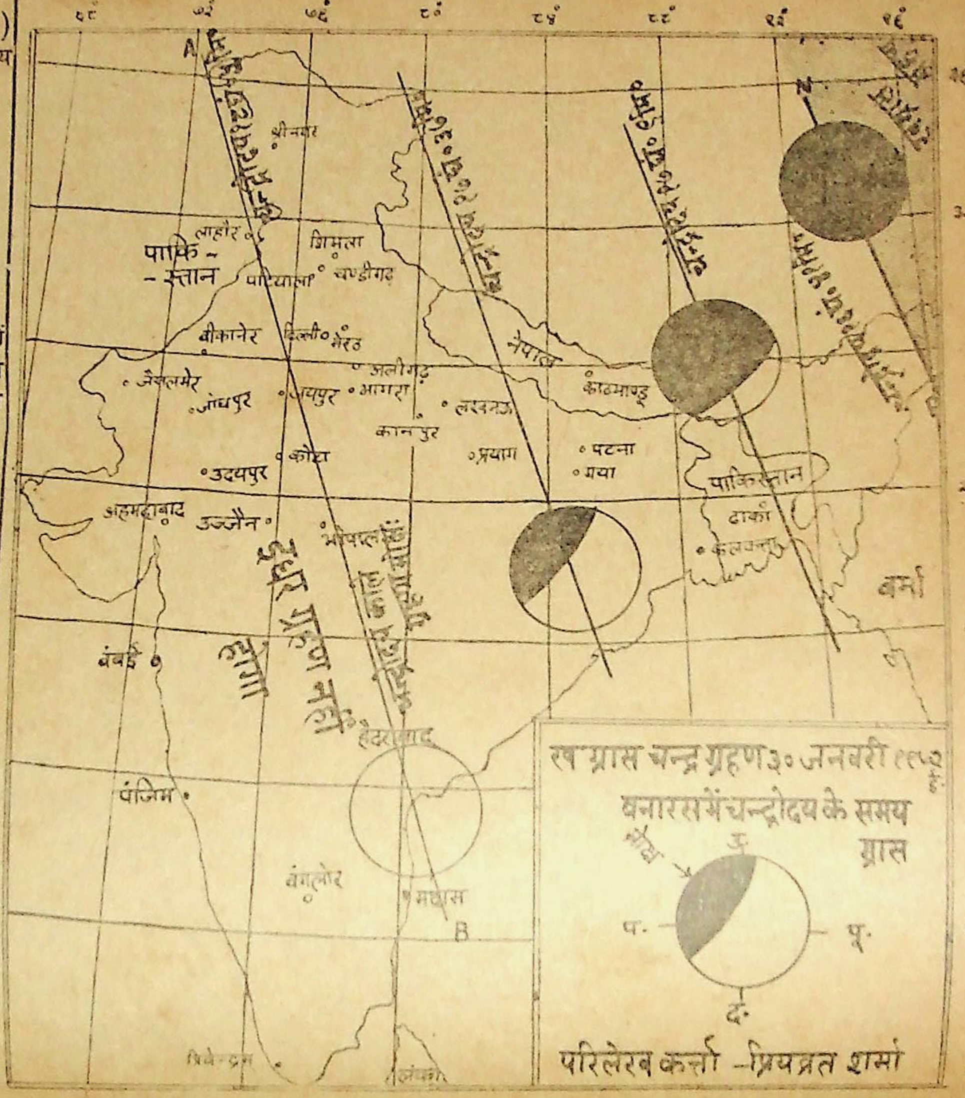

T W रेखा से दाईं ओर वाले पंजाब-हरियाणा के नगरों में यह ग्रहण चन्द्रोदय के समय बहुत थोड़ी देर के लिए देखा जा सकेगा। इस रेखा से बाईं ओर बसे नगरों में यह ग्रहण नहीं होगा।

लग्न-यन्त्र

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

यन्त्र निर्माण विधि—कम से कम १।। फुट का एक वर्गाकार लकड़ी या किसी और धातु का समतल टुकड़ा लें। उस पर एक वृत्त बनाएं। निशान लगाते हुए इस वृत्त की परिधि (घेरे) के १४४० बराबर बराबर टुकड़े करें। किसी एक निशान से प्रारम्भ करते हुए इन निशानों पर बाएं से दाईं ओर (clockwise) क्रमशः ०, १, २, ३ आदि अंक लिखिए। १४४० अंक ० अंक पर ही आकर पड़ेगा। (देखें, चित्र नं. (१), चित्र छोटा होने से इसकी परिधि पर ६०-६० के अन्तर पर ही चिह्न लगाए गए हैं)। यहां यह आवश्यक है कि वृत्त की परिधि पर ये चिह्न और अंक किसी ऐसी चीज (पेंसिल आदि) से लगाए जाएं, जो बाद में मिटाए जा सकें। अब सारणी नं. (१) देखिए। जिस नगर के लिए आप यन्त्र बनाना चाहते हैं, उस नगर के अक्षांश वाले कालम में देखिए—मेष लग्न के आगे कितने मिनट लिखे हैं? इन मिनटों के बराबर अंक वृत्त की परिधि पर जहां लिखा है वहां स्थायी (पक्का) चिह्न लगाकर 'मेष समाप्त' (या 'मेष लग्न समाप्त')—इस प्रकार लिखिए। अब देखिए इसी सारणी में वृष लग्न के आगे कितने मिनट लिखे हैं?—इन मिनटों के बराबर अंक वृत्त की परिधि पर जहां लिखा है वहां, स्थायी चिह्न लगाकर "वृष समाप्त"—इस प्रकार लिखिए। इसीप्रकार "मिथुन समाप्त" "कर्क समाप्त" आदि भी लिख डालिए। अब वृत्त की परिधि पर एक चिह्न और लगाइए। परिधि पर लिखे जिस अंक पर "मेष समाप्त" लिखा है, उससे चार अंक पहिले एक स्थायी चिह्न लगाकर वहां कोष्ठक में मेष समाप्त [अर्थात्—"(मेष समाप्त)" —इस प्रकार] लिखें। उदाहरण के तौर पर यूं समझिए—यदि "मेष समाप्त" ९५वें अंक पर लिखा है तो "(मेष समाप्त)" ९१वें अंक पर लिखना होगा। अब वृत्त की परिधि पर लगाए गए अस्थायी चिह्नों तथा १, २, ३ आदि अंकों को मिटा दीजिए। इस प्रकार चित्र नं. (२) की-सी आकृति बन जाएगी। इस वृत्त को हम 'क्रान्ति वृत्त' कहेंगे।

अब एक दूसरे लकड़ी या किसी और धातु के समतल वर्गाकार पट्टे पर इस कान्तिवृत्त के बराबर ही वृत्त बनाइए। स्थायी चिह्न लगाकर इस वृत्त की परिधि के बराबर बराबर १४४० टुकड़े करो। किसी एक चिह्न से प्रारम्भ करके clockwise (बाएं से दाईं ओर) क्रमशः इन चिह्नों पर ० घं. ० मि., ० घं. १ मि., ० घं. २ मि., ० घं. ३ मि. इत्यादि लिखते हुए वृत्त की पूरी परिधि पर २४ घण्टे लिख दीजिए। ये चिह्न और घं. मि. वृत्त के भीतर अंकित करने होंगे, (देखिए चित्र नं. (३), चित्र छोटा होने से २-२ घण्टों के अन्तर पर समय लिखा गया है), घं. मि. से अंकित इस वृत्त को परिधि के साथ २ सावधानी से बिल्कुल गोल काट लीजिए। इसे हम 'नाडी वृत्त' कहेंगे।

यन्त्र द्वारा लग्न-ज्ञान की विधि—कोष्ठक नं. (२) से अभीष्ट तारीख का 'मेष लग्न समाप्ति काल' (L. S. T.) लीजिए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर (जिस नगर में लग्न जानना है, उस नगर) का संस्कार लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ो या घटाओ। यह हमारा "अभीष्ट मेष समाप्ति काल" होगा।

अब नाडी वृत्त को क्रान्ति वृत्त पर इस प्रकार रखो कि नाडी वृत्त की परिधि क्रान्तिवृत्त की परिधि पर पूरी तरह आ जाए। अर्थात्—दोनों वृत्तों के केन्द्र बिल्कुल एक दूसरे पर हों। अच्छा स्थायी यन्त्र बनाना हो तो नाडीवृत्त और क्रान्तिवृत्त के केन्द्रों में एक लोहे की कील ऐसे पिरो दी जाए कि नाडी वृत्त क्रान्तिवृत्त के ऊपर कील की धुरी पर घूम सके। इस प्रकार यह यन्त्र प्रयोग के लिए तैयार हो जाएगा।

चित्र (१)

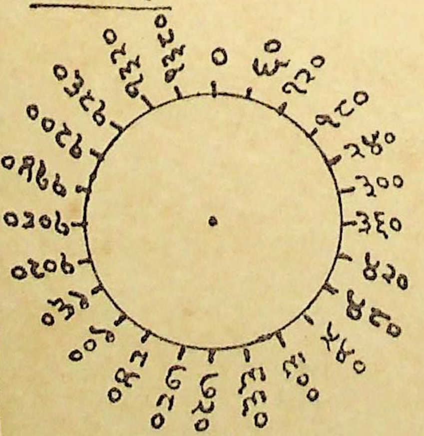

चित्र (२)

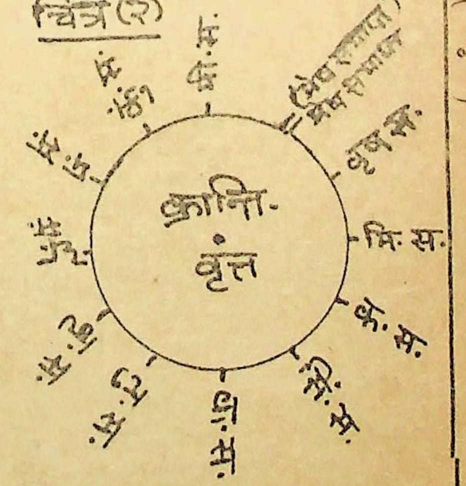

चित्र (३)

चित्र (४)

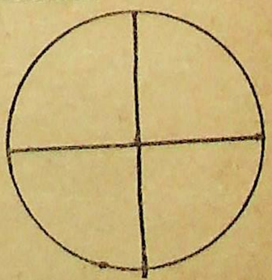

यदि आपका इष्टकाल (भा. स्टैं. टा.) "अभीष्ट मेष-समाप्ति काल' से अधिक है तो नाडीवृत्त की परिधि पर बने उस बिन्दु को जहां आपका "अभीष्ट मेष समाप्ति काल" लिखा है, क्रान्ति-वृत्त की परिधि के उस बिन्दु पर घुमाकर कर लें जहां "मेष समाप्त" लिखा है। यदि आपका इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) "अभीष्ट मेष समाप्ति काल" से कम है तो नाडी वृत्त की परिधि पर बने उसी बिन्दु को जहां आपका "अभीष्ट मेष समाप्ति काल" लिखा है, क्रान्ति वृत्त की परिधि के उस बिन्दु पर कर लें जहां (मेष समाप्त)" —लिखा है। बस, ऐसा करने से आप अपनी उस अभीष्ट तारीख को किसी भी लग्न की समाप्ति का काल (भा. स्टैं. टा.) नाडी वृत्त की परिधि पर लिखे टाईम द्वारा तुरन्त जान सकेंगे। यह यन्त्र निरयण लग्न बतलाता है। (शेष पृष्ठ १० पर)

(पृष्ठ ९ का शेष)

वृत्त की परिधि के बराबर बराबर १४४० भाग करना जरा कठिन है। २२९.१ सैण्टीमीटर व्यासार्ध के नाडीवृत्त क्रान्ति वृत्त बनाए जाएं तो उनकी परिधि का १ सें. मी. का टुकड़ा १ मिनट के बराबर होगा अर्थात् उसकी परिधि के १-१ सैं.मी. के टुकड़े किए जाएं तो वे १४४० बनेंगे। सुविधा एवं शुद्धि के लिए २२९.१ सें. मी. व्यासार्ध के वृत्त के बराबर-बराबर १४४० टुकड़े करने के लिए पहिले वृत्त के केन्द्र में से गुजरने वाली एक दूसरे पर लम्ब दो रेखाएं (अर्थात्–व्यास) खींचिए, (जैसा कि चित्र नं. (४) में है) ये रेखाएं वृत्त परिधि को चार समान भागों में ✤

✤ विभक्त करती है। यह प्रत्येक भाग ३६० सें. मी. का होगा। यह 'साधारण लग्न यन्त्र' है, जिसको केवल एक ही अक्षांश (जिस अक्षांश के लिए यन्त्र बनाया गया है उस अक्षांश) के नगरों में ही

कोष्ठक नं. (१)

लग्न	अक्षांश २८	अक्षांश २९	अक्षांश ३०
	मिनट	मिनट	मिनट
मेष	९५	९४	९३
वृष	२१९	२०९	२०८
मिथु.	३४५	३४३	३४२
कर्क	४८४	४८४	४८३
सिंह	६२१	६२२	६२२
कन्या	७५७	७५९	७६०
तुला	८९५	८९८	९०१
वृश्चि.	१०३४	१०३७	१०४०
धनु	११५९	११६२	११६५
मक.	१२६२	१२६४	१२६६
कुम्भ	१३५१	१३५२	१३५३
मीन	१४३६	१४३६	१४३६

लग्न	अक्षांश ३१	अक्षांश ३२	अक्षांश ३३
	मिनट	मिनट	मिनट
मेष	९२	९१	९०
वृष	२०६	२०४	२०३
मिथुन	३४१	३३९	३३८
कर्क	४८३	४८३	४८२
सिंह	६२३	६२४	६२४
कन्या	७६२	७६४	७६५
तुला	९०३	९०६	९०९
वृश्चि.	१०४३	१०४७	१०५०
धनु	११६७	११७१	११७४
मक.	१२६८	१२७१	१२७३
कुम्भ	१३५४	१३५५	१३५६
मीन	१४३६	१४३६	१४३६

(कोष्ठक नं. २) (मेष लग्न समाप्ति काल)
(भा. स्टैं. टा.)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्त.	नव.	दिस.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	१४।१८	१२।१६	१०।२६	८।२४	६।२६	४।२४	२।२६	०।२४	२२।१८	२०।२०	१८।१८	१६।२१
२	१४।१४	१२।१२	१०।२२	८।२०	६।२२	४।२०	२।२२	०।२०	२२।१४	२०।१६	१८।१५	१६।१७
३	१४।१०	१२। ८	१०।१८	८।१६	६।१८	४।१६	२।१८	०।१६	२२।१०	२०।१३	१८।११	१६।१३
४	१४। ६	१२। ४	१०।१४	८।१२	६।१४	४।१२	२।१४	०।१२	२२। ७	२०।९	१८। ७	१६। ९
५	१४। २	१२। ०	१०।१०	८। ८	६।१०	४। ८	२।१०	०। ८	२२। ३	२०। ५	१८। ३	१६। ५
६	१३।५८	११।५६	१०। ६	८। ४	६। ६	४। ४	२। ६	०। ४	२१।५९	२०। १	१७।५९	१६। १
७	१३।५४	११।५२	१०। २	८। ८	६। २	४। ०	२। २	२३।५७	२१।५५	१९।५७	१७।५५	१५।५७
८	१३।५०	११।४८	९।५८	७।५६	५।५८	३।५६	१।५८	२३।५३	२१।५१	१९।५३	१७।५१	१५।५३
९	१३।४६	११।४४	९।५४	७।५२	५।५४	३।५३	१।५५	२३।४९	२१।४७	१९।४९	१७।४७	१५।४९
१०	१३।४२	११।४०	९।५०	७।४८	५।५०	३।४९	१।५१	२३।४५	२१।४३	१९।४५	१७।४३	१५।४५
११	१३।३८	११।३६	९।४६	७।४४	५।४७	३।४५	१।४७	२३।४१	२१।३९	१९।४१	१७।३९	१५।४१
१२	१३।३४	११।३३	९।४२	७।४१	५।४३	३।४१	१।४३	२३।३७	२१।३५	१९।३७	१७।३५	१५।३७
१३	१३।३०	११।२९	९।३८	७।३७	५।३९	३।३७	१।३९	२३।३३	२१।३१	१९।३३	१७।३१	१५।३३
१४	१३।२७	११।२५	९।३५	७।३३	५।३५	३।३३	१।३५	२३।२९	२१।२७	१९।२९	१७।२७	१५।२९
१५	१३।२३	११।२१	९।३१	७।२९	५।३१	३।२९	१।३१	२३।२५	२१।२३	१९।२५	१७।२३	१५।२५
१६	१३।१९	११।१७	९।२७	७।२५	५।२७	३।२५	१।२७	२३।२१	२१।१९	१९।२१	१७।२०	१५।२२
१७	१३।१५	११।१३	९।२३	७।२१	५।२३	३।२१	१।२३	२३।१७	२१।१५	१९।१७	१७।१६	१५।१८
१८	१३।११	११। ९	९।१९	७।१७	५।१९	३।१७	१।१९	२३।१३	२१।११	१९।१४	१७।१२	१५।१४
१९	१३। ७	११। ५	९।१५	७।१३	५।१५	३।१३	१।१५	२३। ९	२१। ८	१९।१०	१७। ८	१५।१०
२०	१३। ३	११। १	९।११	७। ९	५।११	३। ९	१।११	२३। ५	२१। ४	१९। ६	१७। ४	१५। ६
२१	१२।५९	१०।५७	९। ७	७। ५	५। ७	३। ५	१। ७	२३। २	२१। ०	१९। २	१७। ०	१५। २
२२	१२।५५	१०।५३	९। ३	७। १	५। ३	३। १	१। ३	२२।५८	२०।५६	१८।५८	१६।५६	१४।५८
२३	१२।५१	१०।४९	८।५९	६।५७	४।५९	२।५७	१। ०	२२।५४	२०।५२	१८।५४	१६।५२	१४।५४
२४	१२।४७	१०।४५	८।५५	६।५३	४।५५	२।५४	०।५६	२२।५०	२०।४८	१८।५०	१६।४८	१४।५०
२५	१२।४३	१०।४१	८।५१	६।४९	४।५१	२।५०	०।५२	२२।४६	२०।४४	१८।४६	१६।४४	१४।४६
२६	१२।३९	१०।३७	८।४७	६।४५	४।५८	२।४६	०।४८	२२।४२	२०।४०	१८।४२	१६।४०	१४।४२
२७	१२।३५	१०।३४	८।४३	६।४२	४।४४	२।४२	०।४४	२२।३८	२०।३६	१८।३८	१६।३६	१४।३८
२८	१२।३१	१०।३०	८।४०	६।३८	४।४०	२।३८	०।४०	२२।३४	२०।३२	१८।३४	१६।३२	१४।३४
२९	१२।२८	१०।२८	८।३६	६।३४	४।३६	२।३४	०।३६	२२।३०	२०।२८	१८।३०	१६।२८	१४।३०
३०	१२।२४		८।३२	६।३०	४।३२	२।३०	०।३२	२२।२६	२०।२४	१८।२६	१६।२४	१४।२७
३१	१२।२०	——	८।२८	——	४।२८	——	०।२८	२२।२२	——	१८।२२	——	१४।२३

(कोष्ठक नं. ३)

नगर	मिनट
अमृतसर	+७
अम्बाला	०
कपूरथला	+५
करनाल	+१
कांगड़ा	०
कुरुक्षेत्र	+२
गुरदासपुर	+३
चम्बा	०
चण्डीगढ़	०
जम्मू	+४
जालन्धर	+६
जींद	+४
दिल्ली	+३
देहरादून	−४
धर्मशाला	−१
नाभा	+३
नाहन	−२
पटियाला	+२
पठानकोट	+१
फिरोजपुर	+८
विलासपुर (हि.प्र.)	−१
भटिण्डा	+८
मेरठ	−१
मण्डी (हि.प्र.)	−२
रामपुर बुहर	−५
रोहतक	+४
रिवाड़ी	+५
रोपड़	+१
लुधियाना	+४
शिमला	−२
होशियारपुर	−२
हिसार	+७

आकाशी कौंसिल का विचार (वि० सं० २०२८)

स्वतन्त्र-भारत के २५वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली,

मुस्लिम-राष्ट्रों के नव-वर्ष-प्रवेश की कुण्डली,

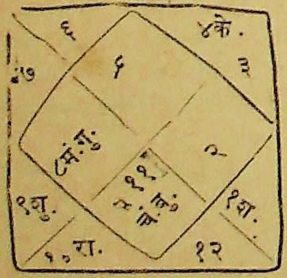

यूरोपीय-राष्ट्रों के नव वर्ष-प्रवेश की कुण्डली

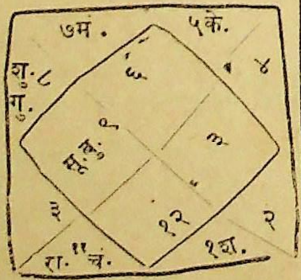

इस वर्ष आकाशी कौंसल (ग्रह-परिषद्) के चुनाव में दशाधिकारियों में से ६ अधिकार शुभ-ग्रहों को और ४ अधिकार अशुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं; जिनमें क्रूरमति-शनि ने नीच-राशिस्थ होकर मंगल के नवांश में बैठकर वर्षेश-जैसा उच्चपद प्राप्त किया है, जो कि विश्व के लिए हितकारी नहीं है। विश्व के शासक वर्ग के समक्ष पूंजी, करेंसी एवं सामुद्रिक-समस्याएं उपस्थित होंगी। पूर्व व पश्चिम राष्ट्रों के लिए यह वर्ष महाभय-प्रद है। कहीं रोग, विग्रह, प्रकृति प्रकोप एवं अनेक उत्पात देखने में आएंगे। वर्ष का मन्त्री बुध भी वैशाखी के दिन शनि के साथ बैठकर प्रारम्भ में ही पाप-बुद्धि बन गया है। अतः यह अपने मन्त्रिपदजन्य शुभ फल को न देकर वर्षराज शनि के अनिष्ट फल को ही पुष्ट करेगा। जिससे विश्व में अनेक जगह रक्तपात व किसी राष्ट्रविशेष में क्रान्ति हो। कई देशों की रूपरेखा एवं मानचित्र में परिवर्तन हो, विश्व के कई राष्ट्रों में कूटयुद्ध व दूर प्रक्षेपणास्त्रों से भारी हानि होगी। विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में समुद्री समस्याएं उलझेंगी। वायुयान रेल व आगजनी की घटनाओं से जन धन की हानि हो। विश्व को अनेक राष्ट्रों की विस्फोटक स्थिति में से गुजरना होगा, कई पश्चिमी राष्ट्रों में युद्ध की ज्वाला भयंकर रूप धारण करेगी। विश्व के कई देशों की राजनीति एवं सम्बन्धों में परिवर्तन दिखाई देगा। भूकम्प महामारी भुखमरी एवं तूफान आदि से कहीं जनधन की हानि हो। ध्यान रहे; --रुद्र विंशति के अन्त (वि. सं. २०३०) तक विश्व में अनेक प्रकार की अघटित घटनाएं होंगी, कहीं न कहीं युद्ध, वृद्ध रक्तपात, हृद्रोग, एवं फ्लू आदि रोगों से जनता को कष्ट सहना होगा। इस वर्ष चौपायों में भी रोग फैलने से हानि होगी।

भारत एवं भारत सरकार

भारत की वर्ष प्रवेश कुण्डली का गम्भीरता पूर्वक परिशीलन करने से ज्ञात होता है कि--२६ जन. १९७१ से प्रारम्भ होने वाला वर्ष भारतीय गणतन्त्र के लिए अग्नि-परीक्षा का है। गुणमान से रुद्रविंशति में यह 'रक्ताक्ष' नामक संवत्सर है; जिसका फल इस प्रकार है;

> रक्ताक्षवत्सरे भूपा अन्योन्यं हन्तुमुद्यताः।
> ईतिरोगाकुला धात्री स्वल्पसस्यार्घवृष्टयः॥"

शासकों में परस्पर तनाव बढ़ेगा, कहीं युद्ध की चिनगारी सुलगेगी, अनेक विध रोगों से प्रजा को कष्ट हो; वर्षा की कमी रहे एवं फसल को नुकसान पहुंचे। वि. सं. २०२८ की ग्रह गति भारतीय जनता में अशान्ति का वातावरण बनाए रखेगी। २८ अप्रैल से ६ जनवरी १९७२ तक गुरु से सप्तम शनि जनता के समक्ष अनेकविध अप्रिय प्रसंग उपस्थित करेगा। कुछ नेता लोगों की अदूरदर्शिता से जनता में क्षोभ व्यापे। कुछ पुरानी प्रान्तीय समस्याएं उभरेंगी। बेरोजगारी का भूत निरन्तर बढ़ता जाएगा, और यह बढ़ रही बेरोजगारी भारत की शासन व्यवस्था को आघात पहुंचाएगी। युवा वर्ग विद्रोह के कगार पर दिखाई देगा। जनता एवं शासन एक सूत्र में न रहेंगे। इस अवधि में किसी बड़े नेता का पद रिक्त हो या सहसा दुर्घटना में अङ्गभङ्ग वा शरीरान्त संभव है। २१ अप्रैल से २२ जून तक राहु मंगल की युति में कई महत्त्वपूर्ण समस्याएं शासन के समक्ष उपस्थित होंगी। साम्यवाद एवं निक्सलवाद आदि का नारा बुलन्द करने वाले तथाकथित नेता लोक तन्त्र को हानि पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। कहीं तोड़-फोड़ की घटनाएं, कहीं उग्र प्रदर्शन होंगे एवं कई प्रान्तों में शासकीय पार्टियों में मतभेद होने से वातावरण क्षुब्ध रहेगा। कहीं जन-धन की हानि एवं कहीं मंत्रीमण्डल में हेरफेर हो। आगे सितम्बर तक का समय भी सन्तोषप्रद नहीं है। भारत की पूर्वोत्तरी एवं पश्चिमी सीमा पर भय व्यापे। सरहद्दी इलाकों में सैनिक हलचल एवं अशान्ति रहे। १६ से २३ नवम्बर तक सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र एवं बुध, ये पांचों ग्रह वृश्चिक राशिस्थ हैं; अतः--**"रवीन्दुशुक्रेज्य शशांकपुत्रा यदैकराशौ सहिता भवन्ति। मेघाः प्रवर्षन्ति महर्घता स्यात् प्रजा-विनाशो दिशिनैर्ऋते स्यात्॥" पञ्चग्रहाः घ्नन्ति चतुष्पदाश्च। "राज्य-भ्रंशः प्रजा-नाशः सर्वसस्य-महर्घता।"** --इस शास्त्र वाक्य के अनुसार १६ से २३ नव. तक का समय जनता के लिए कठिन है, विशेषकर यह समय दक्षिण एवं पश्चिमी देशों एवं प्रान्तों के लिए अधिक कठिन है। पशुओं में रोग से हानि हो। इस समय शासक वर्ग में भारी बैचेनी रहेगी साम्प्रदायिकता एवं अनैतिकता पनपेगी। कहीं शासन में गतिरोध उपस्थित हो, कहीं घेराव एवं आन्दोलन के कारण उद्योग धन्धों को नुकसान पहुंचेगा। पश्चिमी बंगाल गुजरात, तैलंगाना आदि में अशान्ति का वातावरण बनेगा। इस समय शासन लड़खड़ाता दिखाई देगा। इस स्थिति में चीन एवं पाक दोनों भारत में पनप रही देश-द्रोही प्रवृत्तियों को प्रच्छन्न रूप से प्रोत्साहित करेंगे। पाकिस्तान एवं ब्रिटेन की नीति भारत विरोधी रहेगी। ये भारत-विरोधी प्रचार एवं प्रसार में लगेंगे, भारत में साम्प्रदायिक दंगों के प्रति इनकी सहानुभूति दिखाई देगी। इस वर्ष वृष के शनि में कुछ विरोधी देशों के रुख में परिवर्तन अवश्य दिखाई देगा, परन्तु बाह्यरूपेण चीन के रुख में कुछ परिवर्तन आने पर भी गुप्तरूप से प्रोत्साहित कुछ तत्त्वकेरल आसाम, गुजरात, बंगाल आदि में पूंजीवाद एवं वर्तमान शासन की आलोचना कर देश की आत्मपर्यवेक्षण एवं मूल चिन्तन शक्ति को क्षीण करते दिखाई देंगे; जिससे बड़े उद्योगपतियों को भारी क्षति सहन करनी होगी, लूट आदि की घटनाएं भी होंगी। असम में भी साम्प्रदायिक विष से जन-धन की हानि होगी--ऐसा लगेगा जैसे कि--देश की व्यवस्था को लकवा मार गया हो।--ऐसी स्थिति में केन्द्रीय एवं कुछ प्रान्तीय नेताओं में वैमनस्य

बढ़ेगा। युवा वर्ग अपनी अविवेकपूर्ण क्रान्ति से साम्यवाद की ओर उन्मुख दिखाई देगा। हम युवा वर्ग को सावधान कर देना चाहते हैं, कि—इस कदर बिना पैंदे के क्रान्ति लाने का प्रयत्न उन्हें रक्तपात, अव्यवस्था एवं समाज विक्षोभ के अतिरिक्त कुछ न देगा। अतः लोकतन्त्र के लिए अपनी इन प्रवृत्तियों को समेट कर ही आगे बढ़ें। आगे शासन में कुछ परिवर्तन एवं रूपान्तर शीघ्र ही उपस्थित होने वाला है;—— यह ग्रहस्थिति बतलाती है। शान्ति-स्थान सातवें मकर में भौम-राहु का संयोग और वर्षेश शनि का मुन्था के साथ होना भी भारत के उच्च शासकों के लिए अग्निपरीक्षा का है। राज्य-मण्डल में परिवर्तन होंगे। अनेक प्रान्तों में राजनैतिक उलटफेर दिखाई देंगे। विदेश नीति में कुछ परिवर्तन दिखाई देगा। शनि के प्रभाव के कारण राष्ट्र समाजवाद की ओर बढ़ेगा। वर्षेश शनि मजदूर पार्टी का है, चंचल प्रकृति बुध मन्त्री है इन दोनों की जब भी सूर्य मंगल से युति, दृष्टि आदि होगी तभी उपद्रव, दुर्घटनायें आन्दोलन, प्रजा एवं शासकों में वैमनस्य अग्नि भय एवं प्रकृति प्रकोप आदि देखने में आएंगे। विषम स्थिति में भारत अणुशस्त्र को आवश्यक समझने लगेगा और १९७५ तक भारत अणु शस्त्र निर्माण में सफल हो जाएगा। फिर भी भारत की सार्वभौम सत्ता इन सभी स्थितियों को पार कर स्थिर रहेगी। वृष का शनि भारत के राष्ट्रपति के लिए शुभ नहीं इन्हें अपनी सेहत एवं सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

जन्म कुण्डली श्रीमती इन्दिरा गान्धी

जन्म कुण्डली

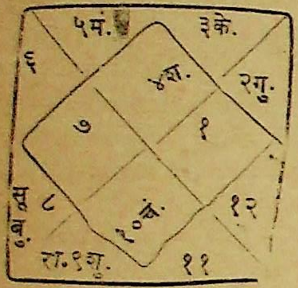

नवांश कुण्डली

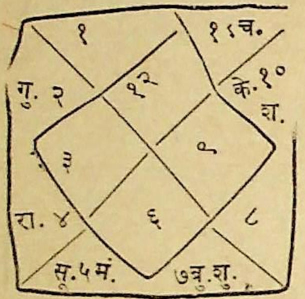

श्रीमती इन्दिरा गान्धी की यथालब्ध कुण्डली में भाग्येश बृहस्पति वर्गोत्तमी होकर नवांश-कुण्डली में भाग्यस्थान को देख रहा है। इसी योग ने इन्हें सत्तारूढ़ रक्खा है। अब सप्तमेश एवं अष्टमेश शनि की महादशा में शनि का अन्तर १३ नवं. १९७० से चल रहा है जो कि——३ मई १९७३ तक चलेगा। यह समय सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भय-प्रद है, इन्हें देशद्रोही व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिए। अंगरक्षक भी सावधान रहें। यह ज्योतिष की दृष्टि से लिखा गया है।

पंजाब——यहां कृषि, औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी प्रगति के योग हैं। सीमावर्ती प्रांन्तों के साथ कुछ सुलझी हुई समस्याएं फिर से उभरेंगी। यहां निर्वाचन में अकाली दल को बहुमत प्राप्त होने पर भी सरकार बनाने के लिए अन्य पार्टी का सहयोग लेना पड़ेगा।

हरयाणा——यहां पर कृषि, लघु उद्योग-धन्धे एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारी उन्नति होगी। यहां कांग्रेस को बहुमत प्राप्त होगा।

हिमाचल प्रदेश:——यहां की सरकार कृषियोग्य भूमि एवं बागवानी पर जोर देगी। व्यापारिक-आर्थिक-स्थिति में पर्याप्त सुधार होगा। शिक्षा के क्षेत्र में अधिक उन्नति होगी। यहां कांग्रेस को बहुमत प्राप्त होगा।

उत्तर प्रदेश——यहां नेताओं में विरोध, पार्टीबाजी, साम्प्रदायिक दंगे होंगे। इस प्रान्त का पर्वतीय भाग (उत्तराखण्ड) अलग राज्य की मांग करेगा। यहां जनसंघ, कांग्रेस एवं निर्दलीय उम्मीदवारों का पलड़ा भारी रहेगा। कांग्रेस कुछ अन्य पार्टियों के सहयोग से यहां यदि मिली जुली सरकार बना ले, तो कोई आश्चर्य नहीं।

राजस्थान——यहां की अधिकतर जनता गरीबी से खिन्न रहे। सीमा-संघर्ष एवं किसी विशेष दुर्घटना का भय है। यहां कांग्रेस को संयुक्त मोर्चे से जबरदस्त मुकाबला करना पड़ेगा।

काश्मीर——राहु-मंगल का योग इस प्रान्त के लिए अशुभ है, प्राकृतिक प्रकोप, वायु व शीत लहर से हानि एवं कुछ साम्प्रदायिक उपद्रव होंगे। यहां भारत के विरुद्ध साजिशें एवं सरहदों पर कुछ झड़पें भी हों। फलों का व्यापार मध्यम रहेगा एवं यहां के प्रधान को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़े।

भारत का वायुमण्डल व वर्षा——वर्षारम्भ से ही राहु-मंगल का योग वर्षा के लिए अच्छा नहीं। "राहुरंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतौ यदा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥" अतः वर्षा यथावसर पर्याप्त न हो। कहीं वर्षा अधिक होने से फसल को हानि हो एवं कहीं वर्षा की न्यूनता या अभाव से कृषक खिन्न रहें। सिन्ध, मारवाड़, सौराष्ट्र में कहीं अतिवृष्टि या अनावृष्टि से फसल को हानि हो। ९ दिसंबर के बाद उत्तर भारत में बहुत जगह ५, ७ दिन की झड़ी लगे एवं मकानों को नुकसान पहुँचे।

भारत का वाणिज्य व्यवसाय——व्यापारेश बुध की स्थिति को देखने पर ज्ञात होता है, कि——यह वर्ष धनी एवं व्यापारी वर्ग के लिए चिन्ताप्रद ही है। २८ अप्रैल को शनि वृष में आता है, जो कि——गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तांबा एवं अनाजों में तेजी करता है। यह तेजी दो मास बाद अधिक होगी, इससे पहले साधारण तेजी रहेगी। वर्षारम्भ में सूत, कांसी आदि में तेजी आवे। वैशाख शु. २ से सरसों आदि तिलहन में एवं वनस्पति घी में मन्दे का प्रभाव रहेगा। २३ अप्रै. से २२ अक्तू. तक वनस्पति घी एवं सरसों आदि में मन्दे का योग है उसके बाद २५ दिसं. १९७१ तक तेजी का रुख रहेगा। आषाढ़ शु. में बुधोदय एवं श्रावण में शुक्रास्त हो रहा है अतः हमारा विचार इस वर्ष तेजी का ही है;—"**आषाढ़मासे यदि शुक्लपक्षे चन्द्रस्य पुत्रोऽभ्युदयं करोति। शुक्रस्य चेच्छ्रावण मासि चास्तं धान्यं सुवर्णेन समं तदा स्यात्॥**" १६ अग. से १२ सितं. तक बुध शुक्र सूर्य एक राशिगत हैं; यह योग भी अनाजों में तेजी की ओर संकेत करता है;——**एक राशिस्थिता ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः। सर्वधान्य-महर्घत्वं मेघाः स्वल्प-जलप्रदाः।** ये तीनों ग्रह २१ अग. से ३० अगस्त तक मघा नक्षत्रगत होने से स्थिति को और भी विषम करते हैं:—— **एक नक्षत्रगा ह्येते तदा भयविवर्धनाः।"**

वृश्चिक का गुरु भारत के अर्थतन्त्र में भारी परिवर्तन करेगा। लघु उद्योग उन्नति करेंगे। चीनी, कपड़ा, कृत्रिम-वस्त्र, बिजली, इञ्जीनीयरिंग का सामान एवं परिवहन साधनों में उन्नति होगी।

भारत में आगामी निर्वाचन--अनेकों नए नए व्यक्ति निर्वाचन क्षेत्र में उतरेंगे। स्थिति कुछ ऐसी होगी, कि-- C.P.I. और प्रसोपा तटस्थ न रहकर नई कांग्रेस का साथ देते दिखाई देंगे। कुछ दल एक ओर और कुछ दूसरी ओर होंगे। दलों में ध्रुवी-करण की प्रवृत्ति दिखाई देगी। दल बदलने की गति मन्द और राजनीति में स्थिरता दिखाई देगी। हिमाचल, म. प्र., गुजरात, उड़ीसा तथा अन्य कई प्रान्तों में राजनीति नया मोड़ लेगी। इस निर्वाचन में कई तथाकथित समाजवादी एवं प्रगतिशील नेताओं को आगामी परिवर्तन पर अवाक् रहना पड़ेगा। जनसंघ, गैर कम्युनिस्ट, निर्दलीय एवं कांग्रेस के नए-नए उम्मीदवार प्रकाश में आएंगे। निजलिंगप्पा वाली कांग्रेस को अनेकत्र मुंह की खानी पड़ेगी। आर्थिक नीति में समाजवादी सिद्धान्तों के समावेश का निर्देश करने वाले आकर्षक घोषणापत्र भी निजलिङ्गप्पा-कांग्रेस की विजय में यत्किञ्चित् भी सहायक सिद्ध न होंगे और यह कांग्रेस समाप्त प्राय हो जाएगी। निर्वाचन से पूर्व ही जनसंघ को परम्परागत अनेक मूलभूत सिद्धान्तों में परिवर्तन करने पड़ेंगे। इस निर्वाचन में श्री जगजीवनराम की कांग्रेस को खोए हुए अनेक स्थान प्राप्त होंगे। केन्द्रीय शासन की सत्ता कांग्रेस के हाथ में ही रहेगी। अधिकांश प्रदेशों में भी कांग्रेस को ही बहुमत प्राप्त होगा।

विश्व के प्रमुख राष्ट्र

अमेरिका--संवत् के अन्त में यहां अन्तरिक्ष की खोज में सफल परीक्षण होंगे, इजराइल की यह आन्तरिक रूप से सहायता करता रहेगा। भारत के साथ दुमुही नीति रहेगी। पाकिस्तान की ओर विशेष झुकाव रहेगा। इस वर्ष यहां के बाजार में कुछ मन्दे का बोलबाला रहेगा, जिसका विश्व के सभी क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ेगा।

रूस--रूस की राजनीति में कुछ परिवर्तन दिखाई देगा। चीन के साथ राजनयिक सम्बन्ध कुछ कटु होंगे। वैज्ञानिक-अनुसंधान एवं अन्तरिक्ष की खोज में आश्चर्यजनक परीक्षण होंगे। जापान के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ेंगे, कई पहलुओं पर भारत के विरुद्ध रुख दिखाई देगा। पाकिस्तान को प्रसन्न करने का प्रयत्न बना रहेगा। यहां के प्रमुख नेताओं को अनेकविध समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। १० जून के बाद यहां का आन्तरिक-वातावरण क्षुब्ध रहे, एवं अनेक प्रकार के हेरफेर हों। परिस्थिति वश प्रधान व्यक्ति को पदत्याग करना पड़े और किसी नए नेता का उदय हो।

चीन--इस देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में परिवर्तन दिखाई देगा। अन्दरूनी तौर पर रूस, जापान एवं भारत को अपना शत्रु समझता हुआ युद्ध की सामग्री जुटाने एवं अनेक प्रकार के विनाशकारी आणविक-परीक्षणों में लगा रहेगा। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति डांवा डोल रहेगी। यहां लाल-चीन में अराजकता, आन्तरिक-विद्रोह एवं खाद्य-समस्या बढ़े। रोग से जन-धन हानि, विद्यार्थी-वर्ग में असन्तोष एवं माओवाद शिथिल होता दिखाई देगा।

पाकिस्तान--यह वर्ष पाकिस्तान के लिए शुभ नहीं। आन्तरिक कलह, क्रान्ति, संघर्ष रोग एवं तूफान आदि प्राकृतिक-प्रकोप से अशान्त वातावरण होगा। सरहद पर अराजकता एवं कहीं युद्ध का वातावरण बने। कई विघटनकारी तत्त्वों से अराजकता व्यापेगी। आधुनिक गुरिल्ला युद्ध के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देगा। चीन, अमेरिका, रूस एवं ब्रिटेन आदि से सम्बन्ध अधिक दृढ़ होंगे एवं ये देश इसे अणुशस्त्र बनाने के लिए प्रोत्साहन करेंगे: यहां अतिवृष्टि या अनावृष्टि से कृषि को क्षति हो। राजनैतिक उथल-पुथल रक्तपात एवं दुराचार बढ़ेंगे, दलबन्दी की भावना पनपेगी, किसी बड़े आदमी का पद रिक्त हो।

ब्रिटेन--यहां कहीं हड़ताल, कहीं आन्तरिक क्रान्ति से जनता में अशान्ति हो। भारत के साथ सम्बन्ध सामान्य न रहेंगे। पाकिस्तान के साथ अधिक गठबन्धन करेगा। राज कुटुम्ब से कोई शोक समाचार मिले।

जापान--यह देश सामाजिक-राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से उन्नति करेगा। व्यापार एवं उद्योग-धन्धों में उन्नति होगी। चीन एवं जापान प्रच्छन्न रूप से एक दूसरे पर प्रभाव रखना चाहेंगे। आन्तरिक वैमनस्य बढ़ेगा। भारत के साथ व्यापारिक-सम्बन्ध बढ़ेंगे एवं भारत लाभान्वित होगा। कुछ एशियायी समस्याओं पर भारत के साथ कुछ वैमनस्य रहे। यहां कहीं प्राकृतिक उत्पात, रक्तविकार एवं रोगभय से हानि हो।

जर्मनी--रूस के साथ पश्चिम जर्मनी के सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यहां संवत् के अन्तिम चरण में किसी विशेष आयोजन से उल्लास दिखाई देगा, वैज्ञानिक-उन्नति होगी।

संयुक्त अरब गणराज्य--यह वर्ष संघर्षमय है, इजराइल से सम्बन्ध संगीन होते जाएंगे। इनकी पारस्परिक तीक्ष्ण प्रतिक्रिया विश्वशान्ति के लिए चुनौती सिद्ध होगी, यहां की युद्ध ज्वालाएं यदि विश्वशान्ति को निगल जाएं तो कोई आश्चर्य नहीं। इस स्थिति में भावी महायुद्ध का क्षेत्र एशिया महाद्वीप ही बनेगा।

घाना, इराक, ईरान, कुवैत, तुर्की, सीरिया आदि राष्ट्रों में कहीं भूकम्प तूफान आदि से जनधन की हानि हो, कहीं क्रान्ति आए। बर्मा की उत्तर-पूर्वी सीमा पर चीनी पद-चिह्नों पर चलने वाले देशद्रोही आतंक करें, उत्तर पूर्वी सीमा पर खतरा बढ़ेगा।

पाठको! अतर्क्य-भविष्य देखने की क्षमता इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शुभाशुभ घटनाएं इस अल्पविषया बुद्धि में स्फुरित हुई हैं, उन्हें आपके समक्ष उपस्थित कर दिया है। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य लेखन में प्रवृत्ति बाल चापल ही तो है;--

"अघटितमपि घटयति सुघटितमपि दुर्घटी कुरुते।
विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान्नैव संघटते॥"

"तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

बघाट नरेशाश्रित--
--मुकुन्दवल्लभ
इन्दु शेखर शर्मा

श्री मार्तण्ड भवन,
कुराली,
श्रा. शु. ८ चन्द्रवार
सं० २००७ वि०

शनैश्चर को साढ़ेसाती एवं ढैया का विचार

बृहत्कल्याणी (साढ़साती) साढ़े सात वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से बारहवीं राशि में शनि के आने पर २॥ वर्ष तक सिर पर (चढ़ती), जन्मराशि में जाने पर २॥ वर्ष हृदय पर एवं जन्मराशि से दूसरी राशि में आने पर पैरों पर (उतरती) मानी जाती है।

लघुकल्याणी (ढैया) अढ़ाई वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से चौथी एवं आठवीं राशि में शनि के आने पर मानी जाती है।

जिसकी जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो उसे शनि का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र-शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों, तो साढ़साती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, धनहानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग पशुपीड़ा हानि आदि का कारण बनती है। शान्त्यर्थ शनिवार के दिन सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्टान्न गुलगुले बनाकर गरीबों को या भैंसे, कुत्ते को देवें। महावीर जी पर सिन्दूर, तेल चढ़ाना भी कल्याणप्रद है।

शनि अपनी साढ़साती में किसी को लगते समय, किसी को उतरते समय, किसी को मध्य में खराब होता है। यदि जन्मपत्री में चन्द्र तथा शनि २।६।१२वें स्थान में पड़े हों, अथवा शत्रु-क्षेत्रीय अस्त तथा नीच या पाप दृष्ट या पाप ग्रह के साथ उक्त स्थानों में पड़े हों तो साढेसाती में अनेक संकट आवेंगे। जिनके जन्म के शुभ स्थानों में सबल शनि-चन्द्र पड़े हों तो उन्हें व्यापार की धूमधाम, सम्पत्ति की भरमराहट तथा हर प्रकार की सफलता मिलेगी। **साढ़ेसाती में शनि का प्रत्येक राशि के लिए अशुभ काल इस प्रकार है**—मेष राशि वालों को बीच के ढ़ाई वर्ष खराब, **वृषभ** को राशि के पहले ढ़ाई वर्ष, मिथुन को अन्त के ढ़ाई वर्ष खराब, कर्क को बीच के ढ़ाई वर्ष, सिंह को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के ढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कन्या** को पहले ५ वर्ष उसमें भी मध्य के ढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के ढ़ाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी बीच के ढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के ढ़ाई वर्ष, मकर को पहले ५ वर्ष, उसमें भी पहले ढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुम्भ** को आदि अन्त के ढ़ाई वर्ष विशेषकर अन्त के ढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के ढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं। शनि के ढ़ाई वर्ष के भ्रमण काल के १०-१० महीने के तीन तीन हिस्से होते हैं, उनमें फलादेश में परिवर्तन आ जाता है। एक राशि के ३० अंश होते हैं और शनि एक राशि पर ३० महीना रहता है, **निष्कर्ष यह है**, कि—शनि एक मास में एक अंश चलता है। इस समय में जब जब उसका राहु, मंगल या सूर्य से सम्बन्ध होता है, तब अशुभ फल करता है। जिस प्रकार अशुभ योगों में अशुभ-फल देता है, उसी प्रकार शुभ-योगों में शुभ फल भी करता है। इसी प्रकार यह साढेसाती लग्न की तथा सूर्य की भी देखी जाती है। सूर्य की साढ़े साती में व्यापार खराब हो जाता है और लग्न की साढ़ेसाती में स्वास्थ्य खराब होता है, चिन्ताएं बढ़ती हैं।

वृष में शनि—वि. सं. २०२८ की वैशाख शुक्ल चतुर्थी बुधवार (२८ अप्रैल सन् १९७१) को ११ घं. ३० पल पर वृष-राशिस्थ चन्द्रमा के समय शनिदेव वृष राशि में प्रविष्ट हुए हैं। वर्षान्त तक एवं आगे भी शनि वृष राशि में ही रहेगा। इस वर्ष मेषादि राशियों के साढ़ेसाती-ढैया का सुवर्णादि पाद विचार इस प्रकार है—**मेष**—साढ़ेसाती पैरों, पर (उतरती) है, चांदी के पाए,—कुछ शुभ। **वृष**—साढ़ेसाती हृदय पर, सुवर्ण के पाए, चिन्ताप्रद, अशुभ। **मिथुन**—साढेसाती सिर पर (चढ़ती), लोहे के पाए, कष्टप्रद अशुभ। **तुला**—ढैया, लोहे के पाए, कष्टप्रद। **कुम्भ**—ढैया. लोहे के पाए, कष्टप्रद।

गुरु का शुभाशुभ फल—वि. सं. २०२८. माघ कृष्ण पञ्चमी बुधवार (५ जन. १९७२) तक गुरु वृश्चिक में रहेगा। तत्पश्चात् वर्षान्त तक गुरु धनु में रहेगा। इसका प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल नीचे लिखे चक्र से जानिए—

—वृश्चिक राशि के गुरु का शुभाशुभ—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ

धनु राशि के गुरु का शुभाशुभ

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम

गुरु का विशेष फल—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होते हैं, तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र-बन्धु मिलाप, मान वृद्धि, खुशी, धनलाभ, शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करते हैं और जिन राशि वालोंको यह मध्यम होते हैं, उन्हें शुभाशुभ मिले-जुले फल प्रदान करते हैं और जिन राशि वालों को अशुभ-फलप्रद होते हैं, उन्हें धन-मानहानि, विद्या व सन्तति की ओर से चिन्ता, वृथा यात्रा, शारीरिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फल होते हैं।

शान्त्यर्थ गुरुवार का व्रत, दान फल तथा चिड़ी आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए कच्चे चावल डालना चाहिये।

राहु का शुभाशुभ फल—वि. सं. २०२८ में राहु संवत् के प्रारम्भ से अन्त तक मकर में ही रहेगा। इसका प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल निम्नांकित चक्र से जानें;—

मकर राशि के राहु का शुभाशुभ फल—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ

राहु का विशेष फल—राहु जब तक जिस राशि को शुभ-फल-प्रद होता है, तब तक उस राशि वालों को प्रिय-मिलन, द्रव्य-लाभ, स्वास्थ्य सुख, घर में सन्तोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल देते हैं। जिन राशि वालों को मध्यम होते हैं, उन्हें यदा कदा किंचित शत्रु-भय कुछ हानि, लाभ कम, वृथा कलह, द्रव्यचिन्तादि देते हैं और जिन राशिवालों को यह अशुभ होते हैं, उन्हें अकस्मात् हानि, चोट-रोग, भय, खर्च अधिक, मित्र-बन्धु वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देते हैं।

शान्त्यर्थ प्रत्येक मास के पहिले बुधवार की रात को तैलपक्व वस्तु गरीबों को दें या कुत्तों को डालते रहें।

... जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक

अथ प्रसूत-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका
दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में
जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया । माता ने लाल एवं मीठा भोजन
किया था । वस्त्र लाल मलिन । ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन
वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है । इन वर्षों से बचे
तो १०० वर्ष जीवे ।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं,
जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व
हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन
किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय
का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे ।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण
वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के
आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे,
४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्यु-
ञ्जय का जप करवावे । यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल
छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल,
माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया बालक के
वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक
कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान,
छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या
खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते
ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक
कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य
नारायण के मन्त्र का जप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो
कल्याण रहेगा ।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े
आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही
अर्द्ध शब्द किया । घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक
हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भना हुआ अन्न, ठंडा
जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या
भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के
पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ
में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक
अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक
स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के
पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक दीर्घ वर्षों के प्रारम्भ में
मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन,
जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से
रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७
इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों
से बचे तो ८१ वर्ष जीवे ।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध,
कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक
हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के
उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से
बचे, तो ९५ वष जीवे ।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत
शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं । उनमें एक
स्त्री गर्भिणी भी हो । दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया,
वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन
कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से
बचे तो ९० वर्ष जीवे ।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन,
जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर
देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के
प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से
बचे तो ८३ वर्ष जीवे ।

स्मरण रहे, कि-अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना,
क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते ।
सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल । अर्ध-शब्द शिशु करत भयो भाषत बुद्धि रसाल ॥

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के
मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा
लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के
परोक्ष में जन्म कहना ।
जहां राहु शैय्या तहां भंग जहां कुज होय । रविस्थान में दीप कहि शनी लोह कहि सोय ॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान । चतुर्थ—उत्तर ।
पञ्चम, षष्ठ—वायव्य । सप्तम—पश्चिम । अष्टम, नवम—नैऋत । दशम—दक्षिण ।
एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना ।

अथ प्रसूति-स्थानात् पाकशालादि विचारः

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना,
इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो०—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो, तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब बाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसारउपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें।

अथ शय्या, शिर व पाद विचारः

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडन्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दो० षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तनधन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवे तब कष्ट को मिटाता है।

बालारिष्टः—

दो०—शून्याष्टमतनु पाप खग, बरहै शशी जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसैं, बेगि ताहि यमलीन। बसैं चन्द्रा द्वादशै अष्ट भवन २ पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकवाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताकौ अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्नपति परे लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न मे बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फ षट बसे विलब भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह रोग है सब घन हारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

अथ स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न ब्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासू। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहँ पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करि है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशै कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोसी नारि। रूपवती तनु भृगु बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगाः—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय॥ मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ [illegible] जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग विधि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्य-विषकन्याभंगयोगाः—जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोगः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दाकविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई-केन्द्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी॥ रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा.... कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन शीत चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचारः—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥

स्त्री आदि के लिए अशुभ प्रसव मास— कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतावत श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ है।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चादी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति मे दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट. तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाँचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें मे पुष्टि, ९ में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फलम्:—वृद्ध गर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट

जोड़ें जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष रास्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० श०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो रास्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो रास्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चंद्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुहे	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशु ना.	धन ना.	धन ला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४च०)
फलम्	(१।२।३च०) श्वसुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों आदि की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी। आश्लेषा। मघा। ज्येष्ठा। मूल। रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से सुख	१	,,	शान्ति से शुभ

मलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघ यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥
बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमपदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम्॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये०	मू० श्ले०	रे० अश्वि०	पशु	फल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	हानि	

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्ष मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	शूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	मुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतित	दारह दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुजन

अथ स्त्रीजन्मणकुडल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोक
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	११	सधना	गुणज्ञा	सलाभ	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	१२	क्रोधिनी	हीनांगी	धका	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ गृहको ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग हैं भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो: जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पाँचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज।

जारज योगः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्त्यर्थ उपाय
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गोन्नादिदानम्	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मययेति मन्त्रः	सर्प को दूव दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदानदानम्	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरे के मुख में रक्त डाले
पुनर्वसु	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽजादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्प्रणेति मन्त्रः	ऊँट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघके लिए तगर व धतूरे के फूल वनमेंरखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित गुड़ भात दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रौप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोये की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोरर. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्मेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू.भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र.	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पुनन्त्वेति मन्त्रः.	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया गया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा।

अथ ज्वालामुखी योगः।

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूडा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये २ ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना--गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार की मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दादढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयंत्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिखकर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरू करे। विधि-सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतनदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभो.

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सु.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

बाल रक्षार्थ धूप

१ धूप—बांस का छिलका, तगर, लहसन, नीम के पत्ते, गाय का घी। २ धूप–शिवजी पर चढ़े फूल, मनुष्य के सर के बाल, गाय का घी, अगर, गाय का दूध, राई, लाख। ३ धूप—राई लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, गाय का घी, इन तीनों धूपों को देने से सब बाल ग्रह दूर हो जाते हैं।

धूप-मन्त्र खु खुर्दनं खं हुं फट स्वाहा। अभिषेक मन्त्र 'ॐ सर्वसिद्धान्ते मातरिमं ग्रहं संहर हुं रोदय रोदय स्फोटय स्फोटय गृह्ण गृह्ण आमर्द आमर्द शीघ्रं हन हन एवं सिद्धो रुद्र आज्ञापयति स्वाहा। **धारणार्थ रक्षामन्त्र**—रक्ष रक्ष महादेव। नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्। इस मन्त्र को भूर्जपत्र पर लिख कर बालक के गले में बांधने से ग्रह बाधा दूर होती है, और जपादि में भी यह मन्त्र प्रयुक्त हो सकता है। पूतनाबलि तीन दिन करे फिर १०८ बार अभिषेक मन्त्र से अभिमंत्रित जल से बच्चे को मार्जन करे।

ग्रहगोचराद्यैर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः														जपनीयमंत्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगो	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसुर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ.२शेषदि.	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदां.	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ.५शेषदि.	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूप	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	ॐ मुन्थेशमंत्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो, तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधिः—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके वर्ष पर्यन्त, या तीस, या कम-से-कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूँ की रोटी घी-खाण्ड के साथ, या गेहूँ का दलिया या हलवा इलायची डाल कर भोजन करें। नमक बिल्कुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहिनकर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, पुष्प-दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण-भोजन करावें। एसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जावेगा। तेजस्विता बढ़गी, शारीरिक रोगों की शान्ति भी होगी।

सोमवार के व्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित-बीज-मन्त्र की ११ माला या ३ माला जप करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही-चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करे। जब व्रत का अन्तिम सोमवारहो, उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष-कार्य-सिद्धचर्य भी पूर्ण फलदायक होता है।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक-सेवन न करे,—यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे और स्वयं भी वही खावे। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूँ तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करे। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे, फिर तीन तुलसीदल गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन-पूर्णाहुति करके अंगहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करे। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य-लाभ होता है।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार के व्रत करे। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करे। भोजन में चने के बेसन की घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू-भोजन करावे। स्वर्ण, पीत वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करे। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता और यश-वृद्धिकर है। अविवाहितों के लिए स्त्री-प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। मोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे। चांदी, श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से सुख-ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शनि के व्रत की विधि--यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारम्भ करे। व्रत ५१ या १९ करने चाहियें। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले-तिल, गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी, कुछ तेल में पका हुआ पदार्थ तथा केला फल प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल, उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती हैं। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

राहु-केतु के व्रत की विधि--शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शरू करना चाहिए। यह व्रत १८करे। काला वस्त्र धारण करके१८ या ३ माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है ;

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि--

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् ।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत,चन्दन, सिप्पी पञ्च गव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त-चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी, श्वेत-सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची-मजीठ, तथा शनि के दिन काले-तिल, सौंफ, सुरमा, अमलवेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करे तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिलें, उनसे ही स्नान करे।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियोंके जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु वचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्--कल्याणी प्रददाति व रविसुतो राशश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं, लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणि (साढेसाती) फलम्--राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः, नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य--उड़द, १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तंदुल) ६, कंगनी ७, **अष्टगन्ध**--अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, दोनों चन्दनः।

*

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रहः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाशः	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकभे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा१।।	मा१	मा१२	मा.१	मा३०	मा१८	एकार्थभोग
आदौ.	अन्ते.	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि.५	घ.३	दि.८	दि. ७	मा.१	दि.७.	मा.६	मा. ६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलम्	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	वैडूर्यम्	राजवर्तः	राजवर्तः

पूतना विचार

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जग्ह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे२ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है। और मूर्छा आगई है अथवा कोई रोग हो गया है, तब जानो कि उसे महा-पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वन देवता या नगर देवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नात स्त्री का गमन करके पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता

नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल लगाने और फूल माला पहिनाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा——जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नही आवे, डर लगे, मन को उद्वग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्——दूर्वा, कुटकी, नीम, के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निवासश्च तत्र रात्रौ——ॐहिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ।। इत्यस्य जपः तत्तोऽनेनव मन्त्रेण सदीगदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः ।।

अथ बाल रक्षा विधि——(प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो —ॐवासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।१।। कृष्ण ! रक्ष शिशु शङ्ख मधुकैटभ मर्दनः। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययोः ।।२।। महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदनः। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ।।३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महा-भयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।।४।।

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में

अथ नक्षत्रराशि-ज्ञान-चक्रम्

राशिज्ञाने विशेषः—

नक्षत्र वा राशि में श और स में, ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करे। (संयोगाक्षरे ¹नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशयः	कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	य	यो	घ	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गु	सी	द	०	झ	च
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	०	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-
विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा
सस्वर एव हि॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्वमांगल्ये
यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्। ।४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे
सेवायां व्यवहारके॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥५५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ
च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि
जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव
लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाविचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः—वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा
का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभि-
जित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा ये तीन
चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग
छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १-१ चरण मानो। इस प्रकार
को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

नक्षत्र-विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए।
क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट
ऐसे करना। यथा—जिस दिन विषघटी देखना है, उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक
को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले, वही विषघटी के प्रवेश का समय है और
विषघटी ४ घटी की होती है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से
गुणा ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ,
विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, इतने समय तक
२७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य वर्जित है।

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ
को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की
राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की
स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा
का प्रभाव भू-स्थित-वनस्पति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है।
ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक
(Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री
के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं,
जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है।
अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी
फलितज्ञों में है।

नवीन-फलित-वेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग
गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की
राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने
जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को ही जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष
के अनुसार इसी राशि का महत्त्व है।

टिप्पणी—(१) जबोर्जः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशि:। कषसंयोगे क्षः, यथा
क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ध्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) गर्भाधानं पुंसवनं
सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेदव्रतानां
च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोकौ, विवाहः षोडशी क्रिया ॥

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश, सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	वैशाख (१४ अप्रै. से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जून तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	लाभ अच्छा, निजी जन से विवाद, घरेलू झंझट, नित्य कर्म में बाधा, वायु विकार। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	मित्र वैमनस्य, विशेष परिश्रम से लाभ कम, अकारण विवाद का भय, संयम से रहें। मई २०, २१, २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ	घर वालों से मन मुटाव, आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में आर्थिक स्थिति कुछ सुधरे। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुलाई ४, ५ ६, १३, १४, १५ अशुभ
वृष	कारोबार यथावत् चले, स्त्री व सन्तति चिंता, विवाद, शुभ यात्रा। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	कोई आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में लाभ, सेहत बिगड़े, विदेश यात्रा भय। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	अस्थिर विचार, जीव-जन्तु भय, सज्जनों से कुछ लाभ, स्थाई कारोबार की चिन्ता। स्थानान्तर का विचार। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
मिथुन	जन विशेष से हैरानी, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार से लाभ, शुभ यात्रा, स्वास्थ्य ठीक। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	स्वास्थ्य कमजोर, कारोबार में सफलता, गुप्त शत्रु से सावधान, शुभ कार्यों व वस्त्रों में खर्च। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३, अशुभ।	घरेलू झंझटों से हैरानी, लाभ से खर्च ज्यादा, मित्रों से मन-मुटाव, विशेष परिश्रम से लाभ, जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, शुभ में खर्च, यात्रा-प्रसंग, सन्तति सुख, अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	उदर विकार, शत्रु भय, अचानक लाभ, कार्य में सफलता के आसार, मित्र मिलाप। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ६, १४, अशुभ।	नये उद्योग का आयोजन, स्त्री-पुत्र द्वारा विशेष खर्च, कार्यान्तर का विचार, लाभ अच्छा, पित्त प्रकोप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
सिंह	स्त्री से सन्तोष, सन्तान द्वारा खर्च, कुछ लेन-देन का विवाद, लाभ मध्यम। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	कारोबार में कुछ उन्नति, निजी जनों से स्नेह सम्बन्ध अच्छा, यात्रा में कष्ट। मई २०, २१ २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ अच्छा, शुभ में खर्च, प्रतिष्ठा बढ़े। शत्रु परास्त, सोचे काम बनें, पशु लाभ। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
कन्या	चित्त अशान्त, सम्पत्ति-चिन्ता, पशु-पीड़ा, शिवार्चन करना कल्याणप्रद। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	सन्तान द्वारा वृथा खर्च और चिन्ता, स्त्री सन्तोष, धर्म में अरुचि, वृथा यात्रा, वाहन से भय, पित्त पीड़ा। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	किसी व्यक्ति के उपचार आदि में खर्च, घर में अशान्ति, लाभ यथावत् मित्र मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५, अशुभ।
तुला	पराक्रम उत्तम, स्त्री-पुत्र विषयक चिन्ता, वृथा खर्च, लाभ होता रहे। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८, अशुभ।	कारोबार डांवाडोल, बड़े आदमी से बिगाड़, अशान्ति जीव से भय, चींटियों को तिल चावल डालें। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	स्वास्थ्य में बिगाड़, स्थाई काम व लेन-देन की चिन्ता, बन्धुओं की मदद से राहत मिले। जून २०, २१, २२, २९, ३० जुला. १, ९, १० अशुभ।
वृश्चि.	सट्टे आदि व्यापार से हानि शत्रु भय, स्वास्थ्य मध्यम, नौकर वा मित्र से विरोध, पशु लाभ। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, सन्तान से खुशी, लाभ अच्छा, स्त्री पक्ष से चिन्ता, यात्रा भय। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ५, १४ अशुभ।	कलंक का भय, जोखिम के काम से हानि, स्थाई कारोबार यथावत्, सत्संग लाभ। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
धनु	अकारण क्रोध, बुद्धि भ्रम, निजी जन से हैरानी, कारोबार मध्यम, मासान्त में खुशी। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	शत्रु हानि, विवाद में जय, कार्य में सफलता के आसार, स्वास्थ्य नरम, लाभ अच्छा। मई २०, २१, २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	स्वास्थ्य बिगड़े, देर का उलझा कार्य बने, धर्म में रुचि, शत्रु निरुत्साह, कारोबार ठीक। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
मकर	निजी जनों से विरोध, लाभ से खर्च ज्यादा, शत्रु व राज-भय, कारोबार मध्यम। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	शत्रुओं से सावधान, उदर व वस्त्र पीड़ा, चोट भय, गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा। मई १४, १५ २२ २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	निजी जन द्वारा हैरानी, स्वास्थ्य मध्यम, वृथा खर्च, लाभ अच्छा, बड़े पुरुष से मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९. जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
कुम्भ	लाभ अच्छा, स्वास्थ्य ठीक, बन्धुओं से खुशी, मासान्त में अकस्मात् चिन्ता। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	कारोबार की नई समस्या, लाभ मध्यम, किसी कार्य में असफलता से हैरानी, शुभ यात्रा, पशु पीड़ा। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	घरेलू चिन्ताएं बढ़ें, मित्र व बन्धुओं से वैमनस्य, नेत्र व मस्तक में पीड़ा, मासान्त में लाभ। जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
मीन	शुभ में प्रवृत्ति. चित्त खिन्न, लाभ हाथ से निकले, लेन-देन चिन्ता, चिड़ियों को चोगा डालना शुभ है। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, प्रिय जन चिन्ता, कारोबार सुधरे, शत्रु परास्त, सुखद यात्रा, पशु लाभ। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून, ४ ५, ६, १४ अशुभ।	मास श्रेष्ठ है, सावधानी से काम करें, लाभ हो, वंश वृद्धि, शुभ में खर्च, विवाद में जय, मित्र मिलाप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।

नोट—यह राशिफल सामूहिक रूप से मिलता है; विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइये।

...राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन १९७१)

द्वादश-राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	श्रावण (१६ जुला. से १५ अग. तक)	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सितं. तक)	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	विशेष परिश्रम से कुछ लाभ, शुभ में प्रवृत्ति, मित्र आदि से विवाद, वायु विकार। जुला, २२, २३, २४, अग. १, २, ९. १०, ११ अशुभ।	प्रतिष्ठा-हानि का भय, मकान आदि की चिन्ता, कारोबार कमजोर, मास के पूर्वार्द्ध में लाभ। अग. १८. १९, २०, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सहयोगियों से हानि, परिश्रम से शरीर व्यथित हो, लेन-देन सम्बन्धी विवाद। सितं. २४, २५, २६; अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
वृष	लाभ अच्छा, मासान्त में सफलता की आशा. पैर व उदर में पीड़ा। जुला. १६ १७, २४, २५, २६. अग. ३, ४ ,५, ११, १२, १३ अशुभ।	सन्धि पीड़ा, वायु विकार, लाभ हाथ से निकले, कारोबार ढीला, खर्च ज्यादा। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	पैर व छाती में पीड़ा, असफलता से उदासी, दूसरे सप्ताह के बाद कुछ लाभ। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
मिथुन	सम्पत्ति चिन्ता, मास के मध्य में अचानक लाभ, मार्ग में भय, कारोबार अव्यवस्थित। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७. १४, १५ अशुभ।	कारोबार से साधारण लाभ, कार्यान्त व स्थानान्तर का विचार, बेखबरी से हैरानी, शत्रु बढ़ें। अग. २३, २४, २५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	कारोबार की अव्यवस्था से चिन्ता, लाभ कम, खर्च ज्यादा, अशुभ समाचार, विवाद से हानि, । सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य नर्म, लाभ मध्यम, शुभ में प्रवृत्ति, मास के अन्त में वृथा खर्च। जुला १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	कारोबार बढ़ाने का सफल विचार, स्त्री व पुत्र द्वारा खर्च, शुरु में नई चिन्ताएं. परिणाम शुभ। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	मास शुभ है, सन्तान से खुशी, व्यवसाय में लाभ, शुभ यात्रा, वायु विकार। सितं. २२, २३, २४ अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
सिंह	स्थायी कारोबार के अतिरिक्त भी लाभ, पुत्र-बन्धु आदि से प्रसन्नता, धर्म में व्यय। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	जायदाद की चिन्ता, अचानक यात्रा, शत्रु परास्त, विवाद में जय, लाभ अच्छा, अग. १८. १९ २०, २८, २९, ३०, सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	प्रतिष्ठा बढ़े, काम बने, स्वास्थ्य में कुछ बिगाड़, परिणाम शुभ, लाभ मध्यम। सितं २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
कन्या	वायु पीड़ा से भय, लाभ का अवसर मिले, चिन्ताओं से मुक्ति, शिवार्चन करें। जुला. १६, १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११, १२, १३ अशुभ।	निजी जन को कष्ट, बड़े लाभ में रुकावट, शुभ में प्रवृत्ति, विवाद में जय। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१, सितं. १, ८, ९ अशुभ।	मास मध्यम, गृह कलह, इच्छा अनुसार सफलता नहीं, अल्प लाभ, व्यय अधिक। सितं. १७, १८, १९, २७, २८; अक्तू. ५. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
तुला	विशेष परिश्रम से अल्प लाभ, अनेक चिन्ताएं, वायु. कफ विकार, गुप्त शत्रु भय, पशु पीड़ा। जुला. १७, १८ १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५, अशुभ	लाभ न मिलने से कष्ट, राज भय, बन्धु से वैमनस्य, तीसरे सप्ताह में अस्वस्थता का डर। अग. २३, २४, २५, सितं. २, ३, १०, ११, अशुभ।	मित्र वियोग, बड़े लाभ का ख्याल छोड़ मिलता लाभ लें, चिन्ताएं बनें, दुर्गा पूजन कल्याणप्रद। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
वृश्चि.	स्त्री-पक्ष से चिन्ता, वृथा व्यय, शत्रु पीड़ा, पुत्र आदि से खुशी, स्वास्थ्य नरम, लाभ मध्यम। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ० अशुभ।	परेशानियां दूर हों, सज्जन मिलाप, लाभ कम, खर्च ज्यादा, वृथा यात्रा। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७, सितं. ४, ५, १२, १३ १४ अशुभ।	सुख समृद्धि बढ़े, कारोबार से लाभ, धर्म मे रुचि, कफ-वायु विकार, अचानक चिन्ता। सितं २२, २३, २४, अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
धन	उदर व सन्धियों में पीड़ा, कोष में कमी का अनुभव, सट्टे आदि से बचें, राजपक्ष शुभ। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	चित्त उदास, कारोबार मध्यम, विवाद में जय, अस्थायी उद्योग से लाभ। अग. १८, १९ २०, २८, २९, ३०; सितंबर ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सट्टे आदिसे हानि, लेन-देन की चिन्ता, सत-पुरुषों की सम्मति से मन शान्त। सितं. २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
मकर	अचानक शत्रु भय, ठगों से सावधान, गत मास की अपेक्षा लाभ कम, नये २ असफल विचार। जुला. १६, १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११. १२, १३ अशुभ	प्रतिष्ठा बढ़े, अस्वस्थता से उदासीनता, कारोबार में सामान्य सफलता, सन्तति चिन्ता, । अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	अचानक रोग व शत्रु भय, लाभ साधारण, मित्रों से सन्तोष, नये काम का विचार, धर्म में व्यय। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ
कुम्भ	अनिष्ट भय, जबान पर संयम रखें, सन्तान से सुख, पैर व उदर पीड़ा। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	बुद्धि भ्रम, स्वयं ही कामों को बिगाड़ कर पश्चाताप, लेन-देन चिन्ता, लाभ से खर्च ज्यादा। अग. २३, २४, २५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	विवाद भय, कारोबार कमजोर, पड़ौसी व मित्रों से अनबन, लाभ हाथ से निकले। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
मीन	पराक्रम बढ़े, धर्म में रुचि, पित्त व रक्त विकार से कष्ट, जल व अग्नि से भय, कारोबार कुछ ढीला। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ कुछ अच्छा, शुभ समाचार मिलें, मान बढ़े, घर की स्थिति सुधरे। अग. १६. १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	हिम्मत बढ़े, कारोबार ठीक, राजपक्ष से जय, शुभ कार्य में खर्च, शत्रु निरुत्साह। सितं. २२, २३, २४; अक्तू. १, ३, ९, १०, ११ अशुभ।

नोट—इस राशिफल सामूहिक रूप से मिलता है; विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइए।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश, सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	वैशाख (१४ अप्रै. से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जन तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	लाभ अच्छा, निजी जन से विवाद, घरेलू झंझट, नित्य कर्म में बाधा, वायु विकार। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	मित्र वैमनस्य, विशेष परिश्रम से लाभ कम, अकारण विवाद का भय, संयम से रहें। मई २०, २१, २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ	घर वालों से मन मुटाव, आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में आर्थिक स्थिति कुछ सुधरे। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुलाई ४, ५ ६, १३, १४, १५ अशुभ
वृष	कारोबार यथावत् चले, स्त्री व सन्तति चिंता, विवाद, शुभ यात्रा। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	कोई आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में लाभ, सेहत बिगड़े, विदेश यात्रा भय। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	अस्थिर विचार, जीव-जन्तु भय, सज्जनों से कुछ लाभ, स्थाई कारोबार की चिन्ता। स्थानान्तर का विचार। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७,८,१५ अशुभ।
मिथुन	जन विरोध से हैरानी, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार से लाभ, शुभ यात्रा, स्वास्थ्य ठीक। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	स्वास्थ्य कमजोर, कारोबार में सफलता, गुप्त शत्रु से सावधान, शुभ कार्यों व वस्त्रों में खर्च। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३, अशुभ।	घरेलू झंझटों से हैरानी, लाभ से खर्च ज्यादा, मित्रों से मन-मुटाव, विशेष परिश्रम से लाभ, जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, शुभ में खर्च, यात्रा-प्रसंग, सन्तति सुख, अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	उदर विकार, शत्रु भय, अचानक लाभ, कार्य में सफलता के आसार, मित्र मिलाप। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ६, १४, अशुभ।	नये उद्योग का आयोजन, स्त्री-पुत्र द्वारा विशेष खर्च, कार्यान्तर का विचार, लाभ अच्छा, पित्त प्रकोप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
सिंह	स्त्री से सन्तोष, सन्तान द्वारा खर्च, कुछ लेन-देन का विवाद, लाभ मध्यम। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	कारोबार में कुछ उन्नति, निजी जनों से स्नेह सम्बन्ध अच्छा, यात्रा में कष्ट। मई २०, २१ २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ अच्छा, शुभ में खर्च, प्रतिष्ठा बढ़े। शत्रु परास्त, सोचे काम बनें, पशु लाभ। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
कन्या	चित्त अशान्त, सम्पत्ति-चिन्ता, पशु-पीड़ा, शिवार्चन करना कल्याणप्रद। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	सन्तान द्वारा वृथा खर्च और चिन्ता, स्त्री सन्तोष, धर्म में अरुचि, वृथा यात्रा, वाहन से भय, पित्त पीड़ा। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	किसी व्यक्ति के उपचार आदि में खर्च, घर में अशान्ति, लाभ यथावत् मित्र मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५, अशुभ।
तुला	पराक्रम उत्तम, स्त्री-पुत्र विषयक चिन्ता, वृथा खर्च, लाभ होता रहे। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८, अशुभ।	कारोबार डांवाडोल, बड़े आदमी से बिगाड़, अशान्ति जीव से भय, चीटियों को तिल चावल डालें। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	स्वास्थ्य में बिगाड़, स्थाई काम व लेन-देन की चिन्ता, बन्धुओं की मदद से राहत मिले। जून २०, २१, २२, २९, ३० जुला. १, ९, १० अशुभ।
वृश्चि.	सट्टे आदि व्यापार से हानि शत्रु भय, स्वास्थ्य मध्यम, नौकर वा मित्र से विरोध, पशु लाभ। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, सन्तान से खुशी, लाभ अच्छा, स्त्री पक्ष से चिन्ता, यात्रा भय। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ५, १४ अशुभ।	कलंक का भय, जोखिम के काम से हानि, स्थाई कारोबार यथावत्, सत्संग लाभ। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
धनु	अकारण क्रोध, बुद्धि भ्रम, निजी जन से हैरानी, कारोबार मध्यम, मासान्त में खुशी। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	शत्रु हानि, विवाद में जय, कार्य में सफलता के आसार, स्वास्थ्य नरम, लाभ अच्छा। मई २०,२१,२८,२९,३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	स्वास्थ्य बिगड़े, देर का उलझा कार्य बने, धर्म में रुचि, शत्रु निरुत्साह, कारोबार ठीक। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
मकर	निजी जनों से विरोध, लाभ से खर्च ज्यादा, शत्रु व राज-भय, कारोबार मध्यम। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	शत्रुओं से सावधान, उदर व वस्त्र पीड़ा, चोट भय, गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा। मई १४, १५ २२ २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	निजी जन द्वारा हैरानी, स्वास्थ्य मध्यम, वृथा खर्च, लाभ अच्छा, बड़े पुरुष से मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९. जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
कुम्भ	लाभ अच्छा, स्वास्थ्य ठीक, बन्धुओं से खुशी, मासान्त में अकस्मात् चिन्ता। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	कारोबार की नई समस्या, लाभ मध्यम, किसी कार्य में असफलता से हैरानी, शुभ यात्रा, पशु पीड़ा। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	घरेलू चिन्ताएं बढ़ें, मित्र व बन्धुओं से वैमनस्य, नेत्र व मस्तक में पीड़ा, मासान्त में लाभ। जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
मीन	शुभ में प्रवृत्ति. चित्त खिन्न, लाभ हाथ से निकले, लेन-देन चिन्ता, चिड़ियों को चोगा डालना शुभ है। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, प्रिय जन चिन्ता, कारोबार सुधरे, शत्रु परास्त, सुखद यात्रा, पशु लाभ। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून, ४ ५, ६, १४ अशुभ।	मास श्रेष्ठ है, सावधानी से काम करें, लाभ हो, वंश वृद्धि, शुभ में खर्च, विवाद में जय, मित्र मिलाप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।

...रूप से मिलता है: विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइये।

...राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन १९७१)

द्वादश-राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	श्रावण (१६ जुला. से १५ अग. तक)	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सितं. तक)	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	विशेष परिश्रम से कुछ लाभ, शुभ में प्रवृत्ति, मित्र आदि से विवाद, वायु विकार। जुला, २२, २३, २४, अग. १, २, ९. १०, ११ अशुभ।	प्रतिष्ठा-हानि का भय, मकान आदि की चिन्ता, कारोबार कमजोर, मास के पूर्वार्ध में लाभ। अग. १८. १९, २०, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सहयोगियों से हानि, परिश्रम से शरीर व्यथित हो, लेन-देन सम्बन्धी विवाद। सितं. २४, २५, २६; अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
वृष	लाभ अच्छा, मासान्त में सफलता की आशा. पैर व उदर में पीड़ा। जुला. १६ १७, २४, २५, २६. अग. ३, ४ ,५, ११, १२, १३ अशुभ।	सन्धि पीड़ा, वायु विकार, लाभ हाथ से निकले, कारोबार ढीला, खर्च ज्यादा। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	पैर व छाती में पीड़ा, असफलता से उदासी, दूसरे सप्ताह के बाद कुछ लाभ। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
मिथुन	सम्पत्ति चिन्ता, मास के मध्य में अचानक लाभ, मार्ग में भय, कारोबार अव्यवस्थित। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	कारोबार से साधारण लाभ, कार्यान्ति व स्थानान्तर का विचार, बेबरकती से हैरानी, शत्रु बढ़ें। अग. २३, २४, २५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	कारोबार की अव्यवस्था से चिन्ता, लाभ कम, खर्च ज्यादा, अशुभ समाचार, विवाद से हानि। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य नर्म, लाभ मध्यम, शुभ में प्रवृत्ति, मास के अन्त में वृथा खर्च। जुला १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	कारोबार बढ़ाने का सफल विचार, स्त्री व पुत्र द्वारा खर्च, गृह में नई चिन्ताएं, परिणाम शुभ। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	मास शुभ है, सन्तान से खुशी, व्यवसाय में लाभ, शुभ यात्रा, वायु विकार। सितं. २२, २३, २४ अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
सिंह	स्थायी कारोबार के अतिरिक्त भी लाभ, पुत्र-बन्धु आदि से प्रसन्नता, धर्म में व्यय। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	जायदाद की चिन्ता, अचानक यात्रा, शत्रु परास्त, विवाद में जय, लाभ अच्छा, अग. १८. १९ २०, २८, २९, ३०, सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	प्रतिष्ठा बढ़े, काम बने, स्वास्थ्य में कुछ बिगाड़, परिणाम शुभ, लाभ मध्यम। सितं २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
कन्या	वायु पीड़ा से भय, लाभ का अवसर मिले, चिन्ताओं से मुक्ति, शिवार्चन करें। जुला. १६, १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११, १२, १३ अशुभ।	निजी जन को कष्ट, बड़े लाभ में रुकावट, शुभ में प्रवृत्ति, विवाद में जय। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१, सितं. १, ८, ९ अशुभ।	मास मध्यम, गृह कलह, इच्छा अनुसार सफलता नहीं, अल्प लाभ, व्यय अधिक। सितं. १७, १८, १९, २७, २८; अक्तू. ५. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
तुला	विशेष परिश्रम से अल्प लाभ, अनेक चिन्ताएं, वायु. कफ विकार, गुप्त शत्रु भय, पशु पीड़ा. । जुला. १७, १८ १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५,अशुभ	लाभ न मिलने से कष्ट, राज भय, बन्धु से वैमनस्य, तीसरे सप्ताह में अस्वस्थता का डर। अग. २३, २४, २५, सितं. २, ३. १०, ११, अशुभ।	मित्र वियोग, बड़े लाभ का ख्याल छोड़ मिलता लाभ लें, चिन्ताएं बनें, दुर्गा पूजन कल्याणप्रद। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
वृश्चि.	स्त्री-पक्ष से चिन्ता, वृथा व्यय, शत्रु पीड़ा, पुत्र आदि से खुशी, स्वास्थ्य नरम, लाभ मध्यम। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ० अशुभ।	परेशानियां दूर हों, सज्जन मिलाप, लाभ कम, खर्च ज्यादा, वृथा यात्रा। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७, सितं. ४, ५, १२, १३ १४ अशुभ।	सुख समृद्धि बढ़े, कारोबार से लाभ, धर्म में रुचि, कफ-वायु विकार, अचानक चिन्ता। सितं २२, २३, २४, अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
धन	उदर व सन्धियों में पीड़ा, कोष में कमी का अनुभव, सट्टे आदि से बचें, राजपक्ष शुभ। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	चित उदास, कारोबार मध्यम, विवाद में जय, अस्थायी उद्योग से लाभ। अग. १८,१९ २०, २८, २९, ३०; सितंबर ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सट्टे आदि से हानि, लेन-देन की चिन्ता, सत-पुरुषों की सम्मति से मन शान्त। सितं. २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
मकर	अचानक शत्रु भय, ठगों से सावधान, गत मास की अपेक्षा लाभ कम, नये २ असफल विचार। जुला. १६, १७, २४, २५, २६. अग. ३, ४, ५, ११. १२, १३ अशुभ	प्रतिष्ठा बढ़े, अस्वस्थता से उदासीनता, कारोबार में सामान्य सफलता, सन्तति चिन्ता, । अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	अचानक रोग व शत्रु भय, लाभ साधारण, मित्रों से सन्तोष, नये काम का विचार, धर्म में व्यय। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ
कुम्भ	अनिष्ट भय, जबान पर संयम रखें, सन्तान से सुख, पैर व उदर पीड़ा। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	बुद्धि भ्रम, स्वयं ही कामों को बिगाड़ कर पश्चाताप, लेन-देन चिन्ता, लाभ से खर्च ज्यादा। अग. २३,२४,२५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	विवाद भय, कारोबार कमजोर, पड़ोसी व मित्रों से अनबन, लाभ हाथ से निकले। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
मीन	पराक्रम बढ़े. धर्म में रुचि, पित्त व रक्त विकार से कष्ट, जल व अग्नि से भय, कारोबार कुछ ढीला। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ कुछ अच्छा, शुभ समाचार मिलें, मान बढ़ें, घर की स्थिति सुधरे। अग. १६. १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	हिम्मत बढ़े, कारोबार ठीक, राजपक्ष से जय, शुभ कार्य में खर्च, शत्रु निरुत्साह। सितं. २२, २३, २४; अक्तू. १, ३, ९, १०, ११ अशुभ।

नोट—उक्त फल सामूहिक रूप से मिलता है; विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइए।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश, सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	वैशाख (१४ अप्रै. से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जन तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	लाभ अच्छा, निजी जन से विवाद, घरेलू झंझट, नित्य कर्म में बाधा, वायु विकार। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	मित्र वैमनस्य, विशेष परिश्रम से लाभ क॰, अकारण विवाद का भय, संयम से रहें। मई २०,२१, २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ	घर वालों से मन मुटाव, आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में आर्थिक स्थिति कुछ सुधरे। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुलाई ४, ५ ६, १३, १४, १५ अशुभ
वृष	कारोबार यथावत् चले, स्त्री व सन्तति चिंता, विवाद, शुभ यात्रा। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	कोई आशा निराशा में बदले, मास के उत्तरार्ध में लाभ, सेहत बिगड़े, विदेश यात्रा भय। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	अस्थिर विचार, जीव-जन्तु भय, सज्जनों से कुछ लाभ, स्थाई कारोबार की चिन्ता। स्थानान्तर का विचार। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७,८,१५ अशुभ।
मिथुन	जन विशेष से हैरानी, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार से लाभ, शुभ यात्रा, स्वास्थ्य ठीक। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	स्वास्थ्य कमजोर, कारोबार में सफलता, गुप्त शत्रु से सावधान, शुभ कार्यों व वस्त्रों में खर्च। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३, अशुभ।	घरेलू झंझटों से हैरानी, लाभ से खर्च ज्यादा, मित्रों से मन-मुटाव, विशेष परिश्रम से लाभ, जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, शुभ में खर्च, यात्रा-प्रसंग, सन्तति सुख, अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	उदर विकार, शत्रु भय, अचानक लाभ, कार्य में सफलता के आसार, मित्र मिलाप। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ६, १४, अशुभ।	नये उद्योग का आयोजन, स्त्री-पुत्र द्वारा विशेष खर्च, कार्यान्तिर का विचार, लाभ अच्छा, पित्त प्रकोप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
सिंह	स्त्री से सन्तोष, सन्तान द्वारा खर्च, कुछ लेन-देन का विवाद, लाभ मध्यम। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	कारोबार में कुछ उन्नति, निजी जनों से स्नेह सम्बन्ध अच्छा, यात्रा में कष्ट। मई २०, २१ २८, २९, ३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ अच्छा, शुभ में खर्च, प्रतिष्ठा बढ़े। शत्रु परास्त, सोचे काम बनें, पशु लाभ। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
कन्या	चित्त अशान्त, सम्पत्ति-चिन्ता, पशु-पीड़ा, शिवार्चन करना कल्याणप्रद। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	सन्तान द्वारा वृथा खर्च और चिन्ता, स्त्री सन्तोष, धर्म में अरुचि, वृथा यात्रा, वाहन से भय, पित्त पीड़ा। मई १४, १५, २२, २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	किसी व्यक्ति के उपचार आदि में खर्च, घर में अशान्ति, लाभ यथावत् मित्र मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९, जुला. ७, ८, १५, अशुभ।
तुला	पराक्रम उत्तम, स्त्री-पुत्र विषयक चिन्ता, वृथा खर्च, लाभ होता रहे। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८, अशुभ।	कारोबार डांवाडोल, बड़े आदमी से बिगाड़, अशान्ति जीव से भय, चीटियों को तिल चावल डालें। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	स्वास्थ्य में बिगाड़, स्थाई काम व लेन-देन की चिन्ता, बन्धुओं की मदद से राहत मिले। जून २०, २१, २२, २९, ३० जुला. १, ९, १० अशुभ।
वृश्चि.	सट्टे आदि व्यापार से हानि शत्रु भय, स्वास्थ्य मध्यम, नौकर वा मित्र से विरोध, पशु लाभ। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, सन्तान से खुशी, लाभ अच्छा, स्त्री पक्ष से चिन्ता, यात्रा भय। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून ४, ५, ५, १४ अशुभ।	कलंक का भय, जोखिम के काम से हानि, स्थाई कारोबार यथावत्, सत्संग लाभ। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।
धनु	अकारण क्रोध, बुद्धि भ्रम, निजी जन से हैरानी, कारोबार मध्यम, मासान्त में खुशी। अप्रै. १४, १५, २२, २३, २४, मई १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	शत्रु हानि, विवाद में जय, कार्य में सफलता के आसार, स्वास्थ्य नरम, लाभ अच्छा। मई २०,२१,२८,२९,३०, जून ७, ८, ९ अशुभ।	स्वास्थ्य बिगड़े, देर का उलझा कार्य बने, धर्म में रुचि, शत्रु निरुत्साह, कारोबार ठीक। जून १६, १७, २४, २५, २६, जुला. ४, ५, ६, १३, १४, १५ अशुभ।
मकर	निजी जनों से विरोध, लाभ से खर्च ज्यादा, शत्रु व राज-भय, कारोबार मध्यम। अप्रै. १६, १७, १८, २४, २५, २६, मई ३, ४, ५, १३ अशुभ।	शत्रुओं से सावधान, उदर व वस्त्र पीड़ा, चोट भय, गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा। मई १४, १५ २२ २३, ३१, जून १, ९, १०, ११ अशुभ।	निजी जन द्वारा हैरानी, स्वास्थ्य मध्यम, वृथा खर्च, लाभ अच्छा, बड़े पुरुष से मिलाप। जून १८, १९, २०, २७, २८, २९. जुला. ७, ८, १५ अशुभ।
कुम्भ	लाभ अच्छा, स्वास्थ्य ठीक, बन्धुओं से खुशी, मासान्त में अकस्मात् चिन्ता। अप्रै. १८, १९, २०, २६, २७, २८, मई ६, ७, ८ अशुभ।	कारोबार की नई समस्या, लाभ मध्यम, किसी कार्य में असफलता से हैरानी, शुभ यात्रा, पशु पीड़ा। मई १५, १६, १७, २४, २५, जून २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	घरेलू चिन्ताएं बढ़ें, मित्र व बन्धुओं से वैमनस्य, नेत्र व मस्तक में पीड़ा, मासान्त में लाभ। जून २०, २१, २२, २९, ३०, जुला. १, ९, १० अशुभ।
मीन	शुभ में प्रवृत्ति. चित्त खिन्न, लाभ हाथ से निकले, लेन-देन चिन्ता, चिड़ियों को चोगा डालना शुभ है। अप्रै. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, मई ८, ९, १० अशुभ।	स्वास्थ्य ठीक, प्रिय जन चिन्ता, कारोबार सुधरे, शत्रु परास्त, सुखद यात्रा, पशु लाभ। मई १७, १८, १९, २६, २७, २८, जून, ४ ५, ६, १४ अशुभ।	मास श्रेष्ठ है, सावधानी से काम करें, लाभ हो, वंश वृद्धि, शुभ में खर्च, विवाद में जय, मित्र मिलाप। जून २२, २३, २४, जुला. २, ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।

विशेष फलादेश के लिए वर्षफल देखिए ।

द्वादश-राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन १९७१)

द्वादश-राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२८ वि० (सन् १९७१)

राशि	श्रावण (१६ जुला. से १५ अग. तक)	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सितं. तक)	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्त. तक)
मेष	विशेष परिश्रम से कुछ लाभ, शुभ में प्रवृत्ति, मित्र आदि से विवाद, वायु विकार। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	प्रतिष्ठा-हानि का भय, मकान आदि की चिन्ता, कारोबार कमजोर, मास के पूर्वार्द्ध में लाभ। अग. १८, १९, २०, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सहयोगियों से हानि, परिश्रम से शरीर व्यथित हो, लेन-देन सम्बन्धी विवाद। सितं. २४, २५, २६; अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
वृष	लाभ अच्छा, मासान्त में सफलता की आशा, पैर व उदर में पीड़ा। जुला. १६ १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११, १२, १३ अशुभ।	सन्धि पीड़ा, वायु विकार, लाभ हाथ से निकले, कारोबार ढीला, खर्च ज्यादा। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	पैर व छाती में पीड़ा, असफलता से उदासी, दूसरे सप्ताह के बाद कुछ लाभ। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
मिथुन	सम्पत्ति चिन्ता, मास के मध्य में अचानक लाभ, मार्ग में भय, कारोबार अव्यवस्थित। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	कारोबार से साधारण लाभ, कार्यान्ति व स्थानान्तर का विचार, बेबरकती से हैरानी, शत्रु बढ़ें। अग. २३, २४, २५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	कारोबार की अव्यवस्था से चिन्ता, लाभ कम, खर्च ज्यादा, अशुभ समाचार, विवाद से हानि, । सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
कर्क	स्वास्थ्य नर्म, लाभ मध्यम, शुभ में प्रवृत्ति, मास के अन्त में वृथा खर्च। जुला १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	कारोबार बढ़ाने का सफल विचार, स्त्री व पुत्र द्वारा खर्च, शुरु में नई चिन्ताएं, परिणाम शुभ। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	मास शुभ है, सन्तान से खुशी, व्यवसाय में लाभ, शुभ यात्रा, वायु विकार। सितं. २२, २३, २४ अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
सिंह	स्थायी कारोबार के अतिरिक्त भी लाभ, पुत्र-बन्धु आदि से प्रसन्नता, धर्म में व्यय। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	जायदाद की चिन्ता, अचानक यात्रा, शत्रु परास्त, विवाद में जय, लाभ अच्छा, अग. १८. १९ २०, २८, २९, ३०, सितं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	प्रतिष्ठा बढ़े, काम बने, स्वास्थ्य में कुछ बिगाड़, परिणाम शुभ, लाभ मध्यम। सितं २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
कन्या	वायु पीड़ा से भय, लाभ का अवसर मिले, चिन्ताओं से मुक्ति, शिवार्चन करें। जुला. १६, १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११, १२, १३ अशुभ।	निजी जन को कष्ट, बड़े लाभ में रुकावट, शुभ में प्रवृत्ति, विवाद में जय। अग. २०, २१, २२, ३०, ३१, सितं. १, ८, ९ अशुभ।	मास मध्यम, गृह कलह, इच्छा अनुसार सफलता नहीं, अल्प लाभ, व्यय अधिक। सितं. १७, १८, १९, २७, २८; अक्तू. ५. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।
तुला	विशेष परिश्रम से अल्प लाभ, अनेक चिन्ताएं, वायु. कफ विकार, गुप्त शत्रु भय, पशु पीड़ा। जुला. १७, १८ १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५,अशुभ	लाभ न मिलने से कष्ट, राज भय, बन्धु से वैमनस्य, तीसरे सप्ताह में अस्वस्थता का डर। अग. २३, २४, २५, सितं. २, ३, १०, ११, अशुभ।	मित्र वियोग, बड़े लाभ का ख्याल छोड़ मिलता लाभ लें, चिन्ताएं बनें, दुर्गा पूजन कल्याणप्रद। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
वृश्चिक	स्त्री-पक्ष से चिन्ता, वृथा व्यय, शत्रु पीड़ा, पुत्र आदि से खुशी, स्वास्थ्य नरम, लाभ मध्यम। जुला.१९,२०,२१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ० अशुभ।	परेशानियां दूर हों, सज्जन मिलाप, लाभ कम, खर्च ज्यादा, वृथा यात्रा। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७, सितं. ४, ५, १२, १३ १४ अशुभ।	सुख समृद्धि बढ़े, कारोबार से लाभ, धर्म मे रुचि, कफ-वायु विकार, अचानक चिन्ता। सितं २२, २३, २४, अक्तू. १, २, ३, ९, १०, ११ अशुभ।
धनु	उदर व सन्धियों में पीड़ा, कोष में कमी का अनुभव, सट्टे आदि से बचें, राजपक्ष शुभ। जुला. २२, २३, २४, अग. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	चित उदास, कारोबार मध्यम, विवाद में जय, अस्थायी उद्योग से लाभ। अग. १८,१९ २०, २८, २९, ३०; सितंबर ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सट्टे आदिसे हानि, लेन-देन की चिन्ता, सत-पुरुषों की सम्मति से मन शान्त। सितं. २४, २५, २६, अक्तू. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।
मकर	अचानक शत्रु भय, ठगों से सावधान, गत मास की अपेक्षा लाभ कम, नये २ असफल विचार। जुला. १६, १७, २४, २५, २६, अग. ३, ४, ५, ११, १२, १३ अशुभ	प्रतिष्ठा बढ़े, अस्वस्थता से उदासीनता, कारोबार में सामान्य सफलता, सन्तति चिन्ता, । अग. २०, २१, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ अशुभ।	अचानक रोग व शत्रु भय, लाभ साधारण, मित्रों से सन्तोष, नये काम का विचार, धर्म में व्यय। सितं. १७, १८, १९, २७, २८, अक्तू. ५, ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ
कुम्भ	अनिष्ट भय, जबान पर संयम रखें, सन्तान से सुख, पैर व उदर पीड़ा। जुला. १७, १८, १९, २७, २८, २९, अग. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	बुद्धि भ्रम, स्वयं ही कामों को बिगाड़ कर पश्चात्ताप, लेन-देन चिन्ता, लाभ से खर्च ज्यादा। अग. २३,२४,२५; सितं. २, ३, १०, ११ अशुभ।	विवाद भय, कारोबार कमजोर, पड़ोसी व मित्रों से अनबन, लाभ हाथ से निकले। सितं. १९, २०, २१, २९, ३०, अक्तू. १, ७, ८, ९, १६ अशुभ।
मीन	पराक्रम बढ़े, धर्म में रुचि, पित व रक्त विकार से कष्ट, जल व अग्नि से भय, कारोबार कुछ ढीला। जुला. १९, २०, २१, २९, ३०, ३१, अग. ७, ८, ९ अशुभ।	लाभ कुछ अच्छा, शुभ समाचार मिलें, मान बढ़ें, घर की स्थिति सुधरे। अग. १६, १७, १८, २५, २६, २७; सितं. ४, ५, १२, १३, १४ अशुभ।	हिम्मत बढ़े, कारोबार ठीक, राजपक्ष से जय, शुभ कार्य में खर्च, शत्रु निरुत्साह। सितं. २२, २३, २४; अक्तू. १, ३, ९, १०, ११ अशुभ।

नोट—यह राशिफल सामूहिक रूप से मिलता है; विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइए।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं. २०२८ वि. (सन् १९७१-७२)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तू. से १५ नवं. तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवं. से १५ दिसं. तक)	पौष (१६ दिसं. १९७१ से १३ जन. १९७२ तक)
मेष	घरेलू जन व मित्रों से वैमनस्य, लाभ के कामों में विघ्न, मास के उत्तरार्ध में नयी आशायें, शिवार्चन से मनः शान्ति। अक्तू. २१,२२,२३,३१, नवं १,८,९,१०अशुभ।	गुप्त चिन्ता, विवाद से हानि-भय, लाभ हाथ से निकले, स्वास्थ्य कमजोर। नवं. १८, १९, २०, २७, २८, २९, दिसं. ५, ६, ७, १५ अशुभ।	मन अशान्त, व्यय विशेष, व्यवसाय में उलझन, अजनबी से हानि भय, मास के उत्तरार्ध में कुछ लाभ। दिसं. १६, १७, २४,२५,२६, जन. २.३,११,१२,१३अशुभ
वृष	श्लेष्म, जुकामादि से कष्ट, मित्र की मदद से लाभ, स्थानान्तर विचार, शत्रुओं से भय। अक्तू. २४, २५, २६; नवं. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	वृथा खर्च, प्रिय जनों से अनबन, स्वास्थ्य में बिगाड़, विशेष परिश्रम से गृहस्थ का निर्वाह हो। नवं. २०,२१, २२, २९, ३०, दिसं. १, ८, ९ अशुभ।	व्यवसाय में हानि, विश्वासघात भय, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, पुत्र व स्त्री पक्ष शुभ। दिसं.१८, १९, २६, २७, २८, जन. ४, ५, ६ अशुभ।
मिथुन	गुप्त चिन्ता, व्यवसाय में लाभ, लेन-देन में खर्च, पैसे की तंगी, झगड़े का डर, हानि का भय। अक्तू. १७, १८, २६, २७, २८; नवं. ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	बन्धुओं से सहयोग की आशा न रखें, लाभ कम, बौद्धिक उलझनें, शत्रु भय, नवं. २३, २४. दिसं. १, २ ३, १०, ११, १२ अशुभ।	स्वयं हानि वाला कार्य कर बैठेंगे, सज्जन से लाभ, निजी जन द्वारा अपमान, धर्म में रुचि, दिसं. २०, २१, २८. २९, ३०, जन. ६, ७, ८ अशुभ।
कर्क	आर्थिक स्थिति सुधरे, मान वृद्धि, वस्त्रादि में खर्च हो। अक्तू. १९, २०, २१, २९, ३०; नवं. ६, ७, १५ अशुभ।	सन्तान से खुशी, प्रयासों में सफलता, व्यवसाय में लाभ, स्वास्थ्य ठीक, गुप्त शत्रु से सावधान। नवं. २५, २६, दिसं ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	प्रतिष्ठा बढ़े, लाभ मध्यम, योजनाएं अपूर्ण, चोट व रोग भय, यात्रा प्रसंग बने। दिसं २२ २३, २४, ३१, जन. १, ९, १०, ११ अशुभ।
सिंह	कारोबार से लाभ, मन प्रसन्न, शत्रु निरुत्साह, मासान्त में गुप्त चिन्ता। अक्तू. २१, २२, २३, ३१; नवं. १, ८, ९, १० अशुभ	वृथा खर्च, अकारण गृह कलह, लाभ यथावत्, चापलूसों से बचें, सन्तान व स्त्री चिन्ता। नवं. १८, १९, २०. २७, २८, २९, दिसं. ५, ६, ७, १५ अशुभ।	लाभके साथ हानि-भय, पशु लाभ, विवाद में जय, आमोद प्रमोद में व्यय। दिसं. १६, १७, २४, २५, २६, जन. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।
कन्या	स्वास्थ्य ठीक, लाभ खर्च सम, यात्रा प्रसंग, शोकप्रद समाचार से कष्ट, ठगी वा चोरी का भय। अक्तू. २४, २५, २६; नवं. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	विवाद में जय, शत्रु निरुत्साह, विलासिता में खर्च अधिक, धर्म में अरुचि। नवं. २०, २१, २२, २९. ३०, दिसं. १, ८, ९ अशुभ।	मास श्रेष्ठ है, स्वास्थ्य सुधरे, अचिन्तित लाभ, यात्रा में भय, सन्तति चिन्ता, नई योजना। दिसं. १८, १९, २६, २७, २८, जन. ४, ५, ६ अशुभ।
तुला	शत्रुभय, कारोबार कुछ ठीक, चित्त अशान्त, विवाद से हानि, अक्तू. १७, १८, २६, २७, २८, नवं. ४, ५, १३, १४ १५ अशुभ।	उच्चाधिकारियों से सावधान, व्यवसायातिरिक्त किसी अन्य ढंग से लाभ, सन्तति पक्ष से चिन्ता, खर्च अधिक नवं. २३, २४, दिसं. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	कोई नई समस्या उत्पन्न हो, कारोबार ढीला, उत्तरार्ध में लाभ, प्रिय जन को कष्ट, वृथा व्यय। दिसं. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, जन. ६, ७, ८ अशुभ।
वृश्चि.	मास श्रेष्ठ है, लाभ अच्छा, पार्टीबाजी से दूर रहें, हानि भय है, राज्य पक्ष शुभ, स्वास्थ्य नरम। अक्तू. १९, २०, २१, २१, २९, ३०; नवं. ६. ७, १५ अशुभ।	परिस्थितियों में सुधार, व्यवसाय बढ़े, स्त्री सुख में बाधा, मित्र मिलाप, मान वृद्धि। नवं. २५, २६, दिसं. ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	सहयोगियों से संघर्ष, लाभ मध्यम, प्रियजन को कष्ट। स्वास्थ्य ठीक। दिसं. २२, २३, २४, ३१ जन. १, ९, १०, ११, अशुभ।
धनु	इच्छित काम न बनने से निराशा, वाहन भय, नीच से हानि भय, लाभ मध्यम, नई योजना। अक्तू. २१, २२, २३, ३१; नवं. १, ८, ९, १० अशुभ।	अच्छे लाभ की आशा, प्रभाव बढ़े, प्रिय मिलाप से खुशी, स्वास्थ्य कुछ नरम। नवं. १८, १९, २०, २७, २८, २९, दिसं. ५, ६, ७, १५ अशुभ।	धन हानि-भय, शत्रु निरुत्साह, प्रिय जन चिन्ता, वृथा यात्रा, खर्च अधिक। दिसं. १६, १७ २४, २५ २६ जन. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।
मकर	सज्जन की सलाह से लाभ, मित्र व सेवक से अनबन, सन्तति चिन्ता, कार्य में विघ्न। अक्तू. २४, २५, २६; नवं. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	मेहमानों और प्रिय जनों से भेंट, लाभ अच्छा, अशुभ विचार अधिक, मस्तक व छाती में पीड़ा। नवं. २०, २१, २२, २९. ३०, दिसं. १, ८, ९ अशुभ।	अचानक रोग व दुष्ट भय, सन्तति से खर्च, दौड़ धूप, कारोबार पूर्ववत्, शुभ में प्रवृति, वाहन सुख। दिसं. १८, १९, २६, २७, २८, जन. ४, ५, ६ अशुभ
कुम्भ	दुष्टों से सावधान, विश्वास घात का डर, संचित धन हानि सें चिन्ता, नये काम में जल्दी न करें। अक्तू, १७, १८, २६, २७, २८; नवं. ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	स्थाई व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य काम से कुछ लाभ, व्यवसाय की चिन्ता, मन खिन्न, विवाद से हानि। नवं. २३, २४, दिसं. १, २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	आर्थिक स्थिति खराब, स्नेह सम्बन्ध में असफलता, गृह कलह, मन अशान्त। दिसं. २०, २१, २२, २८, २९, ३०, जन. ६, ७, ८ अशुभ।
मीन	भाग्य वृद्धि, मित्र बन्धु मिलाप, शुभ कृत्य की योजना, लाभ अच्छा, स्वास्थ्य बिगड़े, परिणाम अच्छा। अक्तू. १९, २०, २१, २९, ३०; नवं. ६, ७, १५ अशुभ।	बड़े आदमियों की मदद, कार्य सफल, हिम्मत बढ़े खर्च अधिक, लाभ पूर्ववत्। नवं. २५, २६, दिसं. ३, ४, ५, १३, १४, १५ अशुभ।	मनोरंजन हो, वस्त्रादि पर खर्च, बिना प्रयास के लाभ, मित्र मिलाप, खान-पान उत्तम। दिसं. २२, २३, २४, ३१, जन. १, ९, १०, ११ अशुभ।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं. २०२८ वि. (सन् १९७२)

राशि	माघ (१४ जन. से १२ फर. तक)	फाल्गुन (१३ फर. से १२ मार्च. तक)	चैत्र (१३ मार्च. से १२ अप्रै. तक)
मेष	लाभ अच्छा, खर्च बहुत ज्यादा, उच्चाधिकारियों से भय, छाती व पैरों में कष्ट। जन. २०, २१, २२, २९, ३०, ३१; फर. ८, ९, १० अशुभ।	आर्थिक चिन्ता, कार्य निर्वाह जैसे-तैसे हो, स्त्री पुत्र से कष्ट, वायु विकार। फर. १७, १८, २५, २६, २७; मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	राजा व शत्रु से भय, गृह-कलह, धन-हानि, मित्र की मदद से कुछ चिन्ता मिटे। मार्च १५, १६, १७, २४, २५; अप्रै. २, ३, ४, १२ अशुभ।
वृष	कफ वायु से पीड़ा, मित्रों की मदद से हिम्मत, कार्य में विघ्न, चिन्ता, लाभ से खर्च अधिक। जन. १४, १५, १६, २३, २४, ३१; फर. १, २, १०, ११ अशुभ।	कारोबार उन्नति के लिए दौड़-धूप, लाभ कम, मिथ्या अपवाद, वाहन भय, नयी चिन्ता। फर. १९, २०, २८, २९, मार्च १, ९, १० अशुभ।	कारोबार में बाधा, स्वास्थ्य नरम, वायु विकार, प्रिय जन से मन मुटाव, मासान्त में चित्त कुछ शान्त। मार्च १७, १८, १९, २६, २७, २८; अप्रै. ५, ६, ७ अशुभ।
मिथुन	स्वास्थ्य की चिन्ता, सहयोगी से बिगाड़, प्रिय-वियोग, घरेलू उलझनों से उदासी। जन. १६, १७, १८, २५, २६; फर. ३, ४, ५ अशुभ।	स्वभाव में चिड़चिड़ापन, प्रिय जन चिन्ता, लाभ कम, धर्म कर्म में रुचि, फर. १३, १४, २१, २२, २३; मार्च १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	लाभ के चान्स, राज-पक्ष मध्यम, अकारण क्लेश, चिन्ता, खर्च अधिक, दुर्गार्चन करें। मार्च १९, २०, २१, २८, २९, ३०; अप्रै. ७, ८, ९ अशुभ।
कर्क	कारोबार की चिन्ता कुछ दूर, लाभ अच्छा, शत्रुओं से सावधान, प्रिय मिलाप, स्त्री पक्ष से सुख। जन. १८, १९, २०, २७, २८, २९; फर. ५, ६, ७ अशुभ।	जुकाम, छाती आदि में पीड़ा, लाभ के चांस, शुभ में खर्च, प्रिय मिलाप। फर. १५, १६, २३, २४, २५; मार्च ४, ५, ६ अशुभ।	शुभ कार्य की योजना, मित्र मिलाप, कारोबार ठीक, वाहन भय, उदर विकार। मार्च १३, १४, १५, २१, २२, २३, ३१; अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
सिंह	प्रिय-जन के लिये खर्च, सम्पत्ति चिन्ता, कारोबार व यात्रा में ठगी का भय, सन्तान व स्त्री से सन्तोष। जन. २०, २१, २२, ३०, ३१; फर. ८, ९, १० अशुभ।	उदर विकार, आत्मीय-जनों से सुख, स्वपराक्रम से लाभ, यात्रा का संयोग, दुस्वप्न से चिन्ता। फर. १७, १८, २५, २६, २७; मार्च ११, १२ अशुभ।	स्वास्थ्य में बिगाड़, शुभ में प्रवृत्ति, लाभ हो, मान वृद्धि, घर में सन्तोष। मार्च १५, १६, १७, २४, २५; अप्रै. २, ३, ४, १२ अशुभ।
कन्या	पशु आदि से लाभ, विवाद भय, कारोबार मध्यम, सत्संग का सुख, गुप्त चिन्ता। जन. १४, १५, १६, २३, २४, ३१; फर. १, २, १०, ११ अशुभ।	शुभ कार्य की योजना, मासान्त में लाभ, मित्रों से सहयोग, कुलवृद्धि, स्त्री से सन्तोष। फर. १९, २०, २८, २९, मार्च १, ९, १० अशुभ।	शत्रु भय, व्यवसाय उत्तम, लाभ हो, सन्तति व प्रिय जन चिन्ता, यात्रा भय, मार्च १७, १८, १९, २६, २७, २८; अप्रै. ५, ६, ७ अशुभ।
तुला	परिश्रम से कुछ लाभ, कारोबार में मनचाही सफलता नहीं, शुभ में खर्च, सत्संग लाभ। १६, १७, १८, २५, २६; फर. ३, ४, ५ अशुभ।	लोकापवाद भय, पैसे की तंगी, कारोबार ढीला, विवाद से हानि, शत्रु पीड़ा। फर. १३, १४, २१, २२, २३, मार्च १, २, ३, ११, १२ अशुभ।	व्यापार आदि में जल्दबाजी न करें, हानि भय, अनुचित कार्यों की ओर मन, समाचार से चिन्ता। मार्च १९, २०, २१, २८, २९, ३०; अप्रै. ७ ८, ९ अशुभ।
वृश्चि.	घरेलू सुख में बाधा, लाभ अच्छा, स्त्री के लिये खर्च, स्वास्थ्य उत्तम, मान बढ़े। जन. १८, १९, २०, २७, २८, २९; फर. ५, ६, ७ अशुभ।	कुल वृद्धि, कारोबार ठीक, लाभ हो, चुगलखोरों से बचें, उदर विकार। फर. १५, १६, २३, २४, २५; मार्च ४, ५, ६ अशुभ।	स्वास्थ्य नरम, स्त्री-पुत्रादि से चिन्ता, लाभ खर्च सम, मित्रों से सहयोग, यात्रा की योजना। मार्च १३, १४, १५, २१, २२, २३, ३१; अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।
धनु	मानसिक चिन्ता, शुभ में व्यय, लाभ खर्च समान, विवाद में जय, प्रिय-मिलाप। जन. २०, २१, २२, २९, ३०, ३१, फर. ८, ९, १० अशुभ।	लाभ अच्छा, स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार की नई योजना, खर्च अधिक। फर. १७, १८, २५, २६, २७; मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	कार्य की निष्फलता से चिन्ता, सन्तान से खुशी, व्यवसाय से लाभ, प्रिय जन से खर्च। मार्च १५, १६, १७, २४, २५; अप्रै. २, ३, ४, १२ अशुभ।
मकर	रोग भय, परिश्रम से मध्यम लाभ, बड़े जनों से सम्पर्क, राजपक्ष शुभ, यश वृद्धि, पुत्रादि चिन्ता। जन. १४, १५, १६, २३, २४, ३१, फर. १, २, १०, ११ अशुभ।	कफ वायु विकार, प्रिय जन चिन्ता, खर्च, लाभ हो विवाद हो। फर. १९, २० २८, २९, मार्च १, ९, १० अशुभ।	शुभ कार्य की योजना, कारोबार सुधार व कुछ परिवर्तन लाभ से खर्च, शत्रु भय। मार्च १७, १८, १९, २६, २७, २८, अप्रै. ५, ६, ७ अशुभ।
कुम्भ	चालबाजों से बचें, नये व्यापार की जल्दी न करें, हानि भय, स्वास्थ्य मध्यम, तिल चावल डालें। जन. १६, १७, १८, २५, २६; फर. ३, ४, ५, अशुभ।	निर्मूल झगड़े का डर, अपरिचित व्यक्ति से भय, मास के मध्य में कुछ लाभ, लेन-देन चिन्ता। फर. १३, १४, २१, २२, २३; मार्च १, २, ३, ११, १२, अशुभ।	शरीर अशक्त, मन में व्यर्थ विचार, पश्चात्ताप हो, विशेष प्रयत्न से स्वल्प लाभ। मार्च १९, २०, २१, २८, २९, ३०; अप्रैल ७, ८, ९, अशुभ।
मीन	कुछ शत्रु भय, लाभ हो, शुभ में खर्च, सन्तति चिन्ता, व्यवसाय में उन्नति। जन. १८, १९, २०, २७, २८, २९; फर. ५, ६, ७ अशुभ।	लाभ होने पर भी बरकत की कमी, स्वास्थ्य ठीक, नीच से भय, जायदाद की नई योजना। फर. १५, १६, २३, २४, २५, मार्च ४, ५, ६ अशुभ।	वायु विकार, स्त्री-पुत्र से बेचैनी, लाभ मध्यम, बुद्धि से किया काम शुभ फल वाला हो। मार्च १३, १४, १५, २१, २२, २३, ३१; अप्रै. १, २, १०, ११ अशुभ।

नोट—यह राशिफल सामूहिक रूप से लिखा है; विशेष फलादेश के लिए वर्षफल बनवाइए।

॥ चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय-गुणात्मने । समस्त-जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवता गुरुम् । संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्या ॥२॥
सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित कर, मंगलस्नान कर, देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करे; स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें । ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें । कटु निम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, भुनी हुई हींग, नमक (सेंधा) अजवायन, सफेद जीरा और खाण्ड बराबर मात्रा में मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह ३ से ६ माशे तक की मात्रा में चै. शु. १ से १५ तक लगातार स्नानादि से निवृत्त होकर निराहार मुख खावें । इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त रक्त-विकार ज्वरादि नहीं होते) । यदि १५ दिन सेवन न कर सकें तो चैत्र शुक्ल १ को तो अवश्य करें।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर वाचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें। मिष्ठान्न आदि भोजन करावें। गीत (गायन), वाद्य, कथा-श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य :—ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः । ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याऽधिपतां राज्ञां राजकुले जयो विजयते मन्त्रिफलं बुद्धिदम् । धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः ।

सृष्टिक्रम वर्णनः—सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन का १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है--एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्ष संख्या ४३,२०,००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है। विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्र कलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुदसंख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, छः मनु व्यतीत हो गये हैं। अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८वां कलियुग है।

अथ युगकाल-व्यवस्था—सतयुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र, वृद्धियोग में सत्ययुग की उत्पत्ति हुई है, इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी । इसमें श्रीनारायण मत्स्य, कच्छप, बराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए । श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर, शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये । भगवान कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किए। श्री वराहजी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया, श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकश्यप का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की । इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएं कामधेनु के समान होती थीं। प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे । ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे । शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शुद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन-योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष की था। इसमें भगवान के श्री वामन, श्री परशुराम और श्री रामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने कर्त्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था। वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे । ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री-परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वह शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी, पतिव्रता होती थीं। इस युगमें सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रिय का राज्य था। विचित्र विमान द्वारा वह इन्द्र लोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। **द्वापर**-माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८६,४०,०० वर्ष की थी । इसमें पूर्णब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया। तथा संसारार्णव मग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेव जी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था। गौएं दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र पीतल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी। एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ-देव-पूजनादि करने वाले, किञ्चित् लोभयुक्त, वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चंद्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे। परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। **कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी**

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका है, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय-राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रपात्र तथा कागल मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान, संध्या, तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से लाभ उठायेंगे। शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्च वर्ग वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा। धूर्तों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी। व्यभिचारिणी स्त्री, अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेगा। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता-पिता के साथ सकारण प्रेम रहेगा। राज-व्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरे गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योजितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युग ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्म-कर्म-रहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतर वृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः, शिष्टा नष्टा अहह! कलिकाली विलसति ॥ **कलौ गंगायाः स्थितिः**—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनी नरपुंगवः। **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

॥ वर्ष-राजादि फल विचार सं० २०२८ वि० ॥

सृष्टि सं. १९५५८८५०७२, श्री विक्रमी सं. २०२८, शक सं. १८९३, श्रीकृष्ण जन्म सं. ५२०७, कलि सं. ५०७२, श्री महावीर जैन निर्वाण सं. २४९७-९८, हिजरी सन् १३९१-९२, फसली सन् १३७८-७९, ईस्वी सन् १९७१-७२। वर्षादि में गुरुमान से प्रभवादि संवत्सरों में रुद्र विंशति का 'रक्ताक्ष' नामक संवत्सर है; जिसका फल इस प्रकार है :—

> "रक्ताक्ष-वत्सरे भूपाः अन्योन्यं हन्तुमुद्यताः।
> ईति-रोगाकुला धात्री स्वल्प-सस्यार्घवृष्टयः॥"

किञ्च,—"शुक्रः स्वामी, अन्नं समर्घं, मेदपाटे पक्षे महामेघः, आषाढ़े महती जल वृष्टिः, सुराष्ट्रायां ग्राम प्रवाहकः, श्रावणेऽल्पमेघः, क्वचिद् विग्रहः, भाद्रपदेऽल्प वर्षा, रोगपीड़ा, आश्विनेऽन्नं समर्घं, रसकस वस्तु समर्घं, कार्तिकादि मास-पञ्चके धान्यं महर्घं अश्वपीड़ा पश्चिमायाम्।"

इस वर्ष राजा (ग्रह परिषद् के प्रधान) शनि, मन्त्री बुध, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शुक्र, धान्येश (शीत-कालीन फसलों के स्वामी) गुरु, मेघेश (वर्षा के स्वामी) मंगल, रसेश (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) रवि, नीरसेश (सभी प्रकार की धातु और व्यापार के स्वामी) शुक्र, फलेश (फल फूल आदि के स्वामी) चन्द्र, धनेश (कोष के स्वामी) गुरु, दुर्गेश (सुरक्षा, प्रतिरक्षा, सेना के स्वामी) चन्द्र हैं। वर्ष के इन दस अधिकारियों का फल क्रमशः इस प्रकार है :—

राजा शनि का फल—खण्ड वृष्टि, रोगों से जनता पीड़ित रहे, शासकों में तनाव, देश-द्रोहियों से जनता क्षुब्ध रहे।

मन्त्री बुध का फल— धान्य एवं वर्षा अधिक, जनता में सुखैश्वर्य बढ़े।

सस्येश शुक्र का फल—जनता में सुख शान्ति, सभी प्रकार के धान्यों की फसल अच्छी हो।

धान्येश गुरु का फल—वर्षा अधिक एवं धान्य सस्ते हों।

मेघेश मंगल का फल—अग्नि एवं चोरों का भय रहे, कहीं दुर्भिक्ष अनावृष्टि और कहीं अत्यधिक वर्षा हो।

रसेश रवि का फल—वर्षा कम, चन्दन, घी, तेल आदि में वृद्धि हो, शासक सन्तुष्ट रहें।

नीरसेश शुक्र का फल—मूंगा, कपूर, लाल चन्दन, ताम्बा आदि के भाव बढ़ें।

फलेश चन्द्र का फल—फल-फूल अधिक, जनता सुखी, शासन में अस्थिरता रहे।

धनेश गुरु का फल—व्यापारी लाभान्वित हों, फल-फूल अधिक हों।

दुर्गेश चन्द्र का फल—शासक एवं प्रजा सुखी रहे, ईख एवं दूध आदि रसों की वृद्धि हो।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र ही होता है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य-प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा एवं बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

नव मेघों में 'नील' नामक मेघ का फल—वर्षा अच्छी हो। द्वादश नागों में 'वज्रदंष्ट्र' **नामक नाग का फल**—महावृष्टि हो। इस वर्ष **रोहिणी का वास समुद्र में एवं संवत्सर का वास माली के घर है;** फल—महावृष्टि हो। वर्षेश शनि होने से संवत्सर **का वाहन महिष (भैंसा) है शनि की दृष्टि पूर्व में है; फल**—बंगाल, आसाम, बिहार, यू. पी. आदि पूर्वी प्रान्तों में राजनैतिक अशान्ति, भय-रोग आदि से कष्ट हो। **सोमवती अमावस्याएं दो हैं;**—ज्येष्ठ एवं फाल्गुन में। **भौमवती अमावस्याएं भी दो हैं:**—आषाढ़ एवं कार्तिक में। **बुधाष्टमियें चार हैं;**—आषाढ़ कृ., कार्ति. शु., मार्ग. कृ. और चैत्र कृष्ण में।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षा विश्वा ९, धान्य १३, तृण १५, शीत ११, तेज ५, वायु ५, वृद्धि १३, क्षय ७, विग्रह १७, क्षुधा १३, तृषा १३, निद्रा ११, आलस्य ५, उद्यम १५, शान्ति ५, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फल-निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप ३, पुण्य १७, व्याधि ९, व्याधिनाश १७, आचार ११, अनाचार ११, मृत्यु १, जन्म ७, देशोपद्रव ९, देश स्वास्थ्य ११, चौरभय १५, चौर नाश ५, अग्नि भय १७, अग्नि शान्ति १. उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १३, टिड्डी ९. तोता १९ मूषक १७, सोना ११, ताम्बा ११, स्वचक्र १५, परचक्र ९, वृष्टि ३, वृष्टिनाश ३, संवत् विश्वा १८।

वर्षस्तम्भ-चतुष्टय विचार;—(१) **जलस्तम्भ**–(चैत्र शु. १ को रेवती) ६५ प्रतिशत है। अतः वृष्टि अच्छी हो। (२) **तृणस्तम्भ**—(वैशा. शु. १ को भरणी) ८१ प्रतिशत है; अतः घास की उत्पत्ति काफी हो। (३) **वायुस्तम्भ**—(ज्ये. शु. १ को मृग.) का सर्वथा अभाव है। अतः आंधी तूफान से जन-धन की हानि हो। (४) **अन्नस्तम्भ**—(आषा. शु. १ को पुन.) का भी लगभग अभाव है; अतः अन्न की कमी रहे। **निष्कर्ष यह है**;—कि स्तम्भ चतुष्टय के विचार से यह वर्ष वर्षा, तृण, वायु एवं अन्न के लिए साधारण है।

आर्षमान विचार—(वर्ष रक्षा के लिए ४ दुर्ग), **पहला आर्ष**—अक्षय-तृतीया को रोहिण ७३ प्रतिशत है। **द्वितीय आर्ष**—गत वर्ष वि. सं. २०२७ में पौष. अमा. को मूल नक्षत्र लगभग १०० प्रतिशत है। **तृतीयआर्ष**—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण ८० प्रतिशत है। **चतुर्थ आर्ष**—कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र का सर्वथा अभाव है। **फल**—आर्षमान विचार से यह वर्ष अच्छा है।

अखै तीज रोहिणी न होई पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो कार्तिक-पुण्यों कृत्तिका टारौ ॥
महीमांह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै ॥

नव वर्ष प्रवेश—गत सं. २०२७ वि० चैत्र अमावस्या शुक्रवार (२६ मार्च, १९७१) को ४६।१५ घट्यादि इष्ट पर धनु लग्न में नववर्ष प्रवेश होगा। **फल**—उत्तर पूर्व एवं दक्षिण में शान्ति, मध्यभारत में अतिवृष्टि से हानि, पश्चिम में घृत-धान्य सस्ते तथा चौपायों में रोग फैले।

वर्षेश लग्न—वैशा. कृ. ३ बुधवार (१४ अप्रैल) को २।५ घट्यादि इष्ट पर मेष लग्न में सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होगा। **फल**—वैशाख, श्रावण, पौष एवं माघ में राजनैतिक उथलपुथल एवं अनेक प्रकार के उपद्रव हों।

आर्द्रा प्रवेश लग्न—आषा कृ. ३० मंगलवार (२२ जून) को ११।४० घट्यादि इष्ट पर (तात्कालिक) अमातिथि, मृग. नक्षत्र, गण्ड योग के समय सिंह लग्न में सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होगा। **फल**—राजनैतिक अशान्ति रहे, अन्नोत्पत्ति पर्याप्त हो।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—अपने जन्म लग्न से जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट और बलवान् हो तब वर्ष में उस भाव की वृद्धि, यदि पापी ग्रह की दृष्टि अथवा योग हो तो उस भाव की हानि होगी। जन्म लग्न, जन्म राशि और वर्ष लग्न से वर्षेश (जगल्लग्न) ८वें, १२वें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

वर्ष लग्न,

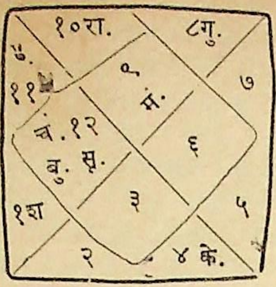

वर्षेश (जगत्) लग्न,

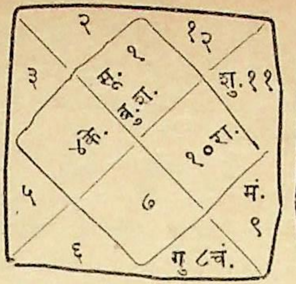

आर्द्रा प्रवेश लग्न

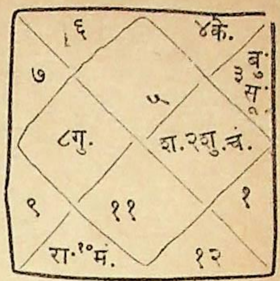

जन्म लग्न से जगल्लग्न का फल—१ देह सुख, २ धन लाभ, ३ कुटुम्ब वृद्धि, ४ मित्र-सौख्य, ५ पुत्र-सौख्य, ६ शत्रु जय, ७ स्त्री सुख, ८ रोग भय, ९ धर्म लाभ, १० धन लाभ, ११ लाभ सुख, १२ व्यय दुःख।

शरत् सस्य जातक

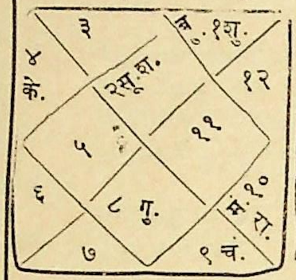

ग्रीष्म सस्य जातक

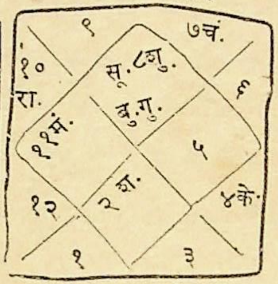

शरत्सस्य जातक फल—वृष संक्रान्ति के समय सूर्य के साथ शनि गुरु का योग है। अतः शारदीय अन्न मूंग, मोठ, बाजरा आदि की उत्पत्ति कई प्रदेशों में अच्छी हो, कई प्रदेशों में आधी के करीब फसल हाथ आवे।

ग्रीष्म सस्य जातक—वृश्चिक संक्रान्ति के समय मंगल का केन्द्र सम्बन्ध है बुध गुरु शुक्र साथ हैं, अतः ग्रैष्मिक सस्य गेहूं, जौ, चना आदि की उपज अच्छी होने के बाद फसल को हानि पहुंचने के योग हैं, कृषक चिन्तित एवं भाव तेज हों।

गुर्रा फल—मुस्लिम नव वर्ष हिजरी सन् १३९१ का प्रारम्भ २७ फरवरी १९७१ ई., (गत सं. २०२७ वि. में) शनिवार को हुआ है। फल—विश्व में अनेकत्र युद्ध का भय बने। युद्ध के कारण लोग इधरउधर भागे फिरें, जन हानि हो।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटा कर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो और चिन्ता भी रहे।

'इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ॥"

शनि का अनुभूत-गोचरफल

जन्म का शनि—वायु-विकार, प्रतिकूल परिस्थिति, भयंकर चिन्ता, सरकार से भय, मुकद्दमा मामले की अड़चन, कारोबार में नुकसान, आर्थिक स्थिति खराब, शारीरिक क्लेश। **द्वितीय शनि**—कुटुम्ब में क्लेश, एक-न-एक चिन्ता; आर्थिक संकट तथा नित्य उद्विग्नता, मानसिक क्लेश और तबीयत खराब रहे। परन्तु सत्कार्य में व्यय अधिक हो। **तृतीय शनि**—उद्योग व्यापार अनुकूल होगा, यात्रा का हल्का योग बने, कभी कभी शारीरिक-शिकायत, बन्धु चिन्ता, मुकद्दमे में अड़चन, लाभ हल्का होगा। **चतुर्थ शनि**—मातृ चिन्ता, भूमि चिन्ता, अधिकारियों से परेशानी, वाहन से भय, कुटुम्ब में कलह, अपयश, अग्नि व चोर से भय, नौकरी चाकरी में अड़चन। **पंचम शनि**—उद्योग-व्यापार साधारण, धन-सम्बन्धी अड़चन, लाभ साधारण, विद्या सम्बन्धी अड़चन-चिन्ता। मकर का शनि यदि पंचम में होगा तो कदापि अशुभ फल नहीं करेगा, किन्तु पंचम-स्थान-सम्बन्धी सुख अवश्य करेगा। **षष्ठ शनि**—जमीन-जायदाद-सम्बन्धी चिन्ता, तुच्छ लोगों से मित्रता या परेशानी, कारोबार में द्रव्यलाभ होने पर भी हाथ से निकले, शारीरिक-चिन्ता भी कुछ रहेगी, जातीय शत्रु से नुकसान, चोर और नौकर से भय। **सप्तम शनि**—कारोबार में बाधा, मातृ-चिन्ता, सुख में अड़चन, भूमि एवं स्थावर-सम्पत्ति सम्बन्धित चिन्ता, स्त्री-चिन्ता, शारीरिक-शिकायत, शत्रु भय की कुछ चिन्ता। **अष्टम शनि**—शारीरिक क्लेश, भयानक कष्ट, सम्पत्ति-हानि एवं अपमान भय रहे, स्त्री चिन्ता, द्रव्य-लाभ अवश्य हो, परन्तु कारोबार में बाधा आती रहे, कुसंगति से हानि। **नवम शनि**—बन्धु-चिन्ता, कोश में कमी, मानसिक-त्रास, शत्रु से हानि-भय, यात्रा का हल्का योग बने, धर्म में रुचि हो, परन्तु कार्य रूप में बहुत कम परिणत हो सके। **दशम शनि**—लाभ एवं हानि दोनों का योग, घरेलू चिन्ता, मानसिक-चिन्ता, खर्च बढ़े, मित्रों से मनमुटाव रहे परन्तु नामवरी बढ़े एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि हो। **एकादश शनि**—लाभ, राज सम्मान मिले, भाग्योदय हो, द्रव्य-प्राप्ति के अनेक स्थान एवं चान्स मिलें, अधिकारियों से मित्रता व हर्ष का सुयोग हो। **द्वादश शनि**—व्यर्थ का त्रास, फजूल खर्च, व्यर्थ की चिन्ता एवं ऋण का कुयोग या अन्य की मुफ्त की चिन्ता, प्रापञ्चिक त्रास तथा शारीरिक कष्ट एव मित्र-क्लेश हो।

नोट—शनि पाप ग्रह के साथ हो या पाप दृष्ट हो या पाप ग्रह की प्रतियुति हो तो निश्चित अशुभ फल होगा। यही फल चन्द्रमा के साथ में भी शनि का होता है।

आवश्यक सूचना

श्री मार्तण्ड-पञ्चांग के प्रेमी सज्जनों को तिथ्यादि के लस्टर (संदर्भ) को देखने में मैटर अधिक होने के कारण काफी असुविधा होती थी। अपने प्रेमी सज्जनों की इस असुविधा को दूर करने के लिए हमने इस वर्ष से तिथ्यादि के लस्टर में बचे हुए शेष मैटर को (क) (ख) आदि संकेत देकर तिथ्यादि के पाक्षिक फलादेश (लोक भविष्य आदि) के ऊपर वहीं (क) (ख) आदि संकेत लगाकर तत्सम्बद्ध मैटर लगा दिया है। इससे हमारे प्रिय पाठकों को दृष्टिभ्रम एवं लस्टर पढ़ने में परेशानी न होगी, आशा है हमारे प्रिय पाठक इसे पसन्द करेंगे।

आपका यह वर्ष कैसा रहेगा?

"वयो-राशि-स्व-नक्षत्रमेकीकृत्य पृथक् पृथक्।
द्विचतु-स्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्ट-रस-भाजितम्॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्ये शून्यं धन-क्षयः॥
स्थानत्रयेऽभ्रशेषं तु मृत्युः साङ्केषु वै जयी॥"

आयु के वर्तमान वर्ष की संख्या, जन्म-राशि की संख्या तथा जन्म नक्षत्र की संख्या—इन तीनों को जोड़कर तीन अलग-अलग स्थानों पर रखकर उन्हें क्रमशः २, ४, एवं ३ से गुणा करके इन गुणनफलों को क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग दें। भाग देने पर यदि पहिले और तीसरे स्थान पर शून्य बचे तो वर्ष दुःखमय बीते। दूसरे स्थान पर शून्य शेष बचे तो उस वर्ष धन-हानि हो। तीनों स्थानों पर शून्य बचे तो मृत्यु अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। यदि तीनों स्थानों पर शून्य के अतिरिक्त और कोई अङ्क बचे तो वह वर्ष विजय देने वाला समझना चाहिए।

उदाहरण—मान लीजिए, आपकी आयु का चालू वर्ष ३५, जन्म राशि कर्क ४ एवं जन्म-नक्षत्र पुष्य ८ है। इन तीनों संख्याओं का योग ४७ हुआ। इसे अलग-अलग २, ४, ३ से गुणा करने पर गुणनफल क्रमशः ९४, १८८ एवं १४१ हुए। क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग देने पर पहिले स्थान पर ३, दूसरे स्थान पर ६ और तीसरे स्थान पर १ शेष बचा। क्योंकि तीनों स्थानों पर शेष शून्य नहीं, अतः यह वर्ष आपको सब कामों में विजय लाभ, सुख देने वाला शुभ रहेगा।

आज का दिन कैसा बीतेगा?

जिस दिन का शुभाशुभ जानना हो, उस दिन पञ्चाङ्ग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र से आपके नाम का नक्षत्र ४, ५, ११, १२, १८, १९, २५ या २६वां हो तो समझो कि आपका सारा दिन सुख शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा, शुभ समाचार से मन प्रसन्न रहेगा, कार्य में सफलता मिलेगी। यदि आपके नाम का नक्षत्र २, ३, ६, ७, ८, १०, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २३, २४, २७ या २८वां नक्षत्र हो तो आधा दिन खुशी से और शेष आधा दिन चिन्ता, दुःख आदि में व्यतीत होगा। यदि १, ८, १५, या २२वां नक्षत्र हो तो सारा दिन दुःख, शोक, चिन्ता, क्रोध, भय, पराजय को देने वाला होगा। चोर, वा बीमारी आदि से परेशानी भी रहे।

भारत-सरकार के अवकाश (वि०सं० २०२८)

(सन् १९७२-७२ ई.)

संख्या	अवकाश	तारीख	वार
१	गुड़ी पड़वा	२७ मार्च १९७१	श.
२	श्री राम नवमी	३ अप्रै.	स.
३	श्री महावीर जयन्ती	८ अप्रै.	गु.
४	गुड फाइडे	९ अप्रै.	शु.
५	**बैशाखी**	**१४ अप्रै.**	बु.
६	ईद-ए-मिलाप	८ मई	श.
७	बुद्ध पूर्णिमा	१० मई	चं.
८	रखड़ी (रक्षा बन्धन)	६ अग.	शु.
९	**श्री कृष्णजन्माष्टमी**	**१३ अग.**	शु.
१०	स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	र.
११	तिरु ओनम् दिवस	३ सितं.	शु.
१२	**श्री दुर्गाष्टमी**	२८ सितं.	म.
१३	**विजयादशमी**	**३० सितं.**	गु.
१४	जन्मदिन महात्मा गान्धी	२ अक्तू.	श.
१५	जन्मदिन महर्षि वाल्मीकि	४ अक्तू.	चं.
१६	**दीपावली**	**१८ अक्तू.**	चं.
१७	गोवर्धन-पूजा	२० अक्तू.	बु.
१८	भाई दूज	२१ अक्तू.	गु.
१९	**जन्मदिन श्री गु. नानकदेव जी**	२ नवं.	मं.
२०	जमत-उल-विदा,	१९ नवं.	शु.
२१	इदुल फित्र	२० नवं.	श.
२२	बलिदान दिन गु. तेगबहादुरजी	२३ नवं.	मं.
२३	**जन्मदिन श्री गु. गोविन्द सिंह जी**	२४ दिसं.	शु.
२४	क्रिस्मस डे	२५ दिसं.	श.
२५	इंगलिश नव वर्षारम्भ	१ जन. १९७२	श.
२६	पोंगल	१५ जन.	श.
२७	गणतन्त्र दिवस	२६ जन.	बु.
२८	इदुज्जुहा	२७ जन.	गु.
२९	जन्मदिन भक्त रविदास	३० जन.	र.
३०	**श्री महाशिवरात्रि**	१३ फर.	र.
३१	मुहर्रम	२६ फर.	श.
३२	होली	२९ फर.	मं.

नोट—भारत-सरकार के अवकाश की इस सूची को भारत-सरकार के ... [illegible]

प्रसिद्ध कुछ मेले (वि०सं० २०२८)

(सन् १९७१-७२ ई.)

मेला	तारीख
जन्मोत्सव वीर वैरागी मेला (नकोदर)	कार्ति. शु. १३
माईसर खाना	१ अप्रै. १९७१
मनसादेवी	३ अप्रै.
बैशाखी	**१४ अप्रै.**
पंजौर	२५ अप्रै.
श्री नैनादेवी व चिन्तपूर्णी	३० जुला.
श्री अमरनाथ (काश्मीर)	६ अग.
श्री बाबा गुसाई आणा कुराली	२३ अग.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	२ सितं.
छपार	४ सितं.
गोयन्द वाल	५ सितं.
ज्वालामुखी व तारादेवी	२८ सितं.
दशहरा	३० सितं.
दिवाली	१८ अक्तू.
बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना)	३० अक्तू.
कपाल मोचन रामतीर्थ (पुष्कर)	२ नवं.
बाल मेला	१४ नवं.
पुरमण्डल	१६ नवं.
जोड़मेला (फतहगढ़ साहब)	२६-२८ दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर)	२८ दिसं.
मुक्तसर	१४ जन. १९७२
माघ मेला प्रयाग	१६ जन.
जयन्ती देवी	२९ जन.
मेला मस्तुवाना	१ फर.
श्री महाशिव रात्रि	१३ फर.
होला (आनन्दपुर साहब)	१ मार्च
शीतला माता (कुराली)	९ मार्च
पिहोवा	१४ मार्च

व्रतों में स्मार्त-वैष्णव-निर्णय—पचांग में बहुत जगह एकादशी आदि व्रतों में स्मार्त-वैष्णव लिखा रहता है, कई सज्जन इन शब्दों को नहीं समझ पाते; अतः संक्षेप में इनका स्पष्टीकरण आवश्यक समझते हैं। —जिन व्यक्तियों ने वैष्णवाचार्यों से व वीतरागी वैरागी महात्माओं से विधिपूर्वक गुरु मन्त्र लेकर कन्ठी वा माला धारण की है, वे व्यक्ति वैष्णव कोटि में आते हैं। वेद-पुराण और स्मृतियों के आदेश ...

सन्दिग्ध-व्रत-पर्व निर्णय

(१) **उपाकर्म (ऋषि तर्पण)**—इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णमासी को ग्रहण है। अतः इस वर्ष पूर्णमासी को ग्रहण के दिन उपाकर्म (ऋषि-तर्पण) करना शास्त्र द्वारा निषिद्ध है। इस विषय में **स्मृति-महार्णव** का वचन इस प्रकार है—**"संक्रान्ति ग्रहणं वापि पौर्णमास्यां यदा भवेत् उपाकृतिस्तु पञ्चम्यां कार्या वाजसनेयिभिः॥"** इस शास्त्राज्ञा के अनुसार **श्रावण शुक्ल पञ्चमी मंगलवार** को ही उपाकर्म (ऋषि तर्पण) होगा।

(२) **विजया दशमी (दशहरा)**—'जिसदिन अपराह्ण व्यापिनी-दशमी हो, उस दिन विजयादशमी मनानी चाहिए' —**यह साधारण नियम है**। परन्तु 'यदि दूसरे दिन तीन मुहूर्त से थोड़ी सी भी अधिक दशमी हो और उस दिन अपराह्ण के मध्यवर्ती एकादश-(विजय-संज्ञक) मुहूर्त में श्रवण-नक्षत्र हो, पूर्व दिन वाली अपराह्ण व्यापिनी केवल दशमी को ही विजयादशमी न मानकर दूसरे दिन ही उसे मनाने की शास्त्राज्ञा है।' यद्यपि वहां दूसरे दिन अपराह्ण में गणितागतदशमी तिथि नहीं है, तथापि **"यां तिथिं समनुप्राप्य उदयंयाति भास्करः। सा तिथिः सकला ज्ञेया स्नान-दान-जपादिषु।"** इस शास्त्र-वचन द्वारा अपराह्ण में साकल्यापादित दशमी तिथि विद्यमान रहती ही है। धर्म सिन्धुकार का वचन है;—"यदा तु पूर्व दिन एव अपराह्ण-व्यापिनी, परदिने च मुहूर्त-त्रयादि-व्यापिनी अपराह्णात्पूर्वमेव समाप्ता, परत्रैव श्रवण योगवती तदा परत्रैव। अपराह्णे दशम्यभावेऽपि 'यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः',—इत्यादि साकल्यवचनैः श्रवण-युक्तायाः ग्राह्याया औदयिक-स्वल्प दशम्याः कर्मकाले सत्त्वापादनात्।" यही बात कश्यप ने इसप्रकार कही है;—

"उदये दशमी किञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि। श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा।"

इस वर्ष (वि. सं. २०२८ में) आश्वि. शु. दशमी तिथि, गुरुवार को ७ घ. १२ प. (३ मुहूर्त से अधिक) है, और अपराह्ण में एकादश-मुहूर्त (विजय-मुहूर्त) में श्रवण-नक्षत्र विद्यमान है। अतः पहले दिन बुधवार को अपराह्ण-व्यापिनी केवल (श्रवण-रहित) दशमी को छोड़कर पूर्वोक्त सिद्धान्त एवं शास्त्राज्ञा के अनुसार गुरुवार को ही विजयादशमी मनाई जाएगी।

(२७ मार्च से १० अप्रैल, सन् १९७१ ई. तक), उत्तरायण,

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, चैत्र शुक्ल पक्ष १ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्ट. टा. | उदय कालिक | (२७ मार्च से १० अप्रैल, सन् १९७१ ई. तक), उत्तरायण,★

इ.मा. ध.	प.	ति.	वा.	ध.	प.	नक्षत्र	ध.	प.	यो.	ध.	प.	क.	ध.	प.	प्र.	अ.	श.	मु.	संचार ध. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	२९	१	श.	३६	५२	उ.भा.	४/५७	३०/१७	ब्र.	२०	३५	कि.	११	३३	१४	२७	६	२९	मे.५७।१७	६	२३	६	३४	११	१२	१५	१७
३०	३६	२	र.	२८	५	अ.	५०	५०	ऐं.	१०	१७	बा.	२	२८	१५	२८	७	३०	मेष	६	२२	६	३५	११	१३	१४	३८
३०	३८	३	चं.	२०	२७	भ.	४५	४०	वै.	०/५२	४५/१२	ग.	२०	२७	१६	२९	८	म१	वृ.५९।४१	६	२०	६	३५	११	१४	१३	५७
३०	४३	४	मं.	१४	७	कृ.	४२	२	प्री.	४५	५	वि.	१४	७	१७	३०	९	२	वृष	६	१९	६	३६	११	१५	१३	१३
३०	४७	५	बु.	९	३७	रो.	४०	२०	आ.	३९	३०	बा.	९	३७	१८	३१	१०	३	वृष	६	१८	६	३६	११	१६	१२	२८
३०	५२	६	गु.	७	१२	मृ.	४०	४२	सौ.	३५	३५	तै.	७	१२	१९	अ१	११	४	मि१०।३१	६	१७	६	३७	११	१७	११	४०
३०	५७	७	शु.	६	५०	आ.	४३	१३	शो.	३३	२५	व.	६	५०	२०	२	१२	५	मिथुन	६	१६	६	३८	११	१८	१०	५०
३१	१	८	श.	८	४०	पुन.	४७	३५	अ.	३२	४७	ब.	८	४०	२१	३	१३	६	क.३१।३०	६	१५	६	३९	११	१९	९	५७
३१	५	९	र.	१२	२०	पु.	५३	३७	सु.	३३	३०	कौ.	१२	२०	२२	४	१४	७	कर्क	६	१३	६	३९	११	२०	९	२
३१	१०	१०	चं.	१७	३०	आश्ले.	६०	०	धृ.	३५	१५	ग.	१७	३०	२३	५	१५	८	कर्क	६	१२	६	४०	११	२१	८	५
३१	१४	११	मं.	२३	४०	आश्ले.	०	५०	शू.	३७	३७	वि.	२३	४०	२४	६	१६	९	सि. ०।५०	६	११	६	४०	११	२२	७	७
३१	१९	१२	बु.	३०	१५	म.	८	३२	गं.	४०	२०	बा.	३०	१५	२५	७	१७	१०	सिंह	६	९	६	४१	११	२३	६	५
३१	२४	१३	गु.	३६	५५	पू.फा.	१६	२७	वृ.	४२	५७	कौ.	३	३५	२६	८	१८	११	क.३३।२३	६	८	६	४१	११	२४	५	१
३१	२८	१४	शु.	४३	१२	उ.फा.	२४	१०	ध्रु.	४५	२०	ग.	१०	४	२७	९	१९	१२	कन्या	६	७	६	४२	११	२५	३	५६
३१	३३	१५	श.	४८	५२	ह.	३१	२०	व्या	४७	१७	वि.	१६	७	२८	१०	२०	१३	कन्या	६	६	६	४३	११	२६	२	४८

ग्रह-दर्शन:—प्रातः शु. पूर्व में और म. याम्योत्तर वृत्त के आसन्न होगा। इस समय गु. पश्चिम कपाल में दीखेगा। सायं श. एवं बु. पश्चिम में ऊपर नीचे दीखेंगे।

पञ्चक स. ५७।१७, बुध अश्वि. मेष में ७।३०, (क)

चन्द्र दर्शन मु ३०, ★उत्तर गोल, वसन्त ऋतु

भ. ४७।१७ उ, सफर मु. २ प्रा., शुक्र शत. में ३९।१५, (ख)

भ. १४।७ या.,

सूर्य रेव. में २७।५०, शनि कृत्ति. १ में ४।४२, स्कन्द ६,

अप्रैल प्रा., मेला माईसर खाना,

भ. ६।५० उ. ३७।४५ या.,

श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसा देवी, श्रीरामनवमी व्र. स्मा. (ग)

श्री राम नवमी व्र. वै.,

भ. ५०।३५ उ.

भ. २३।४० या., कामदा+

+११ व्र. स.,

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'रक्ताक्ष' नामक संवत्सर है; इसे ही वर्षान्त तक संकल्पादि में प्रयुक्त करें।

श्री न महावीर जयन्ती, अनङ्ग १३, प्रदोष व्र.,

भ. ४३।१२ उ., बुध वक्री ४१।२५, शुक्र पू.भा. में (घ)

भ. १६।२ या., वैशाख स्ना. प्रा., सत्य व्र.

•(क) नवरात्र प्रा., चान्द्र सम्वत्सर प्रा., वर्षफल श्रवण, घटस्थापन, तैलाभ्यङ्ग, (ख) मत्स्य जयन्ती, गण-गौरी पूजा, (ग) (पुन. योग), (घ) ५०।२७, गुड फ्राइडे,

चैत्र शु. ८ शनि, इष्ट ५८।७

सू.	च.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	७	१०	०	९	३
२०	१९	८	१२	१२	२७	२७	२७
७	५८	२६	४७	५९	५	३४	३४
१८	५७	५७	२५	३३	४६	२६	२६
५९	३४	३५	२	७१	६	३	३
६	४९	५१	१५	३५	४५	११	११
	मा	मा.	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

लोक भविष्य—भारतीय जनता में मानसिक अशान्ति, सीमा-प्रान्तों में हल-चल, चीन के पूर्वोत्तरी भाग में आन्तरिक विग्रह एवं सैनिकों में भय व्यापे, कहीं महामारी एवं अग्नि भय हो। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—२७ मार्च से मूंगा-मोती आदि जवाहरात, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं कपास, घी, गुड़, खाण्ड में मन्दे का वातावरण बने। ३१ मार्च से सोना, चांदी तांबा, तिलहन, सरसों आदि तेज हों। लकड़ी, के व्यापारियों को अब संग्रह करने से आगे अच्छा लाभ मिले। ९ अप्रै. से नारियल, सुपारी तथा कर्याणे की वस्तुओं में तेजी का असर रहे। **शकुन से भविष्य ज्ञान**—चैत्र शु. १ को शनिवार है अतः वर्षा की न्यूनता से चारे एवं अनाज की फसलों को हानि पहुंचे, "**शनौ धान्य रस तृण जलशोषः प्रजायते।**" ३० मार्च को दिन के ११ बजे से दूसरे दिन १० बजे तक यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे, पूर्व का पवन चले वा इन्द्र धनुष दीखे तो गेहूँ खरीद कर श्रावण शु. ५ से भादों शु. ५ तक बेचने से अच्छा लाभ मिले। **आकाश लक्षण**—२७ मार्चसे १ अप्रै. तक आकाश निरभ्र रहे एवं शनैः शनैः गर्मी बढ़े। ८ से १० अप्रै. तक भूटान सिक्किम एवं आसाम में बादल चाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं।

कुं. सूर्योदये

चैत्र शु. १५ शनि, इष्ट ५८।३०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	७	१०	०	९	३
२७	२४	१०	१२	२१	२७	२७	२७
०	१	१३	२७	२१	५३	१२	१२
१३	३	६	५८	२०	५८	११	११
५८	३४	११	३	७१	७	३	३
४९	१३	१७	२९	४९	३	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	नक्षत्र घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—बु. १२ अप्रै. को पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. याम्योत्तर वृत्त के समीप, गु. पश्चिम काल में दिखाई देगा। सायं श. को पश्चिम में देखें।
३१	३८	१	र.	५३	५२	चि.	३७	४७	ह.	४८	३५	बा.	२१	२२	२९	११	२१	१४	तु.४।३३	६	५	६	४४	११	२७	१	३८	ईस्टर सण्डे, ✾उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु
३१	४३	२	चं.	५७	५५	स्वा.	४३	३०	व.	४९	१८	तै.	२५	५३	३०	१२	२२	१५	तुला	६	४	६	४४	११	२८	०	२७	बुध पश्चिम में अस्त १०।४०.
३१	४७	३	मं.	६०	०	वि.	४८	१७	सि.	४९	२०	व.	२९	३०	३१	१३	२३	१६	वृ.३२।५	६	३	६	४५	११	२८	५९	१४	भ. २९।३० उ.,
३१	५२	३	बु.	१	५	अनु.	५२	७	व्य.	४८	३२	वि.	१	५	वै.	१४	२४	१७	वृश्चिक	६	१	६	४५	११	२९	५७	५७	भ. १।५ या., सं. सूर्य अश्वि. मेष में २।७. मु. ३०. (क)
३१	५६	४	गु.	३	१५	ज्ये.	५५	०	व.	४७	०	बा.	३	१५	२	१५	२५	१८	ध.५५।०	६	०	६	४६	०	०	५६	४०	मंगल उ.षा. में ३८।४७
३२	०	५	शु.	४	१५	मू.	५६	३२	प.	४४	३०	तै.	४	१५	३	१६	२६	१९	धनु	५	५९	६	४६	०	१	५५	२१	(त्रि.स्पृ.मूल.)
३२	४	६	श.	४	५	पू.षा.	५६	५५	शि.	४०	५५	व.	४	५	४	१७	२७	२०	धनु	५	५८	६	४७	०	२	५४	०	भ. ४।५ उ., ३३।१८ या.,
३२	९	७	र.	२	३०	उ.षा.	५५	५५	सि.	३६	१७	ब.	२	३०	५	१८	२८	२१	म.११।४०	५	५७	६	४७	०	३	५२	३७	शुक्र मीन में ११।३५
अव	म	८	र.	५९	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी का क्षय
३२	१३	९	चं.	५५	१७	श्र.	५३	३०	सा.	३०	३५	तै.	२७	२८	६	१९	२९	२२	मकर	५	५६	६	४८	०	४	५१	१३	(वि. मु. श्र.)
३२	१८	१०	मं.	४९	३०	ध.	४९	४७	शु.	२३	४५	व.	२२	२३	७	२०	३०	२३	कुं.२१।३८	५	५५	६	४९	०	५	४९	४७	भ. २२।२४ उ., ४९।३० या., पंचक प्रा. २१।३८ (ख)
३२	२२	११	बु.	४२	४७	श.	४४	५०	शु.	१५	५०	ब.	१६	८	८	२१	वै.१	२४	कुम्भ	५	५४	६	५०	०	६	४८	१८	शक वैशाख प्रा., मंगल मकर में ३८।१७, राहु वनि. १ में(ग)
३२	२६	१२	गु.	३५	०	पू.भा.	३८	५७	ब्र.	५७	३०	कौ.	८	५३	९	२२	२	२५	मी.२५।२५	५	५२	६	५१	०	७	४६	४९	
३२	३०	१३	शु.	२६	३५	उ.भा.	३२	३०	ऐं.	४७	४०	ग.	०	४७	१०	२३	३	२६	मीन	५	५१	६	५२	०	८	४५	१९	भ. २६।३५ उ., ५२।१२ या., प्रदोष व्र.,
३२	३४	१४	श.	१७	५०	रे.	२५	४५	वि.	३७	४३	श.	१७	५०	११	२४	४	२७	मे.२५।४५	५	५०	६	५२	०	९	४३	४६	पंचक स. २५।४५
३२	३८	३०	र.	९	१२	अ.	१९	१५	प्री.	२८	०	ना.	९	१२	१२	२५	५	२८	मेष	५	४९	६	५३	०	१०	४२	१२	मेला पिंजौर

(क) पुण्य १८।७ तक, मेला वैशाखी (अमृतसर, रोपड़), श्री गणेश ४ व्र., (ख) सूर्य सा. वृष में ४३।४५, अगस्त्य अस्त ५७।४७, शुक्र उ.भा. में ५८।७, (ग) केतु आश्लेषा ३ में ✾

वैशा. कृ. ७ रवि. इष्ट ५८।५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	८	०	७	११	०	९	३
४	२८	६	११	०	२८	२६	२६
१०	३१	२८	५५	५६	५१	४६	४६
९	४८	४९	३०	४८	२५	४५	४५
५८	३३	४१	४	७२	७	३	३
३७	२०	५९	४७	४	२०	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि.२	उ.षा.१	अश्वि.३	[illegible]	पू.भा.४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

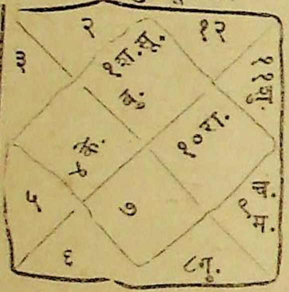

लोक भविष्य—पश्चिमी एशिया में उग्र साम्यवादियों का प्रभाव बढ़ेगा। उत्तर भारत की जनता में आर्थिक संकट पशुओं को रोग भय, पश्चिम में व्यापारियों को हानि परेशानी उठानी पड़े।

साधारण व्यापारिक भविष्य—१२ अप्रै. से रुई में १५–२० टका की मन्दी एवं चांदी में तेजी का रुख रहे। पाट हेसियन एवं शेयरों में भी मन्दी का रुख रहे। १४ अप्रै. से रुई, खाण्ड आदि में कुछ तेजी का वातावरण बनेगा। १८ अप्रै. से चांदी के व्यापार में साधारण मन्दी आकर तेजी आवे। अनाज सरसों तिलहन गुड़ खण्ड का रुख मन्दी की ओर होगा। २१ अप्रै. से सोना, गुड़. खाण्ड, घी, तेल अलसी एवं ऊन में तेजी और अनाजों में मन्दी का वातावरण बने। **शकुन से भविष्य ज्ञान**—यदि वै. कृ. ११ को बादल अधिक हों तो अन्न का स्टाक फरोख्त करें, लाभ मिलेगा। **आकाश लक्षण**—११ से १६ अप्रै. तक कहीं कहीं बादल चाल एवं

कु. सूर्योदय

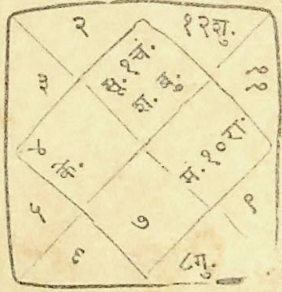

वैशा. कृ. ३० रवि., इष्ट ५९।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	०	७	११	०	९	३
११	२	१	११	९	२९	२६	२६
३९	२२	४९	१८	२१	४३	२४	२४
५०	१४	४२	५६	४१	२३	३०	३०
५८	३२	३१	५	७२	७	३	३
२६	२१	१	४७	१२	३२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ | तारीखें | चन्द्र- | भा.स्टै.टा. | उदयकालिक | (२६ अप्रैल से १० मई, सन् १९७१ ई.तक), उत्तरायण

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ | तारीखें | चन्द्र- | भा.स्टें.टा. | उदयकालिक | (२६ अप्रैल से १० मई, सन् १९७१ ई.तक), उत्तरायण❋

दै. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ.प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. शा.	अं.	वै. शा.	नु. सफ.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. घ.	उ. मि.	सू. घ.	अ. मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२ ४२	१	बं.	१ १५	भर.	१३ २२	आ.	१८ ५५	ब.	१ १५	१३	२६	६	२९	वृ.२७।११	५	४८	६	५३	०	११	४०	३५
अवम	२	बं.	५४ १२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२ ४६	३	मं.	४८ ४५	कृ.	८ ४०	सौ.	१० ५०	तै.	२१ २८	१४	२७	७	र.	बृष	५	४७	६	५४	०	१२	३८	५८
३२ ५०	४	बु.	४५ ०	रो.	५ ३०	शो.	४५ ३७	ब.	१६ ५२	१५	२८	८	२	मि.३४।५१	५	४६	६	५४	०	१३	३७	१८
३२ ५४	५	गु.	४३ १५	मृ.	४ १२	सु.	५५ २	बा.	१४ ७	१६	२९	९	३	मिथुन	५	४५	६	५५	०	१४	३५	३७
३२ ५८	६	शु.	४३ ४५	आर्द्रा	५ ०	धृ.	५३ ७	कौ.	१३ ३०	१७	३०	१०	४	क.५२।११	५	४५	६	५५	०	१५	३३	५४
३३ २	७	श.	४६ २०	पुन.	७ ५५	शू.	५२ ४७	ग.	१५ २	१८	म.	११	५	कर्क	५	४४	६	५६	०	१६	३२	९
३३ ६	८	र.	५० ४२	पु.	१२ ४५	गं.	५३ ५२	वि.	१८ ३१	१९	२	१२	६	कर्क	५	४३	६	५७	०	१७	३०	२१
३३ १०	९	चं.	५६ २०	आश्ले.	१९ १२	वृ.	५५ १३	बा.	२३ ३१	२०	३	१३	७	सि१९।१२	५	४२	६	५७	०	१८	२८	३१
३३ १४	१०	मं.	६० ०	म.	२६ ३२	ध्रु.	५८ २८	तै.	२९ ३२	२१	४	१४	८	सिंह	५	४१	६	५८	०	१९	२६	३९
३३ १७	१०	बु.	२ ४५	पू. फा.	३४ २०	व्या	६० ०	ग.	२ ४५	२२	५	१५	९	क.५१।१०	५	४०	६	५८	०	२०	२४	४५
३३ २१	११	गु.	९ १५	उ. फा.	४२ २	व्या	१ ९	वि.	९ १५	२३	६	१६	१०	कन्या	५	४०	६	५९	०	२१	२२	४८
३३ २४	१२	शु.	१५ २०	ह.	४९ ७	ह.	३ ३५	बा.	१५ २०	२४	७	१७	११	कन्या	५	३९	७	०	०	२२	२०	५२
३३ २७	१३	श.	२० ४०	चि.	५५ २५	व.	५ ३०	तै.	२० ४०	२५	८	१८	१२	तु.२२।१६	५	३८	७	१	०	२३	१८	५४
३३ ३१	१४	र.	२५ ०	स्वा.	६० ०	सि.	६ ४०	व.	२५ ०	२६	९	१९	१३	तुला	५	३७	७	२	०	२४	१६	५३
३३ ३४	१५	चं.	२८ १२	स्वा.	० ३५	व्य.	७ ०	ब.	२८ १२	२७	१०	२०	१४	वृ.४८।४६	५	३६	७	२	०	२५	१४	५०

ग्रह-दर्शनः---वु. १ मई को पूर्व में दीखेगा। श. २ मई से पश्चिम में दीखना बन्द हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. याम्योत्तर वृत्त के पास और गु. पश्चिम में दीखेगा।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, छत्रपति शिवाजी जयन्ती,
द्वितीया का क्षय, ❋उत्तर गोल ग्रीष्म ऋतु,
रवि.उल-अव्वल मु. ३ प्रा., सूर्य भर. में ४२।७ अक्षय ३.(क)
भ. १६।५२ उ.. ४५।० या., शनि कृत्ति. २ वृष में ११।३०,
जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य जयन्ती,
व. बुध रेव. मीन में ४०।१२, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
भ. ४६।२० उ., मई प्रा., बुध पूर्वमें उदित, ३।१५ श्री गङ्गा*
भ. १८।३१ या., शुक्र रेव. में ३।२८ शनि अस्त २३।४२
बुध मार्गी २५।२५. श्री जानकी जयन्ती, (ख)
*जन्म ७ गंगास्नान एवं पूजनका विशेष माहात्म्य
भ.३६।० उ.,
भ. ९।१५ या., बुध अश्वि. मेष में ११।१२ (ग)
व. यूरेनस हस्त २ में ४१।४२, प्रदोष व्र., (घ)
व. गुरु अनु. २ में १७।०, श्री नृसिंह जयन्ती, (ङ)
भ. २५।० उ., ५६।३६ या., सत्य व्र., कूर्म जयन्ती
मंगल श्रवण में ४०।५२, श्री बुद्ध जयन्ती (च)

(क) श्री परशुराम जयन्ती, (वि.मु.रोहि.), (ख) श्री १००८ आनन्दमयी मातृ-जन्मोत्सव प्रा., (ग) मोहिनी ११ व्र.स., (वि.मु.उ.फा., हस्त), (घ) जन्मदिन श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर%

वैशा. शु. ८ रवि., इष्ट ५८।५८, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	११	७	११	१	९	३
१८	६	२९	१०	१७	०	२६	२६
२८	५	४१	३५	४७	३६	२	२
३	१३	५७	५५	२७	३१	१४	१४
५८	३१	०	६	७२	७	३	३
१०	११	१९	३५	१९	३९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
भर. २	उ.षा. ३	रेव. ४	अनु. ३	रेव. १	कृत्ति. २	धनि. १	आश्ले. ३

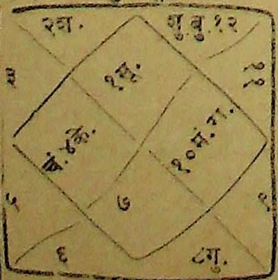

लोक भविष्य---भारत का अर्थ संकट जटिल होगा, कहीं पूंजीपतियों के विरुद्ध श्रमिक लोग संघर्ष करेंगे। पशुओं को पीड़ा हो।

साधारण व्यापारिक भविष्य---३ अप्रै. से ८ दिन के अन्दर गेहूँ, जौ, चना में तेजी रेशम, मूंगफली, विनौला, गुड़ में मन्दी; एवं सोने में तेजी का रुख बने। २६ अप्रै. से वस्त्र, रुई, सूत, सोना, अनाज एवं रंगों के भाव में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी चले। १ मई से रुई में मन्दी गेहूँ चना, तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लाल मिर्च में तेजी का वातावरण बने। २ मई को तिलहन, रुई, पाट, बारदाना के व्यापार में घटाबढ़ी चले। **शकुन से भविष्य विचार**---यदि वै. शु. १५ को वर्षा हो धान्य संग्रह करें, भाद्रपद में तेजी से लाभ मिले। **आकाश लक्षण**---५ से ९ मई तक बादल चाल एवं कहीं कहीं बूंदा-बांदी हो, इन दिनों बम्बई एवं मद्रास की ओर वर्षा के योग हैं। ३० अप्रै. से २ मई तक पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश एवं बिहार आदि में कहीं कहीं बादल वात, बूंदा-बांदी, आंधी और तूफान के योग हैं।

कुं. सूर्योदये

वैशा. शु. १५ चं. इष्ट ५९।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	०	७	११	१	९	३
२६	१०	१	९	२७	१	२५	२५
१२	९	५३	४०	२६	३८	३६	३६
३२	२३	३८	४३	२१	५	४८	४८
१७	२९	३५	७	७२	७	३	३
५२	३८	५२	१५	२६	४४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
भर. ४	श्रव. १	अश्वि. १	अनु. २	रेव. ४	कृत्ति. २	धनि. १	आश्ले. ३

% (वि.मु.हस्त,चित्रा), (ङ) ईद-ए-मिलाद, (वि.मु.चित्रा) (च) यम प्रातयय जल कुम्भ दान, वैशाख स्नान स.,

श्री वि. सं. २०२८, शाके १८९३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ | ताराबें | चन्द्र- | भा. स्टें. टा. | उदय कालिक | (११ से २४ मई, सन् १९७१ ई. तक), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु,

ग्रह-दर्शन—शनि अस्त है। प्रातः बुध-शुक्र पूर्व में और मंगल पश्चिम कपाल में होगा। इसी समय गुरु पश्चिम में डूबने को होगा।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	सु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि	सू. अ. घं.	मि	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि	
३३	३८	१	मं.	३०	२०	वि.	४	५०	व.	६	३०	कौ.	३०	२०	२८	११	२१	१५	वृश्चिक	५	३५	७	३	०	२६	१२	४६	सूर्य कृत्ति. में २८।१२, (वि.मु.अनु.)
३३	४१	[illegible]	बु.	३१	२५	अनु.	७	५७	प.	५	१५	तै.	०	५२	२९	१२	२२	१६	वृश्चिक	५	३४	७	३	०	२७	१०	४०	
३३	४५	३	गु.	३१	३०	ज्ये.	१०	२	शि.	३	०	व.	१	२८	३०	१३	२३	१७	ध.१०।२	५	३३	७	४	०	२८	८	३४	भ. ११२८, उ., २११३० या., शुक्र अश्वि. मेष में ७।७, (क)
३३	४८	४	शु.	३०	४०	मू.	११	१७	सि.	०/५६	१०/३२	व.	१	५	ज्ये'	१४	२४	१८	धनु	५	३३	७	५	०	२९	६	२६	सं सूर्य वृष में ५५।३२, मु. ३०, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व,
३३	५२	५	श.	२८	५७	पू. षा.	११	३७	शु.	५२	१५	तै.	२८	५७	२	१५	२५	१९	म.२६।१८	५	३२	७	६	१	०	४	१६	(वि.मु.उ.षा.)
३३	५५	६	र.	२६	१५	उ. षा.	११	३	शु.	४७	१०	व.	२६	१५	३	१६	२६	२०	मकर	५	३२	७	६	१	१	२	५	भ. २६।१५ उ., ५४।२८ या.,
३३	५८	७	चं.	२२	४२	श्र.	९	३३	ब्र.	४१	२०	व.	२२	४२	४	१७	२७	२१	कु.३८।२०	५	३१	७	७	१	१	५९	५३	पंचक प्रा. ३८।२०,
३४	१	८	मं.	१८	१०	ध.	७	७	ऐं.	३४	४७	कौ.	१८	१०	५	१८	२८	२२	कुम्भ	५	३१	७	७	१	२	५७	४१	
३४	४	९	बु.	१२	४५	श.	३/५६	४५/३५	वै.	२७	३०	ग.	१२	४५	६	१९	२९	२३	मी ४५।४०	५	३०	७	८	१	३	५५	२५	भ. ३९।३८ उ.,
३४	७	१०	गु	६	३०	उ. भा.	५४	४७	वि.	१९	३२	वि.	६	३०	७	२०	३०	२४	मीन	५	३०	७	८	१	४	५३	१०	भ. ६।३० या., (वि.मु.उ.भा.)
अवम		११	गु.	५९	४०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी का क्षय,
३४	१०	१२	शु.	५२	२०	रे.	४९	३३	ध्रु.	११	१०	कौ.	२६	०	८	२१	३१	२५	मे.४९।३३	५	२९	७	९	१	५	५०	५४	पंचक स. ४९।३३, सू. सा. मिथुन में ४३।१०, (ख)
३४	१३	१३	श.	४५	०	अश्वि.	४४	१०	आ.	३/५	३०/४५	ग.	१८	४०	९	२२	ज्ये'	२६	मेष	५	२९	७	९	१	६	४८	३७	भ. ४५।० उ., शक ज्येष्ठ प्रा., शनि प्रदोष व्र.,
३४	१६	१४	र.	३७	५५	भ.	३९	२	शो.	४५	१७	वि.	११	२८	१०	२३	२	२७	वृ.५२।५६	५	२८	७	१०	१	७	४६	१९	भ. ११।२८ या., बुध भर. में २२।२०,
३४	१९	३०	चं.	३१	२५	कृ.	३४	३७	अ.	३७	३०	च.	४	४०	११	२४	३	२८	वृष	५	२७	७	११	१	८	४४	०	शुक्र भर में ९।२, शनि कृत्ति. ३ में ९।२, सोमवती ३० (ग)

(क) श्री आनन्दमयी मातृ-जन्मोत्सव विसर्जन, श्री गणेश ४ व्र., (वि.मु.मूल), (ख) अपरा ११ व्र. स., (वि.मु.रेव.) (ग) भावुका ३०, वट सावित्री व्र.,

ज्ये. कृ. ८ मंगल, इष्ट ५९।५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	०	७	०	१	९	३
३	१३	८	८	७	७	२५	२५
५५	५९	२१	४१	६	४०	११	११
२४	५३	३६	१७	१६	७	२१	२१
५७	२७	६३	७	७२	७	३	३
४६	४१	१९	३६	३४	४६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
कृ. ३	श्रव. २	अश्वि. ३	अनु. २	अश्वि. ३	कृत्ति. ४	धनि. ४	आश्ले. ३

कुं. सूर्योदये

लोक भविष्य—भारत की परराष्ट्र नीति की दृष्टि से ३ मास का समय अच्छा नहीं, एशिया के राष्ट्रों को अनेक प्रकार की चिन्ताजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। इस पक्ष में ज्ये. कृ. १ को मंगलवार का होना एवं १२ को रेव. नक्षत्र का होना शुभ नहीं, लू, आंधी-गर्मी का प्रकोप, हैजा एवं फ्लू आदि से जनता को कष्ट हो।

साधारण व्यापारिक भविष्य—११ मई से अनाजों में अच्छी तेजी का योग बनता है, तिल, तेल, सोना, चांदी भी तेज रहेंगे। १३ मई से घी में तेजी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी, ऊन, सरसों, अण्डी एवं तिल तेल में घटाबढ़ी चले।

कुं. सूर्योदये

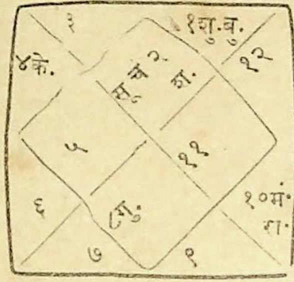

ज्ये. कृ. ३० चं., इष्ट ०।७

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	०	७	०	१	९	३
८	१६	१४	८	१३	३	२४	२४
४४	१५	६	३	९	१८	५५	५५
४	२५	५९	७	१५	५१	२७	२७
५७	२६	७७	७	७२	७	३	३
४०	१२	२३	३९	३७	४४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	श्रव. २	भर. २	अनु. २	अश्वि. ४	कृत्ति. ३	धनि. ४	आश्ले. ३

शकुन से भविष्य विचार—यदि १८ एवं २३ मई को दक्षिण का वायु चले तो वर्षाकाल में सुवृष्टि एवं भाद्रपद में भी वहां बहुत वर्षा हो।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में म. प्र., उ. राजस्थान एवं विन्ध्य प्रदेश में बहुत स्थानों पर बादलचाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं। २१ से २४ मई तक वर्षा से तापांश गिरने का भी योग बनता है।

श्री वि. स. २०२८, शाक १८९३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५ | तारीख | चन्द्र. | भा.स्टै. टा. | उदयकालिक | (२५ मई से ९ जून, सन् १९७१ ई. तक), उत्तरायण,✻

दि.मा घ.	दि.मा प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. जून	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	प.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	२२	१	मं.	२६	२	रो.	३१	१५	सु.	३०	२८	ब.	२६	२	१२	२५	४	२९	वृष	५	२६	७	१२	१	९	४१	३९
३४	२४	२	बु.	२२	०	मृ.	२९	१७	धृ.	२४	३७	कौ.	२२	०	१३	२६	५	र.	मि.०।१६	५	२६	७	१३	१	१०	३९	१७
३४	२६	३	गु.	१९	४०	आर्द्रा	२९	३	शू.	२०	१२	ग.	१९	४०	१४	२७	६	२	मिथुन	५	२६	७	१४	१	११	३६	५३
३४	२९	४	शु.	१९	१५	पुन.	३०	४५	गं.	१७	२०	वि.	१९	१५	१५	२८	७	३	क.१५।२०	५	२६	७	१४	१	१२	३४	२९
३४	३१	५	श.	२०	५०	पु.	३४	२०	वृ.	१६	५	बा.	२०	५०	१६	२९	८	४	कर्क	५	२५	७	१५	१	१३	३२	३
३४	३३	६	र.	२४	१२	आश्ले.	३९	३७	ध्रु.	१६	१०	तै.	२४	१२	१७	३०	९	५	सि.३९।३७	५	२५	७	१५	१	१४	२९	३६
३४	३५	७	चं.	२९	१०	म.	४६	१७	व्या	१७	३०	व.	२९	१०	१८	३१	१०	६	सिंह	५	२५	७	१६	१	१५	२७	६
३४	३८	८	मं.	३५	०	पू. फा.	५३	४५	ह.	१९	४०	वि.	२	५	१९	जू.	११	७	सिंह	५	२४	७	१६	१	१६	२४	३५
३४	४०	९	बु.	४१	१५	पू. फा.	६०	०	व.	२२	१२	बा.	८	८	२०	२	१२	८	क.१०।३९	५	२४	७	१७	१	१७	२२	५
३४	४१	१०	गु.	४७	१०	उ.फा.	१	२२	सि.	२४	४०	तै.	१४	१३	२१	३	१३	९	कन्या	५	२४	७	१७	१	१८	१९	२८
३४	४३	११	शु.	५२	२२	ह.	८	३३	व्य.	२६	४०	व.	१९	४६	२२	४	१४	१०	तु.४१।४२	५	२४	७	१८	१	१९	१६	५९
४४	४५	१२	श.	५६	२२	चि.	१४	५२	व.	२७	५५	ब.	२४	२२	२३	५	१५	११	तुला	५	२३	७	१८	१	२०	१४	२४
३४	४७	१३	र.	५९	५	स्वा.	२०	०	प.	२८	१०	कौ.	२७	४४	२४	६	१६	१२	तुला	५	२३	७	१९	१	२१	११	४९
३४	४८	१४	चं.	६०	०	वि.	२३	४५	शि.	२७	२०	ग.	२९	४५	२५	७	१७	१३	वृ. ७।४९	५	२३	७	१९	१	२२	९	१३
३४	५०	१४	मं.	०	२८	अनु.	२६	१५	सि.	२५	२५	व.	०	२५	२६	८	१८	१४	वृश्चिक	५	२३	७	२०	१	२३	६	३७
३४	५१	१५	बु	०	२५	ज्ये.	२७	३०	सा	२२	३३	ब.	०	२५	२७	९	१९	१५	ध.२७।३०	५	२३	७	२	१	२४	३	५९

ग्रह-दर्शन—श. ६ जून से प्रातः पूर्व में बु. गु. के पास दीखने लगेगा। प्रातः मं. पश्चि. कपल में दीखेगा। सायं गु. पूर्व क्षितिज से झांक रहा होगा।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, सूर्य रोहि. में १९।१०,
रबि उस्सानी मु. ४ प्रा., रम्भा. व्र.,
भ. ४९।२८ उ., श्री प्रताप जयन्ती,
भ. १९।१५ या., बलिदान दिन श्री गुरु अर्जुनदेव जी,
✻उत्तर गोल. ग्रीष्म ऋतु,

भ. २९।१० उ.,
भ. २।५ या., जून प्रा., बुध कृत्ति. में ४४।२५,
(वि. मु-उ. फा.),
बुध वृष में ३७।४३, श्री गंगा दशहरा (वि.मु.ह)
भ. १९।४६ उ., ५२।२२ या., व. गुरु अनु. १ में २।४२, (क)
(वि. मु. स्वाती)
शुक्र वृष में ५४।२८, शनि उदित १४।२२, (वि.मु.स्वा.), (ख)
(वि.मु.अनु.)
भ. ०।२५ उ., ३०।२५ या., सूर्य मृग. में १४।०, सत्य व्र.,
बुध रोहि. में ६।३०, (वि.मु.मूल)

(क) शुक्र कृत्ति. में २।३०, निर्जला ११ व्र. स्मा. वै., (ख) प्रदोष व्रत

ज्ये. शु. ८ मं., इष्ट ०।१५ कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	०	७	०	१	९	३
१६	१९	२५	७	२२	४	२४	२४
२४	३५	३८	२	५०	२०	३०	३०
४८	४१	४	२७	३४	२७	१	१
५७	२३	९७	७	७२	७	३	३
३०	२६	४२	२६	४३	३९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

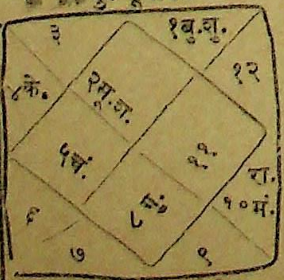

लोक भविष्य—अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों के परस्पर निपटारे के प्रयत्न होंगे, परन्तु सफलता न मि[illegible]। अमेरिका में घरेलू संकटों के अतिरिक्त प्रकृति प्रकोप का भय है।

साधारण व्यापारिक भविष्य—२५ मई से सोना, चांदी, तिल, तेल, अलसी, घी, लाल रंग की वस्तुएं एवं नारियल में मन्दे का वातावरण बने, वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहे, मई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे, सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आएगी। ३ जून से गेहूँ, जौ, चना, चावल, मटर, सूत, तिल, तेल, आदि में तेजी आवे। ६ जून से वृष में [illegible]नि उदय हो रहा है, अतः गुड़, खाण्ड, शक्कर, अनाज, घास, लकड़ी आदि के व्यापारियों को तेजी से लाभ मिलेगा। [illegible]कुन से भविष्य विचार—२७ मई को आर्द्रा नक्षत्र में यदि वर्षा हो तो अन्नाल्पता से जनता क्षुब्ध रहे। ६ एवं ९ जून को यदि बादल हों तो जोरदार वायु से वृक्षों को हानि पहुंचे।

आकाश लक्षण—२७ से ३१ मई तक, बंगाल, पूर्वी बिहार, बम्बई, उड़ीसा एवं मैसूर आदि में वर्षा के योग है। २५, २६ मई को विशेष गर्मी बढ़े। ६ से ९ जून तक गर्म हवा चले।

कुं. सूर्योदये

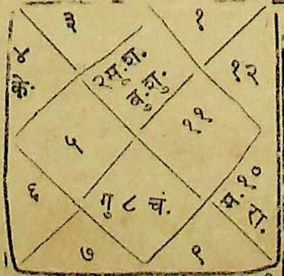

ज्ये. शु. १५ बुध इष्ट ०।१७

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	१	७	१	१	९	३
२४	२२	९	६	२	५	२४	२४
४	३२	४७	४	३२	२१	४	४
१५	१०	५६	३६	४१	५	३५	३५
५७	२०	११६	६	७२	७	३	३
२१	१०	५४	५४	४९	२९	११	११
	मा.	मा.	व	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदयकालिक | (१० से २२ जून, सन् १९७१ ई. तक) उत्तर-दक्षिण अयन,*

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
अव	म	१	बु.	५९	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकम का क्षय, *उत्तर गोल, ग्रीष्म वर्षा ऋतु
३४	५२	२	गु.	५९	७	मू.	२७	३७	शु.	१८	४७	तै.	२९	११	२८	१०	२०	१६	धनु.	५	२३	७	२०	१	२५	१	१९	बुध पूर्व में अस्त ७।३५
३४	५३	३	शु.	५४	१०	पू. षा.	२७	०	शु.	१४	१८	व.	२६	३८	२९	११	२१	१७	म. ४१।३८	५	२३	७	२१	१	२५	५८	३८	भ. २६।३८ उ., ५४।१० या., मंगल धनि. में २५।७,
३४	५४	४	श.	५०	३५	उ. षा.	२५	३०	ब्र.	९	१०	ब.	२२	२३	३०	१२	२२	१८	मकर	५	२३	७	२१	१	२६	५५	५७	श्री गणेश ४ व्र.,
३४	५६	५	र.	४६	१७	श्र.	२३	२८	ऐ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१८	२६	३१	१३	२३	१९	कुं. ५२।१०	५	२२	७	२१	१	२७	५३	१६	पंचक प्रा, ५२।१०,
३४	५७	६	चं.	४१	३५	ध.	२०	५३	वि.	५०	५५	ग.	१३	५६	३२	१४	२४	२०	कुम्भ	५	२२	७	२२	१	२८	५०	३४	भ. ४१।३५ उ.,
३४	५८	७	मं.	३६	२७	श.	१७	५०	प्री.	४४	१७	वि.	९	१	आ	१५	२५	२१	कुम्भ	५	२२	७	२२	१	२९	४७	५१	भ. ९।१ या., सं. सूर्य मिथुन में १२।४५, मु. १५, (क)
३४	५९	८	बु.	३१	२	पू. भा.	१४	२८	आ.	३७	०	बा.	३	४५	२	१६	२६	२२	मी० ।१९	५	२२	७	२२	२	०	४५	८	
३५	०	९	गु.	२५	१७	उ. भा.	१०	५०	सौ.	२९	४२	ग.	२५	१७	३	१७	२७	२३	मीन	५	२२	७	२२	२	१	४२	२६	भ. ५२।२१ उ., यूरेनस मार्गी ३५।५५,
३५	०	१०	शु.	१९	२५	रे.	६	५५	शो.	२२	१७	वि.	१९	२५	४	१८	२८	२४	मे. ६।५५	५	२२	७	२३	२	२	३९	४३	भ. १९।२५ या., पंचक स. ६।५५, बुध मिथुन में ४२।२८,
३५	०	११	श.	१३	३५	अश्वि.	[illegible]	[illegible]	अ.	१४	५२	बा.	१३	३५	५	१९	२९	२५	मेष	५	२२	७	२३	२	३	३७	१	शनि कृत्ति. ४ में ४४।४८, योगिनी ११ व्र. स.,
३५	१	१२	र.	७	५५	कृ.	५६	५	सु.	७	४०	तै.	७	५५	६	२०	३०	२६	वृ. १३।३१	५	२३	७	२३	२	४	३४	१८	प्रदोष व्र.,
३५	१	१३	चं.	२	४७	रो.	५३	३३	धृ.	[illegible]	[illegible]	व.	२	४७	७	२१	३१	२७	वृष	५	२३	७	२३	२	५	३१	३५	भ. २।४७ उ., ३०।३७ या., बुध आर्द्रा में ४४।४७,
क्ष	म	१४	च.	५८	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी का क्षय,
३५	१	३०	मं.	५५	१०	मृ.	५२	५	गं.	४९	२५	च.	२६	४८	८	२२	आ	२८	मि २२।४९	५	२३	७	२३	२	६	२८	५१	शक आषाढ़ प्रा., सूर्य आर्द्रा में ९।२०, (ख)

ग्रह-दर्शन—बु. १० जून को पूर्व में अदृश्य हो जाएगा, प्रातः शु. श. पूर्व में, मं. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. को पूर्व कपाल में देखें। १२ जून के लगभग शु. श. सन्निकटस्थ रहेंगे।

(क) पुण्य २८।४५ तक, बुध मृग. में ३७।४८, शुक्र रोहि. में ८।३७, (ख) सूर्य सायन कर्क में ३।३५, दक्षिणायन प्रा.,

आषा. कृ. ८ बुध, इष्ट ०।२०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	९	१	७	१	१	९	३
०	२४	२४	५	११	६	२३	२३
४५	४३	८	१८	२	१२	४२	४२
२७	१९	९	१३	४९	५३	१९	१९
५७	१६	१२९	६	७२	७	३	३
२८	४१	२३	१२	५७	१७	११	११
	मा	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ मृग.	२ पुन.	२ मृग.	२ कृ.	२ रोहि.	३ कृत्ति.	२ कृत्ति.	३ आर्द्रा.

कुं. सूर्योदये

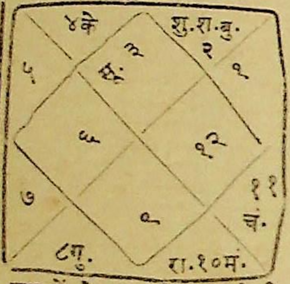

लोक भविष्य—भारत-विषयक रूस की नीति में कुछ परिवर्तन आवेगा। किसी विशेष बात पर ब्रिटेन तथा अमेरिका में मतभेद होगा। साधारण व्यापारिक भविष्य—१० जून से रुई में मन्दी, तिल, पाट, हैसियन एवं लाल मिर्च, राई, सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु में तेजी, गुड़, शक्कर खाण्ड, घी में मन्दे का रुख रहे। (ज्ये. कृ.२) को मूल नक्षत्र होने से कहीं अतिवृष्टि या कहीं अनावृष्टि से धान्यों की फसल को हानि पहुंचे। १८ जून से सोना, चांदी में मन्दे का रुख बनेगा, सरसों आदि के व्यापार में घटाबढ़ी एवं पशुओं के भाव में कुछ तेजी रहेगी। शकुन से भविष्य विचार—१० जून को गुरुवार है; इस दिन यदि रात्रि में चन्द्रमा निर्मल उदय हो, तो आगे वर्षा अच्छी हो। आकाश लक्षण—इस पक्ष में गर्म हवा चले। ११, १२ जून को सिक्किम, भूटान, काठमाण्डू आदि में वर्षा के योग हैं। यह पक्ष १३ दिन का होने से अशुभ माना है, अतः विवाहादि शुभ-कृत्य इस पक्ष में न होंगे। ध्यान रहे—कृष्ण पक्ष होने से त्रयोदश-दिनात्मक-शुक्लपक्ष की भांति यह पक्ष अत्यधिक ☘ लोकभयप्रद नहीं है।

कुं. सूर्योदये

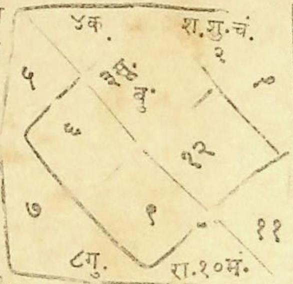

आषा. कृ. ३० मं. इष्ट ०।१७

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	९	२	७	१	१	९	३
६	२६	७	४	१८	६	२३	२३
२९	१४	१३	४२	२०	५६	२३	२३
८	५३	५६	४७	४६	१०	१४	१४
५७	१३	१३१	५	७३	७	३	३
१६	११	१६	४७	४	५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ पुन.	२ कृत्ति.	२ आर्द्रा.	२ कृ.	३ रोहि.	४ कृत्ति.	२ कृत्ति.	३ आर्द्रा.

[illegible] वि. सं. २०२८, शाक १८९३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ | तारीख | चन्द्र- | भा. स्टे. टा. उदय कालिक | (२३ जून से ८ जुलाई, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन,

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जून	श. आषा.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३५	१	१	बु.	५३	१२	आ.	५१	५५	वृ.	४५	१०	कि.	२४	११	९	२३	२	२९	मिथुन	५	२३	७	२३	२	७	२६	८
३५	०	२	गु.	५२	४७	पुन.	५३	२०	ध्रु.	४२	१०	बा.	२३	०	१०	२४	३	३०	क. ३८। ०	५	२३	७	२३	२	८	२३	२४
३५	०	३	शु.	५४	२	पु.	५६	१५	व्या	४०	२५	तै.	२३	२५	११	२५	४	ज.१	कर्क	५	२४	७	२४	२	९	२०	३९
३५	०	४	श.	५६	५५	आश्ले.	६०	०	ह.	४०	०	व.	२५	२९	१२	२६	५	२	कर्क	५	२४	७	२४	२	१०	१७	५५
३४	५९	५	र.	६०	०	आश्ले.	०	५०	व.	४०	४२	ब.	२९	५	१३	२७	६	३	सि. ०।५०	५	२४	७	२४	२	११	१५	९
३४	५९	५	चं.	१	१५	म.	६	४५	सि.	४२	२५	बा.	१	१५	१४	२८	७	४	सिंह	५	२५	७	२४	२	१२	१२	२४
३४	५९	६	मं.	६	४०	पू. फा.	१३	४०	व्य.	४४	४०	तै.	६	४०	१५	२९	८	५	कं. ३०।२	५	२५	७	२४	२	१३	९	३७
३४	५८	७	बु.	१२	३५	उ. फा.	२१	१०	व.	४७	१०	व.	१२	३५	१६	३०	९	६	कन्या	५	२५	७	२४	२	१४	६	५१
३४	५७	८	गु.	१८	३२	ह.	२८	३०	प.	४९	२०	ब.	१८	३२	१७	जु.१	१०	७	कन्या	५	२६	७	२५	२	१५	४	४
३४	५६	९	शु.	२३	५५	चि.	३५	१३	शि.	५०	५५	कौ.	२३	५५	१८	२	११	८	तु. १।५१	५	२६	७	२५	२	१६	१	१७
३४	५५	१०	श.	२८	१२	स्वा.	४०	४५	सि.	५१	३०	ग.	२८	१२	१९	३	१२	९	तुला	५	२७	७	२५	२	१६	५८	३०
३४	५४	११	र.	३१	२	वि.	४४	५५	सा.	५०	५३	वि.	३१	२	२०	४	१३	१०	वृ. २८।५३	५	२७	७	२५	२	१७	५५	४२
३४	५३	१२	च.	३२	१२	अनु.	४७	२५	शु.	४८	५७	ब.	१	३७	२१	५	१४	११	वृश्चिक	५	२८	७	२५	२	१८	५२	५५
३४	५२	१३	मं.	३१	४५	ज्ये.	४८	२०	शु.	४५	५०	कौ.	१	५८	२२	६	१५	१२	ध. ४८।२०	५	२८	७	२५	२	१९	५०	५
३४	५०	१४	बु.	२९	५०	मू.	४७	५०	ब्र.	४१	२५	ग.	०	४८	२३	७	१६	१३	धनु	५	२९	७	२५	२	२०	४७	१८
३४	४८	१५	गु.	२६	३२	पू.षा.	४६	७	ऐं.	३६	५	ब.	२६	३२	२४	८	१७	१४	धनु	५	२९	७	२५	२	२१	४४	३०

ग्रह-दर्शन:—बु. ३० जून से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः पूर्व में शु. और उससे काफी ऊपर श. होगा; इस समय मंगल पश्चिम में होगा। सायं गुरु पूर्व कपाल में दीखेगा।

राहु श्रव. ४ में, केतु आश्ले. २ में १।१५,
चन्द्र दर्शन, मु. ४५, पुरी में श्री जगदीश रथोत्सव,
जमद-उल-अव्वल मु. ५ प्रा., उत्तर गोल, वर्षा ऋतु,
भ. २५।२८ उ., ५६।५५ या., शुक्र मृग में ५।५५,
बुध पुन. में ५६।४०,

(वि. मु-उ. फा.)
भ. १२।३५ उ., ४५।३३ या., बु. पश्चिम में उदित (क)
जुलाई प्रा., शुक्र मिथुन में ३३।५५ (वि.मु. चित्रा)
बुध कर्क में ५४।२, (वि. मु-चि., स्वा.),
भ. ५९।३७ उ., (वि. मु. स्वाती)
भ. ३१।२ या., बुध पुष्य में ३८।४२, चातुर्मास्य व्र. प्रा., (ख)
सोम प्रदोष व्र.,
सूर्य पुन. में १०।२५
भ. २९।५० उ., ५८।११ या., शुक्र आर्द्रा में १।२७ (ग)
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा,)

(क) ६।५८, (वि. मु.-उ. फा.) (ख) देवशयनी ११ व्र. स., (ग) सत्य व्र., वायु परीक्षा, साधुओं का चौमासा प्रा.,

आषा. शु. ८ गुरु, इष्ट ०।१०, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	९	२	७	१	१	९	३
१५	२७	२६	३	२९	७	२२	२२
४	५०	१५	५८	१८	५८	५४	५४
१५	१३	४१	५५	४९	२६	३६	३६
१७	७	११	४	७३	६	३	३
१२	१३	५	६	१२	४२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

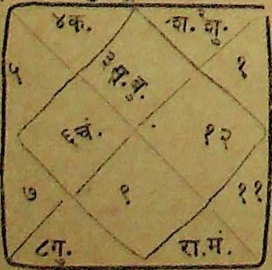

लोक भविष्य— भारतीय प्रजा की परस्पर फूट का विरोधी राष्ट्र लाभ उठावेंगे। देश में देश द्रोहियों से भय है, सरकार को चाहिए, कि इनके दमन के लिए सख्ती से काम ले।

साधारण व्यापारिक भविष्य–इस पक्ष में गेहूं चना, जौ चावल के भाव में तेजी का रुख रहेगा। २४ जून से सूती एवं रेशमी वस्त्र के भाव में तेजी रहे, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दा चले। १ जुला. से रुई पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, अरहर एवं गुवारा में काफी मन्दी आवे। अलसी और घी में घटाबढ़ी चले।

कुं. सूर्योदये, आषा. शु. १५ गुरु, इष्ट ०।२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	९	३	७	२	१	९	३
२१	२८	९	३	७	८	२२	२२
४४	२५	२८	३३	५१	४४	३२	३२
३२	३५	३	४१	३४	१८	२१	२१
५७	२	१०५	२	७३	६	३	३
११	७	१०	५६	२०	२१	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन से भविष्य विचार–आषा. शु. ४, ५ को यदि बिजली चमके, तो सभी प्रकार के धान्य पर्याप्त हों। २७ जून को यदि पश्चिम का पवन चले, बिजली गरजे, वर्षा हो, इन्द्र धनुष दीखे तो गेहूं आदि धान्य के स्टाक से कार्तिक में लाभ मिले। ३० जून को वर्षा हो तो भादों में बहुत वर्षा हो, यदि वर्षा न हो तो आगे अनावृष्टि हो, कपास सूत आदि पौष वा फाल्गुन में काफी महंगे हों। आकाशलक्षण–२ से २८ जून तक वायु का जोर रहे, आकाश मलिन रहे, ४ से ६ जुला. तक पंजाब, हरयाणा, हि. प्र. आदि में अनेक स्थानों पर वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, श्रावण कृष्ण पक्ष ८ | तारीखें | चन्द्र- | भा.स्टें.टा. | उदय कालिक | (९ से २२ जुलाई, सन् १९७१ ई. तक)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जुला.	श. आषा.	मु. ज़ि.ह.	संचार घं. मि.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—प्रातः शु. श. पूर्व में और मंगल पश्चिम में दीखेगा। सायं बुध पश्चिम में और गुरु पूर्व कपाल में होगा। +वर्षा ऋतु
३४	४६	१	शु.	२२	१२	उ. षा.	४३	२२	वै.	२९	५०	कौ.	२२	१२	२५	९	१८	१५	म. ०।२६	५	३०	७	२४	२	२२	४१	४३	
३४	४४	२	श.	१७	५	श्र.	४०	०	वि.	१३	०	ग.	१७	५	२६	१०	१९	१६	मकर	५	३१	७	२४	२	२३	३८	५५	भ. ४४।१३ उ.,
३४	४२	३	र.	११	२०	ध.	३६	३	प्री.	१५	४३	वि.	११	२०	२७	११	२०	१७	कुं ८।२	५	३१	७	२४	२	२४	३६	७	भ. ११।२० या., पंचक प्रा. ८।२, मंगल वक्री १६।२५ (क)
३४	४०	४	चं.	५	२०	श.	३१	५५	आ	८	८	बा.	५	२०	२८	१२	२१	१८	कुम्भ	५	३२	७	२४	२	२५	३३	१९	बुध आश्ले. में १४।२२,
अव	म	५	चं.	५९	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी का क्षय,
३४	३८	६	मं.	५३	०	पू. भा.	२७	४७	सौ.	५२	३०	ग.	२६	५	२९	१३	२२	१९	मी १३।४९	५	३२	७	२४	२	२६	३०	३२	भ. ५३।० उ., व. गुरु विशाखा ४ में २२।२२,
३४	३६	७	बु.	४७	७	उ. भा.	२३	४५	अ.	४५	३०	वि.	२०	३	३०	१४	२३	२०	मीन	५	३३	७	२३	२	२७	२७	४५	भ. २०।३ या.,
३४	३४	८	गु.	४१	३५	रे.	२०	२	सु.	३८	२०	बा.	१४	२१	३१	१५	२४	२१	मे. २०।२	५	३३	७	२३	२	२८	२४	५९	पंचक स. २०।२,
३४	३२	९	शु.	३६	२८	अ.	१६	४२	धृ.	३१	३०	तै.	९	२	श्रा.	१६	२५	२२	मेष	५	३४	७	२३	२	२९	२२	१३	सं. सूर्य कर्क में ३९।३५, मु. १५, पुण्य ९।३५ उ.,
३४	३०	१०	श.	३२	०	भ.	१३	५७	शू.	२५	१२	व.	४	१४	२	१७	२६	२३	वृ. २८।२५	५	३४	७	२२	३	०	१९	२८	भ. ४।१४ उ., ३२।० या., शुक्र पुन. में ५५।२,
३४	२७	११	र.	२८	१०	कृ.	११	५०	गं.	१९	३०	ब.	०	५	३	१८	२७	२४	वृष	५	३५	७	२२	३	१	१६	४५	कामिका ११ व्र. स.,
३४	२४	१२	चं.	२५	१५	रो.	१०	३३	वृ.	१४	२५	तै.	२५	१५	४	१९	२८	२५	मि. ४०।२१	५	३५	७	२१	३	२	१४	३२	सोम प्रदोष व्र.,
३४	२१	१३	मं.	२३	१५	मृ.	१०	१०	ध्रु.	१०	५	व.	२३	१५	५	२०	२९	२६	मिथुन	५	३६	७	२१	३	३	११	२१	भ. २३।१५ उ., ५२।५१ या., सूर्य पुष्य में ९।५, (ख)
३४	१८	१४	बु.	२२	२७	आ.	१०	५५	व्या.	६	४२	श.	२२	२७	६	२१	३०	२७	क. ५७।१५	५	३६	७	२०	३	४	८	३९	बुध मघा सिंह मे १७।४२,
३४	१५	३०	गु.	२२	५०	पुन.	१२	४२	ह.	४	१५	ना.	२२	५०	७	२२	३१	२८	कर्क	५	३७	७	२०	३	५	५	५८	हरयाली ३०,

(क) श्री गणेश ४ व्र., (ख) शनि रोहि. १ में ३४।५२,

श्राव. कृ. ८ गुरु, इष्ट ५९।५२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	९	३	७	२	१	९	३
२९	२८	२२	३	१७	९	२२	२२
२२	२०	३२	१५	३८	३३	६	६
५	५८	५०	६	४७	३१	५४	५४
५७	४	८८	१	७३	५	३	३
१४	३	५७	३१	३१	५३	११	११
	व	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ.	उ.	उ	उ.	अ.	अ.
पुन. ३	धनि. २	आश्ले. २	विशा. ४	आर्द्रा. ४	कृत्ति. ४	श्रव. ४	आश्ले. २

कुं. सूर्योदये

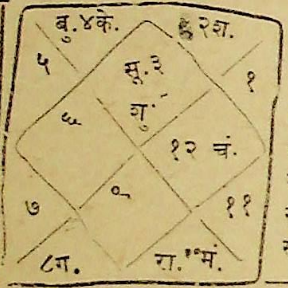

लोक भविष्य—भारत की राजनीति में उथल-पुथल एवं किसी राष्ट्र में जन क्रान्ति होने के लक्षण प्रकट होंगे। प्रजा में भय रोगोपद्रव से अशान्ति हो।

साधारण व्यापारिक भविष्य—११ जुला. से रुई सोना, चांदी, अलसी और गेहूँ लाल रंग की वस्तुओं में काफी तेजी हो। १२ जुला. से १५ दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, मूंगफली, मूंग, उड़द में तेजी का रुख रहे। २० जुला. से सूत-वस्त्र, तांबा, पीतल, जौ, ज्वार, बाजरा, हल्दी, लाख, सण एवं ऊनी वस्त्रों में तेजी रहे। **शकुन से भविष्य विचार**—श्रावण में कृत्तिका के अन्तर्गत यदि वर्षा हो तो चौमासे में सुवृष्टि तथा धान्य की अधिकता हो। यदि १९ जुला. को वर्षा हो तो ३॥ मास तक सुभिक्ष रहे। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में वर्षा के योग होने पर भी मंगल वक्री हो जाने से अनेक स्थानों पर वर्षा का अभाव रहेगा। पुनरपि राजस्थान, हि. प्र. पंजाब, हरयाणा आदि भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में कहीं न कहीं वर्षा होती रहेगी परन्तु सभी प्रान्तों के बहुत से भाग सूखाग्रस्त भी रहेंगे। २२ से २४ जुला. तक बहुत जगह खण्डवृष्टि हो।

कुं. सूर्योदये,

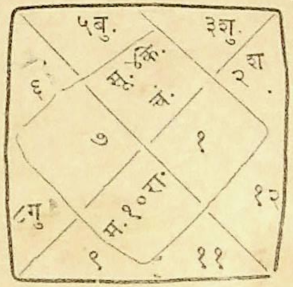

श्राव. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५९।४३,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	७	२	१	९	३
६	२७	२	३	२६	१०	२१	२१
२	३६	१०	८	१३	१३	४०	४०
५९	५४	५३	१७	५२	२३	३९	३९
५७	९	७३	०	७३	५	३	३
११	१०	४३	१४	४०	२४	११	११
	व.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य २	धनि. २	मघा १	विशा. ४	पुन. २	रोहि. १	श्रव. ४	आश्ले. २

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, श्रावण शुक्ल पक्ष १ | तारीख | चन्द्र- | भा. स्टे. टा. | उदय कालिक (२३ जुला. से ६ अगस्त, सन् १९७१ ई.तक), दक्षिणायन,*

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	अं. श्रावं.	अं. जुला.	ग. श्रावं.	नु. ज.	संचार घ. प.	बण्डागढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१२	१	श.	२४	३०	पु.	१५	५८	व.	२	४५	ब.	२४	३०	८	२३	१	२९	कर्क	५	३८	७	१९	३	६	३	१८	चन्द्र दर्शन मु. १५, शक श्रावण प्रा., सूर्य सायन सिंह में (क)
३४	९	२	श.	२७	३२	आश्ले.	२०	२५	सि.	२	२५	कौ.	२७	३२	९	२४	२	ज.	सिं.२०।२५	५	३९	७	१८	३	७	०	३८	जमद-उस्सानी मु. ६ प्रा., गुरु मार्गी ४७।३०,
३४	६	३	र.	३१	४७	म.	२६	५	व्य.	२	४५	ग.	३१	४७	१०	२१	३	२	सिंह.	५	३९	७	१८	३	७	५७	५८	मधुश्रवा. ३, सन्धारा ३, *उत्तर गोल, वर्षा ऋतु
३४	२	४	चं.	३७	०	पू. फा.	३२	४५	व.	४	२०	व.	४	२४	११	२६	४	३	कं.४९।३५	५	४०	७	१७	३	८	५५	१८	भ. ४।२४ उ. ३७।० या., शुक्र कर्क में ३।४०
३३	५९	५	मं.	४२	५५	उ. फा.	४०	५	प.	६	२७	ब.	९	५८	१२	२७	५	४	कन्या	५	४१	७	१७	३	९	५२	३३	यूरेनस हस्त ३ में ४४।३५, नाग पञ्चमी, उपाकर्म (ख)
३३	५६	६	बु.	४९	०	ह.	४७	३५	शि.	८	५२	कौ.	१५	५८	१३	२८	६	५	कन्या	५	४१	७	१६	३	१०	५०	१	शुक्र पुष्य में ४६।२५,
३३	५३	७	गु.	५४	४५	चि.	५४	४५	सि.	११	१५	ग.	२१	५२	१४	२९	७	६	तु.२१।१०	५	४२	७	१६	३	११	४७	२३	भ. ५४।४५ उ., श्री तुलसी जयन्ती,
३३	५०	८	शु.	५९	३५	स्वा.	६०	०	सा.	१३	१७	वि.	२७	१०	१५	३०	८	७	तुला	५	४२	७	१५	३	१२	४४	४५	भ. २७।१० या., श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयनादेवी (ग)
३३	४७	९	श.	६०	०	स्वा.	१	५	शु.	१४	३०	बा.	३१	२०	१६	३१	९	८	वृ.५०।३	५	४३	७	१५	३	१३	४२	०	
३३	४१	९	र.	३	५	वि.	६	५	शु.	१४	३५	कौ.	३	५	१७	अ.	१०	९	वृश्चिक	५	४४	७	१४	३	१४	३९	३४	अगस्त प्रा., लो. मा. तिलक जयन्ती,
३३	४१	१०	च.	५	०	अनु.	९	३०	ब्र.	१३	२५	ग.	५	०	१८	२	११	१०	वृश्चिक	५	४४	७	१३	३	१५	३६	५९	भ. ३५।० उ., शुक्र-वार्धक्य प्रा. २०।२०,
३३	३७	११	मं.	५	०	ज्ये.	११	७	ऐं.	१०	४५	वि.	५	०	१९	३	१२	११	ध. ११।७	५	४५	७	१२	३	१६	३४	२५	भ.५।० या., सूर्य आश्ले. में ५।५०, बुध पू.फा. में ५।१८, (घ)
३३	३३	१२	बु.	३	१०	मू.	१०	५	वै.	६	४०	बा.	३	१०	२०	४	१३	१२	धनु	५	४६	७	११	३	१७	३१	५१	प्रदोष व्र.,
अव	म	१३	बु.	१९	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी का क्षय,
३३	२९	१४	गु.	५४	४५	पू. षा.	९	१०	वि.	५/५४	१०/३५	गं.	२७	१४	२१	५	१४	१४	म.२३।२१	५	४६	७	१०	३	१८	२९	१७	भ. ५४।४५ उ., गुरु अनु. १ में १५।५५, **शु. अ.** (ङ)
३३	२६	१५	शु.	४८	३५	उ. षा.	५	५३	आ.	४६	५०	वि.	२१	४०	२२	६	१५	१५	मकर	५	४७	७	९	३	१९	२६	४४	भ. २१।४० या., रक्षा-बन्धन (राखड़ी), मेला श्रीअमरनाथ (च)

ग्रह-दर्शन ५ अगस्त को शु. पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शनि पूर्व में होगा। सायं इस समय मंगल पश्चिम में डूब रहा होगा। बुध पश्चिम में और याम्योत्तर वृत्त की ओर लपकता दीखेगा।

(क) *३०।१७, नक्त व्र. प्रा., (ख) (ऋषि तर्पण), (ग) मेला चिन्तपूर्णी (घ) पवित्रा ११ व्र. स., (ङ) शुक्र पूर्व में अस्त २०।१५, (च) (काश्मीर), खग्रास चन्द्र ग्रहण, सत्य व्र.,

श्राव. शु. ८ शुक्र, इष्ट ५९।३०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	७	३	१	९	३
१३	२६	१०	३	६	१०	२१	२१
४१	६	४९	११	३	५४	१९	१९
३८	४३	१५	३२	४६	४१	१२	१२
५७	१३	५२	१	७३	४	३	३
२३	३६	८	१४	४९	५०	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ पुष्य	१ धनि.	४ मघा	४ विशा.	१ पुष्य	१ रोहि.	४ श्रव.	४ आश्ले.

कुं सूर्योदय

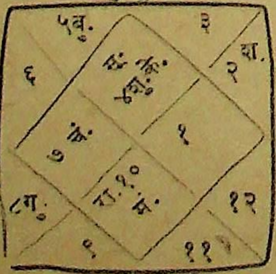

लोक भविष्य—जापान आदि में कहीं भूकम्प वा कहीं जल से हानि का भय बने। पाकिस्तान में आन्तरिक हलचल व अशान्ति बढ़े। फ्रांस और चीन अपने व्यापारोन्नत्यर्थ नया कदम उठावें। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—२४ जुला. से ३ दिन में, रुई में मन्दे का झटका आकर तेजी आये, चांदी और रसकस में मन्दी रहे। ८ दिन में चावल, अलसी, सरसों एवं गुड़ में तेजी, गेहूँ, जौ, चना मटर एवं अरहर में मन्दी का रुख रहे। श्रावण शु. १५ को चन्द्र ग्रहण है, अतः घी, तेल एवं धान्यों का संग्रह करने से आगे लाभ मिले।

कुं. सूर्योदय,

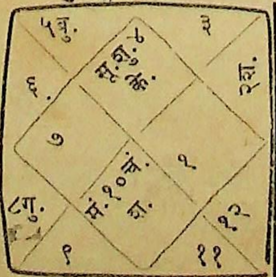

श्राव. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९।१८,

पु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	७	३	१	९	३
२०	२४	१५	३	१४	११	२०	२०
२३	२४	४०	२३	४०	२६	५६	५६
३०	१७	४४	५२	५७	४७	५६	५६
५७	१५	२५	२	७३	४	३	३
२८	३८	५९	२८	५८	१९	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२ आश्ले.	१ धनि.	१ पू.फा.	४ विशा.	४ पुष्य	१ रोहि.	४ श्रव.	२ आश्ले.

शकुन से भविष्य विचार—२९, ३०, ३१ जुला. को यदि वर्षा हो तो सब प्रकार के अन्न अच्छे हों, अनाज का भाव मन्दा हो, यदि इन तीनों नक्षत्रों में बिल्कुल भी वर्षा न हो, बिजली भी न चमके तो आगे अनावृष्टि रहे, अन्न महंगा हो

आकाश लक्षण—२६ जुला. से ४ अग. तक बम्बई, गोआ, भूटान, म. प्र. पंजाब, हरयाणा, हि. प्र. एवं पश्चिमी राजस्थान में बहुत जगह बौछारों के साथ वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक | (७ से २० अगस्त, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन, उत्तर...

ग्रह दर्शन—शुक्र अस्त है। १३ अग. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम में एवं शनि पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर होगा। सायं गुरु याम्योत्तर-वृत्त के आसन्न दीखेगा।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चण्डीगढ़ संचार घ. प.	सू. उ. घ.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	२२	१	श.	४१	३०	श्र.	५६	६५	सौ.	३८	२५	बा.	१५	३	२३	७	१६	१५	कुं.२८।५२	५	४७	७	९	३	२०	२४	१२	पंचक प्रा. २८।५२, गोल, वर्षा ऋतु,
३३	१८	२	र.	३३	५२	श.	५०	२७	शो.	२९	३०	तै.	७	४१	२४	८	१७	१६	कुम्भ	५	४८	७	८	३	२१	२१	४१	भ. ५९।५८ उ., शुक्र आश्ले. में ५२।३,
३३	१५	३	चं.	२६	५	पू. भा.	४४	४७	अ.	२०	२५	वि.	२६	५	२५	९	१८	१७	मी.३१।१२	५	४८	७	७	३	२२	१९	११	भ. २६।५ या., श्री गणेश ४ व्र.,
३३	११	४	मं.	१८	२२	उ. भा.	३९	१५	सु.	११	२५	बा.	१८	२२	२६	१०	१९	१८	मीन	५	४९	७	६	३	२३	१६	४१	
३३	७	५	बु.	११	५	रे.	३४	१२	धृ. शू.	२ ५४	४२ ३५	तै.	११	५	२७	११	२०	१९	मे.३४।१२	५	५०	७	५	३	२४	१४	१५	पंचक स. ३४।१२, व. मंगल श्रवण में ३।२०, चन्द्र षष्ठी,
३३	३	६	गु.	४	३३	अ.	३०	०	गं.	४७	७	व.	४	३३	२८	१२	२१	२०	मेष	५	५१	७	४	३	२५	११	४९	भ. ४।३३ उ., ३१।४२ या., बुध वक्री ४६।५०(क)
अवम		७	गु.	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी का क्षय
३२	५९	८	शु.	५४	१५	भर.	२६	४७	वृ.	४०	२५	बा.	२६	३३	२९	१३	२२	२१	वृ.४१।१५	५	५२	७	३	३	२६	९	२५	बुध पश्चिम में अस्त ३६।१५, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्र. स.(ख)
३२	५५	९	श.	५०	५०	कृ.	२४	४०	ध्रु.	३४	५४	तै.	२२	३२	३०	१४	२३	२२	वृष	५	५२	७	३	३	२७	७	२	गुगा ९
३२	५१	१०	र.	४८	४०	रो.	२३	५०	व्या	३०	१५	व.	१९	४५	३१	१५	२४	२३	मि५४।०	५	५३	७	२	३	२८	४	४१	भ. १९।४५ उ., ४८।४० या., भारत-स्वातन्त्र्य दिवस
३२	४७	११	चं.	४७	४७	मृ.	२४	१०	ह.	२६	४०	ब.	१८	१४	भा१	१६	२५	२४	मिथुन	५	५३	७	१	३	२९	२	२२	सं. सूर्य मघा सिंह में ५९।५५, मु. १५(ग)
३२	४३	१२	मं.	४८	१०	आर्द्रा	२५	५०	व.	२४	०	कौ.	१७	५८	२	१७	२६	२५	मिथुन	५	५४	७	०	४	०	०	४५	
३२	३९	१३	बु.	४९	४५	पुन.	२८	३७	सि.	२२	२०	ग.	१८	५८	३	१८	२७	२६	क.१२।५५	५	५४	६	५९	४	०	५७	४९	भ. ४९।४५ उ., प्रदोष व्र.,
३२	३५	१४	गु.	५२	२५	पु.	३२	३३	व्य.	२१	३२	वि.	२१	५	४	१९	२८	२७	कर्क	५	५५	६	५८	४	१	५५	३४	भ. २१।५ या., शुक्र मघा सिंह में २३।१२
३२	३१	३०	शु.	५६	१०	आश्ले.	३७	३०	व.	२१	४०	च.	२४	१८	५	२०	२९	२८	सि३७।३०	५	५५	६	५७	४	२	५३	२०	पिठोरी ३०, कुशोत्पाटनी ३० ("ओं हूं फट्"—मन्त्र से),

(क) नेप्च्यून मार्गी ३७।१५, (ख) चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. ८ मि. (चण्डीगढ़), (ग) पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, अजा ११ व्र. स्मा. व.,

भाद्र. कृ. ८ शुक्र इष्ट ५९।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	७	३	१	९	३
२७	२२	१७	३	२३	११	२०	२०
६	३३	१	४४	१९	५४	३४	३४
१२	३१	३४	४६	१०	५४	४१	४१
१७	१५	९	३	७४	३	३	३
३८	३८	१७	४१	७	३८	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	श्रव. ४	पू.फा. २	अनु. १	आश्ले. ३	रोहि. १	श्रव. ४	आश्ले. ३

कुं. सूर्योदये

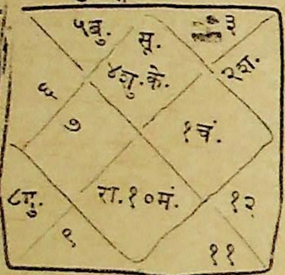

लोक भविष्य—रूस की नीति मुस्लिम-राष्ट्रों को प्रसन्न रखने की बनेगी। भारतीय शासक वर्ग में कोई नयी चिन्ता व्यापे, नेताओं में मतभेद हो, कहीं सीमा विवाद वा गुण्डागर्दी का भय हो।

साधारण व्यापारिक भविष्य—७ अग. से रूई में मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी आवे। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर एवं सोना मक्खी में तेजी का रुख रहे। ११ अग. से गेहूँ जौ, चना, तिल, सोना, चांदी तेज हों। १२ अग. से घी, गुड़ खाण्ड, शक्कर चांदी एवं शेयर में तेजी, रूई में १५, २० टका की तेजी के बाद मन्दी आवे। **शकुन से भविष्य विचार**—८ अगस्त को जहां रात्रि में बादल हों, चन्द्रमा न दीखे, वहां वर्षा पर्याप्त हो, धानों की फसल अच्छी हो,—"भाद्रे मासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते। **तदा सम्पूर्णवर्षा स्यादन्न-निष्पत्तिरुत्तमा** ॥ यदि इस दिन वर्षा हो तो आगे अन्न में तेजी हो। छठे मास में लाभ मिले। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में ८ से १६ अग. तक पंजाब, हरयाणा, हि. प्र., उ.प्र. आदि में वर्षा के योग हैं।

कुं. सूर्योदये,

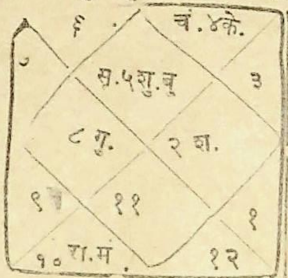

भाद्र कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५८।५८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
३	२०	१४	४	१	१२	२०	२०
५०	४९	२	१३	५८	१८	१२	१२
६	३१	२७	५८	२९	३१	२६	२६
५७	१३	४५	४	७४	३	३	३
४८	२४	१२	५०	१६	०	११	११
	व.	व.	मा.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ	उ.	अ.	उ	अ.	अ.
मघा २	श्रव. ४	पू.फा. २	अनु. २	मघा २	रोहि. २	श्रव. ४	आश्ले. ३

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र. | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक |(२१ अगस्त से ५ सितम्बर, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन+

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. भाद्र.	अं. अग.	श. भाद्र.	मु. [illegible]	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं. मि.	चण्डीगढ़ सू.अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	ग्रह दर्शन--गु. अस्त है। बु. २ सित. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः श. और सायं गु. याम्योत्तर वृत्त के पास होंगे। सायं मं. को पूर्व काल में देखें। +उत्तर गोल, वर्षा-शरद ऋतु
१२	२७	१	श.	६०	०	म.	४३	२२	प.	२२	३०	कि.	२८	२८	६	२१	३०	२९	सिंह	५ ५६	६ ५६	४ ३ ५१ ८	व. बुध मघा में ५५।१५, नक्त व्र. स.,
१२	२३	१	र.	०	४५	पू. फा.	५०	२	शि.	२४	०	ब.	०	४५	७	२२	३१	३०	सिंह	५ ५७	६ ५४	४ ४ ४८ ५८	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
१२	१९	२	चं.	६	१०	उ. फा.	५७	१५	सि.	२६	०	कौ.	६	१०	८	२३	भा[१]	२१	कं. ६।५०	५ ५८	६ ५३	४ ५ ४६ ४८	रजब मु. ७ प्रा., शक भाद्रपद प्रा., सूर्य सा. कन्या में (क)
१२	१५	३	मं.	१२	१०	ह.	६०	०	सा.	२८	२०	ग.	१२	१०	९	२४	२	२	कन्या	५ ५८	६ ५२	४ ६ ४४ ४०	भ. ४५।१५ उ., राहु श्रव. ३ में आश्ले. १में केतु ५३।३०,(ख)
१२	११	४	बु.	१८	२०	ह.	४४	७	शु.	३०	५०	वि.	१८	२०	१०	२५	३	३	तु. ३८।३१	५ ५९	६ ५१	४ ७ ४२ ३२	भ. १८।२० या.,
१२	७	५	गु.	२४	२५	चि.	१२	१५	शु.	३३	८	बा.	२४	२५	११	२६	४	४	तुला	५ ५९	६ ५०	४ ८ ४० २७	ऋषिपञ्चमी
१२	२	६	शु.	२९	५२	स्वा.	१९	१७	ब्र.	३४	५५	तै.	२९	५२	१२	२७	५	५	तुला	६ ०	६ ४९	४ ९ ३८ २२	सूर्य षष्ठी व्र.,
११	५८	७	श.	३४	२०	वि.	२५	२२	ऐं.	३५	५५	ग.	२	६	१३	२८	६	६	वृ. ८।५१	६ ०	६ ४७	४ १० ३६ २०	भ. ३४।२० उ., श्री महालक्ष्मी व्र. प्रा.,
११	५४	८	र.	३७	२०	अनु.	३०	८	वै.	३५	५०	वि.	५	५०	१४	२९	७	७	वृश्चिक	६ १	६ ४६	४ ११ ३४ २०	भ. ५।५० या., दूर्वा ८, राधाष्टमी,
११	४९	९	चं.	३८	३७	ज्ये.	३३	१७	वि.	३४	२०	बा.	७	१८	१५	३०	८	८	ध. ३३।१७	६ १	६ ४५	४ १२ ३२ १९	सूर्य पू.फा. में ४९।२२, शुक्र पू.फा. में ८।५३, (ग)
११	४५	१०	मं.	३७	५५	मू.	३४	२२	प्री.	३१	२०	तै.	८	१६	१६	३१	९	९	धनु	६ २	६ ४४	४ १३ ३० २१	
११	४१	११	बु.	३५	१७	पू. षा.	३३	३८	आ.	२६	४५	व.	६	३६	१७	सि[१]	१०	१०	म. ४७।५९	६ २	६ ४३	४ १४ २८ २२	भ. ६।३६ उ., ३५।१७ या., सितम्बर प्रा.,, पद्मा ११ व्र. स.
११	३६	१२	गु.	३०	४७	उ. षा.	३१	३	सौ.	२०	३८	ब.	३	२	१८	२	११	११	मकर	६ ३	६ ४२	४ १५ २६ २६	बुध पूर्व में उदित १५।३०, प्रदोष व्र. वामन १२,
११	३२	१३	शु.	२४	३७	श्रव.	२६	४७	शो.	१३	१०	तै.	२४	३७	१९	३	१२	१२	कुं. ५४।१	६ ३	६ ४१	४ १६ २४ ३१	पंचक प्रा. ५४।१, अगस्त्य उदित ५०।५५
११	२७	१४	श.	१७	७	ध.	२१	१५	अ.	४५	३०	व.	१७	७	२०	४	१३	१३	कुम्भ	[illegible] ४	६ ४०	४ १७ २२ ३८	भ. १७।७ उ., ४२।५१या, अनन्त १४, सत्य. व्र.,
११	२३	१५	र.	८	३५	श.	१४	४२	धृ.	४४	५३	ब.	८	३५	२१	५	१४	१४	मी ५४।२४	६ ५	६ ३८	४ १८ २० ४७	बुध मार्गी १३।३७, प्रौष्ठपदी १५, महालय (श्राद्ध) प्रा.,

(क) ४६।५८, मेला बाबा गुसाईं आगां (कुराली), वराह जयन्ती, (ख) हरितालिका व्र., कलंक ४ (चन्द्रदर्शन निषिद्ध), (चन्द्रास्त रात्रि ८ घं. २६ मि.) (ग) श्री चन्द्र नवमी

भाद्र. शु. ८ रवि, इष्ट ५८।४२, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
१२	१९	६	५	१३	१२	१९	१९
३१	९	२५	३	७	४१	४३	४३
३	२७	५९	५	२५	५५	४९	४९
५८	७	४१	६	७४	२	३	३
०	४९	५७	१३	२४	६	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मघा	[illegible]	मघा	[illegible]	मघा	[illegible]	[illegible]	[illegible]

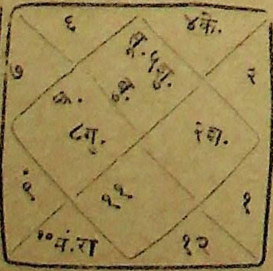

लोक भविष्य---विश्व में कहीं सैनिक हलचल, कहीं प्रकृति प्रकोप एवं यातायात में गड़बड़ी हो। पर्वतीय प्रदेश असम एवं बर्मा में कुछ राजनैतिक हलचल, इधर कहीं जल-प्लाव या रोगभय व्यापे, कहीं से विमान दुर्घटना का समाचार मिले।

साधारण व्यापारिक भविष्य---२१ अग. के लगभग लाल रंग, लाल मिर्च, अन्य लाल रंग की वस्तुएं, घृत, रसादि पदार्थ व पशु, सोना, तांबा में भी तेजी का रुख रहे। रुई में पहले मन्दी होकर १० दिन बाद तेजी आवे। २४ अग. से गेहूँ अलसी आदि में तेजी चले। २ सित. से तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लाल मिर्च में तेजी का वातावरण रहे, अनाज तेज ही रहे। **शकुन से भविष्य विचार**--२६ अग. को यदि बिल्कुल वर्षा न हो तो भारी दुर्भिक्ष संभावित है। १ सित. को यदि वर्षा हो तो आगे धान्य सस्ता हो। भाद्र. शु. १५ को यदि बादल-बिजली हो, चन्द्रोदय बादलों में हो, तो धान्य शीघ्र बेचें, आगे भाव मन्दा होगा। यदि आकाश निर्मल रहे तो गेहूँ, जौ, चने का स्टाक करें, आगे निश्चय ही लाभ मिले। **आकाश लक्षण**--२२ से २७ अग. तक कहीं कहीं खण्डवृष्टि हो, २८ से ३० अग. तक अच्छी वर्षा हो।

कुं. सूर्योदये, भाद्र. शु. १५ रवि. इष्ट ५८।३२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
१९	१८	३	५	२१	१२	१९	१९
१७	३०	५६	४९	४८	५४	२१	२१
३१	३५	२१	३७	२६	२४	३३	३३
५८	२	१०	७	७४	१	३	३
१०	२७	५६	१२	२९	१८	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय कालिक | (७ से २० अगस्त, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन, उत्तर...

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. श्राव.	अं. अग.	श. भाद्र.	मु. ज़ि.	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	२२	१	श.	४१	३०	श्र.	५६	५६	सौ.	३८	२५	बा.	१५	३	२३	७	१६	१५	कुं.२८।५२	५	४७	७	९	३	२०	२४	१२
३३	१८	२	र.	३३	५२	श.	५०	२७	शो.	२९	३०	तै.	७	४१	२४	८	१७	१६	कुम्भ	५	४८	७	८	३	२१	२१	४१
३३	१५	३	सं.	२६	५	पू. भा.	४४	४७	अ.	२०	२५	वि.	२६	५	२५	९	१८	१७	मी.३१।१२	५	४८	७	७	३	२२	१९	११
३३	११	४	मं.	१८	२२	उ. भा.	३९	१५	सु.	११	२५	बा.	१८	२२	२६	१०	१९	१८	मीन	५	४९	७	६	३	२३	१६	४१
३३	७	५	बु.	११	५	रे.	३४	१२	धृ.	२/५४	४२/३५	तै.	११	५	२७	११	२०	१९	ने.३४।१२	५	५०	७	५	३	२४	१४	१५
३३	३	६	गु.	४	३३	अ.	३०	०	गं.	४७	७	व.	४	३३	२८	१२	२१	२०	मेष	५	५१	७	४	३	२५	११	४९
अवम		७	गु.	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	५९	८	शु.	५४	१५	भर.	२६	४७	वृ.	४०	२५	बा.	२६	३३	२९	१३	२२	२१	वृ.४१।१५	५	५२	७	३	३	२६	९	२५
३२	५५	९	श.	५०	५०	कृ.	२४	४०	ध्रु.	३४	५४	तै.	२२	३२	३०	१४	२३	२२	वृष	५	५२	७	३	३	२७	७	२
३२	५१	१०	र.	४८	४०	रो.	२३	५०	व्या.	३०	१५	व.	१९	४५	३१	१५	२४	२३	मि५४।०	५	५३	७	२	३	२८	४	४१
३२	४७	११	सं.	४७	४७	मृ.	२४	१०	ह.	२६	४०	ब.	१८	१४	भा[१]	१६	२५	२४	मिथुन	५	५३	७	१	३	२९	२	२२
३२	४३	१२	मं.	४८	१०	आर्द्रा	२५	५०	व.	२४	०	कौ.	१७	५८	२	१७	२६	२५	मिथुन	५	५४	७	०	४	०	०	४५
३२	३९	१३	बु.	४९	४५	पुन.	२८	३७	सि.	२२	२०	ग.	१८	५८	३	१८	२७	२६	क.१२।५५	५	५४	६	५९	४	०	५७	४९
३२	३५	१४	गु.	५२	२५	पु.	३२	३३	व्य.	२१	३२	वि.	२१	५	४	१९	२८	२७	कर्क	५	५५	६	५८	४	१	५५	३४
३२	३१	३०	शु.	५६	१०	आश्ले.	३७	३०	व.	२१	४०	च.	२४	१८	५	२०	२९	२८	सि३७।३०	५	५५	६	५७	४	२	५३	२०

ग्रह दर्शन—शुक्र अस्त है। १३ अग. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम में एवं शनि पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर होगा। सायं गुरु याम्योत्तर-वृत्त के आसन्न दीखेगा।

पंचक प्रा. २८।५२, ✱गोल, वर्षा ऋतु,

भ. ५९।५८ उ., शुक्र आश्ले. में ५२।३,

भ. २६।५ या., श्री गणेश ४ व्र.,

पंचक स. ३४।१२, व. मंगल श्रवण में ३।२०, चन्द्र षष्ठी,

भ. ४।३३ उ., ३१।४२ या., बुध वक्री ४६।५० (क)

सप्तमी का क्षय

बुध पश्चिम में अस्त ३६।१५, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्र. स. (ख)

गुग्गा ९

भ. १९।४५ उ., ४८।४० या., भारत-स्वातन्त्र्य दिवस

सं. सूर्य मघा सिंह में ५९।५५, मु. १५ (ग)

भ. ४९।४५ उ., प्रदोष व्र.,

भ. २१।५ या., शुक्र मघा सिंह में २३।१२

पिठोरी ३०, कुशोत्पाटनी ३० ("ओं हूं फट्"—मन्त्र से),

(क) नेप्च्यून मार्गी ३७।१५, (ख) चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. ८ मि. (चण्डीगढ़), (ग) पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, अजा ११ व्र. स्मा. व.,

भाद्र. कृ. ८ शुक्र इष्ट ५९।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	७	३	१	९	३
२७	२२	१७	३	२३	११	२०	२०
६	३३	१	४४	१९	५४	३४	३४
१२	३१	३४	४६	१०	५४	४१	४१
१७	१५	९	३	७४	३	३	३
३८	३८	१७	४१	७	३८	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	श्रव. ४	पू.फा. २	अनु. २	आश्ले. ३	रोहि. २	श्रव. ४	आश्ले. ३

कुं. सूर्योदये

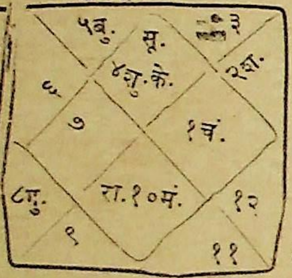

लोक भविष्य—रूस की नीति मुस्लिम-राष्ट्रों को प्रसन्न रखने की बनेगी। भारतीय शासक वर्ग में कोई नयी चिन्ता व्यापे, नेताओं में मतभेद हो, कहीं सीमा विवाद वा गुण्डागर्दी का भय हो।

साधारण व्यापारिक भविष्य—७ अग. से रूई में मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी आवे। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर एवं सोना मक्खी में तेजी का रुख रहे। ११ अग. से गेहूँ जौ, चना, तिल. सोना, चांदी तेज हों। १२ अग. से घी, गुड़ खाण्ड, शक्कर चांदी एवं शेयर में तेजी, रूई में १५, २० टका की तेजी के बाद मन्दी आवे। **शकुन से भविष्य विचार**—८ अगस्त को जहां रात्रि में बादल हों, चन्द्रमा न दीखे, वहां वर्षा पर्याप्त हो, धानों की फसल अच्छी हो,—"भाद्रे मासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते। **तदा सम्पूर्णवर्षा स्यादन्न-निष्पत्तिरुत्तमा**॥ यदि इस दिन वर्षा हो तो आगे अन्न में तेजी हो। छठे मास में लाभ मिले। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में ८ से १६ अग. तक पंजाब, हरयाणा, हि. प्र., उ.प्र. आदि में वर्षा के योग हैं।

कुं. सूर्योदये, भाद्र कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५८।५८,

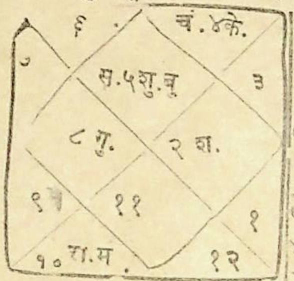

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
३	२०	१४	४	१	१२	२०	२०
५०	४९	२	१३	५८	१८	१२	१२
६	३१	२७	५८	२९	३१	२६	२६
५७	१३	४५	४	७४	३	३	३
४८	२४	१२	५०	१६	०	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	श्रव. ४	पू.फा. २	अनु. २	मघा २	रोहि. २	श्रव. ४	आश्ले. ३

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारखें | चन्द्र. | भा. स्टे. टा. | उदय कालिक | (२१ अगस्त से ५ सितम्बर, सन् १९७१ ई० तक) दक्षिणायन+

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. भाद्र.	अं. अग.	श. भाद्र.	मु.	संचार घ. प.	सू.उ. घं. मि.	सू.अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अ. क. वि.	
३२ २७	१	श.	६० ०	म.	४३ २२	प.	२२ ३०	कि.	२८ २८	६	२१	३०	२९	सिंह	५ ५६	६ ५६	४ ३ ५१ ८	व. बुध मघा में ५५।१५, नक्त व्र. स.,
३२ २३	१	र.	० ४५	पू. फा.	५० २	शि.	२४ ०	ब.	० ४५	७	२२	३१	३०	सिंह	५ ५७	६ ५४	४ ४ ४८ ५८	चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
३२ १९	२	चं.	६ १०	उ. फा.	५७ १५	सि.	२६ ०	कौ.	६ १०	८	२३	भा.	र१	कं. ६।५०	५ ५८	६ ५३	४ ५ ४६ ४८	रजब मु. ७ प्रा., शक भाद्रपद प्रा., सूर्य सा. कन्या में (क)
३२ १५	३	मं.	१२ १०	ह.	६० ०	सा.	२८ २०	ग.	१२ १०	९	२४	२	२	कन्या	५ ५८	६ ५२	४ ६ ४४ ४०	भ. ४५।१५ उ., राहु श्रव. ३ में आश्ले. १में केतु ५३।३०,(ख)
३२ ११	४	बु.	१८ २०	ह.	४ ४७	शु.	३० ५०	वि.	१८ २०	१०	२५	३	३	तु. ३८।३१	५ ५९	६ ५१	४ ७ ४२ ३२	भ. १८।२० या.,
३२ ७	५	गु.	२४ २५	चि.	१२ १५	शु.	३३ ८	बा.	२४ २५	११	२६	४	४	तुला	५ ५९	६ ५०	४ ८ ४० २७	ऋषिपञ्चमी
३२ २	६	शु.	२९ ५२	स्वा.	१९ १७	ब्र.	३४ ५५	तै.	२९ ५२	१२	२७	५	५	तुला	६ ०	६ ४९	४ ९ ३८ २२	सूर्य षष्ठी व्र.,
३१ ५८	७	श.	३४ २०	वि.	२५ २२	ऐं.	३५ ५५	ग.	२ ६	१३	२८	६	६	वृ. ८।५१	६ ०	६ ४७	४ १० ३६ २०	भ. ३४।२० उ., श्री महालक्ष्मी व्र. प्रा.,
३१ ५४	८	र.	३७ २०	अनु.	३० ८	वै.	३५ ५०	वि.	५ ५०	१४	२९	७	७	वृश्चिक	६ १	६ ४६	४ ११ ३४ २०	भ. ५।५० या., दूर्वा ८, राधाष्टमी,
३१ ४९	९	चं.	३८ ३७	ज्ये.	३३ १७	वि.	३४ २०	बा.	७ १८	१५	३०	८	८	ध. ३३।१७	६ १	६ ४५	४ १२ ३२ १९	सूर्य पू.फा. में ४९।२२, शुक्र पू.फा. में ८।५३, (ग)
३१ ४५	१०	मं.	३९ ५५	मू.	३४ २२	प्री.	३१ २०	तै.	८ १६	१६	३१	९	९	धनु	६ २	६ ४४	४ १३ ३० २१	
३१ ४१	११	बु.	३५ १७	पू. षा.	३३ ३८	आ.	२६ ४५	व.	६ ३६	१७	सि.	१०	१०	म. ४७।५९	६ २	६ ४३	४ १४ २८ २२	भ. ६।३६ उ., ३५।१७ या., सितम्बर प्रा.,, पद्मा ११ व्र. स.
३१ ३६	१२	गु.	३० ४७	उ. षा.	३१ ३	सौ.	२० ३८	व.	३ २	१८	२	११	११	मकर	६ ३	६ ४२	४ १५ २६ २६	बुध पूर्व में उदित १५।३०, प्रदोष व्र. वामन १२,
३१ ३२	१३	शु.	२४ ३७	श्रव.	२६ ४७	शो.	१३ १०	तै.	२४ ३७	१९	३	१२	१२	कुं. ५४।१	६ ३	६ ४१	४ १६ २४ ३१	पंचक प्रा. ५४।१, अगस्त्य उदित ५०।५५
३१ २७	१४	श.	१७ ७	ध.	२१ १५	अ.	४/५८ ३०/०	व.	१७ ७	२०	४	१३	१३	कुम्भ	६ ४	६ ४०	४ १७ २२ ३८	भ. १७।७ उ., ४२।५१या, अनन्त १४, सत्य. व्र.,
३१ २३	१५	र.	८ ३५	श.	१४ ४२	धृ.	४४ ५३	ब.	८ ३५	२१	५	१४	१४	मी. ५४।२४	६ ५	६ ३८	४ १८ २० ४७	बुध मार्गी १३।३७, प्रौष्ठपदी १५, महालय (श्राद्ध) प्रा.,

ग्रह दर्शन--गु. अस्त है। बु. २ सित. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः श. और सायं गु. याम्योत्तर वृत्त के पास होंगे। सायं मं. को पूर्व कपाल में देखें। +उत्तर गोल,वर्षा-शरद ऋतु

(क) ४६।५८, मेला बाबा गुसाईं आंगा (कुराली), वराह जयन्ती, (ख) हरितालिका व्र., कलक ४ (चन्द्रदर्शन निषिद्ध), (चन्द्रास्त रात्रि ८ घ. २६ मि.) (ग) श्री चन्द्र नवमी

भाद्र. शु. ८ रवि, इष्ट ५८।४२, कुं. सूर्योदय

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
१२	१९	६	५	१३	१२	१९	१९
३१	९	२५	३	७	४१	४३	४३
३	२७	५९	५	२५	५५	४९	४९
५८	७	४१	६	७४	२	३	३
०	४९	५७	१३	२४	६	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मघा ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

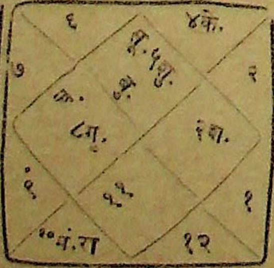

लोक भविष्य--विश्व में कहीं सैनिक हलचल, कहीं प्रकृति प्रकोप एवं यातायात में गड़बड़ी हो। पर्वतीय प्रदेश असम एवं वर्मा में कुछ राजनैतिक हलचल, इधर कहीं जल-प्लाव वा रोगभय व्यापे, कहीं से विमान दुर्घटना का समाचार मिले।

साधारण व्यापारिक भविष्य--२१ अग. के लगभग लाल रंग, लाल मिर्च, अन्य लाल रंग की वस्तुएं, घृत, रसादि पदार्थ व पशु, सोना, तांबा में भी तेजी का रुख रहे। रुई में पहले मन्दी होकर १० दिन बाद तेजी आवे। २४ अग. से गेहूँ अलसी आदि में तेजी चले। २ सितं. से तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लाल मिर्च में तेजी का वातावरण रहे,अनाज तेज ही रहे। **शकुन से भविष्य विचार**--२६ अग. को यदि बिल्कुल वर्षा न हो तो भारी दुर्भिक्ष संभावित है। १ सितं. को यदि वर्षा हो तो आगे धान्य सस्ता हो। भाद्र. शु. १५ को यदि बादल-बिजली हो, चन्द्रोदय बादलों में हो, तो धान्य शीघ्र बेचें, आगे भाव मन्दा होगा। यदि आकाश निर्मल रहे तो गेहूँ, जौ, चने का स्टाक करें, आगे निश्चय ही लाभ मिले। **आकाश लक्षण**--२२ से २७ अग. तक कहीं कहीं खण्डवृष्टि हो, २८ से ३० अग. तक अच्छी वर्षा हो।

कुं. सूर्योदये, भाद्र. शु. १५ रवि. इष्ट ५८।३२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	४	१	९	३
१९	१८	३	५	२१	१२	१९	१९
१७	३०	५६	४९	४८	५४	२१	२१
३१	३५	२१	३७	२६	२४	३३	३३
५८	२	१०	७	७४	१	३	३
१०	२७	५६	१२	२९	१८	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि सं. २०२८, शाक १८९३ आश्विन कृष्ण पक्ष १२ | तारीखें | चन्द्र. | भा.स्टै.टा. | उदय कालिक | (६ से १९ सितम्बर, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन, उत्तर+गोल, शरद् ऋतु

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. भाद्र.	अं. चित्रा.	श. भाद्र.	मु. पू.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन--शु. अस्त है। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज पर एवं श. याम्योत्तर वृत्त के पास होगा। सायं मं. पूर्व कपाल में एवं गु. पश्चिम कपाल में दीखेगा।
अव	म	१	र.	५९	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकम का क्षय,
३१	१९	२	चं.	५०	२७	पू.भा.	७	३८	शू.	३४	३५	तै.	२५	२	२२	६	१५	१५	मीन	६	५	६	३७	४	१९	१८	५८	
३१	१५	३	मं.	४१	३०	उ.भा.	०/५३	३०/४५	गं.	२४	१८	व.	१५	५८	२३	७	१६	१६	मे.५३।४५	६	६	६	३५	४	२०	१७	१०	भ. १५।५८ उ., ४१।३० या., पंचक स. ५३।४५
३१	१०	४	बु.	३३	१५	अ.	४७	४०	वृ.	१४	३५	व.	७	२३	२४	८	१७	१७	मेष	६	७	६	३४	४	२१	१५	२३	श्री गणेश ४ व्र.,
३१	६	५	गु.	२६	४	भ.	४२	४५	ध्रु.	५/५७	३०/३०	तै.	२६	४	२५	९	१८	१८	वृ.५६।५३	६	७	६	३३	४	२२	१३	३८	मंगल मार्गी ३३।२२, शुक्र उ. फा. में ५३।१५,
३१	१	६	शु.	२०	१०	कृ.	३९	१८	हृ.	५०	४२	व.	२०	१०	२६	१०	१९	१९	वृष	६	८	६	३२	४	२३	११	१६	भ. २०।१० उ., ४८।१ या.,
३०	५७	७	श.	१५	५२	रो	३७	३०	व.	४५	१७	व.	१५	५२	२७	११	२०	२०	वृष	६	८	६	३०	४	२४	१०	१६	
३०	५२	८	र.	१३	१५	मृ.	३७	२०	सि.	४१	१५	कौ.	१३	१५	२८	१२	२१	२१	मि.७।२५	६	९	६	२९	४	२५	८	३८	गुरु अनु. २ में ३६।५२. शुक्र कन्या में ३४।५
३०	४७	९	चं.	१२	३०	आर्द्रा	३८	५५	व्य.	३८	३२	ग	१२	३०	२९	१३	२२	२२	मिथुन	६	९	६	२८	४	२६	७	२	भ. ४२।५५ उ., सूर्य उ.फा. में ३३।५२, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	४२	१०	मं.	१३	२०	पुन.	४२	५	व.	३७	५	वि.	१३	२०	३०	१४	२३	२३	क.२६।१८	६	१०	६	२७	४	२७	५	२८	भ .१३।२० या.,
३०	३८	११	बु.	१५	४०	पु.	४६	३०	प.	३६	४५	बा.	१५	४०	३१	१५	२४	२४	कर्क	६	१०	६	२५	४	२८	३	५६	इन्दिरा ११ व्र. स., जन्मदिन श्री बघाट नरेश (सोलन),
३०	३३	१२	गु.	१९	१५	अश्ले.	५२	३	शि.	३७	१८	तै.	१९	१५	आ'	१६	२१	२१	सि.५२।३	६	११	६	२४	४	२९	२	२५	सं. सूर्य कन्या में ५९।० मु. ३०, पुण्य अगले दिन मध्याह्न (क)
३०	२८	१३	शु.	२३	५०	म.	५८	२५	सि.	३८	३२	व.	२३	५०	२	१३	२६	२६	सिंह	६	११	६	२३	५	०	०	५८	भ. २३।५० उ., ५६।३० या.,
३०	३४	१४	श.	२९	१०	पू.फा.	६०	०	सा.	४०	१७	श.	२९	१०	३	१८	२७	२७	सिंह	६	१२	६	२२	५	०	५९	३२	शस्त्र विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध,
३०	१९	३०	र.	३५	०	पू.फा.	५	२२	शु.	४२	२०	च.	२	५	४	१९	२८	२८	कं.२२।१२	६	१२	६	२१	५	१	५८	८	शनि वक्री ३।५५, महालया ३०, सर्व-पितृ-श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त

(क) से पूर्व, बव पू.फा. में ५८।५०, प्रदोष व्रत,

आश्वि. कृ. ८ रवि. इष्ट ५८।२२, कुं सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	५	१	९	३
२६	१८	८	६	०	१३	१८	१८
५	३०	११	४२	३०	१	५९	५९
२६	१०	५२	१२	१०	४५	१८	१८
५८	३	६७	८	७४	०	३	३
२५	८	४३	७	३५	३७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	भ.	अ.
पू.फा. ४	श्रव. ३	मघा ३	अनु. ३	उ.फा. ३	रोहि. ४	श्रव. ३	आश्ले. ४

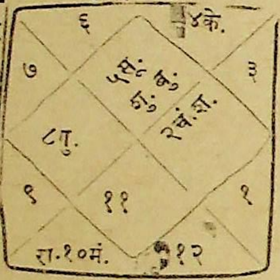

लोक भविष्य--भारत का सैनिक व्यय बढ़े, लोकतन्त्र की रक्षा के लिए एवं देश के आन्तरिक शत्रुओं के दमन के लिए शासकों को सचेष्ट रहना पड़े।

साधारण व्यापारिक भविष्य--६ सितं. से रेशम, तेल, अलसी, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपुर-चन्दनादि में मन्दे का वातावरण बने। ९ सितं. से वायदा के बाजार में जो चीजें पहले मन्दी हों, वे तेज हो जावेंगी जो तेज हों वे मन्दी हो जाएंगी। तेल और चांदी में मन्दी होगी और तीन दिन पीछे रुई में अच्छी मन्दी आवे। १२ सितं. से अनाज, गुड़, खाण्ड, चारा ऊनी व रेशमी कपड़ों में तेजी, चावलों में अच्छी तेजी का झटका आवे। आश्वि. कृ. ११ को बुधवार अतः गाय-भैंस आदि पशु तेज हों। **शकुन से भविष्य विचार**--१४, १५ १६ सितं. को बादल गरजें, बिजली चमके, तो गेहूँ का भाव तेज हो। **आकाश लक्षण**--७ सितं. से ११ सितं. तक विन्ध्य प्रदेश, उ. प्र., पंजाब, हरयाणा, हि. प्र. आदि में बहुत जगह वर्षा हो। १३ से १७ सितं. तक साधारण खण्ड वृष्टि के योग हैं।

कुं. सूर्योदये, आश्वि. कृ. ३० रवि, इष्ट ५८।१५

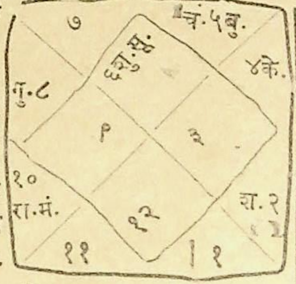

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	९	४	७	५	१	९	३
२	१९	१८	७	९	१३	१८	१८
५५	८	०	४२	१२	३	३७	३७
२	४२	५५	२९	३०	४३	३	३
५८	८	१००	८	७४	०	३	३
३९	३७	३५	५९	४०	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. २	श्रव. ३	पू.फा. २	अनु. २	उ.फा. ४	रोहि. १	श्रव. ३	आश्ले. १

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, आश्विन शुक्ल पक्ष १३ | तारीखें | चन्द्र- | भा.स्टें.टा. | उदय कालिक | (२० सितं. से ४ अक्तू. सन् १९७१ इ. तक) दाक्षणायन

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आश्वि.	अं. सितं.	श. आश्वि.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. अ. घं.	मि.	स. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	१४	१	चं.	४१	१०	उ.फा.	१२	४२	शु.	४४	४२	कि.	८	५	५	२०	२९	२९	कन्या	६	१३	६	२०	५	२	५६	४६
३०	९	२	मं.	४७	२२	ह.	२०	१३	ब्र.	४७	७	बा.	१४	१६	६	२१	३०	३०	तु.५३।५६	६	१३	६	१८	५	३	५५	२६
३०	४	३	बु.	५३	३०	चि.	२७	४०	ऐं.	४९	२२	तै.	२०	२६	७	२२	३१	शा'	तुला	६	१४	६	१७	५	४	५४	९
३०	०	४	गु.	५९	१३	स्वा.	३४	५२	वै.	५१	२३	व.	२६	२२	८	२३	आ'	२	तुला	६	१५	६	१५	५	५	५२	५३
२९	५५	५	शु.	६०	०	वि.	४१	३२	वि.	५२	५२	ब.	२१	४२	९	२४	२	३	वृ.२४।५२	६	१५	६	१४	५	६	५१	३९
२९	५१	५	श.	४	१२	अनु.	४७	१५	प्री.	५३	३०	बा.	४	१२	१०	२५	३	४	वृश्चिक	६	१६	६	१२	५	७	५०	२६
२९	४७	६	र.	८	७	ज्ये.	५१	४२	आ.	५३	१२	तै.	८	७	११	२६	४	५	ध.५१।४२	६	१६	६	११	५	८	४९	१६
२९	४२	७	चं.	१०	३७	मू.	५४	३६	सौ.	५१	३५	व.	१०	३७	१२	२७	५	६	धनु	६	१७	६	१०	५	९	४८	७
२९	३७	८	मं.	११	२५	पू.षा.	५५	४०	शो.	४८	३२	ब.	११	२५	१३	२८	६	७	धनु	६	१७	६	९	५	१०	४७	१
२९	३३	९	बु.	१०	१७	उ.षा.	५४	४७	अ.	४३	५५	कौ.	१०	१७	१४	२९	७	८	म.१०।२७	६	१८	६	८	५	११	४५	५६
२९	२८	१०	गु.	७	१२	श्र.	५२	०	सु.	३७	४५	ग.	७	१२	१५	३०	८	९	मकर	६	१९	६	७	५	१२	४४	५३
२९	२४	११	शु.	२	१५	ध.	४७	३०	धृ.	३०	५	वि	२	१५	१६	अ.'	९	१०	कुं.१९।४५	६	१९	६	५	५	१३	४३	५२
अव	म	१२	शु	५५	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	५	०	०	०
२९	१९	१३	श.	४७	३०	श.	४१	३०	शू.	२१	८	कौ.	२१	३२	१७	२	१०	११	कुम्भ	६	२०	६	४	०	१४	४२	५३
२९	१४	१४	र.	३८	२२	पू.भा.	३४	२८	गं.	११	१३	ग.	१२	५६	१८	३	११	१२	मी२१।१३	६	२०	६	३	५	१५	४१	५४
२९	९	१५	चं.	२८	४०	उ. भा.	२६	४५	वृ.	[illegible]	[illegible]	वि.	३	३१	१९	४	१२	१३	मीन	६	२१	६	२	५	१६	४०	५८

ग्रह-दर्शन—शु. अस्त है। बु. २५ सितं. को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः श. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. को पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर देखें, तब मं. पूर्व कपाल में होगा।

शुक्र हस्त में ३६।२२, मातामह (नाना) का श्राद्ध, शारद (क)
चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
शाबान मु. ८ प्रा., उत्तर-दक्षिणगोल शरद् ऋतु
भ. २६।२२ उ., ५९।१३ या., शक आश्विन प्रा., सूर्य सा., (ख)
बुध उ.फा. में ५५।४८, उपांग ललिता व्र.,
बुध पूर्व में अस्त ५८।५
बुध कन्या में ४६।१८,
भ. १०।३७ उ. ४१।१ या., सूर्य हस्त में १२।१५, सरस्वती आवाहन
सरस्वती पूजन, श्री दुर्गाष्टमी, मेला ज्वालामुखी व तारादेवी,
सरस्वती बलिदान,
भ. ३४।४४ उ., सरस्वती विसर्जन, विजया दशमी दशहरा (ग)
भ. २।१५ या., पंचक प्रा., १९।४५, अक्तूबर प्रा., (घ)
द्वादशी का क्षय,
बुध हस्त में १५।५८, जन्म दिन महात्मा गान्धी, शनि प्रदोष व्र.,
भ. ३८।२२उ.,
भ. ३।३१ या., गुरु अनु. ३ में १०।०, शरत्पूर्णिमा (ङ)

(क) नवरात्र प्रा., घटस्थापन, (ख) तुला में ४०।२ दक्षिण गोल प्रा., (ग) (नीलकण्ठ दर्शन, रावण वध), पापांकुशा ११ व्र. स्मा., (घ) शुक्र चित्रा में १८।४८, भरत मिलाप

(ङ) कोजागरी व्र., श्री वाल्मीकि जयन्ती

आश्वि. शु. ८ मंगल, इष्ट ५८।२, कुं सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
५	९	५	७	५	१	९	३
११	२०	४	९	२०	१२	१८	१८
४३	५२	०	७	२४	५८	८	८
५९	४०	२२	९	३९	२५	२६	२६
५८	१५	१०५	९	७४	१	३	३
५५	१	२१	५७	४०	८	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

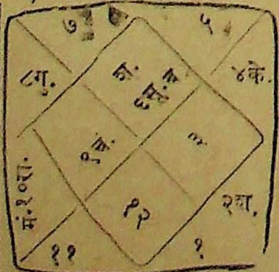

लोक भविष्य—भारतीय विज्ञान में नया आविष्कार हो, कहीं अग्नि या विस्फोट से हानि, देशान्तर से आश्चर्यजनक समाचार मिले। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—वृष राशि में शनि वक्री हुआ है अतः २० सितं. से सरसों, तोरिया एवं बिनौला में अच्छी तेजी आए, मूंगफली, सिक्का, कलई, अलसी, चावल, घी, तेल, सिमिन्ट एवं वस्त्र तेज रहें। २६ सितं से रुई, चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं हल्दी में तेजी आवे। यहां सू. बु. एवं श. एक राशिस्थ हैं, वर्षा कम, सभी प्रकार के अनाज अधिक होने पर भी महंगे हों। **शकुन से भविष्य विचार**—यदि पूर्णमासी निर्मल रहे तो शुभ है, यदि पूर्णमासी को बादल हों तो धान्य संग्रह करने से चैत्र में बेचने से लाभ होगा :—**"आश्विने निर्मला पूर्णा शुभाय, जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्याच्चैत्रे लाभदो भवेत्।" आकाश लक्षण**—२३ से २६ सितं तक कहीं कहीं खण्ड वृष्टि, २८ सितं. से १ अक्तू. तक भारत के बम्बई, भूटान, काठमाण्ड में अच्छी वर्षा के योग हैं, पंजाब, हरयाणा हि. प्र., यू. पी. में भी कुछ वर्षा के योग हैं।

कुं. सूर्योदये, आश्वि. शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५७।५२

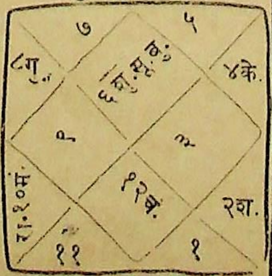

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	९	५	७	५	१	९	३
१७	२२	१४	१०	२७	१२	१७	१७
३७	३२	५०	८	५२	५०	४९	४९
५५	११	३०	२०	५४	३	२३	२३
५९	१८	१०५	१०	७४	१	३	३
६	३९	२३	३३	४३	४६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय कालिक | (५ से १९ अक्तू. सन् १९७१ ई. तक), दक्षिणायन, उत्तर

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. कार्तिक	मु. शाबान	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५	१	मं.	१८	४७	रे.	१८	५२	व्या	३८	३८	कौ.	१८	४७	२०	५	१३	१४	मे.१८।५२	६	२२	६	०	५	१७	४०	२	पंचक स. १८।५२,
२९	०	२	बु.	९	२०	अ.	११	२५	ह.	२८	१०	ग.	९	२०	२१	६	१४	१५	मेष	६	२२	५	५९	५	१८	३९	९	भ. ३४।५७ उ., शुक्र तुला में ३९।५२ शब-ई-बरात,
२८	५६	३	गु.	०	३५	भ.	५९ / ४	१० / ४५	व.	१८	३०	बि.	०	३५	२२	७	१५	१६	वृ.१८।२०	६	२३	५	५७	५	१९	३८	१९	भ. ०।३५ या., मंगल धनि. में २७।५५, करक ४ (क)
अवम		४	गु.	५३	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी का क्षय,
२८	५२	५	शु.	४७	२०	रो.	५५	३३	सि.	३	५५	कौ.	२०	१५	२३	८	१६	१७	वृष	६	२३	५	५६	५	२०	३७	३२	
२८	४७	६	श.	४३	२५	मृ.	५३	४५	व्य.	५९ / २	१३ / ४५	ग.	१५	२३	२४	९	१७	१८	मि२४।३९	६	२४	५	५५	५	२१	३६	४७	भ. ४३।२५. बुध चित्रा में ४८।५२,
२८	४२	७	र.	४१	३२	आ.	५३	५७	प.	५३	२०	वि.	१२	२८	२५	१०	१८	१९	मिथुन	६	२५	५	५४	५	२२	३६	४	भ. १२।२९ या., सूर्य चित्रा में ४४।३०,
२८	३८	८	चं.	४१	४५	पुन.	५६	१०	शि.	५१	३	बा.	११	३८	२६	११	१९	२०	क.४०।३७	६	२५	५	५३	५	२३	३५	२२	अहोई ८
२८	३३	९	मं.	४३	५७	पु.	६०	०	सि.	५०	१०	तै.	१२	५१	२७	१२	२०	२१	कर्क	६	२६	५	५२	५	२४	३४	४४	शुक्र स्वाती में ०।४७,
२८	२८	१०	बु.	४७	४२	पु.	०	१३	सा.	५०	३५	व.	१५	५०	२८	१३	२१	२२	कर्क	६	२७	५	५१	५	२५	३४	७	भ. १५।५० उ., ४७।४२ या., बुध तुला में ४४।३२,
२८	२४	११	गु.	५२	४७	आश्ले.	५	४५	शु.	५१	५३	ब.	२०	१५	२९	१४	२२	२३	सि. ५।४५	६	२७	५	५०	५	२६	३३	३४	रमा ११ व्र. स्मा. वै.,
२८	१९	१२	शु.	५८	३५	म.	१२	१८	शु.	५३	४५	कौ.	२५	४१	३०	१५	२३	२४	सिंह	६	२८	५	४९	५	२७	३३	३	शुक्र पश्चिम में उदित ४५।१२ [गु.उ.]
२८	१४	१३	श.	६०	०	पू.फा.	१९	३०	ब्र.	५६	०	ग.	३१	४८	३१	१६	२४	२५	क.३६।२४	६	२९	५	४८	५	२८	३२	३४	धन १३, धन्वन्तरि पूजा, यम प्रीत्यर्थ दीपदान, शनि प्रदोष व्र.,
२८	९	१३	र.	४	५२	उ. फा.	२७	५	ऐं.	५८	२०	व.	४	५२	का.१	१७	२५	२६	कन्या	६	२९	५	४७	५	२९	३२	७	भ. ४।५२ उ., ३८।२ या., सं. सूर्य तुला में २८।५, मु. ३०, (ख)
२८	५	१४	चं.	११	१२	ह.	३४	३५	वै.	६०	०	श.	११	१२	२	१८	२६	२७	कन्या	६	३०	५	४५	६	०	३१	४२	शुक्र बाल्य साप्त ४५।७, नरक १४ (ग) दीपावली, महालक्ष्मी पू.
२८	१	३०	मं.	१७	२२	चि.	४१	५३	वै.	०	३०	ना.	१७	२२	३	१९	२७	२८	तु.८।१४	६	३१	५	४४	६	१	३१	२०	

ग्रह-दर्शनः—बु. अस्त है । शु. १५ अक्तू. से पश्चिम में सूर्यास्त बाद दीखने लगेगा । प्रातः श. पश्चिम में होगा, साय मं. पूर्व कपालमें और गु. पश्चिम में दीखेगा । शरद् ऋतु

(क) (करवा चौथ). (चन्द्रोदय रात्रि ७ घ. ५५ मि. (चण्डीगढ़), (ख) पुण्य १२।५ उ., बुध स्वाती में ४७।०, श्री हनुमज्जयन्ती, (ग) यहां सूर्योदय से पूर्व ही तैलाभ्यङ्ग शास्त्र विहित है)

कार्ति. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५७।४२, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	९	५	७	६	१	९	३
२४	२४	२७	११	६	१२	१७	१७
३२	५४	०	२३	३६	३५	२७	२७
२७	१४	६	५७	४	३३	७	८
५९	२२	१०१	११	७४	२	३	३
२२	२१	१७	९	४५	२८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा २	धनि. २	चित्रा ३	अनु. ३	चित्रा ४	रोहि. १	श्रव. ३	आश्ले. १

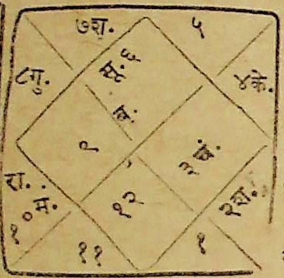

लोक भविष्य—उत्तर देशीय प्रजा में क्षेम सुभिक्ष, कहीं मन्त्रिमण्डल में गड़बड़, किसी बड़े शासक को खतरा, गुर्जर एवं मालवादि में रोग वा अग्नि से भय व्यापे। **साधारण भविष्य विचार**—६ अक्तू. से सूत, घी, चावल व हस्ती दन्त की चीजों में एक मास बाद तेजी आए। ७अक्तू. से २० दिन के अन्दर रुई जौ एवं धातुओं में तेजी रहे, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी सूत एवं अनाज में मन्दे का वातावरण बने। १३ अक्तू. से घी, शक्कर, अलसी, एवं औषधियों में तेजी का का रुख रहे। १५ अक्तू. से अन्नादि का भाव कुछ मन्दा एवं नारियल, रेशम एवं सूत में भारी तेजी आवे। **शकुन से भविष्य विचार**–१७ अक्तू. को कार्ति. संक्रांति के दिन यदि वर्षा हो तो पौष में अनाज सस्ता हो; –"कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ वारिवर्षणम् : तदा समर्घता पौषे सस्यवृद्धिस्तु मध्यमा ॥" **आकाश लक्षण**—५ से ७ अक्तू. तक कहीं कहीं बादल चाल, १५ अक्तू. के लगभग वायु अधिक चले एवं कुछ प्रान्तों के भागों में कहीं कहीं बादल चाल भी दिखाई दे।

कुं. सूर्योदये, कार्ति. कृ. ३० मंगल, इष्ट ५७।२८

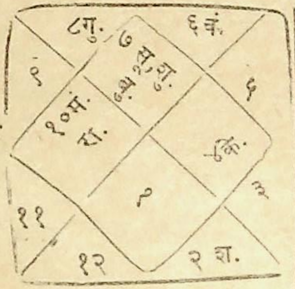

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
६	९	६	७	६	१	९	३
२	२८	१०	१२	१६	१२	१७	१७
२८	६	१०	५५	३४	१३	१	१
२८	२	४८	२१	११	९	४१	४१
५९	२५	९५	११	७४	३	३	३
४०	५७	५५	४५	४७	१६	१[illegible]	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	धनि. २	स्वा. २	अनु. ३	स्वा. ३	रोहि. १	श्र. ३	आश्ले. १

श्री वि.सं. २०२८, शाक १८९३, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टे. टा. | उदय कालिक | (२० अक्तू. से २ नवम्बर, सन् १९७१ ई. तक) दक्षिणायन,+

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. अक्तू.	श. आश्वि.	मु. शाबा.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—३१ अक्तू. को बु. पश्चि. में उदित होगा। प्रातः श. पश्चि. में होगा। सायं पश्चि. में बु. शु. दोनों गु. के नीचे होंगे, मं. याम्योत्तर वृत्त की ओर जा रहा होगा।
२७	५६	१	बु.	२३	१७	स्वा.	४८	५०	वि.	२	३३	ब.	२३	१७	४	२०	२८	२९	तुला	६	३२	५	४३	६	२	३१	०	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, वर्ष्टिका-कर्षण
२७	५२	२	गु.	२८	४५	वि.	५५	१८	प्री.	४	१५	कौ.	२८	४५	५	२१	२९	३०	वृ.३८।४१	६	३३	५	४२	६	३	३०	४२	चन्द्र दर्शन, मु. ४५, भाई दूज (टिक्का), यम २, (क)
२७	४७	३	शु.	३३	३५	अनु.	६०	०	आ.	५	३२	तै.	१	१०	६	२२	३०	र.१	वृश्चिक	६	३३	५	४१	६	४	३०	२५	रमजान मु. ९ प्रा., गुरु अनु. ४ में २।४५, शुक्र विशा. में
२७	४३	४	श.	३७	३५	अनु.	१	५	सौ.	६	१७	व.	५	३५	७	२३	का¹	२	वृश्चिक	६	३४	५	४०	६	५	३०	११	भ. ५।३५ उ., ३७।३५ या., शक कार्तिक प्रा.,
२७	३८	५	र.	४०	३५	ज्ये.	६	५	शो.	६	२३	ब.	९	५	८	२४	२	३	ध. ६।५	६	३५	५	३९	६	६	२९	५८	सूर्य स्वाती में १०।३, सूर्य सा. वृश्चिक में २।०, मंगल कुम्भ में (ख)
२७	३४	६	चं.	४२	१७	मू.	९	५५	अ.	५	३३	कौ.	११	२६	९	२५	३	४	धनु	६	३५	५	३८	६	७	२९	४७	+दक्षिण गोल, शरद्-हेमन्त ऋतु, ४२।३०,
२७	३०	७	मं.	४२	३०	पू. षा.	१२	२५	सु.	३	४१	ग.	१०	२३	१०	२६	४	५	म.२७।३९	६	३६	५	३७	६	८	२९	३८	भ. ४२।३० उ., बुध विशा. में ११।५२, राहु श्रव. २ में (ग)
२७	२६	८	बु.	४१	२	उ. षा.	१३	२०	धृ.	५६	३५	वि.	११	४६	११	२७	५	६	मकर	६	३७	५	३६	६	९	२९	३१	भ. ११।४६ या., गोपाष्टमी (सायं पुष्प-मिष्टान्नादि से*
२७	२२	९	गु.	३७	४७	श्र.	१२	३५	गं.	५०	१३	बा.	९	२५	१२	२८	६	७	कुं.४१।२०	६	३७	५	३५	६	१०	२९	२५	पंचक प्रा. ४१।२०, कूष्माण्ड ९, ग्राम प्रदक्षिणा ९,
२७	१८	१०	शु.	३२	४५	ध.	१०	५	वृ.	४२	५५	तै.	५	१६	१३	२९	७	८	कुंभ	६	३८	५	३४	६	११	२९	२०	भ. ५९।२६ उ., *गो-पूजन-विधान)
२७	१४	११	श.	२६	७	श.	५	५५	ध्रु.	३४	२२	वि.	२६	७	१४	३०	८	९	मी.४६।४४	६	३९	५	३३	६	१२	२९	१८	भ. २६।७ या., शुक्र वृश्चिक में ४३।४३, प्रबोधिनी ११व्र.स., (घ)
२७	१०	१२	र.	१८	१२	पू.भा.	५३	३५	व्या.	२४	४५	बा.	१८	१२	१५	३१	९	१०	मीन	६	४०	५	३२	६	१३	२९	१७	बुध पश्चिम में उदित ३४।५, प्रदोष व्र.,
२७	६	१३	चं.	९	२०	रे.	४६	१३	ह.	१४	२२	तै.	९	२०	१६	न.¹	१०	११	मे.४६।१३	६	४१	५	३१	६	१४	२९	१८	भ.५९।४८ उ., पंचक स. ४६।१३, नवम्बर प्रा., बुध वृश्चि. (ङ)
अवम		१४	चं.	५९	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी का क्षय
२७	२	१५	मं.	५०	१७	अ.	३८	३०	व.	५३	४५	वि.	२५	२	१७	२	११	१२	मेष	६	४२	५	३०	६	१५	२९	२१	भ. २५।२ या., शुक्र अनु. में २४।१०, कार्तिक स्नान स., (च)

(च) चातुर्मास्य व्र.स., श्री गु.नानकजयन्ती, भीष्मपंचक स., सत्यव्र.

(क) (यमुना पूजन एव यमुना स्नान का विशेष माहात्म्य,) भगिनी गृह में भोजन कर उसे दान मानादि से सम्मानित करें। विश्वकर्मा पूजा (बलराज), (ख) १४।२२ (ग) केतु पुष्य+

+ मेष ४३।२९, (छ) तुलसीविवाह, भीष्मपंचक प्रा., मेला रेणुका (यहां मातृ-श्राद्ध करने का माहात्म्य है) (ङ) मेष ४७।३२, ४९)

कार्ति. शु. ८ बुध, इष्ट ५७।१३, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	६	७	६	१	९	३
१०	१	२२	१४	२६	११	१६	१६
२६	४४	४१	३१	३२	४५	३६	३६
३८	२७	५५	१९	२५	१४	१५	१५
५९	२८	९१	१२	७४	३	३	३
५३	५५	२८	१७	४६	५१	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	व	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा.	धनि.	विशा.	अनु.	विशा.	रोहि.	श्रव.	पुष्य

लोक भविष्य—भारत एवं अमेरिका के सम्बन्धों में दृढ़ता आवे, आपसी मतभेद दूर हो, प्रदेश में मजदूर पार्टी के उपद्रवों से स्थिति खराब हो, बड़े उद्योगपतियों को भय है **साधारण व्यापारिक भविष्य**—२१ अक्तू. से मूंग, मोठ उड़द एवं तिल में तेजी का रुख रहे। २४ अक्तू. से रुई में काफी घटाबढ़ी चले, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, एवं सोना में तेजी का रुख बने। ३० अक्तू. से रुई चांदी और अफीम में पहले मन्दी पीछे कुछ तेजी आवे। गेहूँ, जौ, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में घटाबढ़ी चले। **शकुन से भविष्य विचार**—३० अक्तू. को यदि वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो। पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र है अतः आगे पशुओं के लिए चारे की कमी संभव है। अभी से स्टाक कर लें। २४ अक्तूबर को मूल नक्षत्र के विशेष संपर्क होने से राजस्थान आदि में अन्न की कमी का अनुभव हो। गरीबों को कष्ट। **आकाश लक्षण**—२४ अक्तू. से २ नवम्बर तक दक्षिण पूर्वी मद्रास, मैसूर उत्तर पूर्वी लंका पश्चिमी पाकिस्तान एवं पूर्वी पाकिस्तान के तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा के योग हैं।

कुं. सूर्योदये,

कार्ति. शु. १५ मंगल, इष्ट ५७।०

स	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	१०	७	७	७	१	९	३
१६	४	१	१५	४	११	१६	१६
२६	४२	४३	४५	०	२१	१७	१७
२४	३६	५	५१	५७	९	११	११
६०	३०	८८	१२	७४	४	३	३
३	४३	२५	३७	४५	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	ब.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६ | तारीख | चन्द्र- | भा. स्टे. टा. | उदय कालिक | (३ से १८ नवम्बर, सन् १९७१ ई. तक), दक्षिणायन,

सू. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. क्रान्ति.	अं. नवं.	श. क्रान्ति.	म. रम.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	५८	१	बु.	४१	५	भ.	३१	७	व्य.	४२	२०	बा.	१५	४१	१८	३	१२	१३	वृ.४४।२९	६	४२	५	२९	६	१६	२९	२५
२६	५४	२	गु.	३२	५०	कृ.	२४	३५	व.	३२	३३	तै.	६	५७	१९	४	१३	१४	वृष	६	४३	५	२९	६	१७	२९	३०
२६	५०	३	शु.	२५	५२	रो.	१९	१२	प.	२३	५०	वि.	२५	५२	२०	५	१४	१५	मि.४७।२३	६	४४	५	२८	६	१८	२९	३८
२६	४६	४	श.	२०	३७	मृ.	१५	३३	शि.	१६	३०	बा.	२०	३७	२१	६	१५	१६	मिथुन	६	४५	५	२७	६	१९	२९	४९
२६	४२	५	र.	१७	२५	आर्द्रा.	१३	५०	सि.	१०	५०	तै.	१७	२५	२२	७	१६	१७	क.५९।१३	६	४६	५	२६	६	२०	३०	१
२६	३८	६	चं.	१६	२२	पुन.	१४	२०	सा.	६	५०	व.	१६	२२	२३	८	१७	१८	कर्क	६	४६	५	२६	६	२१	३०	१५
२६	३४	७	मं.	१७	३५	पु.	१६	५२	शु.	४	३५	ब.	१७	३५	२४	९	१८	१९	कर्क	६	४७	५	२५	६	२२	३०	३१
२६	३१	८	बु.	२०	४२	आ.	२१	२२	शु.	३	५२	कौ.	२०	४२	२५	१०	१९	२०	सिं२१।२२	६	४८	५	२५	६	२३	३०	५१
२६	२७	९	गु.	२५	२७	म.	२७	२२	ब्र.	४	३०	ग.	२५	२७	२६	११	२०	२१	सिंह	६	४९	५	२४	६	२४	३१	११
२६	२३	१०	शु.	३१	२०	पू.फा.	३४	२५	ऐं.	६	३	वि.	३१	२०	२७	१२	२१	२२	कं.५१।१९	६	४९	५	२४	६	२५	३१	३३
२६	२०	११	श.	३७	५२	उ.फा.	४२	०	वं.	८	१०	ब.	४	३६	२८	१३	२२	२३	कन्या	६	५०	५	२३	६	२६	३१	५७
२६	१६	१२	र.	४४	१५	ह.	४९	३५	वि.	१०	२५	कौ.	११	४	२९	१४	२३	२४	कन्या	६	५१	५	२३	६	२७	३२	२३
२६	१३	१३	चं.	५०	२५	चि.	५६	४७	प्री.	१२	३८	ग.	१७	२०	३०	१५	२४	२५	तु.२३।११	६	५२	५	२२	६	२८	३२	५१
२६	१०	१४	मं.	५६	०	स्वा.	६०	०	आ.	१४	३०	वि.	२३	१३	मा'	१६	२५	२६	तुला	६	५३	५	२१	६	२९	३३	२१
२६	७	३०	बु.	६०	०	स्वा.	३	२८	सौ.	१५	५३	च.	२८	२६	२	१७	२६	२७	वृ.५२।५८	६	५४	५	२०	७	०	३३	५३
२६	३	३०	गु.	०	५२	वि.	९	२८	शो.	१६	४२	न	०	५२	३	१८	२७	२८	वृश्चिक	६	५५	५	२०	७	१	३४	२६

ग्रह दर्शन---प्रातः श. पश्चि. में, सूर्यास्त बाद बु. गु. शु. तीनों पश्चि. क्षितिज के ऊपर होंगे, तब मं. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा १४ नवं. को बु. गु. शु. एक दूसरे के काफी निकट २ दीखेंगे।

दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु

भ. ५९।२१ उ., बुध अनु. में २।४५,

भ. २५।५२ या., श्री गणेश ४ व्र.,

सूर्य विशा में ३०।५ मंगल शत. में ४३।३०,

गुरु ज्येष्ठा १ में १२।४३,

भ. १६।२२ उ., ४६।५८ या.,

श्री महाकाल भैरवाष्टमी (श्री महाकाल भैरव मन्दिर (क)

भ. ५८।२३ उ.,

भ. ३१।२० या.,

बुध ज्येष्ठा में २६।२०, शुक्र ज्येष्ठा में ६।२, उत्पन्ना ११ व्र.स.,

जन्मदिन श्री जवाहरलाल नेहरू (बाल-दिवस), मल्ल १२,

भ. ५०।२५ उ., सोम प्रदोष व्र.,

भ. २३।१३ या., सं. सूर्य वृश्चिक में २६।२७, मु. १५, (ख)

बलिदान दिन ला. लाजपतराय,

(क) में जागरण का विशेष माहात्म्य, "मार्गशीर्षे ऽसिताष्टम्यां काल-भैरव-सन्निधौ। उपोष्यं जागरं कुर्वन् सर्वपापैः प्रमुच्यते।" (ख) पुण्य मध्याह्नोत्तर, मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)

मार्ग. कृ. ८ बुध, इष्ट ५६।४५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	७	७	७	१	९	३
२४	८	१३	१७	१७	१०	१५	१५
२७	५५	१४	२८	५८	४५	५१	५१
५२	३३	४	४	५१	४४	४४	४४
६०	३२	८३	१२	७४	४	३	३
२०	४२	१७	५९	४४	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा.२	[illegible]	अनु.३	ज्ये.२	[illegible]	रोहि.२	[illegible]	पुष्य.४

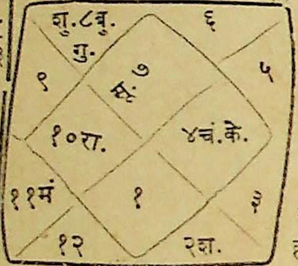

लोक भविष्य---शासक वर्ग में कोई नई चिन्ता व्याप्त हो, जनता की आर्थिक स्थिति खराब रहे। जनता में अशान्ति एवं विद्रोह की ज्वाला दीखे। चौपायों में रोग भय बने। साधारण व्यापारिक भविष्य---६ नवम्बर से अनाज के भाव में घटा-बढ़ी, राई, सोना, चांदी में पहले मंदी बाद में तेजी का रुख रहे। १३ नवम्बर से घी, गुड़ खांड में तेजी आवे। १८ दिन के अन्दर अनाज में भी कुछ तेजी का रुख बने। सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, और हींग में मन्दी हो। १६ नवं. से जौ, चना, अरहर, आदि मंदे, सुपारी लकड़ी और कोयला तेज। यहां अनाज का संग्रह करने से दो महीने बाद लाभ मिले। शकुन से भविष्य विचार---९ नवं. को यदि दिनरात आकाश साफ रहे, तो वैशाख में धान्य सस्ता, बादल हों तो महगा रहे। आकाश लक्षण--नवं. ३, ४ एवं ७ से ११ नवं. तक बादल-चाल, उ. पू. लंका एवं समुद्र तटवर्ती मद्रास में वर्षा के योग हैं। पंजाब के हिमाचल की तलहटी वाले भाग में कहीं कहीं बादलचाल एवं बूंदा-बांदी हो।

कुं सूर्योदये, मार्ग. कृ. ३० गुरु, इष्ट ५६।२७,

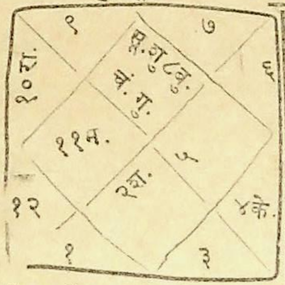

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	७	७	१	९	३
२	१३	२३	१९	२३	१०	१५	१५
३१	२३	४९	१२	५६	७	२६	२६
२५	१३	२८	५९	४३	४५	१७	१७
६०	३४	७२	१३	७४	४	३	३
३४	२२	४१	१६	४३	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा.४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रोहि.१	[illegible]	पुष्य.४

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १७ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक | (१९ नवं. से २ दिसं. सन् १९७१ ई. तक), दक्षिणायन,*

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. नवं.	श [illegible]	प. [illegible]	चन्द्र-संचार घ. प	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	०	१	शु.	५	०	अनु.	१४	४०	अ.	१६	५५	व.	५	०	४	१९	२८	२३	वृश्चिक	६	५६	५	१९	७	२	३५	१
२५	५७	२	श.	८	१५	ज्ये.	१९	१०	सु.	१६	३२	कौ.	८	१५	५	२०	२९	ग१	ध.१३।१०	६	५६	५	१९	७	३	३५	३७
२५	५४	३	र.	१०	३५	मू.	२२	४३	धृ.	१५	२५	ग.	१०	३५	६	२१	३०	२	धनु	६	५७	५	१९	७	४	३६	१५
२५	५१	४	चं.	१२	२५	पू. षा.	२१	२०	शू.	१३	३५	वि.	१२	२५	७	२२	मा१	३	४०।४३	६	५८	५	१९	७	०	३६	५५
२५	४८	५	मं.	१२	३०	उ. षा.	२६	५२	ग.	१०	५५	बा.	१२	३०	८	२३	२	४	मकर	६	५९	५	१९	७	६	३७	३५
२५	४५	६	बु.	११	२७	श्र.	२७	१२	वृ.	७	१८	तै.	११	२७	९	२४	३	५	कुं.५६।४३	७	०	५	१८	७	७	३८	१७
२५	४२	७	गु.	९	२०	ध.	२६	१५	ध्रु.	५७	४३	व.	९	२०	१०	२५	४	६	कुम्भ	७	१	५	१८	७	८	३९	०
२५	३९	८	शु.	५	४५	श.	२४	०	ह.	५०	१५	ब.	५	४५	११	२६	५	७	कुम्भ	७	१	५	१८	७	९	३९	४४
२५	३६	९	श.	०	५५	पू. भा.	२०	२५	व.	४२	३०	कौ.	०	५५	१२	२७	६	८	मी.६।१९	७	२	५	१८	७	१०	४०	२१
क्ष	य	१०	श.	५४	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३४	११	र.	४७	४०	उ. भा.	१५	४०	सि.	३३	४५	व.	२१	१५	१३	२८	७	९	मीन	७	३	५	१८	७	११	४१	१५
२५	३२	१२	चं.	३९	४७	रे.	१०	०	व्य.	२४	२२	व.	१३	४४	१४	२९	८	१०	मे.१०।१०	७	४	५	१८	७	१२	४२	१
२५	३०	१३	मं.	३१	३०	अ.	५७	२०	व.	१४	३७	कौ.	५	३८	१५	३०	९	११	मेष	७	५	५	१८	७	१३	४२	४८
२५	२७	१४	बु.	२३	१५	कृ.	५१	५	प.	५५	१०	ब.	२३	१५	१६	दि१	१०	१२	वृ.१०।४६	७	६	५	१७	७	१४	४३	३७
२५	२५	१५	गु.	१५	३०	रो.	४५	३३	सि.	४६	१०	ब.	१५	३०	१७	२	११	१३	वृष	७	६	५	१७	७	१५	४४	२७

ग्रह-दर्शन--गु. २७ नवं. से पश्चि. में लुप्त हो जाएगा, इस वक्त शनि पूर्व में और मं. याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। २५ नवं. के आसन्न बु. शु. दोनों काफी निकटस्थ होंगे

चन्द्र दर्शन, मु. १५, सूर्य अनु. में ४४।३२, जमत-उल-विदा, शव्वाल मु. १० प्रा., व. शनि कृत्ति. ४ में ३१।३८, (क)
भ. ४१।३० उ., *दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु,
भ. १२।२५ या., शक मार्गशीर्ष प्रा., सूर्य सा. धनु में ५४।३०, (ख)
शुक्र मूल में ४८।५, बलिदान दिन श्री गुरु तेग बहादुर, (ग)
वंवक प्रा. ५६।४३, बुध मूल धनु में २९।२८, गुरु वार्षक्य (घ)
भ. ९।२० उ., ३७।३३ या., यूरेनस चित्रा १ में ४२।३२,

गुरु अस्त १२।१० | गु. अ. |
दशमी का क्षय,
भ. २१।१५ उ., ४७।४० या., मोक्षदा ११ व्र. स्मा. वै.✠
पंचक स. १०।०, ✠श्री गीता जयन्ती,
मंगल पू. भा. में ११।४५, भौम प्रदोष व्र.,
भ. २३।१५ उ., ४९।२३ या., दिसम्बर प्रा., सत्य व्र. (ङ)
सूर्य ज्येष्ठा में ५४।४८,

(क) इदुल फित्र (वि. मु. मूल) (ख) गुरु ज्येष्ठा में २८।२२, (वि.मु.उ.षा.), (ग) (वि. मु.-उ.षा.), (घ) प्रा. १२।१५, चम्पा ६, (ङ) पिशाच मोचन श्राद्ध, श्री दत्त जयन्ती

मार्ग शु. ८ शुक्र, इष्ट ५६।१२, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	७	८	१	९	३
१०	१८	२	२०	३	९	१५	१५
३६	३	९	५९	५४	२८	०	०
३७	४	३२	५०	१७	२८	५१	५१
६०	३५	४४	१३	७४	४	३	३
६४	४१	२	२७	३९	५५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लोक भविष्य--कार्तिक प्र. २५ से लेकर मार्गशीर्ष के अन्तर्गत प्रजा को कष्ट, हानि, मन्त्रिमण्डल, में मतभेद, कहीं कुछ परिवर्तन, किसी शासक पर आपत्ति आवे, नैर्ऋत्य दिशा में जनता को विशेष भय रहे। साधारण व्यापारिक भविष्य--२० नवं. से सोना, चांदी, तांबा और तिलहन में तेजी एवं अनाज में मन्दापन रहे। लकड़ी के संग्रह से आगे करीब तीन गुणा लाभ मिले। २३, २४ नवं. से गेहूँ, जौ, चना आदि अनाज तथा धातुओं में तेजी का रुख बने। सोना चांदी में मन्दी, रुई में घटाबढ़ी चले। शकुन से भविष्य विचार--

कुं. सूर्योदये, मार्ग. शु. १५ गुरु, इष्ट ५६।१०

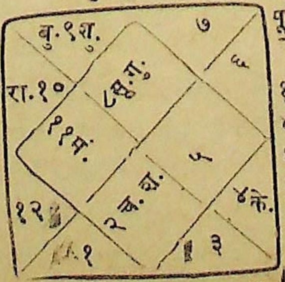

पू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	८	७	८	१	९	३
१६	२१	४	२२	११	८	१४	१४
४१	३९	४७	२०	२२	४९	४१	४१
१४	१४	२६	४६	४	३	४७	४७
६०	३६	४	१३	७४	४	३	३
१०	२८	६	३३	३६	५०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्ग. शु. २ को शनिवार है, यदि इस दिन दक्षिण का पवन चले तो प्रजा के लिए पीड़ाकर समझें। मार्ग शु. में दशमी का क्षय है, यह भी प्रजा के लिए शुभ नहीं, 'मार्गशीर्षादि मासेषु कृष्णपक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥" आकाश लक्षण--२२ से २५ नवं. एवं २७ नवं. से २ दिसं. तक लंका, समुद्र तटवर्ती मद्रास, मैसूर, पंजाब के तटवर्ती भाग में कहीं कहीं बादलवात एवं खण्ड वृष्टि के योग हैं।

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, पौष कृष्ण पक्ष १८ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय कालिक | (३ से १७ दिसं. सन् १९७१ ई. तक), दक्षिणायन, दक्षिणगोल*

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. डिसे.	श. मार्ग.	मु. शव्वा.	चन्द्र सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—गु. अस्त है। बु. ६ दिसं. से पश्चि. में अदृश्य होकर १७ दिसं. से प्रातः पूर्व में पुनः दीखेगा। सायं पश्चि. में शु., पश्चि. कपाल में काफी ऊपर मं. और पूर्व में श. दीखेगा।
२५	२३	१	शु.	८	३५	मृ.	४१	७	सा.	३८	२	कौ.	८	३५	१८	३	१२	१४	मि१३।२०	७	७	५	१७	७	१६	४५	१८	बुध वक्री १।२२ *हेमन्त ऋतु
२५	२१	२	श.	२	५७	आ.	३८	१२	शु.	३१	७	ग.	२	५७	१९	४	१३	१५	मिथुन	७	८	५	१७	७	१७	४६	१०	भ. ३१।१ उ., ५९।५ या., शुक्र पू.षा. में ३०।४८,
अवम		३	श.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया का क्षय,
२५	१९	४	र.	५७	७	पुन.	३७	१०	शु.	२५	४२	ब.	२८	६	२०	५	१४	१६	क.२२।२५	७	९	५	१७	७	१८	४७	४	श्री गणेश ४ व्र.,
२५	१७	५	चं.	५७	१०	पु.	३८	५	ब्र.	२१	५५	कौ.	२७	८	२१	६	१५	१७	कर्क	७	९	५	१७	७	१९	४७	५८	बुध पश्चिम में अस्त ४४।५८,
२५	१५	६	मं.	५९	२३	आश्ले.	४१	०	ऐं.	१९	३७	ग.	२८	१७	२२	७	१६	१८	सिं. ४१।०	७	१०	५	१७	७	२०	४८	५५	भ. ५९।२३ उ., गुरु ज्ये. ३ में १७।५५,
२५	१४	७	बु.	६०	०	म.	४५	४३	वै.	१८	५५	वि.	३१	२०	२३	८	१७	१९	सिंह	७	११	५	१७	७	२१	४९	५२	भ. ३१।२० या.,
२५	१२	७	गु.	३	१७	पू. फा.	५१	५२	वि.	१९	२५	ब.	३	१७	२४	९	१८	२०	सिंह	७	१२	५	१७	७	२२	५०	५१	
२५	११	८	शु.	८	३७	उ. फा.	५९	३	प्री.	२०	२५	कौ.	८	३७	२५	१०	१९	२१	क. ८।४०	७	१२	५	१७	७	२३	५१	५०	व. बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में २०।३०,
२५	९	९	श.	१४	५२	ह.	६०	०	आ.	२२	५७	ग.	१४	५२	२६	११	२०	२२	कन्या	७	१३	५	१७	७	२४	५२	५१	भ. ४८।६ उ.,
२५	७	१०	र.	२१	२०	ह.	६	३०	सौ.	२५	८	वि.	२१	२०	२७	१२	२१	२३	तु. ४०।१०	७	१४	५	१७	७	२५	५३	५३	भ. २१।२० या.,
२५	६	११	चं.	२७	२०	चि.	१३	५०	शो.	२७	५	बा.	२७	३०	२८	१३	२२	२४	तुला	७	१५	५	१८	७	२६	५४	५७	नेप्च्यून अनु. ३ में ३५।३७, सफला ११ व्र. स.
२५	५	१२	मं.	३३	०	स्वा.	२०	३८	अ.	२८	३०	कौ.	०	१५	२९	१४	२३	२५	तुला	७	१५	५	१८	७	२७	५६	१	
२५	४	१३	बु.	३७	३०	वि.	२६	२७	सु.	२९	१०	ग.	५	१५	३०	१५	२४	२६	वृ. १०।१५	७	१६	५	१८	७	२८	५७	५	भ. ३७।३० उ., शुक्र उ. पा. में १४।३२, प्रदोष व्र.,
२५	३	१४	गु.	४०	५२	अनु.	३१	१५	धृ.	२९	३	वि.	९	११	पौ १	१६	२५	२७	वृश्चिक	७	१७	५	१८	७	२९	५८	११	भ. ९।११ या., सं. सूर्य मूल धनु में १।४८, मु. ३०, (क)
२५	२	३०	शु.	४३	५	ज्ये.	३५	०	शू.	२८	०	च.	११	५८	२	१७	२६	२८	ध. ३५।०	७	१८	५	१९	८	०	५९	१८	बुध पूर्व में उदित १२।५, शुक्र मकर में ५५।४०,

(क) पुण्य १७।४८ तक, मंगल मीन में २४।५३, खरमास प्रा., खरमास में विवाहादि शुभ कार्यों का निषेध है। पौष मास में नर्मदा में स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य है।

पौष कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५५।४५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	७	८	१	९	३
२४	२६	२९	२४	२१	८	१४	१४
४८	३४	१५	९	१८	२१	१६	१६
३०	१	५०	१८	३०	४	२१	२१
६१	३७	८०	१३	७४	४	३	३
०	१९	२०	३५	३१	३६	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. ३	पू.भा. २	ज्ये. ४	ज्ये. ३	पू.षा. ३	कृ. ४	श्र. २	पुन. ४

कुं. सूर्योदये

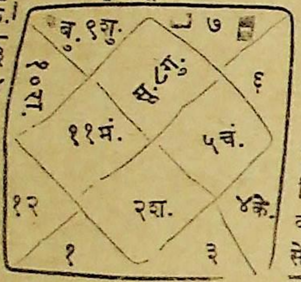

लोक भविष्य—पश्चिमी राष्ट्रों में विशेष गुप्त मन्त्रणाएं हों। अनेक जगह गरीब जनता के मकानों को क्षति पहुंचे, जल से भय, शीत-वृद्धि से बाल-वृद्धों को कष्ट हो, पशु-हानि भय है। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—३ दिसं. से चांदी में तेजी हो। २४ दिन में घी, गुड़, खाण्ड. शक्कर आदि में तेजी हो। ६ दिसं. से रुई में १५-२० टका की शीघ्र ही मन्दी हो। १५ दिसं. से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी में मन्दे का वातावरण हो. अनाज में तेजी एवं रुई में घटाबढ़ी रहे। शकुन से भविष्य —१४ दिसं. को यदि वर्षा हो तो वर्षाकाल में निश्चय ही सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम एवं आरोग्य रहे, बादल एवं वर्षा न होने पर आगे अनावृष्टि रहे।

आकाश लक्षण—४ से ८ दिसं. तक कहीं कहीं बादल चाल हो; १० से १७ दिसं. तक मैसूर, पू. पाक का तटवर्ती प्रदेश, पंजाब के तलहटी वाले भाग एवं हिमाचल आदि में अच्छी वर्षा हो, उपरोक्त प्रदेशों में कहीं कहीं वर्षा की झड़ी भी लगे।

कुं. सूर्योदये

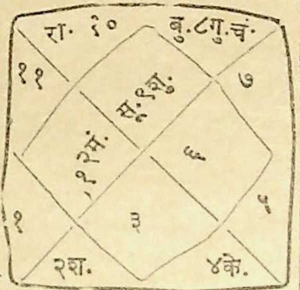

पौष कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५५।३०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	७	८	१	९	३
१	०	२०	२५	२९	७	१३	१३
५५	५७	३३	४४	५९	४९	५४	५४
४९	१२	५०	२४	४७	५४	५	५
६१	३७	४६	१३	७४	४	३	३
६	५७	२९	३४	२५	११	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल १	पू.भा. ४	ज्ये. २	ज्ये. ३	उ.षा. १	कृ. ४	श्र. २	पुन. ४

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, पौष शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक | (१८ से ३१ दिसम्बर, सन् १९७१ ईस्वी)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं. पौष	दिसं.	शा. नु. मार्ग.[?]	ज़िल्का.[?]	चन्द्र- संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१	१	श.	४४	१५	मू.	३७	३८	गं.	२६	१०	किं.	१३	४०	३	१८	२७	२९	धनु	७	१८	५	१९	८	२	०	२४
२५	१	२	र.	४४	२२	पू. षा.	३९	१५	वृ.	२३	३५	बा.	१४	१८	४	१९	२८	३०	म.५४।२६	७	१९	५	१९	८	३	१	३१
२५	०	३	चं.	४३	३२	उ.षा.	४०	०	ध्रु.	२०	७	तै.	१३	५७	५	२०	२९	जि१	मकर	७	१९	५	१९	८	४	२	३९
२४	५९	४	मं.	४१	५०	श्र.	३९	५२	व्या.	१६	०	व.	१२	४१	६	२१	३०	२	मकर	७	२०	५	२०	८	५	३	४७
२४	५९	५	बु.	३९	१५	ध.	३८	५५	ह.	११	१३	ब.	१०	३३	७	२२	पौ	३	कुं.९।२३	७	२०	५	२०	८	६	४	५४
२५	०	६	गु.	३५	५०	श.	३७	५	व.	५६	४३	कौ.	७	३२	८	२३	२	४	कुम्भ	७	२१	५	२१	८	७	६	३
२५	१	७	शु.	३१	४०	पू.भा.	३४	३५	व्य.	५३	०	ग.	३	४५	९	२४	३	५	मी.२०।१३	७	२१	५	२२	८	८	७	१२
२५	२	८	श.	२६	४२	उ.भा.	३१	१५	व.	४५	४३	व.	२६	४२	१०	२५	४	६	मीन	७	२२	५	२३	८	९	८	२१
२५	३	९	र.	२१	१०	रे.	२७	२३	प.	३७	५७	कौ.	२१	१०	११	२६	५	७	मे.२७।२३	७	२२	५	२३	८	१०	९	३०
२५	४	१०	चं.	१५	७	अ.	२३	३	शि.	२९	५२	ग.	१५	७	१२	२७	६	८	मेष	७	२२	५	२४	८	११	१०	३९
२५	५	११	मं.	८	४५	भ.	१८	२२	सि.	२१	३५	वि.	८	४५	१३	२८	७	९	वृ. ३२।१३	७	२३	५	२५	८	१२	११	४८
२५	६	१२	बु.	२	२२	कृ.	१३	४८	सा.	१३	२०	बा.	२	२२	१४	२९	८	१०	वृष	७	२३	५	२५	८	१३	१२	५७
अव	म	१३	बु.	५६	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	७	१४	गु.	५०	४०	रो.	९	३०	शु.	५७[?]	२०[?]	ग.	२३	२६	१५	३०	९	११	मि.३७।४२	७	२४	५	२६	८	१४	१४	६
२५	८	१५	शु.	४६	२	मृ.	५	५३	ब्र.	५१	७	वि.	१८	२१	१६	३१	१०	१२	मिथुन	७	२४	५	२७	८	१५	१५	१४

ग्रह-दर्शन--गु. २४ दिस. से प्रातः पूर्व में बु. के पास दीखने लगेगा। सायं शु. पश्चि. में, मं. पश्चि. कपाल में काफी ऊपर और श. पूर्व में दीखेगा।

उ॰ अयन, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु,

चन्द्र दर्शन, मु. ३०,

जिलकाद मु. ११ प्रा.,

भ. १२।४१ उ., ४१।५० या., मंगल उ.भा. में ४०।३५,

पंचक प्रा. ९।२३, शक पौष प्रा., सूर्य सा. मकर में २६।२५. (क)

भ. ३१।४० उ., ५३।११ या., गुरु उदित २४।२५, गु. उ. (ख)

शुक्र श्रव. में ५९।५०, क्रिसमस डे,

पंचक स. २७।२३, जोड़ मेला शुरू,

भ. ४१।५६ उ., गुरु बाल्य समाप्त २४।२२.

भ. ८।४५ या., राहु श्रव. १ में केतु पुष्य ३ में ३८।०, (ग)

सूर्य पू.षा. में ६।५८, प्रदोष व्र.,

त्रयोदशी का क्षय,

भ. ५०।४० उ.,

भ. १८।२१ या., ईस्वी सन् १९७१ पूर्ण,

(क) उत्तरायण प्रा., गुरु ज्येष्ठा ४ म १।३७, बुध मार्गी ४८।१५, (ख) जन्म दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी, (ग) पुत्रदा ११ व्र. स., संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर)

पौष शु. ८ श. इष्ट ५५।२०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	७	९	१	९	३
१०	६	१९	२७	९	७	१३	१३
४	२	१३	३२	५४	१८	२८	२८
४७	५२	१७	३३	२७	०	३८	३८
६१	३८	३०	१३	७४	३	३	३
७	३०	१०	२६	१३	४०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

लोक भविष्य--भारत एवं जर्मनी की प्रजा में समृद्धि बढ़े, जनता के स्वास्थ्य में बिगाड़ भी हो। जापान में कोई उत्पात एवं वहां के मन्त्रिमण्डल में कुछ परिवर्तन हो, मिश्र में सैनिक हलचल संभव है। **साधारण व्यापारिक भविष्य**--लगभग १८ दिसं. से सोना, चांदी, लकड़ी की चीजें, मूंग, उड़द, चावल, सरसों व औषधियों, गुड़, खाण्ड, घी, गहूं, चना एवं पशुओं के भाव में तेजी आवे। रुई, चांदी में घटावढ़ी चले। २५ दिस. से गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ और अनाजों में मन्दे का रुख बने। **शकुन से भविष्य विचार** २१ दिसं. को रात दिन बादल-बिजली गरजें, इन्द्र धनुष दीखे तो श्रा. वदि ४ को वर्षा हो एवं सम्पूर्ण वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो।

आकाश लक्षण--२२ से ३१ दिसं. तक कहीं कहीं खण्ड वृष्टि हो। कहीं वर्षा के आसार दीखें, परन्तु वर्षा न हो

कुं. सूर्योदये, पौष शु. १५ शु., इष्ट ५५।१५,

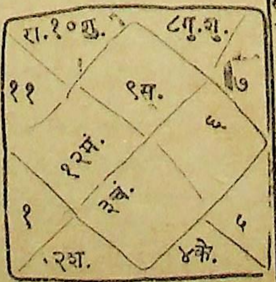

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	७	९	१	९	३
१६	९	२३	२८	१७	६	१३	१३
११	५४	३९	५२	१९	५७	९	९
३४	३८	२०	४७	१६	१५	३२	३२
६१	३८	६०	१३	७४	३	३	३
०	४७	७	१८	१	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... सं. २०२८, शाक १८९३, माघ कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदय कालिक | (१ से १६ जनवरी, सन् १९७२ ई. तक), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु,

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. पौष	अं. जन.	श. पौष	मु. जिल्का	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	९	१	श.	४२	३७	आ.	३	१२	ऐं.	४५	२५	बा.	१४	१९	१७	१	११	१३	क.४७।१२	७	२४	५	२८	८	१६	१६	२३
२५	११	२	र.	४०	४२	पुन.	१	५२	वै.	४०	५०	तै.	११	४०	१८	२	१२	१४	कर्क	७	२४	५	२८	८	१७	१७	३३
२५	१२	३	चं.	४०	३०	पु	२	३	वि.	३७	३८	व.	१०	३६	१९	३	१३	१५	कर्क	७	२४	५	२९	८	१८	१८	४२
२५	१३	४	मं.	४२	०	आ.	३	५०	प्री	३५	४२	ब.	११	१५	२०	४	१४	१६	सिं. ३।५०	७	२५	५	३०	८	१९	१९	५२
२५	१५	५	बु.	४५	१७	म.	७	२७	आ.	३५	१३	कौ.	१३	३८	२१	५	१५	१७	सिंह	७	२५	५	३१	८	२०	२१	१
२५	१६	६	गु.	५०	२	पू. फा.	१२	३२	सौ.	३५	५०	ग.	१७	४०	२२	६	१६	१८	क.२९।८	७	२५	५	३२	८	२१	२२	१०
२५	१७	७	शु.	५५	५०	उ.फा.	१८	५५	शो.	३७	१५	वि.	२२	५६	२३	७	१७	१९	कन्या	७	२५	५	३३	८	२२	२३	१९
२५	१९	८	श.	६०	०	ह.	२६	७	अ.	३९	१३	बा.	२९	०	२४	८	१८	२०	तु.५९।४८	७	२५	५	३४	८	२३	२४	२८
२५	२१	८	र.	२	१०	चि.	३३	३०	सु.	४१	१७	कौ.	२	१०	२५	९	१९	२१	तुला	७	२५	५	३४	८	२४	२५	३७
२५	२३	९	चं.	८	२५	स्वा.	४०	३५	धृ.	४३	३	ग.	८	२५	२६	१०	२०	२२	तुला	७	२५	५	३५	८	२५	२६	४७
२५	२५	१०	मं.	१४	२	वि.	४६	५३	शू.	४४	१०	वि.	१४	२	२७	१	२१	२३	वृ.३०।१८	७	२५	५	३६	८	२६	२७	५६
२५	२७	११	बु.	१८	३५	अनु.	५१	५५	गं.	४४	२०	बा.	१८	३५	२८	१२	२२	२४	वृश्चिक	७	२५	५	३६	८	२७	२९	४
२५	३०	१२	गु.	२१	४५	ज्ये.	५५	३७	वृ.	४३	२५	तै.	२१	४२	२९	१३	२३	२५	ध.५५।३७	७	२५	५	३७	८	२८	३०	१४
२५	३२	१३	शु.	२३	२५	मू.	५७	५०	ध्रु.	४१	२२	व.	२३	२५	मा	१४	२४	२६	धनु	७	२५	५	३८	८	२९	३१	२३
२५	३४	१४	श.	२३	३५	पू. षा.	५८	४०	व्या	३८	१०	श.	२३	३५	२	१५	२५	२७	धनु.	७	२५	५	३९	९	०	३२	३२
२५	३७	३०	र.	२२	२२	उ. षा.	५८	१५	ह.	३४	०	ना.	२२	२२	३	१६	२६	२८	म. १३।३४	७	२५	५	४०	९	१	३३	४१

ग्रहदर्शन—बु. गु. प्रातः पूर्व में होंगे। सायं शु. पश्चिम में, मं. पश्चिम कपाल में, और श. पूर्व कपाल में होगा।

जनवरी सन् १९७२ ई.प्रा.,

भ. १०।३६ उ., ४०।३० या.,

श्री गणेश जन्म ४ (संकट हारिणी) व्र. (क)

शुक्र धनि में ४७।५०,

भ.५०।२ उ..बुध मूल धनु में ३७।१७,गुरु मूल धनु में ०।०, (ख)

भ. २२।५६ या., श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती, (ग)

भ. ४१।१३ उ.,

भ.१४।२ या., सूर्य उ.षा.में ११।५०, मंगल रेव.में १९।१०. (घ)

षट् तिला ११ व्र. स.,

लोहड़ी (पंजाब), खरमास-समाप्त प्रदोष व्र.,

भ. २३।२५ उ. ५३।३० या., सं. सूर्य मकर में २८।५ (ङ)

बुध पू. षा. में ३४।५२, शुक्र शत. में ३९।३०, मौनी ३०

(क) [चन्द्रोदय रात्रि ९ घ. ११ मि. (चण्डीगढ़)], (ख) व. शनि कृति. ३ में ४९।५७, (ग) जन्म दिन श्री विवेकानन्द जी (घ) शुक्र कुम्भ में १३।१२, (ङ) मु. ३०, पुण्य मध्याह्नोत्तर,

माघ कृ. ८ शनि. इष्ट ५५।१२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	८	८	९	१	९	३
२४	१५	२	०	२७	६	१२	१२
२०	६	५३	३८	१०	३४	४४	४४
४४	६	१३	१३	२९	३३	६	६
६१	३९	७७	१३	७३	२	३	३
१०	८	५८	२	४५	२४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा.४	उ.भा.१	मू.१	मू.१	ध.नि.१	कृ.३	श्र.१	पुन.३

कुं. सूर्योदये

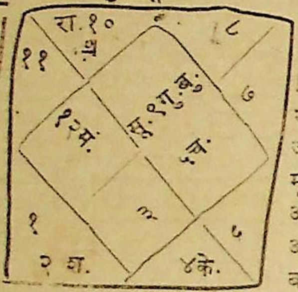

लोक भविष्य–भारत में राजनैतिक हलचल, कहीं परस्पर उपद्रव से जन-धन की हानि, नेता अपनी पद-प्रतिष्ठा के लिए चिन्तित रहें। राजनीति के क्षेत्र में नए नेता प्रकाश में आवें। भिन्न-नीति वाले राष्ट्रों में शत्रुता बढ़े। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—५ जन. १९७२ से चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी, तांबा में तेजी, गेहूं, कुलथ और मूंग में मन्दे का रुख बने। ६ जन. से रुई, कपास, वस्त्र, सूत और चान्दी में घटाबढ़ी चले। लकड़ी के स्टाक से आगे अच्छा लाभ मिले। ११ जन. से गेहूँ, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा श्वेत-वस्तुओं में मन्दी आती है।

कुं. सूर्योदये, माघ कृ. ३० रवि. इष्ट ५५।१२,

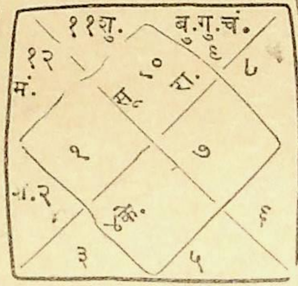

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	८	१०	१	९	३
२	२०	१३	२	६	६	१२	१२
२९	१९	४८	२१	५९	१८	१८	१८
५५	५३	५२	१२	१३	१२	३९	३९
६१	३९	८६	१२	७३	१	३	३
८	२२	८	३७	२३	३३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.२	रे.२	पू.षा.१	मू.१	श्र.१	कृ.३	श्र.१	पुन.३

शकुन से भविष्य विचार–३ जन. को यदि मेघ गरजें, परन्तु वर्षा न हो, गेहूँ, जौ का संग्रह करने से आगे लाभ मिले ४ जन. को वर्षा हो तो नारियल, सुपारी, नारियल तेल आदि के संग्रह से आगे लाभ मिले, संग्रहस्तत्र कर्तव्यो गोधूमस्य यवस्य च। **चतुर्थी जलसंयुक्ता नारिकेलोऽर्थदो मतः ॥" आकाश लक्षण**--६ से १० जन. तक एवं १६ जन. को हि. प्र. हरयाणा एवं पंजाब में कहीं कहीं बादल-चाल बूंदा बांदी हो,

दि. मा. घ.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. (माघ)	अं. (जन.)	श.	मु. (जिल्हिज्ज)	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ घं.	मि	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	४०	१	चं.	२०	०	श्र.	५६	५०	व.	२८	५०	ब.	२०	०	४	१७	२७	२९	मकर	७	२४	५	४१	९	२	३४	४८
२५	४३	२	मं.	१६	३२	ध.	५४	३०	सि.	२२	५५	कौ.	१६	३२	५	१८	२८	जि	कुं. २५।४०	७	२४	५	४२	९	३	३५	५५
२५	४६	३	बु.	१२	२०	श.	५१	३२	व्य.	१६	२२	ग.	१२	२०	६	१९	२९	२	कुम्भ	७	२४	५	४३	९	४	३७	१
२५	४८	४	गु.	७	३२	पू. भा.	४८	१०	व.	९	२५	वि.	७	३२	७	२०	३०	३	मी. ३४।१	७	२४	५	४४	९	५	३८	८
२५	५१	५	शु.	२	२२	उ. भा.	४४	३५	प.	५ २/४	१०/४५	बा.	२	२२	८	२१	मा	४	मीन	७	२४	५	४५	९	६	३९	१२
अव	म	६	शु.	५७	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	५४	७	श.	५१	४०	रे.	४०	५३	सि.	४७	१७	ग.	२४	२१	९	२२	२	५	मे. ४०।५३	७	२४	५	४६	९	७	४०	१५
२५	५७	८	र.	४६	२०	अ.	३७	१५	सा.	४०	०	वि.	१९	०	१०	२३	३	६	मेष	७	२३	५	४६	९	८	४१	१८
२६	०	९	चं.	४१	१२	भ.	३३	५०	शु.	३२	४२	बा.	१३	४६	११	२४	४	७	वृ. ४८।२	७	२३	५	४७	९	९	४२	१८
२६	३	१०	मं.	३६	२५	कृ.	३०	४०	शु	२५	४५	तै.	८	४८	१२	२५	५	८	वृष	७	२३	५	४८	९	१०	४३	१८
२६	६	११	बु.	३२	१०	रो.	२८	३	ब्र.	१९	१०	व.	४	१८	१३	२६	६	९	मि. ५७।१	७	२२	५	४९	९	११	४४	१३
२६	१०	१२	गु.	२८	२८	मृ.	२५	५८	ऐ.	१३	०	ब	०	११	१४	२७	७	१०	मिथुन	७	२२	५	५०	९	१२	४५	१५
२६	१३	१३	शु.	२५	३५	आ.	२४	४३	वै	७	३०	तै.	२५	३५	१५	२८	८	११	मिथुन	७	२१	५	५०	९	१३	४६	१२
२६	१६	१४	श.	२३	४०	पुन.	२४	१८	वि.	२/५	३७/३५	व.	२३	४०	१६	२९	९	१२	क. ९।२४	७	२१	५	५१	९	१४	४७	७
२६	२०	१५	र.	२२	५०	पु.	२५	३	आ.	५५	३०	ब.	२२	५०	१७	३०	१०	१३	कर्क	७	२०	५	५२	९	१५	४८	२

ग्रह-दर्शन—बु. २८ जन. को पूर्व में अस्त होगा । प्रातः गु. पूर्व में दीखेगा । सायं शु. पश्चि. में, मं. पश्चि. कपाल में और श. पूर्व कपाल में होगा ☉ गोल, शिशिर ऋतु,

चन्द्र दर्शन, मु. ३०, (वि. मु.-धनि.)
जिल्हिज्ज मु. १२ प्रा., पंचक प्रा. २५।४०, (वि. मु.-धनि.)
भ. ३९।५६ उ., तिल ४,
भ. ७।३२ या., सूर्य सा. कुम्भ में ५२।४३, (वि. मु.-उ. भा.)
शक माघ प्रा., सूर्य अभिजित् में ०।४७ गुरुमूल २ में ३६।२५ (क)
छठ का क्षय,
भ. ५१।४० उ., पंचक स. ४०।५३, रथ ७☼ (वि. मु. अश्वि.,)
भ. १९।० या., यूरेनसवक्री ९।५२, भीष्माष्टमी, (वि. मु. अश्वि.) (ख)
सूर्य श्रवण में १७।२५,
सूर्य अभिजित् से निवृत्त ९।५०, बुध उ.षा. में ३६।५,
भ. ४।१७ उ., ३२।१० या., जया ११ व्र. स., (वि. मु. रोहि.) (ग)
बुध मकर में ४५।२७, शुक्र पू. भा. में ३६।१५, (घ)
बुध पूर्व में अस्त २२।५५, प्रदोष व्र., (ङ)
भ. २३।४० उ., ५३।१५ या., मेला जयन्ती देवी, सत्य व्र.,
माघ स्नान स., चन्द्रग्रहण, बलिदान दिन (च)

(क) वसन्त (श्री) पञ्चमी (पीत-पुष्प-वस्त्रादि धारण एवं पीत-तण्डुलादि भोजन का विशेष माहात्म्य), (वि. मु.-उ. भा.) (ख) जन्मदिन नेता जी सुभाष, (ग) भारत गणतन्त्र दिवस,

माघ. शु. ८ रवि, इष्ट. ५५।१७, कुं. सूर्योदय

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	८	१०	१	९	३
९	२४	२४	३	१५	६	११	११
३७	५५	६	४८	३१	९	५६	५६
३०	५४	४८	३३	४१	३५	२३	२३
६१	३९	९०	१२	७२	०	३	३
१	२९	५८	१७	५८	४७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लोक-भविष्य—जनता में कहीं उपद्रव-हिंसा की घटनाएं हों, सत्ताधारी चिन्तित रहें । मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में विशेष घटनाएं घटित हों, रुमानिया या उनके नजदीक सैनिक हलचल व संघर्ष रहे । साधारण व्यापार-भविष्य—१७ जन. से लाल मिर्च, लाल चन्दन, गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़ एवं शक्कर में मन्दे का रुख रहे । तेल-सरसों, अलसी, मक्का, ज्वार, बाजरा, एवं लकड़ी के भाव में तेजी का रुख रहे । नारियल, छुहारा, किसमिस आदि करयाणे की वस्तुओं में मन्दी हो, यहां चना, चावल खरीदने से वैशाख में बेचने पर लाभ मिले । शकुन से भविष्य विचार—२१ जन. को यदि वर्षा के साथ उत्तर का पवन चले, तो भाद्रपद में वर्षा की कमी से अन्न महंगा हो । आकाश लक्षण—२० से २२ जन. तक एवं २६-२७-२८ जन. को आसाम, म. प्र., राजस्थान, पंजाब के कुछ भागों में कहीं बादल चाल और कहीं खण्ड वृष्टि हो।

☼ (अरुणोदय स्नान करने से महान् फल मिलता है ।

कुं. सूर्योदय, माघ. शु. १५ रवि, इष्ट ५५।२५,

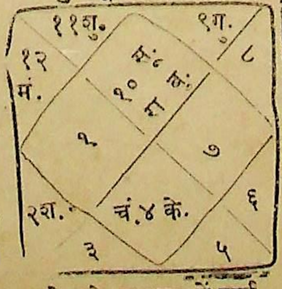

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	९	८	१०	१	९	३
१६	३९	४	५	२४	६	११	११
४४	३२	५७	१२	०	६	३४	३४
१६	३८	६	५६	५३	२८	८	८
६०	३९	९५	११	७२	०	३	३
५४	३२	३२	४७	२८	०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(ङ) जन्म दिन ला. लाजपतराय, (च) म. गान्धी, जन्मदिन भक्त रविदास,

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टें. टा. | उदय कालक | (३१ जन. से १४ फरवरी, सन् १९७२ ई. तक), उत्तरायण, दक्षिण-गोल शिशिर-ऋतु,

दि.मा. घं.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अं. फ़र.	श. माघ	मु. फ़ाल्गु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—बु. अस्त है। प्रातः गु. पूर्व में चम क रहा होगा, सायं शु. पश्चि. में, मं. पश्चि. कपाल में और श. याम्योत्तर वृत्त के समीप होगा।
२६	२३	१	चं.	२३	१२	आश्ले.	२६	५५	सौ.	५३	२२	कौ.	२३	१२	१८	३१	११	१४	सिं.२६।५५	७	२०	५	५३	९	१६	४८	५६	मंगल अश्वि. मेष में ३६।५८, शनि मार्गी २०।५०,
२६	२७	२	मं.	२५	०	म.	३०	७	शो.	५२	२२	ग.	२५	०	१९	फ१	१२	१५	सिंह	७	१९	५	५३	९	१७	४९	४९	भ. ५६।३३ उ., फरवरी प्रा.,
२६	३१	३	बु.	२८	५	पू.फा.	३४	४२	अ.	५२	२०	वि.	२८	५	२०	२	१३	१६	कं.५१।१३	७	१९	५	५४	९	१८	५०	४१	भ. २८।५ या., श्री गणेश ४ व्र.,
२६	३५	४	गु.	३२	३५	उ.फा.	४०	२७	सु.	५३	२०	बा.	३२	३५	२१	३	१४	१७	कन्या	७	१८	५	५५	९	१९	५१	३१	बुध श्रवण में ४।१५, (वि. मु.–उ. फा., ह.)
२६	३९	५	शु.	३८	०	ह.	४७	१२	धृ.	५४	५५	कौ.	५	१८	२२	४	१५	१८	कन्या	७	१७	५	५६	९	२०	५२	२०	शुक्र मीन में ५३।४० (वि. मु.–ह., चि.)
२६	४३	६	श.	४४	१५	चि.	५४	३५	शू.	५६	५५	ग.	११	७	२३	५	१६	१९	तु.२०।५३	७	[illegible]	५	५७	९	२१	५३	७	भ. ४४।१५ उ., (वि. मु. चि.)
२६	४७	७	र.	५०	३०	स्वा.	६०	०	गं.	५९	०	वि.	१७	२२	२४	६	१७	२०	तुला	७	१६	५	५८	९	२२	५३	५४	भ. १७।२३ या., सूर्य धनि. में २५।४८ (वि. मु. स्वा.)
२६	५१	८	चं.	५६	२७	स्वा.	१	५०	वृ.	६०	०	बा.	२३	२९	२५	७	१८	२१	वृ.५२।५	७	१५	५	५९	९	२३	५४	४१	गुरु मूल ३ में २८।५२, शुक्र उ.भा. में ४०।३२.
२६	५५	९	मं.	६०	०	वि.	८	५०	वृ.	०	५०	तै.	२८	५७	२६	८	१९	२२	वृश्चिक	७	१४	५	५९	९	२४	५५	२६	
२६	५९	९	बु.	१	२७	अनु.	१४	४५	ध्रु.	१	४८	ग.	१	२७	२७	९	२०	२३	वृश्चिक	७	१३	६	०	९	२५	५६	१०	भ. ३३।१६ उ.,
२७	३	१०	गु.	५	५	ज्ये.	१९	२०	व्या	१	४८	वि.	५	५	२८	१०	२१	२४	ध.१९।२०	७	१३	६	१	९	२६	५६	५३	भ. ५।५ या.,
२७	७	११	शु.	६	५८	मू.	२२	१०	ह.	०/५७	३५/४८	बा.	६	५८	२९	११	२२	२५	धनु	७	१२	६	२	९	२७	५७	३५	बुध धनि. में २।३७, विजया ११ व्र. स.,
२७	११	१२	श.	७	५	पू.षा.	२३	१५	सि	५३	४०	तै.	७	५	३०	१२	२३	२६	म.३८।५	७	११	६	३	९	२८	५८	१६	शनि प्रदोष व्र.,
२७	१५	१३	र.	५	१७	उ.षा.	२२	३५	व्य.	४८	१३	व.	५	१७	फा'	१३	२४	२७	मकर	७	१०	६	३	९	२९	५८	५५	भ. ५।१७ उ., ३३।३५ या., सं. सूर्य कुम्भ में १।५, (क)
२७	२०	१४	चं.	१	५२	श्र.	२०	२५	व.	४१	३८	श.	१	५२	२	१४	२५	२८	कु.४८।४२	७	९	६	४	१०	०	५९	३३	पंचक प्रा. ४८।४२, बुध कुम्भ में ५०।५८, सोमवती ३०,
अवम		३०	चं.	५७	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस का क्षय, ।

(क) मु. ४५, पुण्य १७।५ तक, श्री महाशिव रात्रिव., शिव रात्रि व्रत माहात्म्य—"सौरो वा वैष्णवोऽन्यो वा देवतान्तर पूजकः। न पूजा फलमाप्नोति शिवरात्रि-बहिर्मुखः।"

फा. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५५।३७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	०	९	८	११	१	९	३
२४	४	१८	६	३	६	११	११
५१	४९	१	४५	३८	९	८	८
१	१७	२६	१	३	४१	४२	४२
६०	३९	१०१	११	७१	०	३	३
४७	३६	२७	७	४५	५५	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	३	३	२	३	२	३
धनि.	अश्वि.	श्रव.	मू.	उ.भा.	[illegible]	[illegible]	पुष्य

कुं. सूर्योदये

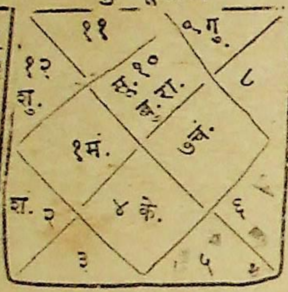

लोक भविष्य—किसी विशेष घटना से जनता में असन्तोष फैले, परस्पर मतभेद-फूट-कलह हो। सत्तारूढ़ दल चिन्तित रहे। उधर यूरोप में आन्तरिक-विग्रह रहे। किसी बड़े व्यक्ति का अवसान वा पद खाली हो। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—३१ जन. से गेहूँ आदि अनाजों के भाव में कुछ मन्देपन का रुख रहे। सोना, चांदी आदि धातु, मूंगा, मोती आदि जवाहरात ऊन, रुई. कपास, गुड़ में तेजी आवे। ३१ जन. से ६ दिन में रुई में मन्दी होकर फिर तेजी आवे। ३१ जन. से पहले जो रुख बाजार का चल रहा होगा, वह रुख एक दम बदलेगा, अर्थात्—३१ जन. से जिन वायदे व्यापार की वस्तुओं में तेजी होगी उनमें मन्दी आ जाएगी और मन्दी वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। **शकुन से भविष्य विचार**—५ फर. को चित्रा नक्षत्र है अतः तीन मास में अन्न का भाव मन्दा रहे। १ फर. को बिजली सहित मेघ हों तो श्राव. एवं भाद्र. में वर्षा हो। **आकाश लक्षण**—३१ जन. से ६ फर. तक शिलांग, हिमाचल पंजाब आदि में कहीं कहीं बादल चाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं।

कुं. सूर्योदये,

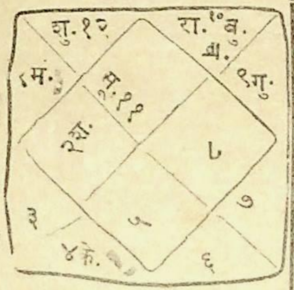

फा. कृ १४ चन्द्र, इष्ट ५५।५२,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	०	१०	८	११	१	९	३
१	९	०	८	११	६	१०	१०
५६	२६	८	१	५८	१८	४६	४६
३	३४	४३	८	१७	२५	२६	२६
६०	३९	१०७	१०	७१	१	[illegible]	३
३९	३८	१३	३२	३	४२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ	उ.	अ.	अ.
३	३	३	३	३	३	२	३
धनि.	अश्वि.	धनि.	[illegible]	उ.भा.	[illegible]	[illegible]	पु.

श्री वि. सं.२०२८, शाक १८९३, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ तारीख । चन्द्र । भा. स्टै. टा. | उदयकालिक | (१५ से २९ फरवरी, सन् १९७२ इं. तक) उत्तरायण,दक्षिण+

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. फर.	श. माघ.	मु. जिल्हिज्ज	सञ्चार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२७	२४	१	मं	५१	१०	ध.	१७	०	प.	३४	५	कि.	२४	८	३	१५	२६	२९	कुम्भ	७	८	६	५	१०	२	०	९
२७	२९	२	बु.	४४	२५	श.	१२	३०	शि.	२५	५०	बा.	१७	४८	४	१६	२७	३०	मी.५३।४५	७	७	६	६	१०	३	०	४६
२७	३३	३	गु.	३७	३०	पू.भा.	७	३०	सि	१७	१०	तै.	१०	५८	५	१७	२८	मु.१	मीन	७	६	६	७	१०	४	१	१९
२७	३७	४	शु.	३०	२८	उ.भा.	३ / २६	१० / ०	सा.	५ / २६	२८ / ३५	व.	३	५९	६	१८	२९	२	मे.५७।०	७	५	६	८	१०	५	१	५०
२७	४२	५	श.	२३	४०	अ.	५२	१७	शु.	५१	१७	बा.	२३	४०	७	१९	३०	३	मेष	७	४	६	९	१०	६	२	२१
२७	४६	६	र.	१७	२५	भ.	४८	१२	ब्र.	४३	३०	तै.	१७	२५	८	२०	फा.१	४	मेष	७	३	६	१०	१०	७	२	४९
२७	५१	७	चं	११	५५	कृ.	४५	०	ऐं.	३६	२५	व.	११	५५	९	२१	२	५	वृ.२।२४	७	२	६	११	१०	८	३	१६
२७	५५	८	मं.	७	२०	रो.	४२	४५	वै.	३०	५	ब.	७	२०	१०	२२	३	६	वृष	७	१	६	११	१०	९	३	४१
२८	०	९	बु.	३	३७	मृ.	४१	३०	वि.	२४	३७	कौ.	३	३७	११	२३	४	७	मि१२।८	७	०	६	१२	१०	१०	४	५
२८	४	१०	गु.	१	२०	आर्द्रा	४१	२०	प्री.	२०	०	ग.	१	२०	१२	२४	५	८	मिथुन	६	५९	६	१३	१०	११	४	२७
अवम		११	गु.	५९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	९	१२	शु.	५९	३०	पुन.	४२	१३	आ.	१६	१०	ब.	२९	४१	१३	२५	६	९	क.२७।०	६	५८	६	१४	१०	१२	४	४५
२८	१३	१३	श.	६०	०	पु.	४४	५	सौ.	१३	१०	कौ.	२९	५०	१४	२६	७	१०	कर्क	६	५७	६	१४	१०	१३	५	३
२८	१८	१३	र.	०	१०	आश्ले	४६	५५	शो.	११	५	तै.	०	१०	१५	२७	८	११	सिं४६।५५	६	५६	६	१५	१०	१४	५	१८
२८	२३	१४	चं.	१	४२	म.	५०	४५	अ.	९	३७	व.	१	४२	१६	२८	९	१२	सिंह	६	५५	६	१६	१०	१५	५	३२
२८	२७	१५	मं.	४	२७	पू.फा.	५५	३०	सु.	८	५२	ब.	४	२७	१७	२९	१०	१३	सिंह	६	५४	६	१७	१०	१६	५	४३

ग्रह दर्शनः—बुध २८ फर. से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा । प्रातः गुरु पूर्व कपाल में, सायं मं., शु. एवं शनि पश्चिम- कपाल में दीखेंगे । +गोल शिशिर-वसन्त ऋतु

चन्द्र दर्शन, मु. ३०,
मुहर्रम १, हिजरी सन् १३९२ प्रा., (वि. मु. उ.भा.)
भ. ३।५९ उ., ३०।२८ या., पचक स. ५७।० बुध शत.में (क)
सूर्य शत. में ३७।२०, सूर्य सा. मीन में २९।५,
शक फाल्गुन प्रा., मंगल भर. में४९।३५,
भ. ११।५५ उ., ३९।३७ या.,
होलाष्टक प्रा.,

भ. ३०।३६ उ., ५९।५३ या., शनि कृत्ति. ४ में ५०।५८,
एकादशी का क्षय,
बुध पू.भा. में ४१।३०, आमला एकादशी व्र. स.,
गुरु मूल ४ में ५४।२० शनि प्रदोष व्र., मुहर्रम (ताजिया)

भ. १।४२ उ., ३३।५ या., बुध पश्चिममें उदित ३३।७, (ख)
राहु उ.षा. ४ में केतु पुष्य २ में ३२।५७, होलाष्टक स., (ग)

(क) ३२।४५, शुक्र रेवती में ५४।३२, (वि. मु. रे.), (ख) होलिका दहन (रात्रि ८ घ. ९ मि. बाद), सत्य व्र., (ग) (धुलण्डी) अन्त्यज-स्पर्श ।

फाल्गु. शु. ८ मंगल, इष्ट ५६।१२, कुं. सुर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
१०	०	१०	८	११	१	९	३
१०	१४	१४	९	२१	६	१०	१०
०	४३	४८	२२	२३	३५	२१	२१
१९	३१	२१	२०	२०	२	०	०
६०	३९	१११	९	७०	२	३	३
३४	३५	५५	४०	४	३४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा	मा	व	व.
	उ.	अ.	उ	उ	उ	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

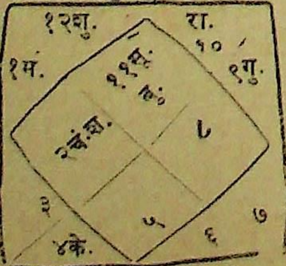

लोक-भविष्य—विदेशों से नया सहयोग प्राप्त हो और कारखानों में उत्पादन बढ़े । कहीं परस्पर उपद्रव से हानि का भी भय है । **साधारण व्यापारिक भविष्य**—१८ फर. से रूई, कपास, चावल, चन्दन, कपूर, गुल खाण्ड शक्कर में मन्दे का रुख रहे, २४ फर. से सोना, चांदी, तांबा में तेजी, अनाज में मन्दापन रहे । इस समय लकड़ी के संग्रह से आगे करीब तीन गुणा लाभ मिलेगा । तिलहन तेज हों । २६ फर. से मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा में मन्दी रहे, रुई में घटाबढ़ी चलकर बाद में मन्दी आवे । २८ फर. से वस्त्र, रुई व शेयरों में १५ दिन में मन्दी हो । **शकुन से भविष्य विचार**—सप्तमी को कृत्तिका नक्षत्र होने से आगे भाद्रपद की अमावस्या को वर्षा हो—फा. शु. पूर्णिमा को यदि बादल गरजे वर्षा हो तो अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ मिले,—होलिका-दहन के समय (२८ फर. को) यदि बादल हों तो आगे गेहूँ आदि अन्न महंगे हों ।

आकाश लक्षण—१५ से २३ फर.तक जोरदार हवा चले, आकाश मलिन रहे, २७ से २९ फर. तक भी हवा का जोर और बूंदा-बांदी हो, वृक्षों को हानि पहुंच सकती है ।

कुं. सूर्योदये, फाल्गु. शु. १५ मंगल, इष्ट ५६।३०.

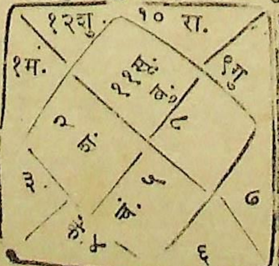

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	०	१०	८	११	१	९	३
१७	१९	२८	१०	२९	६	९	९
२	२०	०	२७	३०	५५	५८	५८
२५	२६	४६	३७	३४	५	४५	४५
६०	३९	१११	८	६९	३	३	३
१०	३१	३४	५१	०	१६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०२८, शाक १८९३, चैत्र कृष्ण पक्ष २४ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टा. | उदयकालिक | (१ से १५ मार्च, सन् १९७२ ई. तक), उत्तरायण

ग्रह-दर्शन—प्रात. गुरु को पूर्व कपाल में देखें । सायं पश्चिम क्षितिज पर बुध, उससे ऊपर शुक्र, उससे ऊपर मं. और उससे भी ऊपर शनि होगा । गोल, वसन्त ऋतु,

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३२	१	बु.	८	७	उ.फा.	६०	०	धृ.	९	०	कौ.	८	७	१८	१	११	१४	क.११।५६	६	५३	६	१८	१०	१७	५	५४	मार्च प्रा., शुक्र अश्वि. मेष में २२।१०, होला मेला श्री आनन्द (क)
२८	३७	२	गु.	१२	४३	उ.फा.	१	१५	शू.	९	४७	ग.	१२	४३	१९	२	१२	१५	कन्या	६	५२	६	१८	१०	१८	५	१	भ. ४५।२५ उ., बुध मीन में ०।४५,
२८	४१	३	शु.	१८	८	ह.	७	४५	गं.	११	१७	वि.	१८	८	२०	३	१३	१६	तु.४१।२०	६	५१	६	१९	१०	१९	६	९	भ.१८।८या., सूर्य पू.भा.में ५३।४८, बुध उ.भा.में ५०।२५, (ख)
२८	४६	४	श.	२४	१०	चि.	१४	५५	वृ.	१३	१२	बा.	२४	१०	२१	४	१४	१७	तुला	६	५०	६	१९	१०	२०	६	१३	(वि. मु. स्वा.)
२८	५०	५	र.	३०	२८	स्वा.	२२	१७	ध्रु.	१५	२२	तै.	३०	२८	२२	५	१५	१८	तुला	६	४९	६	२०	१०	२१	६	१६	
२८	५५	६	चं.	३६	४०	वि.	२९	४२	व्या.	१७	३३	ग.	३	३४	२३	६	१६	१९	वृ. १२।५१	६	४८	६	२१	१०	२२	६	१७	भ. ३६।४० उ.,
२९	०	७	मं.	४२	१२	अनु.	३६	३२	ह.	१९	२२	वि.	९	२६	२४	७	१७	२०	वृश्चिक	६	४६	६	२१	१०	२३	६	१६	भ. ९।२६ या., नेप्च्यून वक्री ९।३०,
२९	५	८	बु.	४६	३५	ज्ये.	४२	१८	व.	२०	३०	बा.	१४	२३	२५	८	१८	२१	ध. ४२।१८	६	४५	६	२२	१०	२४	६	१३	
२९	१०	९	गु.	४९	१५	मू.	४६	३३	सि.	२०	३०	तै.	१७	५५	२६	९	१९	२२	धनु	६	४३	६	२३	१०	२५	६	९	मेला शीतला माता (कुराली),
२९	१४	१०	शु.	५०	१०	पू.षा.	४८	५५	व्य.	१९	७	व.	१९	४२	२७	१०	२०	२३	धनु	६	४२	६	२४	१०	२६	६	३	भ. १९।४२ उ., ५०।१० या.,
२९	१९	११	श.	४८	५२	उ.षा.	४९	२०	व.	१६	१२	ब.	१९	३१	२८	११	२१	२४	म. ४।१	६	४१	६	२५	१०	२७	५	५६	पाप मोचिनी ११ व्र. स्मा. वै.,
२९	२३	१२	र.	४५	४०	श्रव.	४७	४३	प.	११	३७	कौ.	१७	१६	२९	१२	२२	२५	मकर	६	४०	६	२५	१०	२८	५	४७	मंगल कृत्ति. में ५।२३, बुध रेव. में २८।२८,
२९	२८	१३	चं.	४०	३५	ध.	४४	२०	शि.	५४	३०	ग.	१३	७	चै.१	१३	२३	२६	कुं.१६।१	६	३९	६	२६	१०	२९	५	३६	भ. ४०।३५ उ., पंचक प्रा. १६।१, सं. सूर्य मीन में (ग)
२९	२३	१४	मं.	३३	५५	श.	३९	२५	सि.	४९	१५	वि.	७	१५	२	१४	२४	२७	कुम्भ	६	३८	६	२६	११	०	५	२३	भ. ७।१५ या., मेला पिहोवा,
२९	३८	३०	बु.	२६	७	पू.भा.	३३	२५	शु.	३९	४७	च.	०	१	३	१५	२५	२८	मी.१९।५५	६	३६	६	२७	११	१	५	७	चान्द्र संवत्सर २०२८ पूर्ण,

(क) पुरसाहेब, (वि.मु.उ.फा.), (ख) श्री गणेश ४ व्र., (ग) ५४।३२, मु. १५, पुण्य अगले दिनमध्याह्न से पूर्व, शुक्र भर. में ८।५०, सोम प्रदोष व्र.

चैत्र कृ. ८ बुध, इष्ट ५६।५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	११	८	०	१	९	३
२५	२४	११	११	८	७	९	९
३	३६	५३	३४	३७	२३	३३	३३
४	१५	४	५७	३९	५६	१८	१८
९	३९	८८	७	६७	४	३	३
५७	२७	३३	५०	३५	२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	भर. ४	उ.भा. ३	मूल ४	कृत्ति. ३	कृत्ति. ४	उ.षा. ४	पुष्य २

कुं. सूर्योदये

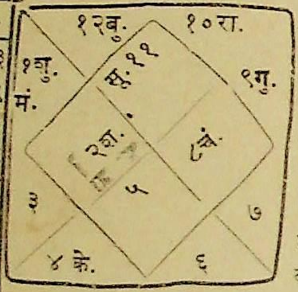

लोक भविष्य—ईरान तथा चीन में आन्तरिक विद्रोह बढ़े। भारतीय गुप्तचर विभाग द्वारा सरकार को शत्रुओं की युद्ध विषयक आन्तरिक रहस्यमयी सूचनाएं मिलें। **साधारण व्यापारिक भविष्य**—१ मार्च से जौं, चना, गेहूं आदि अन्न तथा घृत में तेजी हो, सोना चांदी में खास तेजी आवे। २ मार्च से सोना, चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी आकर फिर बाद में उतनी ही मन्दी आवे। १२ मार्च से २० दिन में गेहूं मूंग, चावल, राई, मसूर, तिल-तेल सरसों, घृत, चांदी, सूत वस्त्र में तेजी, रुई में पहले तेजी फिर मन्दी।

कुं. सूर्योदये,

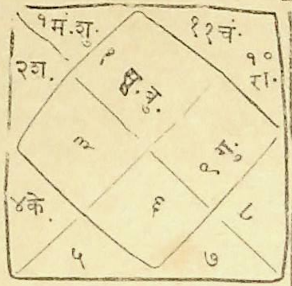

चैत्र कृ. ३० बुध, इष्ट ५७।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	८	०	१	९	९
२	२९	२०	१२	१६	७	९	३
२	१२	७	२६	२६	५४	११	११
१०	४	६	४९	२५	१	३	३
५९	३९	४२	६	६६	४	३	३
४५	२३	४०	५१	७	३९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	कृत्ति. २	रेव. २	मूल ४	भर. २	कृत्ति. ४	उ.षा. ४	पुष्य २

शकुन से भविष्य विचार—३ मार्च को यदि पूर्वोत्तरका पवन चले, तो आगे उस जगह वर्षा पर्याप्त हो, सुभिक्ष रहे। चैत्र कृ. ७ को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो लाल वस्तुएं सस्ती हों।—१३ मार्च को यदि वर्षा हो तो वैशाख से व ज्येष्ठ में तृण घास महंगे हों। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा एवं आकाश मलिन रहेगा।

चन्द्र मौली-शंकर-चरण बार बार शिर नय। संवत् यह पूरण कियो गिरा गणेश मनाय।"

भा. स्टैं. टा. में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझाने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि बड़ी पत्रों में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टैं. टा. में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशिप्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है, इसे समझ लेना चाहिए :—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात्—दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंतु रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहिले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७, घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा :—

(१) १ अप्रैल (सन् १९७१) गुरुवार को चैत्र शुक्ल छठ के आगे ९ घं. १० मि. लिखे हैं। इसका अर्थ यह है कि—यह छठ दिन के ९ बज कर १० मिनट पर समाप्त होगी।

(२) २ अप्रैल (१९७१) शुक्रवार को आर्द्रा नक्षत्र के आगे २३ घं. ३३ मि. लिखे हैं जिसका अर्थ है, कि—इस तारीख को यह नक्षत्र रात के ११ बजकर ३३ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) ४ अप्रैल (१९७१) रविवार को पुष्य नक्षत्र के आगे २७ घं. ४० मि. लिखा है। इसका अभिप्राय यह है, कि—४ अप्रैल की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे) के बाद ५ अप्रैल को रात के ३ बज कर ४० मिनट पर पुष्य नक्षत्र समाप्त होगा। ध्यान रहे—यद्यपि यहां पुष्य नक्षत्र की समाप्ति के समय ५ अप्रै. ही होगा एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी सोमवार ही होगा, परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार उस समय वार रविवार ही माना जाएगा क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही बदलता है। यही कारण है—इसे रविवार के आगे ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं—कि यहां पंचांग में तिथि आदि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों वहां घण्टों में से २४ घटाकर शेष घण्टा मिनटों को अग्रिम तारीख का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिए —

१५ अप्रैल गुरुवार को धनु में चन्द्र का प्रवेश-काल २८ घं. ० मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि—१६ अप्रैल को सूर्योदय से पूर्व ४ बजकर ० मिनट पर चन्द्रमा धनु राशि में प्रवेश करेगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय गुरुवार ही होगा।

नोट—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाईम (घं. मि.) नहीं लिखा है, अर्थात् (....) इस तरह का चिह्न लगाया गया है, उस तिथि नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक) रहेगा।

घंटा-मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्रस्पष्ट करने की विधि:—

भभोग एवं भयात के मिनट बनाओ। मिनटात्मक भयात को ४० से गुणा करके ३ से गुणित मिनटात्मक भभोग से भाग देकर तीन लब्धियां क्रमशः अंश, कला, विकला प्राप्त करो। इस अंशादि फल में इष्ट कालिक वर्तमान नक्षत्र की राशि, अंश, कलाओं को नीचे दिए गए "नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक" से लेकर जोड़ दो—बस यही आपका इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र होगा।

भभोग कैसे बनाएं ?

अभीष्ट समय में (जिस समय चन्द्र स्पष्ट करना है उस समय) भा. स्टैं. टा. के वक्त जो वर्तमान नक्षत्र हो उसे 'वर्तमान-नक्षत्र' एवं 'वर्तमान नक्षत्र' से पूर्ववर्ती नक्षत्र को 'गत नक्षत्र' समझें। वर्तमान नक्षत्र के पंचांग में दिए गए घण्टा मिनटों में २४ घण्टा जोड़कर (यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हो तो ४८ घण्टा जोड़कर तथा यदि वर्तमान नक्षत्र क्षय हो तो उसमें बिना कुछ जोड़ें ही) उसमें से गत नक्षत्र के घण्टा मिनट घटाने पर घण्टा मिनटात्मक भभोग बनेगा। संक्षेप से इस तरह कह सकते हैं कि—वर्तमान नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनटों में से गत नक्षत्र के वार घंटा, मिनटों को घटाने से शेष दिनादि भभोग होगा।

भयात कैसे बनाएं ?

भयात बनाने से पूर्व अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के घण्टा मिनटों को ठीक उसी तरह लिखें जैसे इस पंचांग में तिथि आदि के घण्टा, मिनट लिखे गए हैं। अर्थात्—दिन के १२ बजे के बाद रात्रि के १२ बजे तक के घण्टों को १३, १४ आदि एवं रात्रि के १२ बजे के बाद सूर्योदय (पंचांग में दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय) तक के घण्टों को २५, २६ आदि लिखें (देखें—इसी पृष्ठ के पहिले कालम का दूसरा प्रघट्टक)। इस अभीष्ट भा. स्टैं. टा को वार सहित लिखकर उसमें से गत नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनट घटाने पर शेष दिनादि भयात होगा। भयात की दिन संख्या को २४ से गुणा करके उसमें घण्टों को जोड़ देने पर घण्टादि भयात बन जाएगा। अथवा यूं कहिए—यदि इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) गत नक्षत्र के वार से एक वार आगे का हो तो इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) में २४ घण्टा जोड़ कर, दो बार आगे का हो तो ४८ घण्टा जोड़कर उसमें से गत नक्षत्र के घ. मि. घटाने से भयात के घं. मि. प्राप्त होंगे। (उदाहरण पृष्ठ ६० पर देखें)

—:नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक:—

नक्षत्र	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा	उ.फा	ह.	चि.
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५
अं.	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
नक्षत्र	**स्वा.**	**वि.**	**अनु.**	**ज्ये.**	**मू.**	**पू.षा.**	**उ.षा**	**श्रव.**	**ध.**	**श.**	**पू.भा**	**उ.भा**	**रे.**	
रा.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	
क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	[illegible]	

…वि. सं. २०२८, शाक १८९३, चैत्र कृष्ण पक्ष २४ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टैं. टा. | उदयकालिक | (१ से १५ मार्च, सन् १९७२ ई. तक), उत्तर…

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२८	३२	१	बु.	८	७	उ.फा.	६०	०	धृ.	९	०	कौ.	८	७	१८	१	११	१४	क.११।५६	६	५३	६	१८	१०	१७	५	५४
२८	३७	२	गु.	१२	४३	उ.फा.	१	१५	शू.	९	४७	ग.	१२	४३	१९	२	१२	१५	कन्या	६	५२	६	१८	१०	१८	५	१
२८	४१	३	शु.	१८	८	ह.	७	४५	गं.	११	१७	वि.	१८	८	२०	३	१३	१६	तु.४१।२०	६	५१	६	१९	१०	१९	६	९
२८	४६	४	श.	२४	१०	चि.	१४	५५	वृ.	१३	१२	बा.	२४	१०	२१	४	१४	१७	तुला	६	५०	६	१९	१०	२०	६	१३
२८	५०	५	र.	३०	२८	स्वा.	२२	१७	ध्रु.	१५	२२	तै.	३०	२८	२२	५	१५	१८	तुला	६	४९	६	२०	१०	२१	६	१६
२८	५५	६	चं.	३६	४०	वि.	२९	४२	व्या	१७	३३	ग.	३	३४	२३	६	१६	१९	वृ. १२।५१	६	४८	६	२१	१०	२२	६	१७
२९	०	७	मं.	४२	१२	अनु.	३६	३२	ह.	१९	२२	वि.	९	२६	२४	७	१७	२०	वृश्चिक	६	४६	६	२१	१०	२३	६	१६
२९	५	८	बु.	४६	३५	ज्ये.	४२	१८	व.	२०	३०	बा.	१४	२३	२५	८	१८	२१	ध. ४२।१८	६	४५	६	२२	१०	२४	६	१३
२९	१०	९	गु.	४९	१५	मू.	४६	३३	सि.	२०	३०	तै.	१७	५५	२६	९	१९	२२	धनु	६	४३	६	२३	१०	२५	६	९
२९	१४	१०	शु.	५०	१०	पू.षा.	४८	५५	व्य.	१९	७	व	१९	४२	२७	१०	२०	२३	धनु	६	४२	६	२४	१०	२६	६	३
२९	१९	११	श.	४८	५२	उ.षा.	४९	२०	व.	१६	१२	ब.	१९	३१	२८	११	२१	२४	म. ४।१	६	४१	६	२५	१०	२७	५	५६
२९	२३	१२	र.	४५	४०	श्रव.	४७	४३	प.	११	३७	कौ.	१७	१६	२९	१२	२२	२५	मकर	६	४०	६	२५	१०	२८	५	४७
२९	२८	१३	चं.	४०	३५	ध.	४४	२०	शि.	४ ५७	३० ५८	ग.	१३	७	चै.१	१३	२३	२६	कुं.१६।११	६	३९	६	२६	१०	२९	५	३६
२९	३३	१४	मं.	३३	५५	श.	३९	२५	सि.	४९	१५	वि.	७	१५	२	१४	२४	२७	कुम्भ	६	३८	६	२६	११	०	५	२३
२९	३८	३०	बु.	२६	७	पू.भा.	३३	२५	शु.	३९	४७	च.	०	१	३	१५	२५	२८	मी.१९।५५	६	३६	६	२७	११	१	५	७

ग्रह-दर्शन—प्रात. गुरु को पूर्व कपाल में देखें । सायं पश्चिम क्षितिज पर बुध, उससे ऊपर शुक्र, उससे ऊपर म. और उससे भी ऊपर शनि होगा । गोल, वसन्त ऋतु,

मार्चप्रा.,शुक्र अश्वि. मेष में २२।१०,होला मेलाश्रीआनन्द (क)
भ. ४५।२५ उ., बुध मीन में०।४५,
भ.१८।८या.,सूर्य पू.भा.में ५३।४८,बुध उ.भा.में ५०।२५, (ख)
(वि. मु. स्वा.)

भ. ३६।४० उ.,
भ. ९।२६ या., नेप्च्यून वक्री ९।३०,

मेला शीतला माता (कुराली),
भ. १९।४२ उ., ५०।१० या.,
पाप मोचिनी ११ व्र. स्मा. वै.,
मंगल कृत्ति. में ५।२३, बुध रेव. में २८।२८,
भ. ४०।३५ उ., पंचक प्रा. १६।१, सं. सूर्य मीन में (ग)
भ. ७।१५ या., मेला पिहोवा,
चान्द्र संवत्सर २०२८ पूर्ण,

(क) पुरसाहेब, (वि.मु.उ.फा.), (ख) श्री गणेश ४ व्र., (ग) ५४।३२, मु. १५, पुण्य अगले दिनमध्याह्न से पूर्व, शुक्र भर. में८।५०, सोम प्रदोष व्र.

चैत्र कृ. ८ बुध, इष्ट ५६।५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	११	८	०	१	९	३
२५	२४	११	११	८	७	९	९
३	३६	५३	३४	३७	२३	३३	३३
४	१५	४	५७	३९	५६	१८	१८
५९	३९	८८	७	६७	४	३	३
५७	२७	३३	५०	३५	२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.२	भर.४	उ.भा.३	मघा ४	कृत्ति.३	कृत्ति.४	उ.षा.४	पुन.२

कुं. सूर्योदये

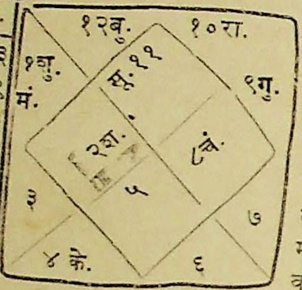

लोक भविष्य—ईरान तथा चीन में आन्तरिक विद्वेष बढ़े । भारतीय गुप्तचर विभाग द्वारा सरकार को शत्रुओं की युद्ध विषयक आन्तरिक रहस्यमयी सूचनाएं मिलें । **साधारण व्यापारिक भविष्य**—१ मार्च से जौं, चना, गेहूं आदि अन्न तथा घृत में तेजी हो, सोना चांदी में खास तेजी आवे । २ मार्च से सोना, चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले तेजी आकर फिर बाद में उतनी ही मन्दी आवे । १२ मार्च से २० दिन में गेहूं मूंग, चावल, राई, मसुर, तिल-तेल सरसों, घृत, चांदी, सूत वस्त्र में तेजी, रुई में पहले तेजी फिर मन्दी ।

शकुन से भविष्य विचार—३ मार्च को यदि पूर्वोत्तरका पवन चले, तो आगे उस जगह वर्षा पर्याप्त हो, सुभिक्ष रहे । चैत्र कृ. ७ को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो लाल वस्तुएं सस्ती हों ।——१३ मार्च को यदि वर्षा हो तो वैशाख से व ज्येष्ठ में तृण घास महंगे हों । **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा एवंआकाश मलिन रहेगा ।

चन्द्र मौली-शंकर-चरण बार बार शिर न य । संवत् यह पूरण कियो गिरा गणेश मनाय ।"

कुं. सूर्योदये,

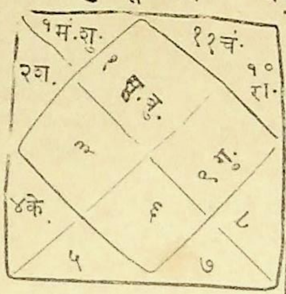

चैत्र कृ. ३० बुध, इष्ट ५७।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	८	०	१	९	९
२	२९	२०	१२	१६	७	९	३
२	१२	७	२६	२६	५४	११	११
१०	४	६	४९	२५	१	३	३
५९	३९	४२	६	६६	४	३	३
४५	२३	४०	५१	७	३९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा.४	कृत्ति.१	रेव.२	मघ.४	भर.३	कृत्ति.४	उ.षा.४	पुन.२

भा. स्टैं. टा. में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझाने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि बड़ी पत्रों में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टैं. टा. में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशिप्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है, इसे समझ लेना चाहिए :—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात्—दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंतु रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहिले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७, घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा :—

(१) १ अप्रैल (सन् १९७१) गुरुवार को चैत्र शुक्ल छठ के आगे ९ घं. १० मि. लिखे हैं। इसका अर्थ यह है कि—यह छठ दिन के ९ बज कर १० मिनट पर समाप्त होगी।

(२) २ अप्रैल (१९७१) शुक्रवार को आर्द्रा नक्षत्र के आगे २३ घं. ३३ मि. लिखे हैं जिसका अर्थ है, कि—इस तारीख को यह नक्षत्र रात के ११ बजकर ३३ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) ४ अप्रैल (१९७१) रविवार को पुष्य नक्षत्र के आगे २७ घं. ४० मि. लिखा है। इसका अभिप्राय यह है, कि—४ अप्रैल की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे) के बाद ५ अप्रैल को रात के ३ बज कर ४० मिनट पर पुष्य नक्षत्र समाप्त होगा। ध्यान रहे—यद्यपि यहां पुष्य नक्षत्र की समाप्ति के समय ५ अप्रै. ही होगा एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी सोमवार ही होगा, परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार उस समय वार रविवार ही माना जाएगा क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही बदलता है। यही कारण है—इसे रविवार के आगे ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं—कि यहां पंचांग में तिथि आदि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों वहां घण्टों में से २४ घटाकर शेष घण्टा मिनटों को अग्रिम तारीख का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिए —

१५ अप्रैल गुरुवार को धनु में चन्द्र का प्रवेश-काल २८ घं. ० मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि—१६ अप्रैल को सूर्योदय से पूर्व ४ बजकर ० मिनट पर चन्द्रमा धनु राशि में प्रवेश करेगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय गुरुवार ही होगा।

नोट—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाईम (घं. मि.) नहीं लिखा है, अर्थात् (. . . .) इस तरह का चिह्न लगाया गया है, उस तिथि नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक) रहेगा।

घंटा-मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्रस्पष्ट करने की विधि:—

भभोग एवं भयात के मिनट बनाओ। मिनटात्मक भयात को ४० से गुणा करके ३ से गुणित मिनटात्मक भभोग से भाग देकर तीन लब्धियां क्रमशः अंश, कला, विकला प्राप्त करो। इस अंशादि फल में इष्ट कालिक वर्तमान नक्षत्र की राशि, अंश, कलाओं को नीचे दिए गए "नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक" से लेकर जोड़ दो—बस यही आपका इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र होगा।

भभोग कैसे बनाएं ?

अभीष्ट समय में (जिस समय चन्द्र स्पष्ट करना है उस समय) भा. स्टैं. टा. के वक्त जो वर्तमान नक्षत्र हो उसे 'वर्तमान-नक्षत्र' एवं 'वर्तमान नक्षत्र' से पूर्ववर्ती नक्षत्र को 'गत नक्षत्र' समझें। वर्तमान नक्षत्र के पंचांग में दिए गए घण्टा मिनटों में २४ घण्टा जोड़कर (यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हो तो ४८ घण्टा जोड़कर तथा यदि वर्तमान नक्षत्र क्षय हो तो उसमें बिना कुछ जोड़े ही) उसमें से गत नक्षत्र के घण्टा मिनट घटाने पर घण्टा मिनटात्मक भभोग बनेगा। संक्षेप से इस तरह कह सकते हैं कि—वर्तमान नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनटों में से गत नक्षत्र के वार घंटा, मिनटों को घटाने से शेष दिनादि भभोग होगा।

भयात कैसे बनाएं ?

भयात बनाने से पूर्व अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के घण्टा मिनटों को ठीक उसी तरह लिखें जैसे इस पंचांग में तिथि आदि के घण्टा, मिनट लिखे गए हैं। अर्थात्—दिन के १२ बजे के बाद रात्रि के १२ बजे तक के घण्टों को १३, १४ आदि एवं रात्रि के १२ बजे के बाद सूर्योदय (पंचांग में दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय) तक के घण्टों को २५, २६ आदि लिखें (देखें—इसी पृष्ठ के पहिले कालम का दूसरा प्रघट्टक)। इस अभीष्ट भा. स्टैं. टा को वार सहित लिखकर उसमें से गत नक्षत्र के वार, घण्टा, मिनट घटाने पर शेष दिनादि भयात होगा। भयात की दिन संख्या को २४ से गुणा करके उसमें घण्टों को जोड़ देने पर घण्टादि भयात बन जाएगा। अथवा यूं कहिए—यदि इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) गत नक्षत्र के वार से एक वार आगे का हो तो इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) में २४ घण्टा जोड़ कर, दो बार आगे का हो तो ४८ घण्टा जोड़कर उसमें से गत नक्षत्र के घ. मि. घटाने से भयात के घं. मि. प्राप्त होंगे। (उदाहरण पृष्ठ ६० पर देखें)

—:नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक:—

नक्षत्र	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	म.	पू.फा	उ.फा	ह.	चि.
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५
अं.	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३
क.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
नक्षत्र	**स्वा.**	**वि.**	**अनु.**	**ज्ये.**	**मू.**	**पू.षा.**	**उ.षा**	**श्रव.**	**ध.**	**श.**	**पू.भा**	**उ.भा**	**रे.**	
रा.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
अं.	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	
क.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	[illegible]	

घण्टा मिनटात्मक भयात भभोग से चन्द्र-साधन के उदाहरण

उदाहरण (१) :—३१ मार्च (१९७१) को शाम के ५ घं. ३० मि. (अर्थात् १७ घं. ३० मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। इस समय वर्तमान नक्षत्र रोहिणी है। रोहिणी के घं. मि. (२२।२६) में २४ घं. जोड़कर उसमें (४६।२६ में) से गत-नक्षत्र कृत्तिका के घं. मि. (२३।८) घटाने पर २३ घं. १८ मि. भभोग हुआ। क्योंकि हमारे इष्ट काल का वार (बुध) गत नक्षत्र के वार (मं.) से एक आगे है। अतः इष्टकाल में २४ घं. जोड़ कर उसमें (४१।३० में) से गत नक्षत्र कृत्ति. के घं. मि. (२३।८) घटाने पर १८ घं. २२ मि. भयात हुआ। इसके मिनटों (११०२) को ४० से गुणा करने पर ४४०८० हुआ। भभोग के मिनटों (१३९८) को ३ से गुणा करने पर ४१९४ हुआ। अब ४१९४ से ४४०८० को भाग देने पर लब्धि १० अंश हुए। शेष २१४० को ६० से गुणा करके पुनः ४१९४ से भाग देने पर ३० कला प्राप्त हुई। इन १० अंश ३० कला को वर्तमान (रोहिणी) नक्षत्र के राश्यादि १।१०।० (जो पीछे पृष्ठ ५९ पर "राश्यादि बोधक कोष्ठक" में दिए गए हैं,) जोड़ने से १रा. २० अंश ३० कला इष्ट कालिक चन्द्र स्पष्ट हुआ।

स्पष्टता के लिए दूसरा उदाहरण भी लीजिए

उदाहरण (२) :—७ फर. (सन् १९७२) को प्रातः ७ घं. ५५ मि. पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। इस समय वर्तमान नक्षत्र स्वाती है। स्वाती की वृद्धि होने से इसके घ. मि. (८।०) में ४८ घं. जोड़ कर उसमें (५६।० में) से गत नक्षत्र चित्रा के घ. मि. (२९।५) घटाने पर २६ घं. ५५ मि. भभोग हुआ। क्योंकि हमारे इष्ट काल का वार (चन्द्र) गत नक्षत्र के वार (शनि) से दो वार आगे है अतः इष्ट काल में ४८ घं. जोड़ कर गत-नक्षत्र के घन्टा-मिनट (२९।५) घटाने पर २६ घं. ५० मि. भयात हुआ। भयात के मिनटों (१६१०) को ४० से गुणा किया, तो ६४४०० हुआ। भभोग के मिनटों (१६१५)को ३ से गुणा करने पर ४८४५ हुआ। अब ६४४०० को ४८४५ से भाग देकर पहले उदाहरण की तरह दो लब्धियां १३ अंश और १८ कलायें प्राप्त कीं। इन्हें वर्तमान नक्षत्र स्वाती के राश्यादि ६।६।४० में जोड़ने पर ६ रा., १९ अंश, ५८ कला इष्ट-कालिक चन्द्र-स्पष्ट हुआ।

ध्यान रहे,—कई स्थलों पर नक्षत्र से स्पष्ट किए गए चन्द्रमा में कुछ कलाओं का अन्तर रहता है। सूक्ष्मता के लिए अन्तर्न्यास पद्धति द्वारा ही इष्ट कालिक चन्द्रमा स्पष्ट करना चाहिए।

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि
(वि० सं० २०२८)

मास पक्ष		ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	मार्च	२७	१	श.	२१। ८	उ.भा.	२६।१५	मे. २९।१८	पंचक स. २९।१८,(A)
		२८	२	र.	१७।३६	अश्वि.	२६।४२	मेष	
		२९	३	चं.	१४।३१	भ.	२४।३६	वृ. ३०।१२	भ. २५।१५ उ., (B)
		३०	४	मं.	११।५८	कृ.	२३। ८	वृष	भ. ११।५८ या.,
		३१	५	बु.	१०। ९	रो.	२२।२६	वृष	सूर्य रेव.में १७।२६,(C)
	अप्रै.	१	६	गु.	९।१०	मृ.	२२।३४	मि. १०।२९	
		२	७	शु.	९। ०	आर्द्रा.	२३।३३	मिथुन	भ. ९।० उ. २१।२२ या.,
		३	८	श.	९।४३	पुन.	२५।१७	क. १८।५१	
		४	९	र.	११। ९	पु.	२७।४०	कर्क	
		५	१०	चं.	१३।१२	आ.	———	कर्क	भ. २६।२६ उ.,
		६	११	म.	१५।३९	आ.	६।३१	सि. ६।३१	भ. १५।३९ या.,
		७	१२	बु.	१८।१५	मं.	९।३४	सिंह	
		८	१३	गु.	२०।५४	पू.फा.	१२।४१	क. १९।२९	
		९	१४	शु.	२३।२७	उ.फा.	१५।४७	कन्या	भ. २३।२७ उ., (D)
		१०	१५	श.	२५।३९	ह.	१८।३८	कन्या	भ. १२।३१ या.,
वैशाख कृष्ण पक्ष	अप्रै.	११	१	र.	२७।३८	चि.	२१।१२	तु. ७।५४	
		१२	२	चं.	२९।१४	स्वा.	२३।२८	तुला	बुध पश्चिम में अस्त १०।२०
		१३	३	मं.	----	वि.	२५।२२	वृ १८।५३	भ १७।५१ उ.,
		१४	३	बु.	६।२७	अनु.	२६।५२	वृश्चिक	भ. ६।२७ या., (E)
		१५	४	गु.	७।१८	ज्ये.	२८। ०	ध. २८। ०	मंगल उ.षा.में २१।३१.
		१६	५	शु.	७।४२	मू.	२८।३७	धनु	
		१७	६	श.	७।३६	पू.षा.	२८।४४	धनु	भ. ७।३६ उ. १९।१७ या.
		१८	७	र.	२६।४६	उ.षा.	२८।१९	म. १०।३७	शुक्र मीन में १०।३५
		१९	९	चं.	२८। ३	श्रव.	२७।२०	मकर	
		२०	१०	मं.	२५।४३	ध.	२५।५०	कुं. १४।३४	भ. १४।५३ उ.२५।४३,
		२१	११	बु.	२३। १	श.	२३।५०	कुम्भ	मंगल मकर में २१।१३,G
		२२	१२	गु.	१९।५२	पू.भा.	२१।२७	मी. १६।२	या., (F)
		२३	१३	शु.	१६।२९	उ.भा.	१८।५१	मीन	भ.१६।२९ उ.२६।४३या.,
		२४	१४	श.	१२।५८	रे.	१६। ८	मेष १६।८	पंचक स. १६।८,
		२५	३०	र.	९।३०	अश्वि.	१३।३१	मेष	

(A) बुध अश्वि. मेष में ९।२३, (B) शुक्र शत. में २२।२ (C) शनि कृत्ति. १ में ८।११ (D) बुध वक्री २२।४१, शुक्र पू.भा. में २६।१८, (E) सू. अश्वि. मेष में ६।५२, (F) पंचक प्रा. १४।३४, सूर्य सायन वृष में २३।२५, अगस्त्य लोप २९।२९, शुक्र उ.भा. में २९।१०, (G) राहु धनि- १ में केतु आश्ले. ३ में ८।३१,

भा० स्टै० टा० में तिथि नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (वि सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	अप्रै. २६	१	चं.	२७।२६	भ.	११। ९	वृ. १६।४०	
	२७	३	मं.	२५।१७	कृ.	९।१५	वृष	सूर्य भरणी में २२।३८,
	२८	४	बु.	२३।४६	रो.	७।५८	मि. १९।४२	भ.१२।३१ उ.२३।४६+
	२९	५	गु.	२३। ३	मृ.	७।२६	मिथुन	+या.,(A)
	३०	६	शु.	२३।१५	आर्द्रा	७।४५	क. २६।३७	व. बुध रेव मीन में २२।१४
	मई १	७	श.	२४।१६	पुन.	८।५४	कर्क	भ. २४।१६ उ., (B)
	२	८	र.	२६। ०	पु.	१०।४९	कर्क	भ. १३।१७ या. (C)
	३	९	चं.	२८।१४	आ.	१३।२३	सि. १३।२३	बुध मार्गी १५।५२
	४	१०	मं.	....	म.	१६।१८	सिंह	
	५	१०	बु.	६।४६	पू.फा.	१९।२४	क. २६।१८	भ. २०।४ उ.
	६	११	गु.	९।२५	उ.फा.	२२।२९	कन्या	भ. ९।२५ या., (D)
	७	१२	शु.	११।४७	ह.	२५।१८	कन्या	व. यूरेनस हस्त २ में २२।२०,
	८	१३	श.	१३।५४	चि.	२७।४८	तु. १४।३२	व.गु. अनु. २ में १२।२६,
	९	१४	र.	१५।३७	स्वा.	....	तुला	भ. १५।३७उ. २८।१५या.
	१०	१५	चं.	१६।५३	स्वा.	५।५०	वृ. २५।१६	मंगल श्रवण में २१।५७
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	मई ११	१	मं.	१७।४३	वि.	७।३१	वृश्चिक	सूर्य कृत्ति. में १६।५२,
	१२	२	बु.	१८।१२	अनु.	८।४५	वृश्चिक	
	१३	३	गु.	१८। ९	ज्ये.	९।३४	ध. ९।३४	भ. ६।८उ. १८।९या.,(E)
	१४	४	शु.	१७।४९	मू.	१०। ४	धनु	सूर्य वृष में २७।४६,
	१५	५	श.	१७। ७	पू.षा.	१०।११	म. १६।७	
	१६	६	र.	१६। २	उ.षा.	९।५७	मकर	भ. १६।२ उ. २७।१९ या.,
	१७	७	चं.	१४।३६	श्रव.	९।२०	कुं. २०।५१	पंचक प्रा. २०।५१,
	१८	८	मं.	१२।४७	ध.	८।२२	कुम्भ	
	१९	९	बु.	१०।३६	श.	२६।२१	मी. २३।४६	भ. २१।२१ उ.,
	२०	१०	गु.	२६।२२	उ.भा.	२७।२४	मीन	भ. ८।६ या.,
	२१	१२	शु.	२६।२५	रे.	२५।१८	मे. २५।१८	पंचक स. २५।१८, (F),
	२२	१३	श.	२३।२९	अश्वि.	२३। ९	मेष	भ. २३।२९ उ.,
	२३	१४	र.	२०।३८	भ.	२१। ५	वृ. २६।३८	भ. १०।३ या, (G)
	२४	३०	चं.	१८। १	कृ.	१९।१८	वृष	शुक्र भरणी में ९।४,(H)

(A) शनि कृत्ति. २ वृष में १०।२२, (B) बुध पूर्व में उदित ७।२, (C) शुक्र रेवती में ७।६, शनि, अस्त १५।१२,(D) बुध अश्वि. मेष में १०।९ (E) शुक्र अश्वि मेष में ८।२४, (F) सूर्य साय. मिथुन में २२।४५, (G) बुध भरणी में १४।२४, (H) शनि कृत्ति. ३ में ९।४,

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	मई २५	१	मं.	१५।५१	रो.	१७।५६	वृष	सूर्य रोहि. में १३।६,
	२६	२	बु.	१४।१४	मृ.	१७। ९	मि. ५।३२	
	२७	३	गु.	१३।१८	आर्द्रा	१७। ३	मिथुन	भ. २५।१३ उ.,
	२८	४	शु.	१३। ८	पुन.	१७।४४	क. ११।३४	भ. १३।८ या.,
	२९	५	श.	१३।४५	पु.	१९।९	कर्क	
	३०	६	र.	१५। ६	आ.	२१।१६	सि. २१।१६	
	३१	७	चं.	१७। ५	म.	२३।५६	सिंह	भ. १७।५ उ.,
	जून १	८	मं.	१९।२४	पू.फा.	२६।५४	सिंह	भ. ६।१४ या., (A)
	२	९	बु.	२१।५४	उ.फा,	....	क. ९।४०	
	३	१०	गु.	२४।१६	उ.फा.	५।५७	कन्या	बुध वृष में २०।२९,
	४	११	शु.	२६।२०	ह.	८।४९	तु. २२।५	भ. १३।१८ उ. २६।२०-
	५	१२	श.	२७।५६	चि.	११।२०	तुला	-या., (B)
	६	१३	र.	२९। १	स्वा.	१३।२३	तुला	शुक्र वृष में २७।१० (C)
	७	१४	चं.	....	वि.	१४।५३	वृ. ८।३१	
	८	१४	मं.	५।३३	अनु.	१५।५३	वृश्चिक	भ.५।३३उ१७।३३या,D
	९	१५	बु.	२६।१४	ज्ये.	१६।२३	ध. १६।२३	बुध रोहि. में ७।५९,
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	जून १०	२	गु.	२८।१४	मू.	१६।२६	धनु	बुध पूर्व में अस्त ८।२५
	११	३	शु.	२७। ३	पू.षा.	१६।११	म. २२।२	भ. १७।२ उ. २७।३या.,E
	१२	४	श.	२५।३७	उ.षा.	१५।३५	मकर	
	१३	५	र.	२३।५३	श्रव.	१४।४५	कुं. २६।१२	पंचक प्रा. २६।१२,
	१४	६	चं.	२२। ०	ध.	१३।४३	कुम्भ	भ. २२।० उ.,
	१५	७	मं.	१९।५७	श.	१२।३०	कुम्भ	भ. ८।५८या., (F)
	१६	८	बु.	१७।४७	पू.भा.	११। ९	मी ५।३०	
	१७	९	गु.	१५।२९	उ.भा.	९।४२	मीन	भ. २६।१८ उ., (G)
	१८	१०	शु.	१३। ८	रे.	८। ८	मे. ८।८	भ.१३।८या,पंचकस.८।८H
	१९	११	श.	१०।४८	अश्वि.	२६।३५	मेष	शनि कृत्ति. ४में२३।१७,
	२०	१२	र.	८।३३	कृ.	२७।४९	वृ. १०।४७	
	२१	१३	चं.	२५।४६	रो.	२६।४८	वृष	भ. ६।३० उ. १७।३८या,I
	२२	३०	मं.	२७।२७	मृ.	२६।१३	मि.१४।३१	सूर्य आर्द्रा में ९।७,(J)

(A) बुध कृत्ति. में २३।१०, (B) व.गुरु अनु. १ में ६।२९, शुक्र कृत्ति. ९।१२, (C) शनि उदित ११।८,(D) सूर्य मृग.में १०।५९ , (E) मंगल धनि. में १५।२६, (F) सूर्य मिथुन में १०।२८, बुध मृग में २०।२९, शुक्र रोहि. में ८।४९ (G) यूरेनस मार्गी १९।४४, (H) बुध मिथुन में २२।२१, (I) बुध आर्द्रा में २३।१८, (J) सूर्य सा. कर्क में ६।४९,

भा० स्टै० टा० में तिथि नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि	भद्रा आदि
आषाढ शुक्ल पक्ष	जून २३	१	बु.	२६।४०	आर्द्रा.	२६। ९	मिथुन	राहु श्रव. ४ में केतु आश्ले+
	२४	२	गु.	२६।३०	पुन.	२६।४३	क. २०।३५	+२ में ५।५३
	२५	३	शु.	२७। १	पु.	२७।५४	कर्क	
	२६	४	श.	२८।१०	आ.	.. ..	कर्क	भ. १५।३५ उ. २८।१० £
	२७	५	र.	----	आ.	५।४४	सि. ५।४४	बुध पुन. में २८।४,
	२८	५	चं.	५।५५	म.	८। ७	सिंह	£या., (A)
	२९	६	मं.	८। ५	पू.फा.	१०।५३	क. १७।३८	
	३०	७	बु.	१०।२७	उ.फा.	१३।५३	कन्या	भ. १०।२७ उ. २३।३८⁝
	जु. १	८	गु.	१२।५१	ह.	१६।५०	कन्या	शुक्र मिथुन में १९।०,
	२	९	शु.	१५। ०	चि.	१९।३१	तु. ६।१२	बुध कर्क में २७।३,
	३	१०	श.	१६।४४	स्वा.	२१।४५	तुला	भ. २९।१८ उ., ⁝या., (B)
	४	११	र.	१७।५२	वि.	२३।२५	वृ. १७।०	भ. १७।५२ या., (C)
	५	१२	चं.	१८।२१	अनु.	२४।२६	वृश्चिक	
	६	१३	मं.	१८।१०	ज्ये.	२४।४८	ध. २४।४८	सूर्य पुन. में ९।३८,
	७	१४	बु.	१७।२५	मू.	२४।३७	धनु	भ. १७।२५ उ. २८।४५
	८	१५	गु.	१६। ६	पू.षा.	२३।५६	धनु	या., (D)
श्रावण कृष्ण पक्ष	जुला. ९	१	शु.	१४।२३	उ.षा.	२२।५०	म. ५।४०	
	१०	२	श.	१२।२१	श्रव.	२१।३१	मकर	भ. २३।१२ उ.,
	११	३	र.	१०। ३	ध.	१९।५६	कुं. ८।४४	भ. १०।३या., पंचकप्रा. ..
	१२	४	चं.	७।४ / २६।१२	श.	१८।१८	कुम्भ	बुध आश्ले में ११।१७,
	१३	६	मं.	२६।४४	पू.भा.	१६।३९	मी. ११।४	भ. २६।४४ उ., (F)
	१४	७	बु.	२४।२४	उ.भा.	१५। ५	मीन	भ. १३।३४ या.,
	१५	८	गु.	२२।११	रे.	१३।३४	मे. १३।३४	पंचक स. १३।३४,
	१६	९	शु.	२०। ९	अश्वि.	१२।१५	मेष	सूर्य कर्क में २१।२४,
	१७	१०	श.	१८।२२	भ.	११।१९	वृ. १६।५६	भ. ७।१६ उ. १८।२२
	१८	११	र.	१६।५१	कृ.	१०।११	वृष	...८।४४ (E)
	१९	१२	चं.	१५।४१	रो.	९।४८	मि. २१।४३	या (G)
	२०	१३	मं.	१४।५४	मृ.	९।४०	मिथुन	भ, १४।५४ उ. २६।४४
	२१	१४	बु.	१४।३५	आर्द्रा	९।५८	क. २८।३०	बुध मघासिंह में १२।४१
	२२	३०	गु.	१४।४७	पुन.	१०।४२	कर्क	या., (H)

(A) शुक्र मृग. में ७।४६, (B) बुध पश्चिम में उदित ८।१२, (C) बुध पुष्य में २०।५६, (D) शुक्र आर्द्रा में ६।४, (E) मंगल वक्री १२।५, (F) व. गुरु विशा. ४ में १४।२९, (G) शुक्र पुन. में २७।३५, (H) सूर्य पुष्य में ९।१४, शनि रोहि. १ में १९।३३,

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	जुला. २३	१	शु.	१५।२६	पु.	१२। १	कर्क	सूर्य सा. सिंह में १७।४५,
	२४	२	श.	१६।४०	आ.	१३।४९	सि. १३।४९	गुरु मार्गी २४।३९,
	२५	३	र.	१८।२२	म.	१६। ५	सिंह	
	२६	४	चं.	२०।२८	पू.फा.	१८।४६	क. २५।३०	भ. ७।२६ उ. २०।२८+
	२७	५	मं.	२२।५१	उ.फा.	२१।४३	कन्या	यूरेनसहस्त ३ में २३।३१,
	२८	६	बु.	२५।१७	ह.	२४।४३	कन्या	शुक्र पुष्य में २४।१५,
	२९	७	गु.	२७।३६	चि.	२७।३६	तु. १४।१०	भ. २७।३६ उ.,
	३०	८	शु.	२९।३२	स्वा.	.....	तुला	भ. १६।३४ या.,
	३१	९	श.	.....	स्वा.	६। ९	वृ २५।४४	+या., (A)
	अग. १	९	र.	६।५८	वि.	८।१०	वृश्चिक	
	२	१०	चं.	७।४४	अनु.	९।३२	वृश्चिक	भ. १९।४४ उ., (B)
	३	११	मं.	७।४५	ज्ये.	१०।१२	ध. १०।१२	भ. ७।४५ या., (C)
	४	१२	बु.	६।२ / २६।३६	मू.	१०। ८	धनु	
	५	१४	गु.	२७।४०	पू.षा.	९।२६	म. १५।१६	भ. २७।४० उ., (D)
	६	१५	शु.	२५।१३	उ.षा.	८। ८	मकर	भ. १४।२७ या.,
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	अग. ७	१	श.	२२।२३	श्रव.	६।३ / २५।१७	कुं. १७।२०	पंचक प्रा. १७।२०,
	८	२	र.	१९।२१	श.	२५।५९	कुम्भ	भ. २९।४६ उ., (E)
	९	३	चं.	१६। ४	पू.भा.	२३।४३	मी. १८।१७	भ. १६।१४ या.,
	१०	४	मं.	१३।१०	उ.भा.	२१।३१	मीन	
	११	५	बु.	१०।१६	रे.	१९।३१	मे. १९।३१	पंचक स. १९।३१, (F)
	१२	६	गु.	७।४० / २६।२३	अश्वि.	१७।५१	मेष	भ. ७।४० उ. १८।३२
	१३	८	शु.	२७।३४	भ.	१६।३५	वृ. २२।२२	बुध पश्चि. में अस्त २०।२२
	१४	९	श.	२६।१२	कृ.	१५।४४	वृष	या., (G)
	१५	१०	र.	२५।२१	रो.	१५।२५	मि. २७।२९	भ. १३।४७ उ. २५।२१ या.
	१६	११	चं.	२५। ०	मृ.	१५।३३	मिथुन	सूर्य मघा सिंह में २९।५१,
	१७	१२	मं.	२५।१०	आर्द्रा	१६।१४	मिथुन	
	१८	१३	बु.	२५।४८	पुन.	१७।२१	क. १।१४	भ. २५।४८ उ.,
	१९	१४	गु.	२६।५३	पु.	१८।५६	कर्क	भ. १४।२१ या. (H)
	२०	३०	शु.	२८।२३	आ.	२०।५५	सि. २०।५५	

(A) शुक्र कर्क में ७।८, (B) शुक्र का वार्द्धक्य प्रा. १३।५२, (C) सूर्य आश्ले. में ८।५, बुध पू.फा. में ७।५२, (D) गुरु अनु. १ में ११।४४, शुक्र पूर्व में अस्त १३।५२, (E) शुक्र आश्ले. में २६।३७, (F) व. मंगल श्रवण में ७।१०, (G) बुध वक्री २४।३५, नेप्च्यून मार्गी २०।४५, (H) शुक्र मघा सिंह में १५।१२

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसचार एवं भद्रा (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१		तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घ. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	अग.	२१	१	श.	———	म.	२३।१७	सिंह	व. बुध मघा में २८।२,
		२२	१	र.	६।१५	पू.फा	२५।५८	सिंह	
		२३	२	चं.	८।२६	उ.फा.	२८।५२	क. ८।४२	सूर्य सा. कन्या में २४।४५,
		२४	३	मं.	१०।५०	ह.	———	कन्या	भ. २४।४ उ., (A)
		२५	४	बु.	१३।१९	ह.	७।५४	तु. २१।२३	भ. १३।१९ या.,
		२६	५	गु.	१५।४५	चि.	१०।५३	तुला	
		२७	६	शु.	१७।५६	स्वा.	१३।४३	तुला	
		२८	७	श.	१९।४४	वि.	१६।९	वृ. ९।३२	भ. १९।४४ उ.,
		२९	८	र.	२०।५७	अनु.	१८।४	वृश्चिक	भ. ८।२१ या.,
		३०	९	चं.	२१।२८	ज्ये.	१९।२०	ध. १९।२०	सूर्य पू.फा. में २५।४६ (B)
		३१	१०	मं.	२१।१२	मू.	१९।४७	धनु	
	सितं.	१	११	बु.	२०। ९	पू.षा.	१९।२९	मं. २५।१४	भ. ८।४० उ. २०।९ या.,
		२	१२	गु.	१८।२२	उ.षा.	१८।२८	मकर	बुध पूर्व में उदित १२।१५,
		३	१३	शु.	१५।५३	श्रव.	१६।४६	कुं. २७।३९	पचक प्रा. २७।३९, (C)
		४	१४	श.	१२।५५	ध.	१४।३४	कुम्भ	भ. १२।५५ उ. २३।१२या
		५	१५	र.	६।३१, २६।५६	श.	११।५७	मी. २७।५१	बुध मार्गी ११।३२,
आश्विन कृष्ण पक्ष	सितं.	६	२	चं.	२६।१६	पू.भा.	९। ९	मीन	
		७	३	मं.	२३।४२	उ.भा.	६।१५, २६।३६	मे. २७।३६	भ. १२।२९ उ. २२।४२ या., (D)
		८	४	बु	१९।२५	अश्वि.	२५।११	मेष	मंगल मार्गी १९।२८, (E)
		९	५	गु.	१६।३३	भ.	२३।१३	वृ. २८।५२	भ. १४।१२ उ. २५।२०या,
		१०	६	शु.	१४।१२	कृ.	२१।५१	वृष	
		११	७	श.	१२।२९	रो.	२१।७	वृष	
		१२	८	र.	११।२७	मृ.	२१। ५	मि. ९।७	गुरु अनु. २में२०।५४ (F),
		१३	९	चं.	११। ९	आर्द्रा	२१।४३	मिथुन	भ. २३।१९ उ., (G),
		१४	१०	मं.	११।३०	पुन	२३। ०	क. १६।४१	भ. ११।३० या.,
		१५	११	बु.	१२।२६	पु.	२४।४६	कर्क	
		१६	१२	गु.	१३।५३	आ.	२७। ०	सि. २७।०	सूर्य कन्या में २९।४७ (H)
		१७	१३	शु.	१५।४३	म.	२९।३३	सिंह	भ. १५।४३ उ. २८।४७या
		१८	१४	श.	१७।५२	पू.फा.	———	सिंह	
		१९	३०	र.	२०।१२	पू.फा.	८।२१	क. १५। ५	शनि वक्री ७।४५,

(A) राहु श्रव. ३ में केतु आश्ले. १ में २७।२२, (B) शुक्र पू.फा. में ९।३४, (C) अगस्त्य उदित २६।२५, (D) पंचक स. २७।३६, (E) शुक्र उ.फा. में २७।२५, (F) शुक्र कन्या में १९।४७, (G) सूर्य उ.फा. में १९।४२, (H) बुध पू.फा. में २९।४३,

मास पक्ष	ता. १९७१		तिथि	वा.	घ. मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	सितं.	२०	१	चं.	२२।४१	उ.फा.	११।१९	कन्या	शुक्र हस्त में २०।४६,
		२१	२	मं.	२५।१०	ह.	१४।१८	तु. २७।४७	
		२२	३	बु.	२७।३८	चि.	१७।१८	तुला	
		२३	४	गु.	२९।५६	स्वा.	२०।१२	तुला	भ. १६।४८ उ. २९।५६=
		२४	५	शु.	....	वि.	२२।५२	वृ. १६।१२	बुध उ.फा. में २८।३४,
		२५	५	श.	७।५७	अनु.	२५।१०	वृश्चिक	बुध पूर्व में अस्त २९।३०
		२६	६	र.	९।३१	ज्ये.	२६।५७	ध. २६।५७	बुध कन्या में २४।४७
		२७	७	चं.	१०।३०	मू.	२८। ७	धनु	भ. १०।३० उ. २२।४१
		२८	८	मं.	१०।५१	पू.षा.	२८।३३	धनु	= या., (A)
		२९	९	बु.	१०।२५	उ.षा.	२८।१२	म. १०।२९	या., (B)
		३०	१०	गु.	९।१२	श्रव.	२७। ७	मकर	भ.२०।१३ उ., यूरेनस (C)
	अक्तू.	१	११	शु.	७।१३, २८।३३	ध.	२५।१९	कुं. १४।३०	भ.७।१३या., पंचक प्रा. ✓
		२	१३	श.	२५।२०	श.	२२।५६	कुम्भ	बुध हस्त में १२।४३,
		३	१४	र.	२१।४१	पू.भा.	२०। ६	मी. १४।४८	भ. २१।४१ उ.,
		४	१५	चं.	१७।४९	उ.भा.	१७। ३	मीन	भ. ७।४५ या., (E)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	अक्तू.	५	१	मं.	१३।५३	रे.	१३।५५	मे. १३।५५	पंचक स. १३।५५,
		६	२	बु.	१०। ६	अश्वि.	१०।५६	मेष	भ. २०।२१ उ., (F)
		७	३	गु.	६।३७, २६।३८	भ.	५।१६, ३०।३६	वृ. १३।४३	भ. ६।३७ या., (G)
		८	५	शु.	२५।१९	रो.	२८।३६	वृष	१४।३०, (D)
		९	६	श.	२३।४६	मृ	२७।५४	मि. १६।१६	भ. २३।४६ उ., (H)
		१०	७	र.	२३। २	आर्द्रा	२८। ०	मिथुन	भ. ११।२५ या., (I)
		११	८	चं.	२३। ७	पुन.	२८।५३	क. २२।४०	
		१२	९	मं.	२४। १	पु.	.....	कर्क	शुक्र स्वाती में ६।४५,
		१३	१०	बु.	२५।३२	पु.	६।३२	कर्क	भ. १२।४७ उ. २५।३२§
		१४	११	गु.	२७।३४	आ.	८।४५	सि. ८।४५	§या; (J)
		१५	१२	शु.	२९।५४	म.	११।२३	सिंह	शुक्र पश्चि. में उदित
		१६	१३	श.	....	पू.फा.	१४।१७	क. २१।३	२४।३३,
		१७	१३	र.	८।२७	उ.फा.	१७।१९	कन्या	भ. ८।२७ उ. २१।४२+
		१८	१४	चं.	१०।५९	ह.	२०।२०	कन्या	शुक्र बाल्य स. २४।३३
		१९	३०	मं.	१३।२८	चि.	२३।१६	तु. ९।४९	+या., (K)

(A) सूर्य सा. तुला में २२।१५, (B) सूर्य हस्त में ११।११, (C) हस्त ४ में ८।४२, (D) शुक्र चित्रा में १३।५०, (E) गुरु अनु. ३ में १०।२०, (F) शुक्र तुला में २२।२९, (G) मंगल धनि. में १७।३३, (H) बुध चित्रा में २५।५७, (I) सूर्य चित्रा में २४।१२, (J) बुध तुला में २४।१६, (K) सूर्य तुला में १७।४३, बुध स्वाती में २५।१७,

भा० स्टै० टा० में तिथि नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
आषाढ शुक्ल पक्ष	जून २३	१	बु.	२६।४०	आर्द्रा	२६। ९	मिथुन	राहु श्रव. ४ में केतु आश्ले+
	२४	२	गु.	२६।३०	पुन.	२६।४३	क. २०।३५	+२ में ५।५३
	२५	३	शु.	२७। १	पु.	२७।५४	कर्क	
	२६	४	श.	२८।१०	आ.	.. ..	कर्क	भ. १५।३५ उ. २८।१० £
	२७	५	र.	——	आ.	५।४४	सि. ५।४४	बुध पुन. में २८।४,
	२८	५	चं.	५।५५	म.	८। ७	सिंह	£या., (A)
	२९	६	मं.	८। ५	पु.फा.	१०।५३	क. १७।३८	
	३०	७	बु.	१०।२७	उ.फा.	१३।५३	कन्या	भ. १०।२७ उ. २३।३८
	जु. १	८	गु.	१२।५१	ह.	१६।५०	कन्या	शुक्र मिथुन में १९।०,
	२	९	शु.	१५। ०	चि.	१९।३१	तु. ६।१२	बुध कर्क में २७।३,
	३	१०	श.	१६।४४	स्वा.	२१।४५	तुला	भ. २९।१८ उ., या., (B)
	४	११	र.	१७।५२	वि.	२३।२५	वृ. १७।०	भ. १७।५२ या., (C)
	५	१२	चं.	१८।२१	अनु.	२४।२६	वृश्चिक	
	६	१३	मं.	१८।१०	ज्ये.	२४।४८	ध. २४।४८	सूर्य पुन. में ९।३८,
	७	१४	बु.	१७।२५	मू.	२४।३७	धनु	भ. १७।२५ उ. २८।४५
	८	१५	गु.	१६। ६	पू.षा.	२३।५६	धनु	या., (D)
श्रावण कृष्ण पक्ष	जुला. ९	१	शु.	१४।२३	उ.षा.	२२।५०	म. ५।४०	
	१०	२	श.	१२।२१	श्रव.	२१।३१	मकर	भ. २३।१२ उ.,
	११	३	र.	१०। ३	ध.	१९।५६	कुं. ८।४४	भ. १०।३या., पंचकप्रा. ...
	१२	४	चं.	७।४० / २६।१२	श.	१८।१८	कुम्भ	बुध आश्ले में ११।१७,
	१३	६	मं.	२६।४४	पू.भा.	१६।३९	मी. ११।४	भ. २६।४४ उ., (F)
	१४	७	बु.	२४।२४	उ.भा.	१५। ५	मीन	भ. १३।३४ या.,
	१५	८	गु.	२२।११	रे.	१३।३४	मे. १३।३४	पंचक स. १३।३४,
	१६	९	शु.	२०। ९	अश्वि.	१२।१५	मेष	सूर्य कर्क में २१।२४,
	१७	१०	श.	१८।२२	भ.	११।९	वृ. १६।५६	भ. ७।१६ उ. १८।२२
	१८	११	र.	१६।५१	कृ.	१०।१९	वृष	...८।४४ (E)
	१९	१२	चं.	१५।४१	रो.	९।४८	मि. २१।४३	या (G)
	२०	१३	मं.	१४।५४	मृ.	९।४०	मिथुन	भ. १४।५४ उ. २६।४४
	२१	१४	बु.	१४।३५	आर्द्रा	९।५८	क. २८।३०	बुध मघासिंह में १२।४१
	२२	३०	गु.	१४।४७	पुन.	१०।४२	कर्क	या., (H)

(A) शुक्र मृग. में ७।४६, (B) बुध पश्चिम में उदित ८।१२, (C) बुध पुष्य में २०।५६, (D) शुक्र आर्द्रा में ६।४, (E) मंगल वक्री १२।५, (F) व. गुरु विशा. ४ में १४।२९, (G) शुक्र पुन. में २७।३५, (H) सूर्य पुष्य में ९।१४, शनि रोहि. १ में १९।३३,

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	जुला. २३	१	शु.	१५।२६	पु.	१२। १	कर्क	सूर्य सा. सिंह में १७।४५,
	२४	२	श.	१६।४०	आ.	१३।४९	सि. १३।४९	गुरु मार्गी २४।३९,
	२५	३	र.	१८।२२	म.	१६। ५	सिंह	
	२६	४	चं.	२०।२८	पू.फा.	१८।४६	क. २५।३०	भ. ७।२६ उ. २०।२८+
	२७	५	मं.	२२।५१	उ.फा.	२१।४३	कन्या	यूरेनसहस्त ३ में २३।३१,
	२८	६	बु.	२५।१७	ह.	२४।४३	कन्या	शुक्र पुष्य में २४।१५,
	२९	७	गु.	२७।३६	चि.	२७।३६	तु. १४।१०	भ. २७।३६ उ.,
	३०	८	शु.	२९।३२	स्वा.	......	तुला	भ. १६।३४ या.,
	३१	९	श.	......	स्वा.	६। ९	वृ २५।४४	+या., (A)
	अग. १	९	र.	६।५८	वि.	८।१०	वृश्चिक	
	२	१०	चं.	७।४४	अनु.	९।३२	वृश्चिक	भ. १९।४४ उ., (B)
	३	११	मं.	७।४५	ज्ये.	१०।१२	ध. १०।१२	भ. ७।४५ या., (C)
	४	१२	बु.	[illegible]।२ / २६।३६	मू.	१०। ८	धनु	
	५	१४	गु.	२७।४०	पू.षा.	९।२६	म. १५।६	भ. २७।४० उ., (D)
	६	१५	शु.	२५।१३	उ.षा.	८। ८	मकर	भ. १४।२७ या.,
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	अग. ७	१	श.	२२।२३	श्रव.	६।२३ / २५।१७	कुं. १७।२०	पंचक प्रा. १७।२०,
	८	२	र.	१९।२१	श.	२५।५९	कुम्भ	भ. २९।४६ उ., (E)
	९	३	चं.	१६। ४	पू.भा.	२३।४३	मी. १८।१७	भ. १६।१४ या.,
	१०	४	मं.	१३।१०	उ.भा.	२१।३१	मीन	
	११	५	बु.	१०।१६	रे.	१९।३१	मे. १९।३१	पंचक स. १९।३१, (F)
	१२	६	गु.	७।४० / २६।२३	अश्वि.	१७।५१	मेष	भ. ७।४० उ. १८।३२
	१३	८	शु.	२७।३४	भ.	१६।३५	वृ. २२।२२	बुध पश्चि. में अस्त २०।२२
	१४	९	श.	२६।१२	कृ.	१५।४४	वृष	या., (G)
	१५	१०	र.	२५।२१	रो.	१५।२५	मि. २७।२९	भ. १३।४७उ.२५।२१या.
	१६	११	चं.	२५। ०	मृ.	१५।३३	मिथुन	सूर्य मघा सिंह में २९।५१,
	१७	१२	मं.	२५।१०	आर्द्रा	१६।१४	मिथुन	
	१८	१३	बु.	२५।४८	पुन.	१७।२१	क. ११।४	भ. २५।४८ उ.,
	१९	१४	गु.	२६।५३	पु.	१८।५६	कर्क	भ. १४।२१ या. (H)
	२०	३०	शु.	२८।२३	आ.	२०।५५	सि. २०।५५	

(A) शुक्र कर्क में ७।८, (B) शुक्र का वार्द्धक्य प्रा. १३।५२, (C) सूर्य आश्ले. में ८।५, बुध पू.फा. में ७।५२, (D) गुरु अनु. १ में ११।४४, शुक्र पूर्व में अस्त १३।५२, (E) शुक्र आश्ले. में २६।३७, (F) व. मंगल श्रवण में ७।१०, (G) बुध वक्री २४।३५, नेप्च्यून मार्गी २०।४५, (H) शुक्र मघा सिंह में १५।१२

भा० स्टै० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घ. मि.	नक्ष.	घं. मि.	चन्द्रसंचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	अग. २१	१	श.	———	म.	२३।१७	सिंह	व. बुध मघा में २८।२,
	२२	१	र.	६।१५	पू.फा	२५।५८	सिंह	
	२३	२	चं.	८।२६	उ.फा.	२८।५२	क. ८।४२	सूर्य सा. कन्या में २४।४५,
	२४	३	मं.	१०।५०	ह.	———	कन्या	भ. २४।४ उ., (A)
	२५	४	बु.	१३।१९	ह.	७।५४	तु. २१।२३	भ. १३।१९ या.,
	२६	५	गु.	१५।४५	चि.	१०।५३	तुला	
	२७	६	शु.	१७।५६	स्वा.	१३।४३	तुला	
	२८	७	श.	१९।४४	वि.	१६। ९	वृ. ९।३२	भ. १९।४४ उ.,
	२९	८	र.	२०।५७	अनु.	१८।४	वृश्चिक	भ. ८।२१ या.,
	३०	९	चं.	२१।२८	ज्ये.	१९।२०	ध. १९।२०	सूर्य पू.फा. में २५।४६ (B)
	३१	१०	मं.	२१।१२	मू.	१९।४७	धनु	
	सित. १	११	बु.	२०। ९	पू.षा.	१९।२९	मं. २५।१४	भ. ८।४० उ. २०।९ या.,
	२	१२	गु.	१८।२२	उ.षा.	१८।२८	मकर	बुध पूर्व में उदित १२।१५,
	३	१३	शु.	१५।५३	श्रव.	१६।४६	कुं. २७।३९	पंचक प्रा. २७।३९, (C)
	४	१४	श.	१२।५५	ध.	१४।३४	कुम्भ	भ. १२।५५ उ. २३।१२या
	५	१५	र.	२६।३१ / २६।४६	श.	११।५७	मी. २७।५१	बुध मार्गी ११।३२,
आश्विन कृष्ण पक्ष	सित. ६	२	चं.	२६।१६	पू.भा.	९। ९	मीन	
	७	३	मं.	२२।४२	उ.भा.	२६।१५ / २७।३६	मे. २७।३६	भ. १२।२९ उ. २२।४२ या., (D)
	८	४	बु	१९।२५	अश्वि.	२५।११	मेष	
	९	५	गु.	१६।३३	भ.	२३।१३	वृ. २८।५२	मंगल मार्गी १९।२८, (E)
	१०	६	शु.	१४।१२	कृ.	२१।५१	वृष	भ. १४।१२ उ. २५।२०या,
	११	७	श.	१२।२९	रो.	२१।७	वृष	
	१२	८	र.	११।२७	मृ.	२१। ५	मि. ९।७	गुरु अनु. २में२०।५४ (F);
	१३	९	चं.	११। ९	आर्द्रा	२१।४३	मिथुन	भ. २३।१९ उ., (G),
	१४	१०	मं.	११।३०	पुन	२३। ०	क. १६।४१	भ. ११।३० या.,
	१५	११	बु.	१२।२६	पु.	२४।४६	कर्क	
	१६	१२	गु.	१३।५३	आ.	२७। ०	सिं. २७।०	सूर्य कन्या में २९।४७ (H)
	१७	१३	शु.	१५।४३	म.	२९।३३	सिंह	भ. १५।४३ उ. २८।४७या
	१८	१४	श.	१७।५२	पू.फा.	———	सिंह	
	१९	३०	र.	२०।१२	पू.फा.	८।२१	क. १५। ५	शनि वक्री ७।४५,

(A) राहु श्रव. ३ में केतु आश्ले. १ में २७।२२, (B) शुक्र पू.फा. में ९।३४, (C) अगस्त्य उदित २६।२५, (D) पंचक स. २७।३६, (E) शुक्र उ.फा. में २७।२५, (F) शुक्र कन्या में १९।४७, (G) सूर्य उ.फा. में १९।४२, (H) बुध पू.फा. में २९।४३,

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वा.	घ. मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	सित. २०	१	च.	२२।४१	उ.फा.	११।१९	कन्या	शुक्र हस्त में २०।४६,
	२१	२	मं.	२५।१०	ह.	१४।१८	तु. २७।४७	
	२२	३	बु.	२७।३८	चि.	१७।१८	तुला	
	२३	४	गु.	२९।५६	स्वा.	२०।१२	तुला	भ. १६।४८ उ. २९।५६ = या., (A)
	२४	५	शु.	....	वि.	२२।५२	वृ. १६।१२	बुध उ.फा. में २८।३४,
	२५	५	श.	७।५७	अनु.	२५।१०	वृश्चिक	बुध पूर्व में अस्त २९।३०
	२६	६	र.	९।३१	ज्ये.	२६।५७	ध. २६।५७	बुध कन्या में २४।४७
	२७	७	चं.	१०।३०	मू.	२८। ७	धनु	भ. १०।३० उ. २२।४१ ▧या., (B)
	२८	८	मं.	१०।५१	पू.षा.	२८।३३	धनु	
	२९	९	बु.	१०।२५	उ.षा.	२८।१२	म. १०।२९	
	३०	१०	गु.	९।१२	श्रव.	२७। ७	मकर	भ.२०।१३ उ., यूरेनस C)
	अक्तू. १	११	शु.	२७।१३ / २५।३३	ध.	२५।१९	कुं. १४।३०	भ.७।१३या., पंचक प्रा. ✓
	२	१३	श.	२५।२०	श.	२२।५६	कुम्भ	बुध हस्त में १२।४३,
	३	१४	र.	२१।४१	पू.भा.	२०। ६	मी. १४।४८	भ. २१।४१ उ.,
	४	१५	चं.	१७।४९	उ.भा.	१७। ३	मीन	भ. ७।४५ या., (E)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	अक्तू. ५	१	मं.	१३।५३	रे.	१३।५५	मे. १३।५५	पंचक स. १३।५५,
	६	२	बु.	१०। ६	अश्वि.	१०।५६	मेष	भ. २०।२१ उ., (F)
	७	३	गु.	२६।३७ / २७।३८	भ.	३५।१६ / ३०।३६	वृ. १३।४३	भ. ६।३७ या., (G)
	८	५	शु.	२५।१९	रो.	२८।३६	वृष	✓ १४।३०, (D)
	९	६	श.	२३।४६	मृ	२७।५४	मि. १६।१६	भ. २३।४६ उ., (H)
	१०	७	र.	२३। २	आर्द्रा	२८। ०	मिथुन	भ. ११।२५ या., (I)
	११	८	चं.	२३। ७	पुन.	२८।५३	क. २२।४०	
	१२	९	मं.	२४। १	पु.	.....	कर्क	शुक्र स्वाती में ६।४५,
	१३	१०	बु.	२५।३२	पु.	६।३२	कर्क	भ. १२।४७ उ. २५।३२§ §या; (J)
	१४	११	गु.	२७।३४	आ.	८।४५	सिं. ८।४५	
	१५	१२	शु.	२९।५४	म.	११।२३	सिंह	शुक्र पश्चि. में उदित ✿ ✿२४।३३,
	१६	१३	श.	....	पू.फा.	१४।१७	क. २१।३	
	१७	१३	र.	८।२७	उ.फा.	१७।१९	कन्या	भ. ८।२७ उ. २१।४२+ +या., (K)
	१८	१४	चं.	१०।५९	ह.	२०।२०	कन्या	शुक्र बाल्य स. २४।३३
	१९	३०	मं.	१३।२८	चि.	२३।१६	तु. ९।४९	

(A) सूर्य सा. तुला में २२।१५, (B) सूर्य हस्त में ११।११, (C) हस्त ४ में ८।४२, (D) शुक्र चित्रा में १३।५०, (E) गुरु अनु. ३ में १०।२०, (F) शुक्र तुला में २२।२९, (G) मंगल धनि. में १७।३३, (H) बुध चित्रा में २५।५७, (I) सूर्य चित्रा में २४।१२, (J) बुध तुला में २४।१६, (K) सूर्य तुला में १७।४३, बुध स्वाती में २५।१७,

भा० स्टैं० टा० में तिथि, नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	अक्तू. २०	१	बु.	१५।५०	स्वा.	२६। ४	तुला	
	२१	२	गु.	१८। ३	वि.	२८।४०	वृ. २२।१	
	२२	३	शु.	१९।५९	अनु.	———	वृश्चिक	गुरु अनु. ४ में ७।३९, (A)
	२३	४	श.	२१।३४	अनु.	७। ०	वृश्चिक	भ. ८।४८ उ. २१।३४ या.
	२४	५	र.	२२।४९	ज्ये.	९। १	ध. ९।१	सूर्य स्वातीमें १०।३६ (B)
	२५	६	चं.	२३।३०	मू.	१०।३३	धनु	
	२६	७	मं.	२३।३६	पू.षा.	११।३४	मं. १७।४२	भ. २३।३६ उ., (C)
	२७	८	बु.	२३। २	उ.षा.	११।५७	मकर	भ. ११।१९ या.,
	२८	९	गु.	२१।४४	श्रव.	११।३९	कुं. २३।९	पंचक प्रा. २३।९,
	२९	१०	शु.	१९।४४	ध.	१०।४०	कुम्भ	भ. ३०।२४ उ.,
	३०	११	श.	१७। ६	श.	९। १	मी. २५।२१	भ. १७।६ या., (D)
	३१	१२	र.	१३।५७	पू.भा.	२६।४६	मीन	बुध पश्चि.मेंउदित२०।१८
	न. १	१३	चं.	३०।३५	रे.	२५।१०	मे. २५।१०	भ. ३०।३६ उ.पंचक स.*
	२	१५	मं.	२६।४९	अश्वि.	२२। ६	मेष	भ. १६।४३ या., (F)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	नव. ३	१	बु.	२३। ८	भ.	१९। ९	वृ. २४।३०	*२५।१० (E)
	४	२	गु.	१९।५१	कृ.	१६।३३	वृष	भ. ३०।२७ उ., (G)
	५	३	शु.	१७। ५	रो.	१४।२५	मि. २५।४१	भ. १७।५ या.,
	६	४	श.	१५। ०	मृ.	१२।५८	मिथुन	सूर्य विशा.में १७।४७, (H)
	७	५	र.	१३।४४	आर्द्रा	१२।१८	क. ३०।२७	गुरु ज्येष्ठा १ में ११।५१'
	८	६	चं.	१३।१९	पुन.	१२।३०	कर्क	भ. १३।१९ उ. २५।३३या
	९	७	मं.	१३।४९	पु.	१३।३२	कर्क	
	१०	८	बु.	१५। ५	आ.	१५।२१	सि. १५।२१	
	११	९	गु.	१७। ०	म.	१७।४६	सिंह	भ. ३०।९ उ.,
	१२	१०	शु.	१९।२१	पू.फा.	२०।३५	क. २७।२१	भ. १९।२१ या.
	१३	११	श.	२१।५९	उ.फा.	२३।३८	कन्या	बुध ज्येष्ठा में १७।२२, (I)
	१४	१२	र.	२४।३३	ह.	२६।४१	कन्या	
	१५	१३	चं.	२७। २	चि.	२९।३९	तु. १६।८	भ. २७।२ उ.,
	१६	१४	मं.	२९।१७	स्वा.	......	तुला	भ. १६।१० या., (J)
	१७	३०	बु.	......	स्वा.	८।१७	वृ. २८।५	
	१८	३०	गु.	७।१६	वि.	१०।४२	वृश्चिक	

(A) शुक्र विशा. में २३।३३, (B) सूर्य सा. वृश्चिक में ७।२३, मंगल कुम्भ में १२।१६, (C) बुध विशा. में ११।२१, राहु श्रव. २ में केतु पुष्य ४ में २५।६, (D) शुक्र वृश्चिक में २४।८, (E) बुध वृश्चिक में २५।४२, (F) शुक्र अनु में १६।२२, (G) बुध अनु. में ७।४९, (H) मंगल शत. में २४।९, (I) शुक्र ज्येष्ठा में ९।१५, (J) सूर्य वृश्चिक में १७।२८,

मास पक्ष	ता. १९७१	तिथि	वार	घं.मि.	नक्ष.	घं.मि.	चन्द्रसंचार घं.मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	नव. १९	१	शु.	८।५६	अनु.	१२।४८	वृश्चिक	सूर्य अनु. में २४।४५,
	२०	२	श.	१०।१४	ज्ये.	१४।३६	ध. १४।३६	व. शनि. कृत्ति. ४ में १९।-
	२१	३	र.	११।११	मू.	१६। २	धनु	भ. २३।३३ उ., -३५
	२२	४	चं.	११।५६	पू.षा.	१७। ६	म. २३।१५	भ. ११।५६ या., (A)
	२३	५	मं.	११।५९	उ.षा.	१७।४४	मकर	शुक्र मूल धनु में २६।१३,
	२४	६	बु.	११।३५	श्रव.	१७।५१	कुं. २९।४१	पंचक प्रा. २९।४१, (B)
	२५	७	गु.	१०।४५	ध.	१७।३१	कुम्भ	भ. १०।४५ उ. २२।२या-
	२६	८	शु.	९।१९	श.	१६।३७	कुम्भ	-यूरेनस चित्रा १में२४।२
	२७	९	श.	२६।२४	पू.भा.	१५।१२	मी. ९।३४	गुरु अस्त ११।५४,
	२८	११	र.	२६। ९	उ.भा.	१३।१९	मीन	भ. १५।३३ उ. २६।९या.,
	२९	१२	चं.	२२।५९	रे.	११। ४	मे. ११। ४	पंचक स. ११।४,
	३०	१३	मं.	१९।४१	अश्वि.	३०।३५	मेष	मंगल पू.भा. में ११।४७
	दिसं. १	१४	बु.	१६।२४	कृ.	२७।३२	वृ. ११।२४	भ. १६।२४ उ.२६।५१या.
	२	१५	गु.	१३।१८	रो.	२५।१९	वृष	सूर्य ज्येष्ठा में २९।१,
पौष कृष्ण पक्ष	३	१	शु.	१०।३३	मृ.	२३।३४	मि. १२।२७	बुध वक्री ७।४०,
	४	२	श.	३०।४६	आर्द्रा	२२।२५	मिथुन	भ. १९।३२ उ. ३०।४६-
	५	४	र.	३०। ०	पुन.	२२। १	क. १६। ७	-या., (C)
	६	५	चं.	३०। १	पु.	२२।२३	कर्क	बुध पश्चि. में अस्त२५।८,
	७	६	मं.	३०।५५	आ.	२३।३४	सि. २३।३४	भ. ३०।५५ उ., (D)
	८	७	बु.	......	म.	२५।२८	सिंह	भ. १९।४३ या.,
	९	७	गु.	८।३०	पू.फा.	२७।५७	सिंह	
	१०	८	शु.	१०।३९	उ.फा.	३०।४९	क. १०।४०	व. बुध ज्येष्ठा वृश्चिक +.
	११	९	श.	१३।१०	ह.	.....	कन्या	भ. २६।२७ उ.,
	१२	१०	र.	१५।४९	ह.	९।५०	तु. २३।१८	भ. १५।४९ या.,
	१३	११	चं.	१८।१५	चि.	१२।४७	तुला	नेप्च्यून अनु. ३ में २१।३०
	१४	१२	मं.	२०।२७	स्वा.	१५।३०	तुला	+में १५।२४
	१५	१३	बु.	२२।१६	वि.	१७।५१	वृ. ११।१८	भ. २२।१६ उ., (E)
	१६	१४	गु.	२३।३८	अनु.	१९।४७	वृश्चिक	भ. १०।५७ या., (F)
	१७	३०	शु.	२४।३२	ज्ये.	२१।१८	ध. २१।१८	बुध पूर्वमें उदित १२।८ (G)

(A) सूर्य सा' धनु में २८।४६, गुरु ज्ये. २ में१८।१९, (B) बुध मूल-धनु में १८।४७ गुरु वार्धक्य प्रा. ११।५४, (C) शुक्र पू.षा. में १९।२७, (D) गुरु ज्येष्ठा ३ में १४।२० (E) शुक्र उ.षा. में १।३५, (F) सूर्य मूल-धनु में ८।०, मंगल मीन में १७।१४, (G) शुक्र मकर में २।३४,

सूर्य वृश्चिक में १७।२८, (G) शुक्र मकर में २३।३४,

भा० स्टैं० टा० में तिथि नक्षत्र, चन्द्रसंचार एवं भद्रा आदि (वि. सं. २०२८)

मास पक्ष	ता. १९७१-७२	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र संचार घं.मि.	भद्रा आदि
पौष शुक्ल पक्ष	दिसं. १८	१	श.	२५। ०	मू.	२२।२१	धनु	
	१९	२	र.	२५। ४	पू.षा.	२३। १	म. २९।५	
	२०	३	चं.	२४।४४	उ.षा.	२३।१९	मकर	
	२१	४	मं.	२४। ४	श्रव.	२३।१७	मकर	भ. १२।२४ उ.२४।४या(A)
	२२	५	बु.	२३। २	धन	२२।५४	कुं. ११।५	पंचक प्रा. ११।५ (B)
	२३	६	गु.	२१।४१	श.	२२।११	कुम्भ	
	२४	७	शु.	२०। १	पू.भा.	२१।११	मी. १५।२६	भ. २०।१उ.३१।१या; (C)
	२५	८	श.	१८। ३	उ.भा.	१९।५२	मीन	शुक्र श्रव. में ३१।१८,
	२६	९	र.	१५।५०	रे.	१८।१९	मे. १८।१९	पंचक स. १८।१९,
	२७	१०	चं.	१३।२७	अश्वि.	१६।३५	मेष	भ. २४।८ उ., (D)
	२८	११	मं.	१०।५३	भ.	१४।४४	वृ. २०।१५	भ. १०।५३ या., (E)
	२९	१२	बु.	५।१६/२६।५२	कृ.	१२।५४	वृष	सूर्य पू.षा. में १०।१०,
	३०	१४	गु.	२७।४०	रो.	११।१२	मि. २२।२९	भ. २७।४० उ.,
	३१	१५	शु.	२५।४९	मृ.	९।४५	मिथुन स	भ. १४।४४ या.,
माघ कृष्ण पक्ष	जन. १	१	श.	२४।२७	आर्द्रा	८।४१	क. २६।१७	
	२	२	र.	२३।४१	पुन.	८। ९	कर्क	
	३	३	चं.	२३।३६	पु.	८।१३	कर्क	भ. ११।३८ उ. २३।३६या.,
	४	४	मं.	२४।१३	आ.	८।५७	सि. ८।५७	
	५	५	बु.	२५।३२	म.	१०।२४	सिंह	शुक्र धनि. में २६।३३,
	६	६	गु.	२७।२६	पू. फा.	१२।२६	क. १९।४	भ.२७।२६ उ., (F)
	७	७	शु.	२९।४५	उ.फा.	१४।५९	कन्या	भ. १६।३५ या.,
	८	८	श.	... ..	ह.	१७।५२	तु. ३१।१९	
	९	८	र.	८।१७	चि.	२०।४१	तुला	
	१०	९	चं.	१०।४७	स्वा.	२३।३९	तुला	भ. २३।५४ उ.,
	११	१०	मं.	१३। २	वि.	२६।१०	वृ. १९।३२	भ. १३।२ या., (G)
	१२	११	बु.	१४।५२	अनु.	२८।११	वृश्चिक	
	१३	१२	गु.	१६। ७	ज्ये.	२९।४०	ध. २९।४०	
	१४	१३	शु.	१६।४७	मू.	३०।३३	धनु	भ.१६।४७उ.२८।४९या(H)
	१५	१४	श.	१६।५१	पू.षा.	३०।५३	धनु	
	१६	३०	र.	१६।२१	उ.षा.	३०।४३	म. १२।५१	बुध पू.षा. में २१।२२ (I)

(A) मंगल उ.भा. में २३।३४, (B) सूर्य सा. मकर में १७।५४, बुध मार्गी २६।३८, गुरु ज्येष्ठा ४ में ७।५९, (C) गुरु उदित १७।७, (D) गुरु बाल्य स. १७।७, (E) राहु श्रव. १ में केतु पुष्य ३ में २२।३५, (F) बुध मूल- धनु में २२।२०, गुरु मूल-धनु में ७।२५, व. शनि कृत्ति. ३ में २६।२४, (G) सूर्य उ.षा. में १२।९, मंगल रेव. में १५।५, शुक्र कुम्भ में १२।४२, (H) सूर्य मकर में १८।३९, (I) शुक्र शत. में २३।१३

मास पक्ष	ता. १९७२	तिथि	वार	घं. मि.	नक्ष.	घं मि.	चन्द्र संचार घं.मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	जन. १७	१	चं.	१५।२४	श्रव.	३०। ८	मकर	
	१८	२	मं.	१४। ०	ध.	२९।१२	कुं. १७।४०	पंचक प्रा. १७।४०.
	१९	३	बु.	१२।२०	श.	२८। १	कुम्भ	भ. २३।२२ उ.,
	२०	४	गु.	१०।२५	पू.भा.	२६।४०	मी. २।१०	भ. १०।२५ या., (A)
	२१	५	शु.	५।२३/३०।५३	उ.भा.	२५।१४	मीन	सूर्य अभिजित् में ७।४३, (B)
	२२	७	श.	२८। ४	रे.	२३।४५	मे. २३।४५	भ. २८।४ उ., पंचक स. २३।४५
	२३	८	र.	२५।५५	अश्वि.	२२।१७	मेष	भ. १४।५९ या. (C)
	२४	९	चं.	२३।५२	भ.	२०।५५	वृ. २६।३६	सूर्य श्रव. में १४।२१
	२५	१०	मं.	२१।५७	कृ.	१९।३९	वृष	सूर्य अभिजित से निवृत्त*
	२६	११	बु.	२०।१४	रो.	१८।३५	मि. ३०।१०	भ. ९।५ उ. २०।१४ या.,
	२७	१२	गु.	१८।४५	मृ.	१७।४५	मिथुन	बुध मकर में २५।३३, (E)
	२८	१३	शु.	१७।३५	आर्द्रा	१७।१४	मिथुन	बुध पूर्व में अस्त १६।३१,
	२९	१४	श.	१६।४९	पुन.	१७। ४	क. ११।७	भ. १६।४९ उ. २८।३९ या.,
	३०	१५	र.	१६।२८	पु.	१७।२१	कर्क	*११।१९, (D)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	जन. ३१	१	चं.	१६।३७	आ.	१८। ६	सि. १८।६	मंगल अश्वि. मेषमें २२।७ (F)
	फर. १	२	मं.	१७।१९	म.	१९।२२	सिंह	भ. २९।५६ उ.,
	२	३	बु.	१८।३३	पू.फा.	२१।१२	क.२७।४८	भ. १८।३३ या.,
	३	४	गु.	२०।२०	उ.फा.	२३।२९	कन्या	बुध श्रव. में ९।०,
	४	५	शु.	२२।३०	ह.	२६। ९	कन्या	शुक्र मीन में २८।४५,
	५	६	श.	२४।५९	चि.	२९। ५	तु. १५।३८	भ. २४।५९ उ.,
	६	७	र.	२७।२८	स्वा.	... ..	तुला	भ. १४।१३ या., (G)
	७	८	चं.	२९।५०	स्वा.	८। ०	वृ. २८। ५	गुरु मूल में ३ में १८।४८, (H)
	८	९	मं.	... ...	वि.	१०।४६	वृश्चिक	
	९	९	बु.	७।४८	अनु.	१३। ७	वृश्चिक	भ. २०।३१ उ.,
	१०	१०	गु.	९।१५	ज्ये.	१४।५७	ध. १४।५७	भ. ९।१५ या.,
	११	११	शु.	९।५९	मू.	१६। ४	धनु	बुध धनि. में ८।१५,
	१२	१२	श.	१०। १	पू.षा.	१६।२९	म.२२।२५	
	१३	१३	र.	९।१७	उ.षा.	१६।१२	मकर	भ. ९।१७ उ. २०।३६या., (I)
	१४	१४	चं.	७।५४/२६।५६	श्रव.	१५।१९	कुं. २६।३६	पंचक प्रा. २६।३६, (J)

(A) सूर्य सा. कुम्भ में २८।२९. (B) गुरु मूल २ में २१।५८, (C) यूरेनस वक्री ११।२०, (D) बुध उ.षा. में २१।४९, (E) शुक्र पू.भा. में २१।५२, (F) शनि मार्गी १५।४०, (G) सूर्य धनि. १७।३५, (H) शुक्र उ.भा. में २३।२८, (I) सूर्य कुम्भ में ७।३६, (J) बुध कुम्भ में २७।३२

भा० स्टै० टा० में तिथि नक्षत्र, चन्द्र संचार एवं भद्रा आदि

(वि० सं० २०२८)

मा. पक्ष	ता. १९७२	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	फर. १५	१	मं.	२७।३६	ध.	१३।५६	कुम्भ	
	१६	२	बु.	२४।५४	श.	१२। ७	मी. २८।३७	
	१७	३	गु.	२२। ६	पू.भा.	१०। ६	मीन	
	१८	४	शु.	१९।१६	उ.भा.	२६।५७	मे. २९.५३	
	१९	५	श.	१६।३२	अश्वि.	२७।५८	मेष	भ.८।४१ उ.१९।१६या,(A)
	२०	६	र.	१४। १	भ.	२६।२०	मेष	सूर्य श.त. में २२।० (B)
	२१	७	चं.	११।४८	कृ.	२५। २	वृ. ८।०	मंगल भर. २६।५३,
	२२	८	मं.	९।५७	रो.	२४।७	वृष	भ. ११।४८ उ. २२।५३या.
	२३	९	बु.	८।२७	मृ.	२३।३६	मि. ११।५१	
	२४	१०	गु.	३०।३१	आर्द्रा	२३।३१	मिथुन	
	२५	११	शु.	३०।४६	पुन.	२३।४९	क. १७।४६	भ.१९।१३ उ. ३०।५१या.,(C)
	२६	१२	श.	......	पु.	२४।३५	कर्क	बुध पू.भा. में २३।३४,
	२७	१३	र.	७। ०	आ.	२५।४२	सिं. २५।४२	गुरु मूल ४ में २८।४१,
	२८	१४	चं.	७।३६	म.	२७।१३	सिंह	
	२९	१५	मं.	८।४१	पू.फा.	२९। ६	सिंह	भ. ७।३६ उ. २०।९या.,(D) राहु उ.ष.४ में केतु (E)
चैत्र कृष्ण पक्ष	मार्च १	१	बु.	१०। ८	उ.फा.	......	क. ११।३९	शुक्र अश्वि.मेष में १५।४५,
	२	२	गु.	११।५७	उ.फा.	७।२२	कन्या	भ. २५।२ उ., (F)
	३	३	शु.	१४। ६	ह.	९।५७	तु. २३।२३	भ. १४।६[या., (G)
	४	४	श.	१६।३०	चि.	१२।४८	तुला	
	५	५	र.	१९। ०	स्वा.	१५।४४	तुला.	
	६	६	चं.	२१।२८	वि.	१८।४१	वृ. ११।५६	भ. २१।२८ उ.,
	७	७	मं.	२३।३९	अनु.	२१।२३	वृश्चिक	भ. १०।३२ या., (H)
	८	८	बु.	२५।२३	ज्ये.	२३।४०	ध. २३।४०	
	९	९	गु.	२६।२५	मू.	२५।२०	धनु	
	१०	१०	शु.	२६।४६	पू.षा.	२६।१६	धनु	
	११	११	श.	२६।१४	उ.षा.	२६।२५	म. ८।१७	भ.१४।३५उ. २६।४, ६या.,
	१२	१२	र.	२४।५६	श्रव.	२५।४५	मकर	
	१३	१३	चं.	२२।५३	ध.	२४।२३	कुं. १३। ३	मंगल कृत्ति. में ८।४९,(I)
	१४	१४	मं.	२०।१२	श.	२२।२४	कुम्भ	भ. २२।५३ उ., पंचक प्रा. ✻
	१५	३०	बु.	१७। ३	पू.भा.	१९।५८	मी १४।३४	भ. ९।३२ या., ✻ १३।३ (J)

(A) पंचक स. २९।५३, बुध शत. में २०।११, शुक्र रेव. में २८।५४, (B) सूर्य सा. मीन में १८।४२, (C) शनि कृति. ४ में २७।२२, (D) बुध पश्चिम में उदित २०।१०, (E) पुष्य २ में २०।५, (F) बुध मीन में ७।१०, (G) सूर्य पू.भा. में २८।२२, बुध उ. भा. में २७।१, (H) नेप्च्यून वक्री १०।३४ (I) बुध रेव. में १८।३, (J) सूर्य मीन में २८।२८, शुक्र भर. में १०।११,

भा. स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रहों की व्यापक उपयोगिता

कुछ पञ्चाङ्गों में किसी विशेष स्थल के मिश्रवन या घट्यादि इष्ट के स्पष्ट ग्रह दिए रहते है, जिनसे किसी अन्य स्थल के घट्यादि इष्ट काल पर ग्रह स्पष्ट करने के लिए चरान्तर देशान्तर संस्कारों का काफी झंझट करना पड़ता है। इसी झंझट से अपने पाठकों को बचाने के लिए हम पिछले वर्षों से श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में भा. स्टै. टा. के अनुसार स्पष्ट ग्रह देते आ रहे हैं। पीछे वि. सं. २०२४ तक रात्रि के १२ बजे (भा. स्टै. टा.) के ग्रह दिए होते थे, अब सं० २०२५ से प्रातः साढ़े पांच बजे (भा० स्टैं, टा.) के स्पष्ट ग्रह दिए जा रहे हैं। यहां दिए गये ये स्पष्ट ग्रह भारत के सभी शहरों में प्रातः ५॥ बजे के ही माने जाएंगे, क्योंकि भा. स्टै. टा. सारे भारत के लिए एक ही है।

मान लीजिए, किसी तारीख को प्रातः ७ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर कोई बच्चा पैदा हुआ है। क्योंकि पंचांग में प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) के स्पष्ट ग्रह हैं। अतः इन्हे प्रातः ७ घं. ३० मि. पर स्पष्ट करने के लिए २ घण्टे का चालन देना होगा। वह बच्चा मद्रास, पटना, दिल्ली, बम्बई आदि भारत के किसी भी नगर में किसी भी तारीख को पैदा क्यों न हुआ हो--हर हालत मे चालन २ घण्टे का ही दिया जाएगा। परन्तु यदि पंचांग मे स्पष्ट ग्रह घट्यादि इष्ट के अनुसार दिए गए हों तो चालन के लिए घट्यादि प्रत्येक नगर के लिए प्रतिदिन भिन्न २ होंगे। क्योंकि पंचांग में दिया गया पठित का इष्ट किसी अन्य नगर के (जिस नगर के अक्षांशादि के अनुसार वह पंचांग बनाया गया है, उस नगर के) सूर्योदय से बनाया गया है और आपका इष्ट अन्य नगर के (जातक के जन्म स्थान के) सूर्योदय से बनाया गया है। अतः पठित के इष्ट एवं अपने इष्ट का अन्तर करने से पूर्व पठितस्थ इष्ट को स्व-स्थानीय इष्ट बनाना नितान्त आवश्यक है, अन्यथा स्पष्ट किए गए ग्रह अशुद्ध होंगे। भा. टैं. टा. के अनुसार पंचांग में दिए गए स्पष्ट ग्रहों से अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने में इस तरह का कोई झंझट ही नही है। अतः सुविधा तथा शुद्धता के लिए ज्योतिषियों को चाहिए कि वे इस विधि का ही उपयोग किया करें।

बिना गुणा भाग के ग्रह-स्पष्ट करने की सरल विधि

पृ. ८८ पर लघुरिक्थ-कोष्टक दिया गया है। इसकी सहायता से बिना गुणा भाग के इष्ट कालिक ग्रह-स्पष्ट बड़ी सरलता से किए जा सकते हैं। विधि इस प्रकार है-- इस पञ्चाङ्ग में स्पष्ट ग्रह प्रातः ५घं. ३० मि. के दिए गए हैं। आप जिस समय के ग्रह-स्पष्ट करना चाहते हैं, उस टाईम के घन्टा-मिनटों में से ५घं. ३०मि. घटाए। शेष बचे घन्टा के नीचे एव शेष मिनटो के आगे लघु-रिक्थ कोष्टक में दी गई संख्या उठाएं,--यह संख्या अभीष्ट घं मि. का लघुरिक्थ कहा जाएगा। जिस दिन ग्रह-स्पष्ट करना है, उस दिन अभीष्ट ग्रह की गति निकाले। अभीष्ट-टाईम के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काल के पञ्चाङ्गस्थ स्पष्ट ग्रहों का अन्तर ही ग्रह की गति होगी। जैसे इष्ट घन्टा-मिनटो का लघुरिक्थ-कोष्टक से प्राप्त किया है, उसी प्रकार ग्रह-गति के

घण्टों को अंश, बाईं एवं दाईं ओर (ऊपर से नीचे) लिखे मिनटों को कला समझ कर ग्रह-गति का लघुरिक्थ प्राप्त करें। ग्रह-गति एवं अभीष्ट घण्टा-मिनटों के लघु-रिक्थों को जोड़कर जो संख्या मिले, उसे लघुरिक्थ कोष्ठक में ही ढूढें। यदि बिल्कुल वही संख्या न मिले, तो उसकी आसन्नतम (लगभग बराबर) संख्या को कोष्ठक में देखें। इस संख्या के ऊपर कोष्ठक में जितने घन्टे लिखे हैं, उन्हें अंश, दाईं एवं बाईं ओर जितने मिनट लिखे हैं, उन्हें कला समझें——यह अभीष्ट चालन होगा। इस चालन को आगे अभीष्ट टाईम के पूर्वकालिक पञ्चाङ्गस्थ मार्गी ग्रह में जोड़ने और वक्री ग्रह में से घटाने पर इष्ट कालिक-ग्रह स्पष्ट होगा।

यदि ग्रह की गति २४ कला से कम हो तो उसका लघुरिक्थ लेने के लिए कोष्ठक के घंटों को कला और मिनटों को विकला समझ कर ग्रहगति का लघुरिक्थ लेना चाहिए। बाकी सारी प्रक्रिया पूर्ववत् ही होगी। यहां जो अभीष्ट चालन प्राप्त होगा, वह अंश-कला न होकर कला-विकला होगा,——बस यह ध्यान रखें।

उदाहरण :—(१) २६ मई सन् १९७१ को शाम के ५ घं. ३५ मिनट (१७ घं. ३५ मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। १७ घं. ३५ मि. में से ५ घं. ३० मि. घटाने पर अभीष्ट घं.मि. (१२।५) मिले। इसका लघुरिक्थ २९८० कोष्ठक से मिला। अभीष्ट टाईम १७ घं. ३५ मि. से पहले २६ मई को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर २. रा., ० अंश, १ कला और इसके आगे २७ मई को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर ही २ रा., १३ अं., ३६ क. स्पष्ट चन्द्र है। अतः इन दोनों का अन्तर १३ अं, ३५ क. चन्द्र की गति हुई। कोष्ठक में इसका लघुरिक्थ १३ घं. के नीचे और ३५ मि. वाली पंक्ति में २४७२ मिला। अभीष्ट घं.मि. और चन्द्रगति के इन लघुरिक्थों को जोड़ने पर ५४५२ संख्या मिली। इस संख्या के लगभग बराबर संख्या ५४५६ कोष्ठक में ६ घं. के नीचे और ५० मिनट के आगे लिखी है, अतः ६ अं., ५० कला चालन हुआ। इसे अभीष्ट टाईम के पहले (प्रातः ५घं. ३० मि. पर) पञ्चाङ्ग में दिए गए स्पष्ट चन्द्रमा २ रा. ० अं., १ क. में जोड़ने पर २ रा. ६ अं., ५१ क. इष्टकालिक चन्द्र स्पष्ट हुआ।

उदाहरण (२)—९ जन. (१९७२) को रात के ११ घं. ४५ मिनट (अर्थात् २३ घं. ४५ मि.) पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है। २३ घं. ४५ मि. में से ५ घं. ३० मि. घटाने पर अभीष्ट घं. मि. (१८।१५) प्राप्त हुआ। इसका लघुरिक्थ ११८९ कोष्ठक से प्राप्त किया। अभीष्ट टाईम २३।४५ से पहले ९ जन. को पञ्चाङ्ग में सुबह ५ घं. ३० मि. पर ५ रा., २९ अं., ५ कला स्पष्ट चन्द्र है। इससे आगे १० जनवरी को स्पष्ट चन्द्र ६ रा., १० अं., ५८ क. है। इन दोनों का अन्तर ११ अं., ५३ क. चन्द्रमा की गति हुई। कोष्ठक में इसका लघुरिक्थ ११ घं. के नीचे ५३ मि. की पंक्ति में ३०५३ प्राप्त हुआ। अभीष्ट घं. मि. एवं चन्द्रगति के इन लघुरिक्थों को जोड़ने पर ४२४२ संख्या हुई। इसकी आसन्नतम संख्या ४२४४ कोष्ठक में ९ घं. के नीचे और २ मि. वाली पंक्ति में है। अतः ९ अं., २ क. कला चालन हुआ। इसे अभीष्ट टाईम के पूर्ववर्ती काल वाले पञ्चाङ्गस्थ स्पष्ट चन्द्र ५ रा., २९ अं., ५ क. में जोड़ने से ६ रा., ८ अं., ७ क. इष्टकालिक चन्द्रमा स्पष्ट हुआ।

स्पष्टता के लिए एक उदाहरण और लीजिए—

उदाहरण (३) :—१ जून (१९७१) को दिन के १२ बजे राहु स्पष्ट करना है। १२ घं. में से ५ घं. ३० मि. घटाने पर ६ घं. ३० मि. प्राप्त हुए। इनका लघुरिक्थ ५६७३ मिला। १ जून को हमारे अभीष्ट टाईम १२ बजे से पहिले पञ्चाङ्ग में प्रातः ५ घं. ३० मि. पर स्पष्ट राहु ९।२४।३०।१, और इसके बाद (२ जून को इसी टाईम) ९।२४।२६।५० दिया हुआ है। इन दोनों का अन्तर ३ कला ११ विकला राहु की गति है। इसका लघुरिक्थ ३ घं. के नीचे और ११ मिनट के आगे ८७७३ मिला। इन दोनों लघुरिक्थों का योग १.४४४६ हुआ। इस संख्या के लगभग बराबर संख्या १.४४२४ कोष्ठक में ० घन्टा के नीचे और ५२ मि. के आगे है। अतः चालन ० कला, ५२ विकला हुआ। यह चालन ऋण है, क्योंकि राहु वक्री है। इसे इस दिन प्रातः ५ घं. ३० मि. पर स्पष्ट राहु ९।२४।३०।१ में से घटाने पर ९।२४।२९।९ इष्टकालिक राहु स्पष्ट हुआ।

इष्टकालिक सर्वथा शुद्ध ग्रह कैसे स्पष्ट करें ?

ऊपर बतलाई गई 'लघुरिक्थ-पद्धति' अथवा ज्योतिषियों में प्रचलित अन्य गोमूत्रिका तथा त्रैराशिक-पद्धतियों द्वारा स्पष्ट किए गए इष्टकालिक ग्रहों में पूर्ण शुद्धता नहीं आ सकती। तीव्र-गति वाले ग्रहों (चन्द्र-बुध-शुक्र) में तो इन पद्धतियों द्वारा अशुद्धि अक्सर रहती ही है। सर्वथा शुद्ध इष्ट-कालिक-ग्रह स्पष्ट करने के लिए एक नवीन-वैज्ञानिक पद्धति, जिसे 'अन्तर्न्यास' (Interpolation) कहते हैं, प्रचलित है। हम इस पद्धति का परिचय अपने पाठकों को आगामी वर्ष देंगे।

ग्रहों की क्रांति एवं शर की उपयोगिता:—ग्रहों की क्रान्ति एवं शर की उपयोगिता दो प्रकार की है (१) सिद्धान्त ज्योतिष सम्बन्धी, (२) फलित ज्योतिष सम्बन्धी। ग्रहों के बिम्बों की आकाश में स्थिति केवल भोगांशों से नहीं जानी जा सकती, इसके लिए क्रान्ति एवं शर की अपेक्षा रहती है। ग्रहों के उदयास्त युति आदि का निर्णय भी क्रान्ति शर पर अवलम्बित है—यह क्रान्ति-शर की सिद्धान्त ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगिता है, जिसका सर्वसाधारण के लिए कोई विशेष महत्व नहीं है। इसकी फलित ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगिता सर्वसाधारण ज्योतिष-प्रेमियों के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण है। नवीन फलित ज्योतिष के क्षेत्र में क्रान्ति एवं शर के आधार पर ग्रहों के प्रभाव की बलवत्ता का पर्याप्त अध्ययन किया गया है। आधुनिक फलित विशेषज्ञों का अनुभव है कि मेदिनी, अर्घकाण्ड जातक आदि ज्योतिष की सभी फलित शाखाओं में ग्रहों की क्रान्ति एवं शर के परिमाण का सूक्ष्मता से विचार करने पर भविष्यवाणी आश्चर्यजनक रूप से सत्य निकलती है। अतएव फलित ज्योतिष के नवीन ग्रन्थों में ग्रहों के भोगांशों के समान क्रान्ति एवं शर को भी फलादेश का निर्णायक तत्त्व माना गया है। 'केशवीय जातक पद्धति' में भी आयन बल के ज्ञान के लिए ग्रह की स्थानीय क्रान्ति का उपयोग बताया गया है। परन्तु नव्य ज्योतिर्विद बिम्बीय (स्पष्ट) क्रान्ति को महत्त्व देते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्ति स्पष्ट (बिम्बीय) ही है।

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(२७ मार्च को अयनांश २३°।२७।२८", १ अप्रैल को २३°।२७।२९", प्लूटो रा.अं.क. ५।४।३५)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
मार्च २७	११।१२।१३। ९	११।१४।५८	८।१५।१७।१२	११।२९।४६। ४	७।१२।५८।४६	१०। ३।२८।१२	०।२६।१३।३५	९।२७।५९।५२	५।१८।२०	७। ९।३०
२८	११।१३।१२।३२	०। ०। ८	८।१५।५२।४१	०। १।११।५२	७।१२।५७।५९	१०। ४।३९।२९	०।२६।११।५४	९।२७।५६।४१	५।१८।१७	७। ९।२९
२९	११।१४।११।५५	०।१५। ३	८।१६।२८। ८	०। २।३२।२०	७।१२।५७। ०	१०। ५।५०।५०	०।२६।२६।१९	९।२७।५३।३१	५।१८।१५	७। ९।२८
३०	११।१५।११।१५	०।२९।३६	८।१७। ३।२९	०। ३।४७। ८	७।१२।५५।५२	१०। ७। २।१२	०।२६।३२।४६	९।२७।५०।२०	५।१८।१२	७। ९।२७
३१	११।१६।१०।३३	१।१३।४१	८।१७।३८।४४	०। ४।५५।५७	७।१२।५४।३३	१०। ८।१३।३५	०।२६।३३।१६	९।२७।४७।१०	५।१८। ९	७। ९।२६
अप्रैल १	११।१७। ९।४८	१।२७।१७	८।१८।१३।५५	०। ५।५८।३३	७।१२।५३। ३	१०। ९।२५। २	०।२६।४५।४९	९।२७।४३।५९	५।१८। ७	७। ९।२५
२	११।१८। ९। १	२।१०।२४	८।१८।४९। १	०। ६।५४।४२	७।१२।५१।२२	१०।१०।३६।३१	०।२६।५२।२५	०।२७।४०।४८	५।१८। ४	७। ९।२५
३	११।१९। ८।१०	२।२३। ७	८।१९।२४। २	०। ७।४४।१३	७।१२।४९।२९	१०।११।४८। १	०।२६।५९। ४	९।२७।३७।३७	५।१८। २	७। ९।२४
४	११।२०। ७।१८	३। ५।२८	८।१९।५८।५७	०। ८।२६।५७	७।१२।४७।२५	१०।१२।५९।३३	०।२७। ५।४६	९।२७।३४।२६	५।१७।५९	७। ९।२३
५	११।२१। ६।२४	३।१७।३५	८।२०।३३।४८	०। ९। २।४८	७।१२।४५।१०	१०।१४।११। ८	०।२७।१२।३१	९।२७।३१।१६	५।१७।५६	७। ९।२२
६	११।२२। ५।२८	३।२९।३०	८।२१। ८।३४	०। ९।३१।४२	७।१२।४२।४५	१०।१५।२२।४५	०।२७।१९।१९	९।२७।२८। ५	५।१७।५३	७। ९।२१
७	११।२३। ४।२९	४।११।१९	८।२१।४३।१५	०। ९।५३।३८	७।१२।४०। ९	१०।१६।३४।२४	०।२७।२६।१०	०।२७।२४।५४	५।१७।५१	७। ९।२०
८	११।२४। ३।२८	४।२३। ७	८।२२।१७।५०	०।१०। ८।३८	७।१२।३७।२२	१०।१७।४६। ५	०।२७।३३। ३	९।२७।२१।४३	५।१७।४८	७। ९।१९
९	११।२५। २।२५	५। ४।५५	८।२२।५२।२०	०।१०।१६।४६	७।१२।३४।२५	१०।१८।५७।४८	०।२७।३९।५९	९।२७।१८।३२	५।१७।४६	७। ९।१८
१०	११।२६। १।२०	५।१६।४८	८।२३।२६।४४	०।१०।१८।११	७।१२।३१।१७	१०।२०। ९।३३	०।२७।४६।५७	९।२७।१५।२२	५।१७।४३	७। ९।१७
११	११।२७। ०।१३	५।२८।४६	८।२४। १। ३	०।१०।१३। ६	७।१२।२७।५८	१०।२१।२१।२०	०।२७।५३।५८	९।२७।१२।११	५।१७।४१	७। ९।१६
१२	११।२७।५९। ४	६।१०।५१	८।२४।३५।१६	०।१०। १।४९	७।१२।२४।२९	१०।२२।३३। ९	०।२८। १।१	९।२७। ९। ०	५।१७।३८	७। ९।१५
१३	११।२८।५७।५३	६।२३। ५	८।२५। ९।२३	०। ९।४४।४२	७।१२।२०।५०	१०।२३।४५। १	०।२८। ८। ७	९।२७। ५।४९	५।१७।३६	७। ९।१४
१४	११।२९।५६।३९	७। ५।२८	८।२५।४३।२४	०। ९।२२।१०	७।१२।१७। १	१०।२४।५६।५५	०।२८।१५।१५	९।२७। २।३९	५।१७।३३	७। ९।१३
१५	०। ०।५५।२४	७।१८। २	८।२६।१७।१८	०। ८।५४।४४	७।१२।१३। २	१०।२६। ८।५०	०।२८।२२।२४	९।२६।५९।२८	५।१७।३१	७। ९।१२
१६	०। १।५४। ८	८। ०।४८	८।२६।५१। ६	०। ८।२२।५९	७।१२। ८।५३	१०।२७।२०।४७	०।२८।२९।३६	९।२६।५६।१७	५।१७।२८	७। ९।१०
१७	०। २।५२।५०	८।१३।४८	८।२७।२४।४७	०। ७।४७।३६	७।१२। ४।३५	१०।२८।३२।४५	०।२८।३६।५१	९।२६।५३। ७	५।१७।२६	७। ९। ९
१८	०। ३।५१।३०	८।२७। ५	८।२७।५८।२१	०। ७। ९।१७	७।१२। ०। ७	१०।२९।४४।४६	०।२८।४४। ७	९।२६।४९।५६	५।१७।२३	७। ९। ८
१९	०। ४।५०। ९	९।१०।४०	८।२८।३१।४८	०। ६।२८।४९	७।११।५५।३०	११। ०।५६।४८	०।२८।५१।२५	९।२६।४६।४५	५।१७।२१	७। ९। ७
२०	०। ५।४८।४६	९।२४।३५	८।२९। ५। ८	०। ५।४६।५८	७।११।५०।४३	११। २। ८।५२	०।२८।५८।४५	९।२६।४३।३५	५।१७।१८	७। ९। ६
२१	०। ६।४७।२१	१०। ८।५२	८।२९।३८।२०	०। ५। ४।३२	७।११।४५।४७	११। ३।२०।५७	०।२९। ६। ७	९।२६।४०।२४	५।१७।१६	७। ९। ४
२२	०। ७।४५।५४	१०।२३।२८	९। ०।११।२४	०। ४।२२।१८	७।११।४०।४२	११। ४।३३। ३	०।२९।१३।३१	९।२६।३७।१३	५।१७।१३	७। ९। ३
२३	०। ८।४४।२६	११। ८।१९	९। ०।४४।२०	०। ३।४१। १	७।११।३५।२८	११। ५।४५।११	०।२९।२०।५६	९।२६।३४। २	५।१७।११	७। ९। २
२४	०। ९।४२।५६	११।२३।२०	९। १।१७। ७	०। ३। १।२४	७।११।३०। ६	११। ६।५७।२०	०।२९।२८।२३	९।२६।३०।५१	५।१७। ८	७। ९। ०
२५	०।१०।४१।२४	०। ८।२०	९। १।४९।४५	०। २।२४। ६	७।११।२४।३५	११। ८। ९।३०	०।२९।३५।५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	०।११।३९।५०	०।२३।२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टण्डर्ड टाईम)

(१ मई को अयनांश २३°२७।३३″, प्लूटो ५।३।५३ रा.अं.क)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.
अप्रैल २७	०।१२।३८।१६	१।७।४५	९। २।५४।३५	०। १।१८।४१	७।११।१३। ९	११।१०।३३।५३	०।२९।५०।५५	९।२६।२२।११	५।१७। २	७। ८।५६
२८	०।१३।३६।३९	१।२१।५४	९। ३।२६।४६	०। ०।५१।२९	७।११। ७।१५	११।११।४६। ६	०।२९।५८।२८	९।२६।१८। ८	५।१६।५९	७। ८।५५
२९	०।१४।३५। ०	२। ५।३४	९। ३।५८।४७	०। ०।२८।२५	७।११। १।१३	११।१२।५८।२१	१। ०। ६। २	९।२६।१४।५७	५।१६।५७	७। ८।५३
३०	०।१५।३३।१९	२।१८।४७	९। ४।३०।३९	०। ०। ९।४७	७।१०।५५। ४	११।१४।१०।३६	१। ०।१३।३८	९।२६।११।४७	५।१६।५५	७। ८।५२
मई १	०।१६।३१।३६	३। १।३३	९। ५। २।२१	११।२९।५५।४५	७।१०।४८।४७	११।१५।२२।५२	१। ०।२१।१५	९।२६। ८।३६	५।१६।५३	७। ८।५०
२	०।१७।२९।५१	३।१३।५७	९। ५।३३।५३	११।२९।४६।२७	७।१०।४२।२४	११।१६।३५। ९	१। ०।२८।५३	९।२६। ५।२५	५।१६।५१	७। ८।४९
३	०।१८।२८। ३	३।२६। ४	९। ६। ५।१३	११।२९।४१।५७	७।१०।३५।५५	११।१७।४७।२७	१। ०।३६।३१	९।२६। २।१४	५।१६।४९	७। ८।४७
४	०।१९।२६।१३	४। ८। ०	९। ६।३६।२४	११।२९।४२।१६	७।१०।२९।२०	११।१८।५९।४६	१। ०।४४।१०	९।२५।५९। ४	५।१६।४७	७। ८।४६
५	०।२०।२४।२१	४।१९।४९	९। ७। ७।२४	११।२९।४७।२२	७।१०।२२।३९	११।२०।१२। ६	१। ०।५१।४९	९।२५।५५।५३	५।१६।४५	७। ८।४४
६	०।२१।२२।२६	५। १।३७	९। ७।३८।१२	११।२९।५७।१२	७।१०।१५।५२	११।२१।२४।२६	१। ०।५९।३०	९।२५।५२।४२	५।१६।४३	७। ८।४३
७	०।२२।२०।३१	५।१३।२८	९। ८। ८।५०	०। ०।११।४०	७।१०। ८।५९	११।२२।३६।४७	१। १। ७।१२	९।२५।४९।३१	५।१६।४१	७। ८।४१
८	०।२३।१८।३४	५।२५।२५	९। ८।३९।१६	०। ०।३०।४०	७।१०। २। २	११।२३।४९। ९	१। १।१४।५४	९।२५।४६।२०	५।१६।३९	७। ८।४०
९	०।२४।१६।३५	६। ७।३१	९। ९। ९।३०	०। ०।५४। ५	७। ९।५५। ०	११।२५। १।३२	१। १।२२।३७	९।२५।४३। ९	५।१६।३७	७। ८।३८
१०	०।२५।१४।३४	६।१९।४८	९। ९।३९।३३	०। १।२२।४७	७। ९।४७।५४	११।२६।१३।५६	१। १।३०।२१	९।२५।३९।५९	५।१६।३५	७। ८।३६
११	०।२६।१२।३२	७। २।१६	९।१०। ९।२३	०। १।५३।३८	७। ९।४०।४३	११।२७।२६।२१	१। १।३८। ५	९।२५।३६।४८	५।१६।३३	७। ८।३५
१२	०।२७।१०।२८	७।१४।५६	९।१०।३९। १	०। २।२९।३०	७। ९।३३।२८	११।२८।३८।४७	१। १।४५।४९	९।२५।३३।३७	५।१६।३१	७। ८।३३
१३	०।२८। ८।२३	७।२७।४७	९।११। ८।२६	०। ३। ९।१३	७। ९।२६।१०	११।२९।५१।१४	१। १।५३।३४	९।२५।३०।२६	५।१६।३०	७। ८।३२
१४	०।२९। ६।१७	८।१०।४९	९।११।३७।३६	०। ३।५२।४१	७। ९।१८।४८	०। १। ३।४१	१। २। १।१९	९।२५।२७।१५	५।१६।२८	७ ८।३०
१५	१। ०। ४। ९	८।२४। ३	९।१२। ६।३३	०। ४।३९।४५	७। ९।११।२३	०। २।१६।१०	१। २। ९। ३	९।२५।२४। ४	५।१६।२७	७। ८।२८
१६	१। १। २। ०	९। ७।२९	९।१२।३५।१६	०। ५।३०।१७	७। ९। ३।५३	०। ३।२८।४०	१। २।१६।४९	९।२५।२०।५४	५।१६।२५	७। ८।२७
१७	१। १।५९।५०	९।२१। ७	९।१३। ३।४४	०। ६।२४।११	७। ८।५६।२३	०। ४।४१।११	१। २।२४।३५	९।२५।१७।४३	५।१६।२४	७। ८।२५
१८	१। २।५७।३९	१०। ४।५९	९।१३।३१।५७	०। ७।२१।१९	७। ८।४८।५१	०। ५।५३।४३	१। २।३२।२१	९।२५।१४।३२	५।१६।२२	७। ८।२३
१९	१। ३।५५।२८	१०।१९। ५	९।१३।५९।५३	०। ८।२१।३६	७। ८।४१।१७	०। ७। ६।१६	१। २।४०। ७	९।२५।११।२१	५।१६।२१	७। ८।२२
२०	१। ४।५३।१०	११। ३।२५	९।१४।२७।३४	०। ९।२४।५५	७। ८।३३।४१	०। ८।१८।५०	१। २।४७।५३	९।२५। ८।११	५।१६।२०	७। ८।२१
२१	१। ५।५०।५५	११।१७।५६	९।१४।५४।५८	०।१०।३१।१२	७। ८।२६। ४	०। ९।३१।२५	१। २।५५।३८	९।२५। ५। ०	५।१६।१८	७। ८।१९
२२	१। ६।४८।३९	०। २।३३	९।१५।२२। ५	०।११।४०।२०	७। ८।१८।२६	०।१०।४४। १	१। ३। ३।२३	९।२५। १।४९	५।१६।१७	७। ८।१७
२३	१। ७।४६।२२	०।१७।१२	९।१५।४८।५४	०।१२।५२।१७	७। ८।१०।४७	०।११।५६।३८	१। ३।११। ७	९।२४।५८।३८	५।१६।१५	७। ८।१५
२४	१। ८।४४। ४	१। १।४४	९।१६।१५।२५	०।१४। ६।५९	७। ८। ३। ७	०।१३। ९।१५	१। ३।१८।५१	९।२४।५५।२७	५।१६।१४	७। ८।१३
२५	१। ९।४१।४४	१।१६। २	९।१६।४१।३७	०।१५।२४।२२	७। ७।५५।२८	०।१४।२१।५२	१। ३।२६।३५	९।२४।५२।१७	५।१६।१३	७। ८।१२
२६	१।१०।३९।२३	२। ०। १	९।१७। ७।३०	०।१६।४४।२३	७। ७।४७।५०	०।१५।३४।३१	१। ३।३४।१९	९।२४।४९। ६	५।१६।१२	७। ८।१०
२७	१।११।३७। ०	२।१३।३६	९।१७।३३। ३	०।१८। ७। ०	७। ७।४०।१३	०।१६।४७।११	१। ३।४२। २	९।२४।४५।५५	५।१६।१०	७। ८। ९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जून को अयनांश २३°२७′३८″, प्लूटो ५।३।३२) रा. अं. क.

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
मई २८	१।१२।३४।३७	२।२६।४६	९।१७।५८।१६	०।१९।३२।११	७। ७।३२।३५	०।१७।५९।५१	१। ३।४९।४५	९।२४।४२।४४	५।१६। ९	७। ८। ७
२९	१।१३।३२।१२	३। ९।३३	९।१८।२३। ९	०।२०।५९।५४	७। ७।२५। ०	०।१९।१२।३२	१। ३।५७।२७	९।२४।३९।३३	५।१६। ८	७। ८। ६
३०	१।१४।२९।४६	३।२१।५९	९।१८।४७।४१	०।२२।३०। ८	७। ७।१७।२७	०।२०।२५।१३	१। ४। ५। ८	९।२४।३६।२३	५।१६। ७	७। ८। ४
३१	१।१५।२७।१८	४। ४। ८	९।१९।११।५२	०।२४। २।५१	७। ७। ९।५६	०।२१।३७।५२	१। ४।१२।४८	९।२४।३३।१२	५।१६। ६	७। ८। ३
जून १	१।१६।२४।४८	४।१६। ५	९।१९।३५।४१	०।२५।३८। ४	७। ७। २।२७	०।२२।५०।३४	१। ४।२०।२७	९।२४।३०। १	५।१६। ६	७। ८। १
२	१।१७।२२।१८	४।२७।५६	९।१९।५९। ७	०।२७।१५।४६	७। ६।५५। १	०।२४। ३।१७	१। ४।२८। ६	९।२४।२६।५०	५।१६। ५	७। ७।५९
३	१।१८।१९।४६	५। ९।४६	९।२०।२२।११	०।२८।५५।५६	७। ६।४७।३८	०।२५।१६। १	१। ४।३५।४३	९।२४।२३।३९	५।१६। ४	७। ७।५८
४	१।१९।१७।१३	५।२१।४०	९।२०।४४।५३	१। ०।३८।३३	७। ६।४०।१८	०।२६।२८।४६	१। ४।४३।१९	९।२४।२०।२८	५।१६। ४	७। ७।५६
५	१।२०।१४।३९	६। ३।४२	९।२१। ७।११	१। २।२३।३६	७। ६।३३।५९	०।२७।४१।३२	१। ४।५०।५५	९।२४।१७।१८	५।१६। ३	७। ७।५५
६	१।२१।१२। ४	६।१५।५६	९।२१।२९। ४	१। ४।११। ६	७। ६।२५।४७	०।२८।५४।१८	१। ४।५८।२९	९।२४।१४। ७	५।१६। २	७। ७।५३
७	१।२२। ९।२८	६।२८।२३	९।२१।५०।३३	१। ६। १। १	७। ६।१८।३९	१। ०। ७। ५	१। ५। ६। २	९।२४।१०।५६	५।१६। २	७। ७।५१
८	१।२३। ६।५३	७।११। ५	९।२२।११।३३	१। ७।५३।१८	७। ६।११।३५	१। १।१९।५३	१। ५।१३।३५	९।२४। ७।४५	५।१६। १	७। ७।५०
९	१।२४। ४।१५	७।२४। २	९।२२।३२।१०	१। ९।४७।५६	७। ६। ४।३६	१। २।३२।४१	१। ५।२१। ५	९।२४। ४।३५	५।१६। १	७। ७।४९
१०	१।२५। १।३६	८। ७।१४	९।२२।५२।२०	१।११।४४।५०	७। ५।५७।४२	१। ३।४५।३०	१। ५।२८।३४	९।२४। १।२४	५।१६। ०	७। ७।४७
११	१।२५।५८।५५	८।२०।३८	९।२३।१२। २	१।१३।४३।५६	७। ५।५०।५१	१। ४।५८।२०	१। ५।३६। २	९।२३।५८।१३	५।१५।५९	७। ७।४६
१२	१।२६।५६।१५	९। ४।१४	९।२३।३१।१७	१।१५।४५। ८	७। ५।४४। ८	१। ६।११।११	१। ५।४३।२८	९।२३।५५। २	५।१५।५९	७। ७।४४
१३	१।२७।५३।३४	९।१७।५९	९।२३।५०। ३	१।१७।४८।१८	७। ५।३७।३०	१। ७।२४। ४	१। ५।५०।५२	९।२३।५१।५१	५।१५।५९	७। ७।४२
१४	१।२८।५०।५३	१०। १।५२	९।२४। ८।१९	१।१९।५३।१३	७। ५।३०।५८	१। ८।३६।५८	१। ५।५८।१४	९।२३।४८।४१	५।१५।५९	७। ७।४१
१५	१।२९।४८।१०	१०।१५।५२	९।२४।२६। ४	१।२२। ०। १	७। ५।२४।३२	१। ९।४९।५३	१। ६। ५।३४	९।२३।४५।३०	५।१५।५८	७। ७।३९
१६	२। ०।४५।२७	१०।२९।५९	९।२४।४३।१९	१।२४। ८। ९	७। ५।१८।१३	१।११। २।४९	१। ६।१२।५३	९।२३।४२।१९	५।१५।५८	७। ७।३८
१७	२। १।४२।४५	११।१४।११	९।२५। ०। ०	१।२६।१७।३२	७। ५।१२। १	१।१२।१५।४६	१। ६।२०।१०	९।२३।३९। ८	५।१५।५८	७। ७।३७
१८	२। २।४०। २	११।२८।२६	९।२५।१६। ८	१।२८।२७।५४	७। ५। ५।५६	१।१३।२८।४४	१। ६।२७।२६	९।२३।३५।५७	५।१५।५८	७। ७।३५
१९	२। ३।३७।१९	०।१२।४२	९।२५।३१।४२	२। ०।३८। ०	७। ४।५९।५६	१।१४।४१।४३	१। ६।३४।४०	९।२३।३२।४७	५।१५।५८	७। ७।३४
२०	२। ४।३४।३६	०।२६।५४	९।२५।४६।४२	२। २।५०।३६	७। ४।५४। ५	१।१५।५४।४३	१। ६।४१।५२	९।२३।२९।३६	५।१५।५८	७। ७।३२
२१	२। ५।३१।५२	१।१०।५९	९।२६। १। ५	२। ५। २।१८	७। ४।४८।२२	१।१७। ७।४४	१। ६।४९। २	९।२३।२६।२५	५।१५।५९	७। ७।३०
२२	२। ६।२९। ८	१।२४।५२	९।२६।१४।५३	२। ७।१३।५६	७। ४।४२।४७	१।१८।२०।४६	१। ६।५६।१०	९।२३।२३।१४	५।१५।५९	७। ७।२९
२३	२। ७।२६।२४	२। ८।३०	९।२६।२८। ४	२। ९।२५।१२	७। ४।३७।२०	१।१९।३३।५०	१। ७। ३।१५	९।२३।२०। ३	५।१५।५९	७। ७।२८
२४	२। ८।२३।४०	२।२१।५०	९।२६।४०।३८	२।११।३६।५०	७। ४।३२।२१	१।२०।४६।५४	१। ७।१०।१७	९।२३।१६।५२	५।१५।५९	७। ७।२७
२५	२। ९।२०।५४	३। ४।५०	९।२६।५२।३४	२।१३।४८।३३	७। ४।२६।५१	१।२१।५९।५८	१। ७।१७।१६	९।२३।१३।४१	५।१६। ०	७। ७।२६
२६	२।१०।१८। ९	३।१७।३०	९।२७। ३।५१	२।१५।५९।१४	७। ४।२१।४२	१।२३।१३। ४	१। ७।२४।१४	९।२३।१०।३०	५।१६। ०	७। ७।२४
२७	२।११।१५।२३	३।२९।५२	९।२७।१४।२८	२।१८। १।३९	७। ४।१६।५६	१।२४।२६।११	१। ७।३१।१०	९।२३। ७।१९	५।१६। ०	७। ७।२३

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जुलाई को अयनांश २३°।२७।४३", प्लूटो रा.अं.क. ५।३।४०)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
जून २८	२।१२।१२।३७	४।१२। १	९।२७।२४।२५	२।२०। ७।३८	७। ४।१२।११	१।२५।३९।१९	१। ७।३८। ३	९।२३। ४। ८	५।१६। १	७। ७।२२
२९	२।१३। ९।५०	४।२३।५९	९।२७।३३।४२	२।२२।१२। २	७। ४। ७।३६	१।२६।५२।२८	१। ७।४४।५३	९।२३। ०।५८	५।१६। १	७। ७।२०
३०	२।१४। ७। ३	५। ५।५२	९।२७।४२।१८	२।२४।१४।४५	७। ४। ३।११	१।२८। ५।३८	१। ७।५१।४१	९।२२।५७।४७	५।१६। २	७। ७।१९
जुला. १	२।१५। ४।१५	५।१७।४३	९।२७।५०।१३	२।२६।१५।४१	७। ३।५८।५५	१।२९।१८।४९	१। ७।५८।२६	९।२२।५४।३६	५।१६। २	७। ७।१८
२	२।१६। १।२७	५।२९।३८	९।२७।५७।२६	२।२८।१४।४६	७। ३।५४।४९	२। ०।३२। १	१। ८। ५। ८	९।२२।५१।२६	५।१६। ३	७। ७।१६
३	२।१६।५८।३९	६।११।४२	९।२८। ३।५६	३। ०।११।५६	७। ३।५०।५३	२। १।४५।१४	१। ८।११।४७	९।२२।४८।१५	५।१६। ४	७। ७।१५
४	२।१७।५५।५०	६।२३।५९	९।२८। ९।४३	३। २। ७। ८	७। ३।४७। ७	२। २।५८।२८	१। ८।१८।२३	९।२२।४५। ४	५।१६। ५	७। ७।१४
५	२।१८।५३। १	७। ६।३३	९।२८।१४।४७	३। ४। ०।२२	७। ३।४३।२९	२। ४।११।४३	१। ८।२४।५७	९।२२।४१।५३	५।१६। ६	७। ७।१३
६	२।१९।५०।१०	७।१९।२५	९।२८।१९। ७	३। ५।५१।३६	७। ३।४०। ३	२। ५।२४।५९	१। ८।३१।२७	९।२२।३८।४३	५।१६। ७	७। ७।१२
७	२।२०।४७।२१	८। २।३६	९।२८।२२।४३	३। ७।४०।५०	७। ३।३६।४७	२। ६।३८।१६	१। ८।३७।५४	९।२२।३५।३२	५।१६। ८	७। ७।११
८	२।२१।४४।३२	८।१६। ६	९।२८।२५।३५	३। ९।२८। ३	७। ३।३३।४१	२। ७।५१।३४	१। ८।४४।१८	९।२२।३२।२१	५।१६। ९	७: ७।१०
९	२।२२।४१।४३	८।२९।५३	९।२८।२७।४२	३।११।१३।१३	७। ३।३०।४५	२। ९। ४।५४	१। ८।५०।३९	९।२२।२९।११	५।१६।१०	७। ७। ९
१०	२।२३।३८।५३	९।१३।५४	९।२८।२९। ३	३।१२।५६।२१	७। ३।२८। ०	२।१०।१८।१५	१। ८।५६।५७	९।२२।२६। ०	५।१६।११	७। ७। ८
११	२।२४।३६। ४	९।२८। ४	९।२८।२९।३८	३।१४।३७।३०	७। ३।२५।२५	२।११।३१।३७	१। ९। ३।११	९।२२।२२।४९	५।१६।१२	७। ७। ७
१२	२।२५।३३।१५	१०।१२।२१	९।२८।२९।२६	३।१६।१६।३७	७। ३।२३। ०	२।१२।४५। ०	१। ९। ९।२२	९।२२।१९।३८	५।१६।१४	७। ७। ६
१३	२।२६।३०।२७	१०।२६।४०	९।२८।२८।२७	३।१७।५३।४३	७। ३।२०।४६	२।१३।५८।२५	१। ९।१५।३०	९।२२।१६।२७	५।१६।१५	७। ७। ५
१४	२।२७।२७।३९	११।१०।५९	९।२८।२६।४४	३।१९।२८।४८	७। ३।१८।४३	२।१५।११।५१	१। ९।२१।३४	९।२२।१३।१६	५।१६।१६	७। ७। ४
१५	२।२८।२४।५२	११।२५।१४	९।२८।२४।१५	३।२१। १।५०	७। ३।१६।४८	२।१६।२५।१८	१। ९।२७।३४	९।२२।१०। ५	५।१६।१७	७। ७। ३
१६	२।२९।२२। ५	०। ९।२२	९।२८।२०।५८	३।२२।३२।५०	७। ३।१५। ६	२।१७।३८।४७	१। ९।३३।३१	९।२२। ६।५४	५।१६।१९	७। ७। २
१७	३। ०।१९।१९	०।२३।२३	९।२८।१६।५५	३।२४। १।४७	७। ३।१३।३५	२।१८।५२।१८	१। ९।३९।२४	९।२२। ३।४३	५।१६।२१	७। ७। १
१८	३। १।१६।३४	१। ७।१४	९।२८।१२। ६	३।२५।२८।४०	७। ३।१२।१५	२।२०। ५।५०	१। ९।४५।१४	९।२२। ०।३३	५।१६।२२	७। ७। ०
१९	३। २।१३।५०	१।२०।५४	९।२८। ६।३२	३।२६।५३।२६	७। ३।११। ६	२।२१।१९।२४	१। ९।५०। ०	९।२१।५७।२२	५।१६।२४	७। ६।५९
२०	३। ३।११। ६	२। ४।२१	९।२८। ०।१३	३।२८।१६। ५	७। ३।१०। ६	२।२२।३२।५९	१। ९।५६।४२	९।२१।५४।११	५।१६।२६	७। ६।५९
२१	३। ४। ८।२३	२।१७।३४	९।२७।५३।१०	३।२९।३६।३४	७। ३। ९।१८	२।२३।४६।३५	१।१०। २।२०	९।२१।५१। ०	५।१६।२८	७। ६।५८
२२	३। ५। ५।४१	३। ०।३२	९।२७।४५।२३	४। ०।५४।५१	७। ३। ८।४२	२।२५। ०।१४	१।१०। ७।५४	९।२१।४७।४९	५।१६।२९	७। ६।५८
२३	३। ६। २।५९	३।१३।१५	९।२७।३६।५४	४। २।१०।५३	७। ३। ८।१७	२।२६।१३।५२	१।१०।१३।२३	९।२१।४४।३९	५।१६।३१	७। ६।५७
२४	३। ७। ०।१८	३।२५।४३	९।२७।२७।४४	४। ३।२४।३६	७। ३। ८। ३	२।२७।२७।३२	१।१०।१८।४७	९।२१।४१।२८	५।१६।३३	७। ६।५७
२५	३। ७।५७।३६	४। ७।५९	९।२७।१७।५४	४। ४।३५।५६	७। ३। ८। ०	२।२८।४१।१३	१।१०।२४। ७	९।२१।३८।१७	५।१६।३५	७। ६।५६
२६	३। ८।५४।५५	४।२०। ३	९।२७। ७।२६	४। ५।४४।४९	७। ३। ८। ८	२।२९।५४।५६	१।१०।२९।२४	९।२१।३५। ६	५।१६।३७	७। ६।५६
२७	३। ९।५२।१५	५। १।५९	९।२६।५६।२२	४। ६।५१। ९	७। ३। ८।२७	३। १। ८।४०	१।१०।३४।३६	९।२१।३१।५५	५।१६।३९	७। ६।५५
२८	३।१०।४९।३५	५।१३।५१	९।२६।४४।४४	४। ७।५४।५३	७। ३। ८।५६	३। २।२२।२५	१।१०।३९।४४	९।२१।२८।४४	५।१६।४१	७। ६।५५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टेंडर्ड टाईम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°२७'४९", प्लूटो रा.अं.क. ५।४।१८)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
जुला. २९	३।११।४६।५६	५।२५।४२	९।२६।३२।३४	४। ८।५५।५३	७। ३। ९।३७	३। ३।३६।११	१।१०।४४।४८	९।२१।२५।३४	५।१६।४३	७। ६।५४
३०	३।१२।४४।१६	६। ७।३७	९।२६।१९।५३	४। ९।५४। ३	७। ३।१०।२९	३। ४।४९।५८	१।१०।४९।४७	९।२१।२२।२३	५।१६।४५	७। ६।५४
३१	३।१३।४१।३८	६।१९।४०	९।२६। ६।४३	४।१०।४९।१५	७। ३।११।३२	३। ६। ३।४६	१।१०।५४।४१	९।२१।१९।१२	५।१६।४७	७। ६।५३
अग. १	३।१४।३९। १	७। १।५७	९।२५।५३। ७	४।११।४१।२३	७। ३।१२।४६	३। ७।१७।३५	१।१०।५९।३१	९।२१।१६। १	५।१६।४९	७। ६।५३
२	३।१५।३६।२४	७।१४।३१	९।२५।३९। ७	४।१२।३०।१८	७। ३।१४।१०	३। ८।३१।२६	१।११। ४।१६	९।२१।१२।५०	५।१६।५१	७।६। ५२
३	३।१६।३३।४८	७।२७।२५	९।२५।२४।४४	४।१३।१५।५०	७। ३।१५।४५	३। ९।४५।१८	१।११। ८।५६	९।२१। ९।४०	५।१६।५३	७। ६।५२
४	३।१७।३१।१३	८।१०।४३	९।२५।१०। १	४।१३।५७।४९	७। ३।१७।३०	३।१०।५९।११	१।११।१३।३१	९।२१। ६।२९	५।१६।५६	७। ६।५२
५	३।१८।२८।३७	८।२४।२३	९।२४।५५। १	४।१४।३६। ५	७। ३।१९।२७	३।१२।१३। ५	१।११।१८। २	९।२१। ३।१८	५।१६।५८	७। ६।५१
६	३।१९।२६। ३	९। ८।२७	९।२४।३९।४५	४।१५।१०।२७	७। ३।२१।३४	३।१३।२७। ०	१।११।२२।२६	९।२१। ०। ७	५।१७। ०	७। ६।५१
७	३।२०।२३।३०	९।२२।४९	०।२४।२४।१७	४।१५।४०।४४	७। ३।२३।५२	३।१४।४०।५७	१।११।२६।४७	९।२०।५६।५६	५।१७। ३	७। ६।५१
८	३।२१।२०।५८	१०। ७।२५	९।२४। ८।३९	४।१६। ६।४३	७। ३।२६।२०	३।१५।५४।५५	१।११।३१। ६	९।२०।५३।४६	५।१७। ५	७। ६।५१
९	३।२२।१८।२७	१०।२२।१८	९।२३।५२।५३	४।१६।२८।१२	७। ३।२८।५९	३।१७। ८।५४	१।११।३५।१७	९।२०।५०।३५	५।१७। ८	७। ६।५१
१०	३।२३।१५।५६	११। ६।५३	९।२३।३७। १	४।१६।४५। ०	७। ३।३१।४७	३।१८।२२।५५	१।११।३९।२३	९।२०।४७।२४	५।१७।११	७। ६।५१
११	३।२४।१३।२८	११।२१।३१	९।२३।२१। ६	४।१६।५६।५६	०। ३।३४।४६	३।१९।३६।५७	१।११।४३।२४	९।२०।४४।१४	५।१७।१३	७। ६।५१
१२	३।२५।११। १	०। ५।५९	९।२३। ५।११	४।१७। ३।४७	७। ३।३७।५६	३।२०।५१। ०	१।११।४७।१९	९।२०।४१। ३	५।१७।१६	७। ६।५१
१३	३।२६। ८।३६	०।२०।१२	९।२२।४९।१९	४।१७। ५।२२	७। ३।४१।१६	३।२२। ५। ५	१।११।५१। ९	९।२०।३७।५२	५।१७।१९	७। ६।५१
१४	३।२७। ६।१२	१। ४। ८	९।२२।३३।३१	४।१७। १।३४	७। ३।४४।४६	३।२३।१९।१०	१।११।५४।५४	९।२०।३४।४१	५।१७।२२	७। ६।५१
१५	३।२८। ३।५०	१।१७।४७	९।२२।१७।५३	४।१६।५२।१७	७। ३।४८।२७	३।२४।३३।१७	१।११।५८।३२	९।२०।३१।३१	५।१७।२५	७। ६।५१
१६	३।२९। १।२९	२। १। ९	९।२२। २।२५	४।१६।३७।२६	७। ३।५२।१८	३।२५।४७।२६	१।१२। २। ६	९।२०।२८।२०	५।१७।२७	७। ६।५१
१७	३।२९।५९।१०	२।१४।१४	९।२१।४७।११	४।१६।१७। ०	७। ३।५६।१९	३।२७। १।३६	१।१२। ५।३४	९।२०।२५। ९	५।१७।३०	७। ६।५१
१८	४। ०।५६।५२	२।२७। ५	९।२१।३२।१४	४।१५।५१। ५	७। ४। ०।२९	३।२८।१५।४७	१।१२। ८।५७	९।२०।२१।५९	५।१७।३३	७। ६।५१
१९	४। १।५४।३५	३। ९।४२	९।२१।१७।३६	४।१५।१९।४८	७। ४। ४।४८	३।२९।३०। ०	१।१२।१२।१४	९।२०।१८।४८	५।१७।३५	७। ६।५१
२०	४। २।५२।२०	३।२२। ६	९।२१। ३।२१	४।१४।४३।२८	७। ४। ९।१८	४। ०।४४।१४	१।१२।१५।२५	९।२०।१५।३७	५।१७।३८	७। ६।५२
२१	४। ३।५०। ६	४। ४।२१	९।२०।४९।३१	४।१४। २।२७	७। ४।१३।५८	४। १।५८।२९	१।१२।१८।३१	९।२०।१२।२६	५।१७।४१	७। ६।५२
२२	४। ४।४७।५४	४।१६।२७	९।२०।३६। ७	४।१३।१७।१५	७। ४।१८।४८	४। ३।१२।४५	१।१२।२१।३१	९।२०। ९।१६	५।१७।४४	७। ६।५२
२३	४। ५।४५।४३	४।२८।२५	९।२०।२३।१३	४।१२।२८।३३	७। ४।२३।४७	४। ४।२७। २	१।१२।२४।२५	९।२०। ६। ५	५।१७।४७	७। ६।५२
२४	४। ६।४३।३३	५।१०।१८	९।२०।१०।५०	४।११।३७। ४	७। ४।२८।५६	४। ५।४१।१९	१।१२।२७।१३	९।२०। २।५४	५।१७।५०	७। ६।५२
२५	४। ७।४१।२४	५।२२। ९	९।१९।५९। ०	४।१०।४३।४३	७। ४।३४।१४	४। ६।५५।३७	१।१२।२९।५५	९।१९।५९।४३	५।१७।५३	७। ६।५३
२६	४। ८।३९।१७	६। ४। ०	९।१९।४७।४७	४। ९।४९।३०	७। ४।३९।४२	४। ८। ९।५७	१।१२।३२।३१	९।१९।५६।३२	५।१७।५६	७। ६।५३
२७	४। ९।३७।११	६।१५।५४	९।१९।३७।१२	४। ८।५५।२९	७। ४।४५।१९	४। ९।२४।१८	१।१२।३५। १	९।१९।५३।२१	५।१७।५९	७। ६।५३
२८	४।१०।३५। ७	६।२७।५६	९।१९।२७।१६	४। ८। २।४७	७। ४।५१। ६	४।१०।३८।४०	१।१२।३७।२५	९।१९।५०।११	५।१८। ३	७। ६।५५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं० ३० मि०, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।२७।५३", प्लूटो रा.अं.क. ५।५।१६)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
अग. २९	४ ११।३३। ५	७।१०।१०	९।१९।१८। १	४। ७।१२।३५	७। ४।५७। १	४।११।५३। २	११२।३९।४३	९।१९।४७। ०	५।१८। ६	७। ६।५५
३०	४।१२।२१। ३	७।२२।४०	९।१९। ९।२७	४। ६।२५।५९	७। ५। ३। ५	४।१३। ७।२५	११२।४१।५५	९।१९।४३।४९	५।१८। ९	७। ६।५६
३१	४।१३।२९। ३	८। ५।३०	९।१९। १।३८	४। ५।४४। २	७। ५। ९।१८	४।१४।२१।४९	११२।४४। १	९।१९।४०।३८	५।१८।१२	७। ६।५६
सितं. १	४।१४।२७। ३	८।१८।४५	९।१८।५४।३३	४। ५। ७।४३	७। ५।१५।४०	४।१५।३६।१४	११२।४६। १	९।१९।३७।२७	५।१८।१६	७। ६।५७
२	४।१५।२५। ५	९। २।२५	९।१८।४८।१३	४। ४।३७।५५	७। ५।२२।११	४।१६।५०।३९	११२।४७।५५	९।१९।३४।१७	५।१८।१९	७। ६।५७
३	४।१६।२३। ९	९।१७।३३	९।१८।४२।३९	४। ४।१५।२३	७। ५।२८।५०	४।१८। ५। ५	११२।४९।४२	९।१९।३१। ६	५।१८।२२	७। ६।५८
४	४।१७।२१।१४	१०। १। ५	९।१८।३७।५१	४। ४। ०।३८	७। ५।३५।३८	४।१९।१९।३१	११२।५१।२२	९।१९।२७।५५	५।१८।२६	७। ६।५८
५	४।१८।१९।२२	१०।१५।५७	९।१८।३३।४९	४। ३।५४।११	७। ५।४२।३३	४।२०।३३।५८	११२।५२।५६	९।१९।२४।४४	५।१८।३०	७। ६।५९
६	४।१९।१७।३१	११। १। २	९।१८।३०।३५	४। ३।५६।२१	७। ५।४९।३७	४।२१।४८।२६	११२।५४।२४	९।१९।२१।३३	५।१८।३३	७। ७। ०
७	४।२०।१५।४१	११।१६।१०	९।१८।२८। ८	४। ४। ७।१७	७। ५।५६।४९	४।२३। २।५५	११२।५५।४६	९।१९।१८।२३	५।१८।३६	७। ७। ०
८	४।२१।१३।५३	०। १।१२	९।१८।२६।२९	४। ४।२७। २	७। ६। ४। ९	४।२४।१७।२५	११२।५७। २	९।१९।१५।१२	५।१८।३९	७। ७। १
९	४।२२।१२। ७	०।१५।५८	९।१८।२५।३८	४। ४।५५।३१	७। ६।११।३८	४।२५।३१।५६	११२।५८।११	९।१९।१२। १	५।१८।४२	७। ७। २
१०	४।२३।१०।२३	१। ०।२४	९।१८।२५।३४	४। ५।३२।३४	७। ६।१९।१५	४।२६।४६।२८	११२।५९।१४	९।१९। ८।५१	५।१८।४६	७। ७। ३
११	४।२४। ८।४२	१।१४।२६	९।१८।२६।१८	४। ६।१७।५३	७। ६।२७। ०	४।२८। १। १	११३। ०।११	९।१९। ५।४०	५।१८।५०	७। ७। ४
१२	४।२५। ७। ३	१।२८। २	९।१८।२७।५०	४। ७।११। ८	७। ६।३४।५२	४।२९।१५।३५	११३। १। १	९।१९। २।२९	५।१८।५३	७। ७। ५
१३	४।२६। ५।२६	२।११।१६	९।१८।३०।१०	४। ८।११।५२	७। ६।४२।५२	५। ०।३०।१०	११३। १।४५	९।१८।५९।१८	५।१८।५७	७। ७। ६
१४	४।२७। ३।५१	२।२४। ९	९।१८।३३।१८	४। ९।१९।३५	७। ६।५०।५९	५। १।४४।४५	११३। २।२२	९।१८।५६। ८	५।१९। १	७। ७। ७
१५	४।२८। २।१८	३। ६।४४	९।१८।३०।१४	४।१०।३३।४७	७। ६।५९।१४	५। २।५९।२०	११३। २।५२	९।१८।५२।५७	५।१९। ५	७। ७। ८
१६	४।२९। ०।४६	३।१९। ५	९।१८।४१।५६	४।११।५३।५१	७। ७। ७।३७	५। ४।१३।५७	११३। ३।१६	९।१८।४९।४६	५।१९। ८	७। ७।१०
१७	४।२९।५९।१७	४। १।१५	९।१८।४७।२७	४।१३।१९।११	७। ७।१६। ७	५। ५।२८।३४	११३। ३।३३	९।१८।४६।३६	५।१९।१२	७। ७।११
१८	५। ०।५७।५०	४।१३।१७	९।१८।५३।४५	४।१४।४९।१२	७। ७।२४।४४	५। ६।४३।१२	११३। ३।४४	९।१८।४३।२५	५।१९।१५	७। ७।१२
१९	५। १।५६।२५	४।२५।१५	९।१९। ०।५०	४।१६।२३।१८	७। ७।३३।२८	५। ७।५७।५१	११३। ३।४७	९।१८।४०।१४	५।१९।१९	७। ७।१३
२०	५। २।५५। २	५। ७। ८	९।१९। ८।४२	४।१८। ०।५५	७। ७।४२।२१	५। ९।१२।३०	११३। ३।४३	९।१८।३७। ३	५।१९।२२	७। ७।१४
२१	५। ३।५३।४१	५।१८।५९	९।१९।१७।१९	४।१९।४१।३०	७। ७।५१।२०	५।१०।२७।१०	११३। ३।३३	९।१८।३३।५२	५।१९।२६	७। ७।१५
२२	५। ४।५२।२२	६। ०।४९	९।१९।२६।४२	४।२१।२४।३२	७। ८। ०।२६	५।११।४१।५०	११३। ३।१७	९।१८।३०।४२	५।१९।३०	७। ७।१६
२३	५। ५।५१। ५	६।१२।४२	९।१९।३६।५०	४।२३। ९।३३	७। ८। ९।३८	५।१२।५६।३०	११३। २।५५	९।१८।२७।३१	५।१९।३३	७। ७।१७
२४	५। ६।४९।४९	६।२४।३८	९।१९।४७।४२	४।२४।५६। ७	७। ८।१८।५७	५।१४।११।११	११३। २।२६	९।१८।२४।२०	५।१९।३७	७। ७।१९
२५	५। ७।४८।३५	७। ६।४१	९।१९।५९।१८	४।२६।४३।५१	७। ८।२८।२३	५।१५।२५।५२	११३। १।५१	९।१८।२१। ९	५।१९।४०	७। ७।२०
२६	५। ८।४७।२४	७।१८।५३	९।२०।११।३६	४।२८।३२।२४	७। ८।३७।५५	५।१६।४०।३३	११३। १। ९	९।१८।१७।५८	५।१९।४४	७। ७।२२
२७	५। ९।४६।१४	८। १।२१	९।२०।२४।३६	५। ०।२१।३०	७। ८।४७।३४	५।१७।५५।१५	११३। ०।२१	९।१८।१४।४८	५।१९।४८	७। ७।२३
२८	५।१०।४५। ६	८।१४। ५	९।२०।३८।१८	५। २।१०।५४	७। ८।५७।१८	५।१९। ९।५७	११२।५९।२६	९।१८।११।३७	५।१९।५२	७। ७।२५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं ३०मि., भारतीय स्टैंडर्ड टाईम)

(१ अक्तूबर को अयनांश २३°२७'५६", प्लूटो ५।६।२३)
रा. अं. क.

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
सितं. २९	५।११।४३।५९	८।२७।११	९।२०।५२।४८	५। ४। ०।२२	७। ९। ७। ९	५।२०।२४।३९	१।१२।५८।२५	९।१८। ८।२६	५।१९।५६	७। ७।२६
३०	५।१२।४२।५४	९।१०।४४	९।२१। ७।४१	५। ५।४९।४३	७। ९।१७। ६	५।२१।३९।२१	१।१२।५७।१७	९।१८। ५।१६	५।२०। ०	७। ७।२७
अक्तू. १	५।१३।४१।५१	९।२४।४४	९।२१।२३।२१	५। ७।३८।४८	७। ९।२७। ९	५।२२।५४। ३	१।१२।५६। ३	९।१८। २। ५	५।२०। ३	७। ८।२८
२	५।१४।४०।५०	१०। ९।१३	९।२१।३९।३९	५। ९।२७।३१	७। ९।३७।१८	५।२४। ८।४६	१।१२।५४।४२	९।१७।५८।५४	५।२०। ७	७। ७।३०
३	५।१५।३९।५०	१०।२४। ६	९।२१।५६।३४	५।११।१५।४५	७। ९।४७।३३	५।२५।२३।२९	१।१२।५३।१५	९।१७।५५।४४	५।२०।१०	७। ७।३१
४	५।१६।३८।५२	११। ९।१७	९।२२।१४। ५	५।१३। ३।२६	७। ९।५७।५४	५।२६।३८।१२	१।१२।५१।४२	९।१७।५२।३३	५।२०।१४	७। ७।३३
५	५।१७।३७।५५	११।२४।३७	९।२२।३२।११	५।१४।५०।३०	७।१०। ८।२०	५।२७।५२।५४	१।१२।५०। ३	९।१७।४९।२३	५।२०।१८	७। ७।३५
६	५।१८।३७। १	०। ९।५४	९।२२।५०।५०	५।१६।३६।५३	७।१०।१८।५३	५।२९। ७।३७	१।१२।४८।१७	९।१७।४६।१२	५।२०।२२	७। ७।३६
७	५।१९।३६।१०	०।२४।५७	९।२३।१०। ४	५।१८।२२।३५	७।१०।२९।३०	६। ०।२२।२१	१।१२।४६।२५	९।१७।४३। १	५।२०।२६	७। ७।३८
८	५।२०।३५।२१	१। ९।३७	९।२३।२९।५१	५।२०। ७।३५	७।१०।४०।१३	६। १।३७। ५	१।१२।४४।२७	९।१७।३९।५१	५।२०।३०	७। ७।४०
९	५।२१।३४।३४	१।२३।५०	९।२३।५०।१०	५।२१।५१।४९	७।१०।५१। १	६। २।५१।४९	१।१२।४२।२२	९।१७।३६।४०	५।२०।३४	७। ७।४२
१०	५।२२।३३।५०	२। ७।३३	९।२४।११। १	५।२३।३५।१९	७।११। १।५५	६। ४। ६।३४	१।१२।४०।११	९।१७।३३।२९	५।२०।३७	७। ७।४३
११	५।२३।३३। ७	२।२०।४८	९।२४।३२।२३	५।२५।१८। ५	७।११।१२।५३	६। ५।२१।१९	१।१२।३७।५५	९।१७।३०।१८	५।२०।४१	७। ७।४५
१२	५।२४।३२।२७	३। ३।३८	९।२४।५४।१४	५।२७। ०। ६	७।११।२३।५७	६। ६।३६। ४	१।१२।३५।३३	९।१७।२७। ७	५।२०।४५	७। ७।४७
१३	५।२५।३१।४९	३।१६। ८	९।२५।१६।३५	५।२८।४१।२३	७।११।३५। ६	६। ७।५०।४९	१।१२।३३। ५	९।१७।२३।५६	५।२०।४८	७। ७।४९
१४	५।२६।३१।१४	३।२८।२१	९।२५।३९।२५	६। ०।२१।५६	७।११।४६।२०	६। ९। ५।३४	१।१२।३०।३१	९।१७।२०।४६	५।२०।५२	७। ७।५०
१५	५।२७।३०।४१	४।१०।२४	९।२६। २।४४	६। २। १।४७	७।११।५७।३९	६।१०।२०।१९	१।१२।२७।५२	९।१७।१७।३५	५।२०।५६	७। ७।५२
१६	५।२८।३०।१०	४।२२।१९	९।२६।२६।३०	६। ३।४०।५४	७।१२। ९। २	६।११।३५। ५	१।१२।२५। ७	९।१७।१४।२४	५।२१। ०	७। ७।५४
१७	५।२९।२९।४१	५। ४।१०	९।२६।५०।४४	६। ५।१९।२२	७।१२।२०।३०	६।१२।४९।५१	१।१२।२२।१६	९।१७।११।१४	५।२१। ४	७। ७।५५
१८	६। ०।२९।१४	५।१६। १	९।२७।१५।२४	६। ६।५७।१०	७।१२।३२। ३	६।१४। ४।३७	१।१२।१९।२०	९।१७। ८। ३	५।२१। ७	७। ७।५७
१९	६। १।२८।५०	५।२७।५१	९।२७।४०।३०	६। ८।३४।१८	७।१२।४३।४०	६।१५।१९।२४	१।१२।१६।१७	९।१७। ४।५२	५।२१।११	७। ७।५९
२०	६। २।२८।२८	६। ९।४५	९।२८। ६। २	६।१०।१०।४८	७।१२।५५।२१	६।१६।३४।११	१।१२।१३। ९	९।१७। १।४१	५।२१।१५	७। ८। १
२१	६। ३।२८। ८	६।२१।४२	९।२८।३१।५९	६।११।४६।४३	७।१३। ७। ६	६।१७।४८।५८	१।१२। ९।५६	९।१६।५८।३१	५।२१।१९	७। ८। ३
२२	६। ४।२७।५०	७। ३।४५	९।२८।५८।२१	६।१३।२२। ०	७।१३।१८।५६	६।१९। ३।४५	१।१२। ६।३९	९।१६।५५।२०	५।२१।२२	७। ८। ५
२३	६। ५।२७।३४	७।१५।५४	९।२९।२५। ६	६।१४।५६।४२	७।१३।३०।५०	६।२०।१८।३२	१।१२। ३।१७	९।१६।५२। ९	५।२१।२६	७। ८। ७
२४	६। ६।२७।१९	७।२८।११	९।२९।५२।१५	६।१६।३०।५०	७।१३।४२।४८	६।२१।३३।१९	१।११।५९।५०	९।१६।४८।५८	५।२१।३०	७। ७। ९
२५	६। ७।२७। ६	८।१०।४०	१०। ०।१९।४६	६।१८। ४।२५	७।१३।५४।५०	६।२२।४८। ६	१।११।५६।१८	९।१६।४५।४७	५।२१।३३	७। ८।११
२६	६। ८।२६।५५	८।२३।२४	१०। ०।४७।३९	६।१९।३७।२७	७।१४। ६।५६	६।२४। २।५३	१।११।५२।४१	९।१६।४२।३६	५।२१।३७	७। ८।१३
२७	६। ९।२६।४६	९। ६।२६	१०। १।१५।५३	६।२१। ९।५६	७।१४।१९। ६	६।२५।१७।३९	१।११।४९। ०	९।१६।३९।२६	५।२१।४१	७। ८।१५
२८	६।१०।२६।३८	९।१९।५०	१०। १।४४।२७	६।२२।४१।५५	७।१४।३१।१९	६।२६।३२।२५	१।११।४५।१४	९।१६।३६।१५	५।२१।४४	७। ८।१७
२९	६।११।२६।३१	१०। ३।३८	१०। २।१३।२२	६।२४।१३।२३	७।१४।४३।३६	६।२७।४७।११	१।११।४१।२३	९।१६।३३। ४	५।२१।४८	७। ८।१९

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं० ३० मि०, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा. अं. क.
(१ नवं. को अयनांश २३° २८'१०", प्लूटो ५ । ७ ।२८

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा.अं. क. वि.	गुरु रा. अं क. वि.	शुक्र रा. अं. क.वि.	शनि रा. अं. क. वि	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
अक्तू. ३०	६।१२।२६।२६	१०।१७।५३	१०। २।४२।३७	६।२५।४४।२०	७।१४।५५।५६	६।२९। १।५७	१।११।३७ २८	९।१६ २९।५३	५।२१।५२	७। ८।२१
३१	६।१३।२६।२३	११। २।३२	१०। ३।१२।१०	६।२७।१४।४७	७।१५। ८।२०	७। ०।१६।४२	१।११।३३।२९	९।१६।२६।४३	५।२१।५६	७। ८।२३
नवं. १	६।१४।२६।२२	११।१७।३३	१०। ३।४२। १	६।२८।४४।४३	७।१५।२०।४७	७। १।३१।२७	१।११।२९ २६	९।१६।२३।३२	५।२१।५९	७। ८।२६
२	६।१५।२६।२२	०। २।४६	१०। ४।१२।१०	७। ०।१४। ९	७।१५।३३।१७	७। २।४६।१२	१।११।२५।१९	९।१६।२०।२१	५।२२। ३	७। ८।२८
३	६।१६।२६।२४	०।१८। १	१०। ४।४२।३६	७। १।४३। ५	७।१५।४५।५१	७। ४। ०।५७	१ ११।२१। ९	९।१६।१७।११	५।२२। ६	७। ८।३०
४	६।१७।२६।२७	१। ३। ८	१०। ५।१३।१९	७। ३।११।३०	७।१५।५८।२८	७। ५।१५।४२	१।११।१६।५५	९।१६।१४। ०	५।२२। ९	७। ८।३२
५	६।१८।२६।३३	१।१७।५६	१०। ५।४४।१८	७। ४।३९।२३	७।१६।११। ८	७। ६।३०।२६	१।११।१२।३८	९।१६।१०।४९	५।२२।१३	७। ८।३४
६	६।१९।२६।४१	२। २।१८	१०। ६।१५।३२	७। ६। ६।४२	७।१६।२३।५१	७। ७।४५।११	१।११। ८।१७	९।१६। ७।३९	५।२२ १६	७। ८।३६
७	६।२०।२६।५१	२।१६। ९	१०। ६।४७। २	७। ७।३३।२८	७।१६।३६।३७	७। ८।५९ ५५	१।११। ३।५३	९।१६। ४।२८	५।२२।२०	७। ८।३८
८	६।२१।२७। ३	२।२९।३१	१०। ७।१८।४७	७। ८।५९।३८	६।१६।४९।२५	७।१०।१४।३९	१ १०।५९।२६	९।१६। १।१७	५।२२।२३	७। ८।४१
९	६।२२।२७।१७	३।१२।२६	१०। ७।५०।४८	७।१०।२५। ९	७।१७। २।१६	७।११।२९।२३	१।१०।५४।५५	९।१५।५८। ६	५।२२।२७	७। ८।४३
१०	६।२३।२७।३४	३।२४।५६	१०। ८।२३। ४	७।११।४९।५८	७।१७।१५। ८	७।१२।४४। ७	१।१०।५०।२२	९।१५।५४।५५	५।२२।३०	७। ८।४५
११	६।२४।२७।५२	४। ७।१०	१०। ८।५५।३३	७।१३।१४। ४	७।१७।२८। ४	७।१३।५८।५१	१।१०।४५।४७	९।१५।५१।४४	५।२२।३३	७। ८।४७
१२	६।२५।२८।१२	४।१९।११	१०। ९।२८।१५	७।१४।३७।२१	७।१७।४१। ३	७।१५।१३।३५	१।१०।४१। ९	९।१५।४८।३३	५।२२।३६	७। ८।५०
१३	६।२६।२८।३४	५। १। ४	१०।१०। १।११	७।१५।५९।४६	७।१७।५४। ४	७।१६।२८।१९	१ १०।३६।२९	९।१५।४५।२२	५।२२।४०	७। ८।५२
१४	६।२७।२८।५८	५।१२।५४	१०।१०।३४।२०	७।१७।२१।१३	७।१८। ७। ८	७।१७।४३। ३	१।१०।३१।४६	९।१५।४२।११	५।२२।४३	७। ८।५४
१५	६।२८।२९।२४	५।२४।४४	१०।११। ७।४२	७।१८।४१।३५	७।१८।२०।१४	७।१८।५७।४७	१।१०।२७। १	९।१५।३९। ०	५।२२।४६	७। ८।५६
१६	६।२९।२९।५२	६। ६।३७	१०।११।४१।१६	७।२०। ०।४४	७।१८।३३।२२	७।२०।११।३१	१।१०।२२।१५	९।१५।३५।५०	५।२२।४९	७। ८।५८
१७	७। ०।३०।२१	६।१८।३६	१०।१२।१५। ३	७।२१।१८।३३	७।१८।४६।३२	७।२२।२७।१५	१।१०।१७।२७	९।१५।३२।३९	५।२२।५३	७। ९। ०
१८	७। १।३०।५२	७। ०।४२	१०।१२।४९। २	७।२२।३४।५२	७।१८।५९।४५	७।२२।४१।५९	१।१०।१२।३०	९।१५।२९।२८	५।२२।५६	७। ९। ३
१९	७। २।३१।२५	७।१२।५५	१०।१३।२३।१३	७।२३।४९।२८	७।१९।१२।५९	७।२३।५६।४३	१।१०। ७।४५	९।१५।२६।१७	५।२२।५९	७। ९। ५
२०	७। ३।३१।५९	७।२५।१७	१०।१३।५७।३५	७।२५। २। ९	७।१९।२६।१५	७।२५।११।२६	१।१०। २।५२	९।१५।२३। ७	५।२३। ३	७। ९। ७
२१	७। ४।३२।३५	८। ७।४७	१०।१४।३२। ९	७।२६।१२।३८	७।१९।३९।३३	७।२६।२६। ९	१। ९।५७।५९	९।१५।१९।५६	५।२३। ६	७। ९। ९
२२	७। ५।३३।१३	८।२०।२८	१०।१५। ६।५३	७।२७।२०।३८	७।१९।५२।५२	७।२७।४०।५२	१। ९।५३। ५	९।१५।१६।४५	५।२३। ९	७। ९।११
२३	७। ६।३३।५१	९। ३।२१	१०।१५।४१।४८	७।२८।२५।४८	७।२०। ६।१३	७।२८।५५।३४	१। ९।४८।१०	९।१५।१३।३४	५।२३।१२	७। ९।१३
२४	७। ७।३४।३१	९।१६।२८	१०।१६।१६।५३	७।२९।२७।४५	७।२०।१९।३५	८। ०।१०।१६	१। ९।४३।१५	९।१५।१०।२३	५।२३।१५	७। ९।१५
२५	७। ८।३५।१२	९।२९।५१	१०।१६।५२। ७	८। ०।२६। २	७।२०।३३।५९	८। १।२४।५६	१। ९।३८।२०	९।१५। ७।१२	५।२३।१८	७। ९।१८
२६	७। ९।३५।५४	१०।१३।३२	१०।१७।२७।३१	८। १।२०। ८	७।२०।४६।२४	८। २।३९।३७	१। ९।३३।२४	९।१५। ४। २	५।२३।२१	७। ९।२०
२७	७।१०।३६।३७	१०।२७।३४	१०।१८। ३। ४	८। २।९।३२	७।२०।५९।५०	८। ३।५४।१७	१। ९।२८।२८	९।१५। ०।५१	५।२३।२३	७। ९।२२
२८	७।११।३७।२१	११।११।५५	१०।१८।३८।४५	८। २।५३।३४	७।२१।१३।१७	८। ५। ८।५६	१। ९ २३।३३	९।१४।५७।४०	५।२३।२६	७। ९।२४
२९	७।१२।३८। ५	११।२६।३४	१०।१९।१४।३५	८। ३।३१।३४	७।२१।२६।४४	८। ६।२३।३५	१। ९।१८।३८	९।१४।५४।३०	५।२३।२९	७। ९।२७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा.अं.क.

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।२८।१५", प्लूटो ५।८।१५)

तारीख सन् १९७१	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.
नव. ३०	७।१३।३८।५०	०।११।२५	१०।१९।५०।३३	८। ४। २।४६	७।२१।४०।१३	८। ७।३८।१३	१। ९।१३।४३	९।१४।५१।१९	५।२३।३२	७। ९।२९
दिसं. १	७।१४।३९।३७	०।२६।२१	१०।२०।२६।३९	८। ४।२६।२२	७।२१।५३।४३	८। ८।५२।५१	१। ९। ८।४८	९।१४।४८। ९	५।२३।३५	७। ९।३१
२	७।१५।४०।२५	१।११।१३	१०।२१। २।५३	८। ४।४१।३३	७।२२। ७।१४	८।१०। ७।२८	१। ९। ३।५५	९।१४।४४।५७	५।२३।३७	७। ९।३३
३	७।१६।४१।१४	१।२५।५१	१०।२१।३९।१४	८। ४।४७।२६	७।२२।२०।४६	८।११।२२। ४	१। ८।५९। ३	९।१४।४१।४७	५।२३।४०	७। ९।३६
४	७।१७।४२। ४	२।१०।१०	१०।२२।१५।४२	८। ४।४३।२०	७।२२।३४।१९	८।१२।३६।४०	१। ८।५४।१३	९।१४।३८।३६	५।२३।४२	७। ९।३८
५	७।१८।४२।५६	२।२४। ३	१०।२२।५२।१७	८। ४।२८।३६	७।२२।४७।५२	८।१३।५१।१४	१। ८।४९।२४	९।१४।३५।२५	५।२३।४५	७। ९।४०
६	७।१९।४३।४८	३। ७।२९	१०।२३।२८।५९	८। ४। २।४५	७।२३। १।२६	८।१५। ५।४८	१। ८।४४।३६	९।१४।३२।१५	५।२३।४७	७। ९।४२
७	७।२०।४४।४२	३।२०।२९	१०।२४। ५।४७	८। ३।२५।३८	७।२३।१५। ०	८।१६।२०।२२	१। ८।३९।५०	९।१४।२९। ४	५।२३।५०	७। ९।४५
८	७।२१।४५।३७	४। ३। ५	१०।२४।४२।४१	८। २।३७।२५	७।२३।२८।३५	८।१७।३४।५५	१। ८।३५। ६	९।१४।२५।५३	५।२३।५२	७। ९।४७
९	७।२२।४६।३४	४।१५।२३	१०।२५।१९।४२	८ ।१।३८।४८	७।२३।४२। ९	८।१८।४९।२७	१। ८।३०।२४	९।१४।२२।४२	५।२३।५५	७। ९।४९
१०	७।२३।४७।३१	४।२७।२६	१०।२५।५६।४८	८। ०।३१। १	७।२३।५५।४३	८।२०। ३।५९	१ ८।२५।४३	९।१४।१९।३१	५।२३।५७	७। ९।५१
११	७।२४।४८।३०	५। ९।२१	१०।२६।३४। १	७।२९।१५।५०	७।२४। ९।१८	८।२१।१८।३०	१। ८।२१। ४	९।१४।१६।२१	५।२४। ०	७। ९।५४
१२	७।२५।४९।३०	५।२१।११	१०।२७।११।२०	७।२७।५५।३०	७।२४।२२।५३	८।२२।३३। १	१। ८।१६।२८	९।१४।१३।१०	५।२४। २	७। ९।५६
१३	७।२६।५०।३१	६। ३। ३	१०।२७।४८।४५	७।२६।३२।३९	७।२४।३६।२८	८।२३।४७।३१	१। ८।११।५८	९।१४। ९।५९	५।२४। ५	७। ९।५८
१४	७।२७।५१।३३	६।१४।५९	१०।२८।२६।१६	७।२५।१०। ७	७।२४।५०। ३	८।२५। २। ०	१। ८। ७।२८	९।१४। ६।४८	५।२४। ७	७।१० १
१५	७।२८।५२।३५	६।२७। ३	१०।२९। ३।५२	७।२३।५०।४०	७।२५। ३।३८	८।२६।१६।२७	१। ८। ३। १	९।१४। ३।३७	५।२४। ९	७।१०। ३
१६	७।२९।५३।३९	७। ९।१७	१०।२९।४१।३४	७।२२।३६।४८	७।२५।१७।१३	८।२७।३०।५४	१। ७।५८।३७	९।१४। ०।२७	५।२४।११	७।१०। ५
१७	८। ०।५४।४४	७।२१।२४	११। ०।१९।२०	७।२१।३०।४०	७।२५।३०।४९	८।२८।४५।२१	१। ७।५४।१७	९।१३।५७।१६	५।२४।१३	७।१०। ७
१८	८। १।५५।४९	८। ४।२१	११। ०।५७।१२	७।२०।३३।५०	७।२५।४४।२४	८।२९।५९।४७	१। ७।४९।५४	९।१३।५४। ५	५।२४।१५	७।१०। ९
१९	८। २।५६।५५	८।१७।१०	११। १।३५। ९	७।१९।४७।२१	७।२५।५७।५८	९। १।१४।१२	१। ७।४५।४३	९।१३।५०।५४	५।२४।१७	७।१०।११
२०	८। ३।५८। २	९। ०।१२	११। २।१३।११	७।१९।११।४५	७।२६।११।३१	९। २।२८।३६	१। ७।४१।३२	९।१३।४७।४३	५।२४।१९	७।१०।१४
२१	८। ४।५९। ९	९।१३।२५	११। २।५१।१७	७।१८।४७। ८	७।२६।२५। ४	९। ३।४२।५८	१। ७।३७।२६	९।१३।४४।३२	५।२४।२०	७।१०।१६
२२	८। ६। ०।१५	९।२६।५०	११। ३।२९।२८	७।१८।३३।१६	७।२६।३८।३६	९। ४।५७।१९	१। ७।३३।२४	९।१३।४१।२१	५।२४।२२	७।१०।१८
२३	८। ७। १।२३	१०।१०।२६	११। ४। ७।४३	७।१८।२९।३८	७।२६।५२। ७	९। ६।११।३९	१। ७।२९।२६	९।१३।३८।१०	५।२४।२४	७।१०।२०
२४	८। ८। २।३१	१०।२४।१३	११। ४।४६। २	७।१८।३५।३६	७।२७। ५।३७	९। ७।२५।५७	१। ७।२५।३३	९।१३।३४।५९	५।२४।२५	७।१०।२२
२५	८। ९। ३।३९	११। ८।१२	११। ५।२४।२५	७।१८।५०।२५	७।२७।१९। ६	९। ८।४०।१२	१। ७।२१।४४	९।१३।३१।४८	५।२४।२७	७।१०।२४
२६	८।१०। ४।४७	११।२२।२२	११। ६। २।५२	७।१९।१३।१७	७।२७।३२।३३	९। ९।५४।२७	१। ७।१८। ०	९।१३।२८।३८	५।२४।२८	७।१०।२६
२७	८।११। ५।५४	०। ६।४१	११। ६।४१।२२	७।१९।४३।२७	७।२७।४५।५९	९।११। ८।४०	१। ७।१४।२०	९।१३।२५।२७	५।२४।३०	७।१०।२८
२८	८।१२। ७। २	०।२१। ६	११। ७।१९।५५	७।२०।२०।१०	७।२७।५९।२४	९।१२।२२।५१	१। ७।१०।४५	९।१३।२२।१६	५।२४।३१	७।१०।३०
२९	८।१३। ८।१०	१। ५।३३	११। ७।५८।३२	७।२१। २।४२	७।२८।१२।४८	९।१३।३७। १	१। ७। ७।१५	९।१३।१९। ५	५।२४।३३	७।१०।३२
३०	८।१४। ९।१८	१।१९।५६	११। ८।३७।१२	७।२१।५०।२७	७।२८।२६। ८	९।१४।५१। ८	१। ७। ३।५०	९।१३।१५।५४	५।२४।३४	७।१०।३४
३१	८।१५।१०।२५	२। ४।१०	११। ९।१५।५४	७।२२।४२।५०	७।२८।३९।२८	९।१६। ५।१३	१। ७। ०।३०	९।१३।१२।४३	५।२४।३६	७।१०।३६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: ५घं. ३०मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा अं क

(१ जन. को अयनांश २३°।२८'।११", १ फर. को अयनांश २३°।२८'।१६", १ जन. को प्लूटो ५।८।३५, १ फर. को प्लूटो ५ रा. ८ अ. २२ क.)

तारीख सन् १९७२	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नव्च्यून रा. अं. क.
जन. १	८।१६।११।३४	२।१८।१०	११। ९।५४।३८	७।२३।३९।२०	७।२८।५२।४७	९।१७।१९।१६	११। ६।५७।१५	९।१३। ९।३२	५।२४।३७	७।१०।३८
२	८।१७।१२।४३	३। १।५०	११।१०।३३।२५	७।२४।३९।२७	७।२९। ६। ५	९।१८।३३।१७	११। ६।५४। ६	९।१३। ६।२१	५।२४।३८	७।१०।४०
३	८।१८।१३।५१	३।१५।१०	११।११।१२।१६	७।२५।४२।४६	७।२९।११।२१	९।१९।४७।१६	११। ६।५१। २	९।१३। ३।१०	५।२४।३९	७।१०।४२
४	८।१९।१५। ०	३।२८। ९	११।११।५१। ९	७।२६।४९। ०	७।२९।३२।३५	९।२१। १।१४	११। ६।४८। ३	९।१३। ०। ०	५।२४।४१	७।१०।४४
५	८।२०।१६। ९	४।१०।४७	११।१२।३०। ४	७।२७।५७।४६	७।२९।४५।४८	९।२२।१५।१०	११। ६।४५।१०	९।१२।५६।५०	५।२४।४२	७।१०।४५
६	८।२१।१७।१७	४।२३। ८	११।१३। ९। १	७।२९। ८।४७	७।२९।५८।५७	९।२३।२९। २	११। ६।४२।२२	९।१२।५३।३९	५।२४।४३	७।१०।४७
७	८।२२।१८।२६	५। ५।१५	११।१३।४८। १	८। ०।२१।५०	८। ०।१२। ५	९।२४।४२।५३	११। ६।३९।३९	९।१२।५०।२८	५।२४।४४	७।१०।४९
८	८।२३।१९।३५	५।१७।१२	११।१४।२७। ३	८। १।३६।४२	८। ०।२५।१०	९।२५।५६।४३	११। ६।३७। ३	९।१२।४७।१७	५।२४।४५	७।१०।५१
९	८।२४।२०।४४	५।२९। ५	११।१५। ६। ६	८। २।५३।१३	८। ०।३८।१३	९।२७।१०।२९	११। ६।३४।३३	९।१२।४४। ४	५।२४।४५	७।१०।५३
१०	८।२५।२१।५४	६।१०।५८	११।१५।४५।१४	८। ४।११।११	८। ०।५१।१५	९।२८।२४।१४	११। ६।३२। ९	९।१२।४०।५५	५।२४।४६	७।१०।५५
११	८।२६।२३। ३	६।२२।५५	११।१६।२४।२२	८। ५।३०।३१	८। १। ४।१४	९।२९।३७।५५	११। ६।२९।५२	९।१२।३७।४४	५।२४।४७	७।१०।५६
१२	८।२७।२४।११	७। ५। १	११।१७। ३।३२	८। ६।५१। २	८। १।१७।१९	१०। ०।५१।३३	११। ६।२७।३८	९।१२।३४।३३	५।२४।४८	७।१०।५८
१३	८।२८।२५।२१	७।१७।२०	११।१७।४२।४५	८। ८।१२।४१	८। १।३०। ४	१०। २। ५।१२	११। ६।२५।३२	९।१२।३१।२२	५।२४।४८	७।११। ०
१४	८।२९।२६।३०	७।२९।५४	११।१८।२२। ०	८। ९।३५।२२	८। १।४२।५४	१०। ३।१८।४६	११। ६।२३।३३	९।१२।२८।१२	५।२४।४९	७।११। २
१५	९। ०।२७।३९	८।१२।४५	११।१९। १।१६	८।१०।५९। ०	८। १।५५।४३	१०। ४।३२।१८	११। ६।२२।४०	९।१२।२५। १	५।२४।४९	७।११। ३
१६	९। १।२८।४८	८।२५।५४	११।१९।४०।३५	८।१२।२३।३२	८। २। ८।२९	१०। ५।४५।४७	११। ६।१९।५४	९।१२।२२।५०	५।२४।१०	७।११। ४
१७	९। २।२९।५५	९। ९।१८	११।२०।१९।५३	८।१३।४८।५२	८। २।२१।१२	१०। ६।५९।१३	११। ६।१८।१२	९।१२।१८।३९	५।२४।५०	७।११। ६
१८	९। ३।३१। ३	९।२२।५८	११।२०।५९।१५	८।१५।१५। ०	८। २।३३।४९	१०। ८।१२।३६	११। ६।१६।३९	९।१२।१५।२८	५।२४।५०	७।११। ७
१९	९। ४।३२। ९	१०। ६।५०	११।२१।३८।३९	८।१६।४२।५४	८। २।४६।२५	१०। ९।२५।५६	११। ६।१५।१२	९।१२।१२।१७	५।२४।५०	७।११। ९
२०	९। ५।३३।१६	१०।२०।५२	११।२२।१८। ४	८।१८। ९।३३	८। २।५८।५७	१०।१०।३९।१२	११। ६।१३।५१	९।१२। ९। ६	५।२४।५१	७।११।११
२१	९। ६।३४।२१	११। ५। ०	११।२२।५७।३०	८।१९।३७।५१	८। ३।११।२९	१०।११।५२।२५	११। ६।१२।३७	९।१२। ५।५५	५।२४।५१	७।११।१२
२२	९। ७।३५।२५	११।१९।११	११।२३।३६।५७	८।२१। ६।५०	८। ३।२३।५४	१०।१३। ५।३५	११। ६।११।३०	९।१२। २।४४	५।२४।५१	७।११।१४
२३	९। ८।३६।२९	०। ३।२४	११।२४।१६।२६	८।२२।३६।३१	८। ३।३६।१६	१०।१४।१८।३९	११। ६।१०।३०	९।११।५९।३४	५।२४।५१	७।११।१५
२४	९। ९।३७।३०	०।१७।३५	११।२४।५५।५४	८।२४। ६।५८	८। ३।४८।३३	१०।१५।३१।४१	११। ६। ९।३५	९।११।५६।२३	५।२४।५१	७।११।१६
२५	९।१०।३८।३१	१। १।४२	११।२५।३५।२३	८।२५।३७।४६	८। ४। ०।५०	१०।१६।४४।३९	११। ६। ८।४८	९।११।५३।१३	५।२४।५१	७।११।१७
२६	९।११।३९।३२	१।१५।४४	११।२६।१४।५५	८।२७। ९।२१	८। ४।१३। ०	१०।१७।५७।३३	११। ६। ८। ८	९।११।५०। २	५।२४।५०	७।११।१९
२७	९।१२।४०।३१	१।२९।३७	११।२६।५४।२७	८।२८।४१।३६	८। ४।२५। ८	१०।१९।१०।२२	११। ६। ७।३४	९।११।४६।५१	५।२४।५०	७।११।२०
२८	९।१३।४१।२९	२।१३।२१	११।२७।३३।५९	९। ०।१४।२९	८। ४।३७।११	१०।२०।२३। ७	११। ६। ७। ८	९।११।४३।४१	५।२४।५०	७।११।२२
२९	९।१४।४२।२५	२।२६।५३	११।२८।१३।३२	९। १।४८। १	८। ४।४९।१०	१०।२१।३५।४५	११। ६। ६।४८	९।११।४०।३०	५।२४।५०	७।११।२३
३०	९।१५।४३।२१	३।१०।११	११।२८।५३। ४	९। ३।२२।१३	८। ५। १। ५	१०।२२।४८।२२	११। ६। ६।३४	९।११।३७।१९	५।२४।४९	७।११।२४
३१	९।१६।४४।१६	३।२३।१४	११।२९।३२।३८	९। ४।५७। ६	८। ५।१२।५६	१०।२४। ०।५३	११। ६। ६।२८	९।११।३४। ८	५।२४।४९	७।११।२५
फर. १	९।१७।४५।१०	४। ६। २	०। ०।१२।१०	९। ६।३२।३८	८। ५।२४।४३	१०।२५।१३।२१	११। ६। ६।२८	९।११।३०।५८	५।२४।४९	७।११।२६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५घं० ३० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

रा. अं. क.
(१ मार्च को अयनांश २३°।२८′।२०″, प्लूटो ५ । ७। ४६)

तारीख सन् १९७२	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
फर. २	९।१८।४६। ४	४।१८।३५	०। ०।५१।४६	९। ८। ८।५१	८। ५।३६।२५	१०।२६।२५।४१	१। ६। ६।३६	९।११।२७।४७	५।२४।४८	७।११।२७
३	९।१९।४६।५६	५। ०।५४	०। १।३१।२१	९। ९।४५।४६	८। ५।४८। ३	१०।२७।३७।५८	१। ६। ६।५०	९।११।२४।३७	५।२४।४८	७।११।२८
४	९।२०।४७।४७	५।१३। १	०। २।१०।५५	९।११।२३।२५	८। ५।५९।३७	१०।२८।५०। ९	१। ६। ७।१०	९।११।२१।२६	५।२४।४७	७।११।२९
५	९।२१।४८।३६	५।२४।५९	०। २।५०।३०	९।१३। १।४७	८। ६।११। ३	११। ०। २।१४	१। ६। ७।३७	९।११।१८।१५	५।२४।४७	७।११।३१
६	९।२२।४९।२५	६। ६।५२	०। ३।३०। ५	९।१४।४०।५४	८। ६।२२।२७	११। १।१४।१६	१। ६। ८।११	९।११।१५। ४	५।२४।४६	७।११।३२
७	९।२३।५०।१४	६।१८।४५	०। ४। ९।४१	९।१६।२०।४६	८। ६।३३।४६	११। २।२६।११	१। ६। ८।५३	९।११।११।५३	५।२४।५४	७।११।३३
८	९।२४।५१। १	७। ०।४१	०। ४।४९।१७	९।१८। १।२६	८। ६।४५। १	११। ३।३८। ३	१। ६। ९।४१	९।११। ८।४२	५।२४।४४	७।११।३४
९	९।२५।५१।४८	७।१२।४६	०। ५।२८।५३	९।१९।४२।५३	८। ६।५६। ८	११। ४।४९।४८	१। ६।१०।३६	९।११। ५।३१	५।२४।४३	७।११।३५
१०	९।२६।५२।३३	७।२५। ५	०। ६। ८।२९	९।२१।२५। ७	८। ७। ७।१२	११। ६। १।२७	१। ६।११।३६	९।११। २।२०	५।२४।४२	७।११।३५
११	९।२७।५३।१७	८। ७।४१	०। ६।४८। ६	९।२३। ८।१०	८। ७।१८।११	११। ७।१३। १	१। ६।१२।४५	९।१०।५९। ९	५।२४।४१	७।११।३६
१२	९।२८।५४। १	८।२०।३७	०। ७।२७।४३	९।२४।५२। २	८। ७।२९। ४	११। ८।२४।२९	१। ६।१४। ०	९।१०।५५।५८	५।२४।४०	७।११।३७
१३	९।२९।५४।४३	९। ३।५६	०। ८। ७।२०	९।२६।३६।४६	८। ७।३९।५०	११। ९।३५।५१	१। ६।१५।२२	९।१०।५२।४८	५।२४।३९	७।११।३८
१४	१०। ०।५५।२४	९।१७।३७	०। ८।४६।५७	९।२८।२२।२०	८। ७।५०।३३	११।१०।४७। ६	१। ६।१६।५०	९।१०।४९।३७	५।२४।३८	७।११।३९
१५	१०। १।५६। ३	१०। १।४०	०। ९।२६।३४	१०। ०। ८।४३	८। ८। १। ८	११।११।५८।१७	१। ६।१८।२५	९।१०।४६।२६	५।२४।३६	७।११।४०
१६	१०। २।५६।४२	१०।१६। ०	०।१०। ६।१२	१०। १।५५।५६	८। ८।११।४०	११।१३। ९।२०	१। ६।२०। ७	९।१०।४३।१६	५।२४।३५	७।११।४१
१७	१०। ३।५७।१८	११। ०।३२	०।१०।४५।४९	१०। ३।४४। १	८। ८।२२। ४	११।१४।२०।१५	१। ६।२१।५५	९।१०।४०। ५	५।२४।३४	७।११।४१
१८	१०। ४।५७।५२	११।१५। ९	०।११।२५।२६	१०। ५।३२।५३	८। ८।३२।२२	११।१५।३१। ४	१। ६।२३।४९	९।१०।३६।५४	५।२४।३३	७।११।४२
१९	१०। ५।५८।२५	११।२९।४५	०।१२। ५। ४	१०। ७।२२।३३	८। ८।४२।३३	११।१६।४१।४७	१। ६।२५।५१	९।१०।३३।४३	५।२४।३१	७।११।४२
२०	१०। ६।५८।५६	०।१४।१४	०।१२।४४।४१	१०। ९।१२।५८	८। ८।५२।४०	११।१७।५२।२२	१। ६।२७।५९	९।१०।३०।३२	५।२४।३०	७।११।४३
२१	१०। ७।५९।२६	०।२८।३२	०।१३।२४।१८	१०।११। ४। ९	८। ९। २।४०	११।१९। २।४९	१। ६।३०।१३	९।१०।२७।२१	५।२४।२९	७।११।४३
२२	१०। ८।५९।५३	१।१२।३६	०।१४। ३।५४	१०।१२।५५।५७	८। ९।१२।३४	११।२०।१३। ९	१। ६।३२।३४	९।१०।२४।१०	५।२४।२८	७।११।४४
२३	१०।१०। ०।१९	१।२६।२४	०।१४।४३।३१	१०।१४।४८।२१	८। ९।२२।२०	११।२१।२३।२०	१। ६।३५। २	९।१०।२१। ०	५।२४।२६	७।११।४४
२४	१०।११। ०।४३	२। ९।५८	०।१५।२३। ६	१०।१६।४१।१६	८। ९।३२। ०	११।२२।३३।२४	१। ६।३७।३६	९।१०।१७।४९	५।२४।२४	७।११।४५
२५	१०।१२। १। ४	२।२३।१७	०।१६। २।४०	१०।१८।३४।३३	८। ९।४१।३३	११।२३।४३।१७	१। ६।४०।१४	९।१०।१४।३८	५।२४।२२	७।११।४५
२६	१०।१३। १।२४	३। ६।२३	०।१६।४२।१५	१०।२०।२८। २	८। ९।५१। ०	११।२४।५३। ३	१। ६।४३। ०	९।१०।११।२८	५।२४।२०	७।११।४५
२७	१०।१४। १।४२	३।१९।१७	०।१७।२१।४८	१०।२२।२१।३८	८।१०। ०।१९	११।२६। २।४०	१। ६।४५।५३	९।१०। ८।१७	५।२४।१८	७।११।४६
२८	१०।१५। १।५८	४। १।५९	०।१८। १।२२	१०।२४।१५। ८	८।१०। ९।३२	११।२७।१२। ७	१। ६।४८।५१	९।१०। ५। ७	५।२४।१६	७।११।४६
२९	१०।१६। २।१२	४।१४।३१	०।१८।४०।५४	१०।२६। ८।१५	८।१०।१८।३८	११।२८।२१।२६	१। ६।५१।५५	९।१०। १।५६	५।२४।१५	७।११।४६
मार्च १	१०।१७। २।२५	४।२६।५२	०।१९।२०।२६	१०।२८। ०।४६	८।१०।२७।३७	११।२९।३०।३४	१। ६।५५। ५	९। ९।५८।४५	५।२४।१३	७।११।४६
२	१०।१८। २।३५	५। ९। ३	०।१९।५९।५७	१०।२९।५२।२०	८।१०।३६।२८	०। ०।३९।३४	१। ६।५८।२१	९। ९।५५।३४	५।२४।११	७।११।४७
३	१०।१९। २।४५	५।२१। ६	०।२०।३९।२८	११। १।४२।३८	८।१०।४५।१२	०। १।४८।२३	१। ७। १।४३	९। ९।५२।२३	५।२४। ९	७।११।४७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(२८ मार्च को अयनांश २३° २८′ २२″,)

तारीख सन् १९७२	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
मार्च ४	१०।२०। २।५२	६। ३। ३	०।२१।१८।५७	११। ३।३१।१५	८।१०।५३।४९	०। २।५७। २	१। ७। ५।११	९। ९।४९।१३	५।२४। ८	७।११।४७
५	१०।२१। २।५८	६।१४।५६	०।२१।५८।२६	११। ५।१७।४६	८।११। २।१८	०। ४। ५।३१	१। ७। ८।४५	९। ९।४६। २	५।२४। ६	७।११।४७
६	१०।२२। ३। २	६।२६।४८	०।२२।३७।५५	११। ७। १।४३	८।११।१०।३९	०। ५।१३।४९	१। ७।१२।२४	९। ९।४२।५१	५।२४। ४	७।११।४७
७	१०।२३। ३। ४	७। ८।४३	०।२३।१७।२२	११। ८।४२।३६	८।११।१८।५४	०। ६।२१।५७	१। ७।१६। ९	९। ९।३९।४०	५।२४। २	७।११।४७
८	१०।२४। ३। ४	७।२०।४५	०।२३।५६।४९	११।१०।१९।५३	८।११।२७। ०	०। ७।२९।५३	१। ७।२०। ०	९। ९।३६।२९	५।२४। ०	७।११।४७
९	१०।२५। ३। ४	८। ३। ०	०।२४।३६।१५	११।११।५३। ४	८।११।३४।५७	०। ८।३७।३९	१। ७।२३।५६	९। ९।३३।१८	५।२३।५८	७।११।४७
१०	१०।२६। ३। १	८।१५।३१	०।२५।१५।४२	११।१३।२१।३७	८।११।४२।४७	०। ९।४५।१४	१। ७।२७।५८	९। ९।३०। ८	५।२३।५५	७।११।४७
११	१०।२७। २।५७	८।२८।२५	०।२५।५५। ८	११।१४।४४।५८	८।११।५०।२८	०।१०।५२।३६	१। ७।३२। ५	९। ९।२६।५७	५।२३।५३	७।११।४७
१२	१०।२८। २।५२	९।११।४४	०।२६।३४।३३	११।१६। २।३८	८।११।५८। ३	०।११।५९।४८	१। ७।३६।१८	९। ९।२३।४६	५।२३।५१	७।११।४७
१३	१०।२९। २।४४	९।२५।३०	०।२७।१३।५७	११।१७।१४। ६	८।१२। ५।२७	०।१३। ६।४६	१। ७।४०।३६	९। ९।२०।३५	५।२३।४९	७।११।४७
१४	११। ०। २।३५	१०। ९।४४	०।२७।५३।२१	११।१८।१८।५७	८।१२।१२।४४	०।१४।१३।३३	१। ७।४४।५९	९। ९।१७।२५	५।२३।४६	७।११।४६
१५	११। १। २।२३	१०।२४।२१	०।२८।३२।४२	११।१९।१६।४३	८।१२।१९।५१	०।१५।२०। ५	१। ७।४९।२७	९। ९।१४।१४	५।२३।४४	७।११।४६
१६	११। २। २।१०	११। ९।१६	०।२९।१२। ४	११।२०। ७। ६	८।१२।२६।४९	०।१६।२६।२५	१। ७।५४। १	९। ९।११। ३	५।२३।४२	७।११।४६
१७	११। ३। १।५५	११।२४।१९	०।२९।५१।२७	११।२०।४९।४६	८।१२।३३।४०	०।१७।३२।३२	१। ७।५८।४०	९। ९। ७।५२	५।२३।३९	७।११।४६

विदेशी स्टैं० टा० के ग्रह कैसे स्पष्ट करें ?

किसी भारतीय पञ्चाङ्ग द्वारा विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने हों तो पहिले विदेशीय स्टैं. टा. को भा. स्टैं. टा. में बदलें, और बाद में पृ. ६६ पर दी गई पद्धति के अनुसार लघुरिक्थ कोष्ठक की सहायता से उस भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट कर लें—बस यही विदेशी स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रह होंगे। विदेशी स्टैं. टा. को स्वदेशी (भा. स्टैं. टा.) में बदलने के लिए दाईं ओर सारणी में विभिन्न देशों के स्टैं. टा. एवं भारतीय स्टैं. टा. का अन्तर घन्टा मिनटों में —या + चिह्न के साथ दिया गया है। इन घन्टा मिनटों को चिह्न के अनुसार अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में जोड़ने या घटाने से भा.स्टैं.टा. बन जाएगा। (—यह चिह्न घटाने और + यह चिह्न जोड़ने की क्रिया को बतलाता है।)

उदाहरण—१५ जून १९७० को बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ९ बज कर ३७ मिनट पर रंगून (बर्मा) में कोई बच्चा पैदा हुआ। इस समय श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह स्पष्ट करने हैं। सारणी में बर्मा के आगे बर्मा के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर —१ घं. ० मि. लिखा है। अतः अभीष्ट बर्मा स्टैं. टा. ९ घं. ३७ मि. में से चिह्न के अनुसार १ घं. ० मि. घटाने पर ८ घं. ३७ मि. प्राप्त हुआ, जो कि रंगून में उस बच्चे के पैदा होने का भा. स्टैं. टा. है। अर्थात् वह बच्चा रंगून में बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार तो प्रातः ९ घं. ३७ मि. पर पैदा हुआ है, परन्तु उस समय भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ३७ मिनट हुए हैं। अब पृष्ठ ६५ पर बतलाई गई इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने की विधि से १५ जून १९७० को प्रातः ८ घं. ३७ मि. के ग्रह स्पष्ट कर लें। ये उस बच्चे के जन्म-कालिक स्पष्ट ग्रह हो जायेंगे।

नीचे सारणी में कुछ देशों के स्टैं. टा. का भा.स्टैं.टा. से अन्तर घ. मि. में दिया जा रहा है—

देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+१।०	इराक	+२।३०	सीलोन	०।०
प. पाकिस्तान	+०।३०	ईरान	+२।०	नेपाल	०।०
पू. पाकिस्तान	—०।३०	इथोपिया	+२।३०	इटली	+४।३०
बर्मा	—१।०	कुवैत	+२।३०	जर्मनी	+४।३०
मलाया	—२।०	कैनिया } पू. अफ्रीका }	+२।३०	हांगकांग	—२।३०
न्यूजीलैण्ड	—६।३०	टांगानिका } पू. अफ्रीका }	+२।३०	जापान	—३।३०
अदन	+२।३०	यूगांडा } पू. अफ्रीका }	+२।३०	स्विट्जरलैंड	+४।३०
टर्की	+३।३०	मिश्र	+३।३०	इंगलैंड	+५।३०
				फ्रांस	+४।३०

नोट—आगे पृ. ९९ पर अक्षांशादि सारणीमें भी अमेरिका रूस आदि के प्रसिद्ध कुछ शहरों के स्टैं.टा. का भा.स्टैं.टा.से अन्तर दिया गया है, उसे यहाँ चिह्न बदलकर लेना चाहिए।

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५घं० ३० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

रा. अं. क.
(१ मार्च को अयनांश २३°।२८'।२०", प्लटो ५।७।४६)

तारीख सन् १९७२	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.
फर. २	९।१८।४६।४	४।१८।३५	०।०।५१।४६	९।८।८।५१	८।५।३६।२५	१०।२६।२५।४१	१।६।६।३६	९।११।२७।४७	५।२४।४८	७।११।२७
३	९।१९।४६।५६	५।०।५४	०।१।३३।२१	९।९।४५।४६	८।५।४८।३	१०।२७।३७।५८	१।६।६।५०	९।११।२४।३७	५।२४।४८	७।११।२८
४	९।२०।४७।४७	५।१३।१	०।२।१०।५५	९।११।२३।२५	८।५।५९।३७	१०।२८।५०।९	१।६।७।१०	९।११।२१।२६	५।२४।४७	७।११।२९
५	९।२१।४८।३६	५।२४।५९	०।२।५०।३०	९।१३।१।४७	८।६।११।३	११।०।२।१४	१।६।७।३७	९।११।१८।१५	५।२४।४७	७।११।३१
६	९।२२।४९।२५	६।६।५२	०।३।३०।५	९।१४।४०।५४	८।६।२२।२७	११।१।१४।१६	१।६।८।११	९।११।१५।४	५।२४।४६	७।११।३२
७	९।२३।५०।१४	६।१८।४५	०।४।९।४१	९।१६।२०।४६	८।६।३३।४६	११।२।२६।११	१।६।८।५३	९।११।११।५३	५।२४।५४	७।११।३३
८	९।२४।५१।१	७।०।४१	०।४।४९।१७	९।१८।१।२६	८।६।४५।१	११।३।३८।३	१।६।९।४१	९।११।८।४२	५।२४।४४	७।११।३४
९	९।२५।५१।४८	७।१२।४६	०।५।२८।५३	९।१९।४२।५३	८।६।५६।८	११।४।४९।४८	१।६।१०।३६	९।११।५।३१	५।२४।४३	७।११।३५
१०	९।२६।५२।३३	७।२५।५	०।६।८।२९	९।२१।२५।७	८।७।७।१२	११।६।१।२७	१।६।११।३६	९।११।२।२०	५।२४।४२	७।११।३५
११	९।२७।५३।१७	८।७।४१	०।६।४८।६	९।२३।८।१०	८।७।१८।११	११।७।१३।१	१।६।१२।४५	९।१०।५९।९	५।२४।४१	७।११।३६
१२	९।२८।५४।१	८।२०।३७	०।७।२७।४३	९।२४।५२।२	८।७।२९।४	११।८।२४।२९	१।६।१४।०	९।१०।५५।५८	५।२४।४०	७।११।३७
१३	९।२९।५४।४३	९।३।५६	०।८।७।२०	९।२६।३६।४६	८।७।३९।५०	११।९।३५।५१	१।६।१५।२२	९।१०।५२।४८	५।२४।३९	७।११।३८
१४	१०।०।५५।२४	९।१७।३७	०।८।४६।५७	९।२८।२२।२०	८।७।५०।३३	११।१०।४७।६	१।६।१६।५०	९।१०।४९।३७	५।२४।३८	७।११।३९
१५	१०।१।५६।३	१०।१।४०	०।९।२६।३४	१०।०।८।४३	८।८।१।८	११।११।५८।१७	१।६।१८।२५	९।१०।४६।२६	५।२४।३६	७।११।४०
१६	१०।२।५६।४२	१०।१६।०	०।१०।६।१२	१०।१।५५।५६	८।८।११।४०	११।१३।९।२०	१।६।२०।७	९।१०।४३।१६	५।२४।३५	७।११।४१
१७	१०।३।५७।१८	११।०।३२	०।१०।४५।४९	१०।३।४४।१	८।८।२२।४	११।१४।२०।१५	१।६।२१।५५	९।१०।४०।५	५।२४।३४	७।११।४१
१८	१०।४।५७।५२	११।१५।९	०।११।२५।२६	१०।५।३२।५३	८।८।३२।२२	११।१५।३१।४	१।६।२३।४९	९।१०।३६।५४	५।२४।३३	७।११।४२
१९	१०।५।५८।२५	११।२९।४५	०।१२।५।४	१०।७।२२।३३	८।८।४२।३३	११।१६।४१।४७	१।६।२५।५१	९।१०।३३।४३	५।२४।३१	७।११।४२
२०	१०।६।५८।५६	०।१४।१४	०।१२।४४।४१	१०।९।१२।५८	८।८।५२।४०	११।१७।५२।२२	१।६।२७।५९	९।१०।३०।३२	५।२४।३०	७।११।४३
२१	१०।७।५९।२६	०।२८।३२	०।१३।२४।१८	१०।११।४।९	८।९।२।४०	११।१९।२।४९	१।६।३०।१३	९।१०।२७।२१	५।२४।२९	७।११।४३
२२	१०।८।५९।५३	१।१२।३६	०।१४।३।५४	१०।१२।५५।५७	८।९।१२।३४	११।२०।१३।९	१।६।३२।३४	९।१०।२४।१०	५।२४।२८	७।११।४४
२३	१०।१०।०।१९	१।२६।२४	०।१४।४३।३१	१०।१४।४८।२१	८।९।२२।२०	११।२१।२३।२०	१।६।३५।२	९।१०।२१।०	५।२४।२६	७।११।४४
२४	१०।११।०।४३	२।९।५८	०।१५।२३।६	१०।१६।४१।१६	८।९।३२।०	११।२२।३३।२४	१।६।३७।३६	९।१०।१७।४९	५।२४।२४	७।११।४५
२५	१०।१२।१।४	२।२३।१७	०।१६।२।४०	१०।१८।३४।३३	८।९।४१।३३	११।२३।४३।१७	१।६।४०।१४	९।१०।१४।३८	५।२४।२२	७।११।४५
२६	१०।१३।१।२४	३।६।२३	०।१६।४२।१५	१०।२०।२८।२	८।९।५१।०	११।२४।५३।३	१।६।४३।०	९।१०।११।२८	५।२४।२०	७।११।४५
२७	१०।१४।१।४२	३।१९।१७	०।१७।२१।४८	१०।२२।२१।३८	८।१०।०।१९	११।२६।२।४०	१।६।४५।५३	९।१०।८।१७	५।२४।१८	७।११।४६
२८	१०।१५।१।५८	४।१।५९	०।१८।१।२२	१०।२४।१५।८	८।१०।९।३२	११।२७।१२।७	१।६।४८।५१	९।१०।५।७	५।२४।१६	७।११।४६
२९	१०।१६।२।१२	४।१४।३१	०।१८।४०।५४	१०।२६।८।१५	८।१०।१८।३८	११।२८।२१।२६	१।६।५१।५५	९।१०।१।५६	५।२४।१५	७।११।४६
मार्च १	१०।१७।२।२५	४।२६।५२	०।१९।२०।२६	१०।२८।०।४६	८।१०।२७।३७	११।२९।३०।३४	१।६।५५।५	९।९।५८।४५	५।२४।१३	७।११।४६
२	१०।१८।२।३५	५।९।३	०।१९।५९।५७	१०।२९।५२।२०	८।१०।३६।२८	०।०।३९।३४	१।६।५८।२१	९।९।५५।३४	५।२४।११	७।११।४७
३	१०।१९।२।४५	५।२१।६	०।२०।३९।२८	११।१।४२।३८	८।१०।४५।१२	०।१।४८।२३	१।७।१।४३	९।९।५२।२३	५।२४।९	७।११।४७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३०मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(२८ मार्च को अयनांश २३°। २८।२२″)

तारीख सन् १९७२	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं.क. वि.	यूरेनस रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं.क.
मार्च ४	१०।२०। २।५२	६। ३। ३	०।२२।१८।५७	११। ३।३१।१५	८।१०।५३।४९	०। २।५७। २	१। ७। ५।११	९। ९।४९।१३	५।२४। ८	७।११।४७
५	१०।२१। २।५८	६।१४।५६	०।२२।५८।२६	११। ५।१७।४६	८।११। २।१८	०। ४। ५।३१	१। ७। ८।४५	९। ९।४६। २	५।२४। ६	७।११।४७
६	१०।२२। ३। २	६।२६।४८	०।२३।३७।५५	११। ७। १।४३	८।११।१०।३९	०। ५।१३।४९	१। ७।१२।२४	९। ९।४२।५१	५।२४। ४	७।११।४७
७	१०।२३। ३। ४	७। ८।४३	०।२३।१७।२२	११। ८।४२।३६	८।११।१८।५४	०। ६।२१।५७	१। ७।१६। ९	९। ९।३९।४०	५।२४। २	७।११।४७
८	१०।२४। ३। ४	७।२०।४५	०।२३।५६।४९	११।१०।१९।५३	८।११।२७। ०	०। ७।२९।५३	१। ७।२०। ०	९। ९।३६।२९	५।२४। ०	७।११।४७
९	१०।२५। ३। ४	८। ३। ०	०।२४।३६।१५	११।११।५३। ४	८।११।३४।५७	०। ८।३७।३९	१। ७।२३।५६	९। ९।३३।१८	५।२३।५८	७।११।४७
१०	१०।२६। ३। १	८।१५।३१	०।२५।१५।४२	११।१३।२१।३७	८।११।४२।४७	०। ९।४५।१४	१। ७।२७।५८	९। ९।३०। ८	५।२३।५५	७।११।४७
११	१०।२७। २।५७	८।२८।२५	०।२५।५५। ८	११।१४।४४।५८	८।११।५०।२८	०।१०।५२।३६	१। ७।३२। ५	९। ९।२६।५७	५।२३।५३	७।११।४७
१२	१०।२८। २।५२	९।११।४४	०।२६।३४।३३	११।१६। २।३८	८।११।५८। ३	०।११।५९।४८	१। ७।३६।१८	९। ९।२३।४६	५।२३।५१	७।११।४७
१३	१०।२९। २।४४	९।२५।३०	०।२७।१३।५७	११।१७।१४। ६	८।१२। ५।२७	०।१३। ६।४६	१। ७।४०।३६	९। ९।२०।३५	५।२३।४९	७।११।४७
१४	११। ०। २।३५	१०। ९।४४	०।२७।५३।२१	११।१८।१८।५७	८।१२।१२।४४	०।१४।१३।३३	१। ७।४४।५९	९। ९।१७।२५	५।२३।४६	७।११।४६
१५	११। १। २।२३	१०।२४।२१	०।२८।३२।४२	११।१९।१६।४३	८।१२।१९।५१	०।१५।२०। ५	१। ७।४९।२७	९। ९।१४।१४	५।२३।४४	७।११।४६
१६	११। २। २।१०	११। ९।१६	०।२९।१२। ४	११।२०। ७। ६	८।१२।२६।४९	०।१६।२६।२५	१। ७।५४। १	९। ९।११। ३	५।२३।४२	७।११।४६
१७	११। ३। १।५५	११।२४।१९	०।२९।५१।२७	११।२०।४९।४६	८।१२।३३।४०	०।१७।३२।३२	१। ७।५८।४०	९। ९। ७।५२	५।२३।३९	७।११।४६

(९७)

विदेशा स्टैं०टा० के ग्रह कैसे स्पष्ट करें ?

किसी भारतीय पञ्चाङ्ग द्वारा विदेशी स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट करने हों तो पहिले विदेशीय स्टैं. टा. को भा. स्टैं. टा. में बदलें, और बाद में पृ. ६६ पर दी गई पद्धति के अनुसार लघुरिक्थ कोष्ठक की सहायता से उस भा. स्टैं. टा. के ग्रह स्पष्ट कर लें—बस यही विदेशी स्टैं. टा. के स्पष्ट ग्रह होंगे। विदेशी स्टैं. टा. को स्वदेशी (भा. स्टैं. टा.) में बदलने के लिए दाईं ओर सारणी में विभिन्न देशों के स्टैं. टा. एवं भारतीय स्टैं. टा. का अन्तर घन्टा मिनटों में —या + चिह्न के साथ दिया गया है। इन घन्टा मिनटों को चिह्न के अनुसार अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में जोड़ने या घटाने से भा.स्टैं.टा. बन जाएगा। (—यह चिह्न घटाने और + यह चिह्न जोड़ने की क्रिया को बतलाता है।)

उदाहरण—१५ जून १९७० को बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ९ बज कर ३७ मिनट पर रंगून (बर्मा) में कोई बच्चा पैदा हुआ। इस समय श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह स्पष्ट करने हैं। सारणी में बर्मा के आगे बर्मा के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर —१ घं. ० मि. लिखा है। अतः अभीष्ट बर्मा स्टैं. टा. ९ घं. ३७ मि. में से चिह्न के अनुसार १ घं. ० मि. घटाने पर ८ घं. ३७ मि. प्राप्त हुआ, जो कि रंगून में उस बच्चे के पैदा होने का भा. स्टैं. टा. है। अर्थात् वह बच्चा रंगून में बर्मा स्टैं. टा. के अनुसार तो प्रातः ९ घं. ३७ मि. पर पैदा हुआ है, परन्तु उस समय भा. स्टैं. टा. के अनुसार प्रातः ८ बजकर ३७ मिनट हुए हैं। अब पृष्ठ ६५ पर बतलाई गई इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने की विधि से १५ जून १९७० को प्रातः ८ घं. ३७ मि. के ग्रह स्पष्ट कर लें। ये उस बच्चे के जन्म-कालिक स्पष्ट ग्रह हो जायंगे।

नीचे सारणी में कुछ देशों के स्टैं. टा. का भा.स्टैं.टा. से अन्तर घ. मि. में दिया जा रहा है—

देश	देशीय स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं. टा. का भा.स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.	देश	देशीय स्टैं.टा. का भा.स्टैं.टा. से अन्तर घं. मि.
अफगानिस्तान	+१।०	इराक	+२।३०	सीलोन	०।०
प. पाकिस्तान	+०।३०	ईरान	+२।०	नेपाल	०।०
पू. पाकिस्तान	—०।३०	इथोपिया	+२।३०	इटली	+४।३०
बर्मा	—१।०	कुवैत	+२।३०	जर्मनी	+४।३०
मलाया	—२।०	केनिया } पू. अफ्रीका	+२।३०	हांगकांग	—२।३०
न्यूजीलैण्ड	—६।३०	टांगानिका } पू. अफ्रीका	+२।३०	जापान	—३।३०
अदन	+२।३०	यूगांडा] पू. अफ्रीका	+२।३०	स्विट्जरलैंड	+४।३०
				इंगलैण्ड	+५।३०
टर्की	+३।३०	मिश्र	+३।३०	फ्रांस	+४।३०

नोट—आगे पृ. ९९ पर अक्षांशादि सारणीमें भी अमेरिका रूस आदि के प्रसिद्ध कुछ शहरों के स्टैं.टा. का भा.स्टैं.टा.से अन्तर दिया गया है, उसे यहां चिह्न बदलकर लेना चाहिए।

ता-	मार्च (१९७१)		
२७	+२।१५	+६।४३	+३।४१
२८	२।३९	१३।२०	४।३०
२९	३। २	१९। ४	५। ०
३०	३।२६	२३।३१	५। ९
३१	३।४९	२६।२५	४।५९

(+उत्तर)

सूर्य एवं चन्द्र की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.)

(–दक्षिण)

(वि. सं. २०२८)

तारीख	अप्रैल (१९७१) सू. क्रा. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च. श. अं. क.	मई सु. क्रां. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च. श. अं. क.	जून सु. क्रां. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च. श. अं. क.
१	+४।१२	+२७।३९	+४।३२	+१४।४९	+२३।१४	+२। ८	+२१।५६	+६।११	–१।५७
२	४।३६	२७।१५	३।५२	१५। ७	१९।२९	१। ६	२२। ४	+०।४६	२।५२
३	४।५९	२५।२५	३। १	१५।२५	१५। ०	+०। २	२२।१२	–४।३९	३।४०
४	५।२२	२२।२३	२। ३	१५।४३	१०। १	–१। १	२२।२०	९।५६	४।१९
५	५।४५	१८।२७	+१। १	१६। ०	+४।४३	२। ०	२२।२७	१४।५५	४।४६
६	६। ७	१३।४९	–०। ३	१६।१७	–०।४३	२।५५	२२।३४	१९।२३	५। १
७	६।३०	८।४४	१। ६	१६।३४	६। ८	३।४१	२२।४०	२३। ६	५। २
८	६।५३	+३।२२	२। ६	१६।५१	११।२३	४।१९	२२।४६	२५।४७	४।४९
९	७।१५	–२। ७	३। ०	१७। ७	१६।१६	४।४५	२२।५२	२७।१०	४।२०
१०	७।३७	७।३२	३।४७	१७।२३	२०।३३	४।५८	२२।५७	२७। ४	३।३७
११	८। ०	१२।४४	४।२४	१७।३९	२४। १	४।५८	२३। १	२५।२२	२।४१
१२	८।२२	१७।३०	४।५०	१७।५५	२६।२१	४।४३	२३। ६	२२।११	१।३६
१३	८।४४	२१।३७	५। २	१८।१०	२७।२२	४।१३	२३।१०	१७।४४	–०।२३
१४	९। ६	२४।४९	५। १	१८।२५	२६।५२	३।३०	२३।१३	१२।१७	+०।५१
१५	९।२७	२६।५२	४।४५	१८।४०	२४।५१	२।३५	२३।१६	–६।१०	२। ३
१६	९।४९	२७।३४	४।१५	१८।५४	२१।२५	१।३०	२३।१९	+०।१६	३। ८
१७	१०।१०	२६।४६	३।३१	१९। ८	१६।४६	–०।१९	२३।२१	६।४४	४। २
१८	१०।३१	२४।२६	२।३५	१९।२१	११।११	+०।५४	२३।२३	१२।५२	४।४१
१९	१०।५२	२०।४०	१।२९	१९।३५	–४।५६	२। ५	२३।२५	१८।२०	५। ३
२०	११।१३	१५।४१	–०।१६	१९।४८	+१।४०	३। ९	२३।२६	२२।४५	५। ६
२१	११।३४	९।४४	+०।५९	२०। ०	८।१३	४। २	२३।२६	२५।४८	४।५१
२२	११।५४	–३। ८	२।१३	२०।१३	१४।२३	४।४०	२३।२७	२७।१३	४।१८
२३	१२।१४	+३।४४	३।१८	२०।२५	१९।४५	४।५९	२३।२६	२६।५७	३।३२
२४	१२।३४	१०।२७	४।११	२०।३६	२३।५३	४।५९	२३।२६	२५। ७	२।३४
२५	१२।५४	१६।३४	४।४६	२०।४८	२६।२९	४।३९	२३।२५	२१।५९	१।३०
२६	१३।१४	२१।३७	५। १	२०।५८	२७।२१	४। ४	२३।२३	१७।५१	+०।२२
२७	१३।३३	२५।१४	४।५६	२१। ९	२६।३०	३।१५	२३।२२	१३। २	–०।४५
२८	१३।५३	२७।१०	४।३३	२१।१९	२४।११	२।१७	२३।१९	७।४९	१।४९
२९	१४।१२	२७।२२	३।५५	२१।२९	२०।४१	१।१४	२३।१७	+२।२४	२।४७
३०	+१४।३०	२५।५८	+३। ६	२१।३८	१६।२१	+०। ८	+२३।१४	–३। ३	–३।३८
३१				+२१।४६	११।२६	–०।५६			

तारीख	जुलाई सू. क्रां. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च. श. अं.क.	अगस्त सू. क्रा. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च.श. अं.क.	सितम्बर सू. क्रां. अं. क.	च. क्रां. अं. क.	च. श. अं. क.
१	+२३।१०	–८।२३	–४।१९	+१८।१५	–२४। ९	–५।११	+८।३६	–२५।४०	–२।४८
२	२३। ६	१३।२७	४।४९	१८। ०	२६।२६	४।५१	८।१४	२२।३७	१।४०
३	२३। २	१८। ४	५। ७	१७।४४	२७।२३	४।१६	७।५३	१८। ८	–०।२४
४	२२।५७	२२। १	५।११	१७।२९	२६।४८	३।२६	७।३१	१२।२८	+०।५५
५	२२।५२	२५। ३	५। १	१७।१३	२४।३७	२।२३	७। ९	–५।५९	२।१३
६	२२।४७	२६।५४	४।३६	१६।५७	२०।५२	–१।१०	६।४६	+०।५४	३।२२
७	२२।४१	२७।१८	३।५५	१६।४०	१५।४९	+०।१०	६।२४	७।४५	४।१७
८	२२।३५	२६। ६	३। ०	१६।२४	९।४७	१।२९	६। २	१४। ६	४।५४
९	२२।२८	२३।१८	१।५४	१६। ७	–३।१०	२।४४	५।३९	१९।३३	५।११
१०	२२।२१	१९। ५	–०।४०	१५।५०	+३।३७	३।४८	५।१७	२३।४२	५। ८
११	२२।१३	१३।४४	+०।३८	१५।३२	१०। ८	४।३६	४।५४	२६।२०	४।४६
१२	२२। ६	७।३७	१।५४	१५।१४	१६। ३	५। ६	४।३१	२७।१८	४। ८
१३	२१।५८	–१। ७	३। ३	१४।५६	२०।५९	५।१७	४। ८	२६।४०	३।१८
१४	२१।४९	+५।२६	४। ०	१४।३८	२४।३८	५। ९	३।४५	२४।३६	२।२०
१५	२१।४०	११।४१	४।४३	१४।२०	२६।४८	४।४३	३।२२	२१।२०	१।१५
१६	२१।३१	१७।१६	५। ८	१४। १	२७।२३	४। ३	२।५९	१७।११	+०। ९
१७	२१।२१	२१।५३	५।१४	१३।४२	२६।२३	३।१०	२।३६	१२।२३	–०।५७
१८	२१।११	२५।१४	५। ३	१३।२३	२४। ०	२। ९	२।१३	७।११	२। ०
१९	२१। १	२७। ३	४।३४	१३। ४	२०।२९	+१। ३	१।५०	+१।४६	२।५६
२०	२०।५०	२७।१५	३।५०	१२।४४	१६। ५	–०। ५	१।२६	–३।४०	३।४५
२१	२०।३९	२५।५३	२।५४	१२।२५	११। ६	१।१३	१। २	८।५७	४।२३
२२	२०।२७	२३। ८	१।५१	१२। ५	५।४६	२।१६	०।४०	१३।५४	४।५०
२३	२०।१५	१९।१८	+०।४३	११।४५	+०।१७	३।१२	+०।१६	१८।२२	५। ५
२४	२०। ३	१४।४०	–०।२६	११।२४	–५। ९	३।५९	–०। ७	२२। ७	५। ६
२५	१९।५१	९।३२	१।३२	११। ४	१०।२३	४।३६	०।३०	२४।५८	४।५४
२६	१९।३८	+४। ७	२।३४	१०।४३	१५।१५	५। १	०।५४	२६।४३	४।२९
२७	१९।२५	–१।२२	३।२८	१०।२३	१९।३४	५।१४	१।१७	२७।११	३।५०
२८	१९।११	६।४६	४।१२	१०। २	२३। ८	५।१३	१।४१	२६।१३	३। ०
२९	१८।५८	११।५५	४।४६	९।४०	२५।४५	४।५७	२। ४	२३।४८	१।५८
३०	१८।४४	१६।४०	५। ८	९।१९	२७।१०	४।२८	–२।२७	–२०। ०	–०।४८
३१	+१८।२९	–२०।४८	–५।१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]			

(+उत्तर) (–दक्षिण)

(+उत्तर) (-दक्षिण)

सूर्य एवं चन्द्र की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.)

(सं० २०२८)

ता.	अक्तूबर (१९७१)			नवम्बर			दिसम्बर			जनवरी (१९७२)			फरवरी			मार्च		
	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.	सू. क्रां. अं. क.	चं. क्रां. अं. क.	चं. श. अं. क.
१	-२।५१	-१४।५७	०।२७	-१४। ९	+८।२३	+४।२२	-२१।४०	+२२।२७	+४।५६	-२३। ६	+२१। २	+२। ६	-१७।२५	+९।३७	-२।१०	-७।३८	+०।२६	-३।४२
२	३।१४	८।५५	१।४३	१४।२८	१४।३३	४।५१	२१।५०	२५।२३	४।२३	२३। १	२१।५८	+०।५१	१७। ८	+४। ७	३।१०	७।१५	-५। १	४।२२
३	३।३७	-२।१५	२।५३	१४।४७	२०। २	५। ०	२१।५९	२६।४५	३।४५	२२।५८	१७।४८	-०।१८	१६।५१	-१।२७	४। ०	६।५२	१०।१३	४।५१
४	४। ०	+४।३९	३।५३	१५। ६	२४। ३	४।४७	२२। ७	२६।१०	२।४७	२२।५०	१२।५४	१।२९	१६।३३	६।४९	४।३८	६।२९	१४।५९	५। ६
५	४।२४	११।२१	४।३७	१५।२५	२६।२२	४।१५	२२।१५	२३।५७	१।४०	२२।४४	७।३५	२।३३	१६।१५	११।५४	५। ३	६। ६	१९।१०	५। ९
६	४।४७	१७।२०	५। १	१५।४४	२६।५१	३।२८	२२।२३	२०।२६	+०।३०	२२।३८	+२। ५	३।२८	१५।५७	१६।३०	५।१५	५।४२	२२।३५	४।५८
७	५।१०	२२। ९	५। ३	१६। १	२५।३५	२।२९	२२।३१	१६। १	-०।४०	२२।३१	-३।२२	४।१३	१५।३९	२०।२९	५।१४	५।१९	२५। ४	४।३४
८	५।३३	२५।२६	४।४५	१६।१९	२२।५३	१।२५	२२।३८	११। १	१।४६	२२।२३	८।३७	४।४७	१५।२०	२३।३९	४।५९	४।५६	२६।२७	३।५८
९	५।५६	२६।५९	४।१०	१६।३६	१९। ६	+०।१८	२२।४४	५।४३	२।४५	२२।१५	१३।३२	५। ८	१५। २	२५।४८	४।३१	४।३२	२६।३४	३।१०
१०	६।१८	२६।४८	३।२१	१६।५४	१४।३३	-०।४८	२२।५०	+०।१८	३।३६	२२। ७	१७।५७	५।१५	१४।४२	२६।४६	३।५०	४। ९	२५।२०	२।१२
११	६।४१	२५। ३	२।२३	१७।११	९।३२	१।५०	२२।५६	-५। २	४।१६	२१।५८	२१।४१	५।१०	१४।२३	२६।२४	२।५७	३।४५	२२।४६	-१। ७
१२	७। ४	२२। ३	१।२०	१७।२७	+४।१५	२।४७	२३। १	११।१०	४।४६	२१।४९	२४।३३	४।५०	१४। ३	२४।३५	१।५४	३।२२	१८।५४	+०। ५
१३	७।२६	१८। ५	-०।१४	१७।४४	-१। ७	३।३५	२३। ५	१४।५६	५। ३	२१।४०	२६।१९	४।१७	१३।४४	२१।२३	-०।४३	२।५८	१३।५४	१।१८
१४	७।४९	१३।२६	-०।५१	१८। ०	६।२४	४।१४	२३।१०	१९।१०	४। ८	२१।३०	२६।४८	३।३१	१३।२४	१६।५६	+०।३२	२।३४	८। १	२।२९
१५	८।११	८।२१	१।५२	१८।१६	११।२८	४।४१	२३।१३	२२।४०	४।५८	२१।१९	२५।५१	२।३४	१३। ३	११।२७	१।४७	२।११	-१।३४	३।३२
१६	८।३४	+३। २	२।४८	१८।३१	१६। ८	४।५७	२३।१७	२५।१२	४।३५	२१। ९	२३।२८	१।२७	१२।४३	-५।१७	२।५७	१।४७	+५। ५	४।२२
१७	८।५६	-२।२१	३।३६	१८।४६	२०।१२	५। ०	२३।१९	२६।३५	३।५९	२०।५७	१९।४६	-०।१३	१२।२२	+१।१४	३।५७	-१।२३	+११।३०	+४।५४
१८	९।१८	७।३९	४।१४	१९। १	२३।२९	४।४९	२३।२२	२६।३६	३।१०	२०।४६	१४।५६	+१। २	१२। १	७।४३	४।४१			
१९	९।४०	१२।४०	४।४२	१९।१५	२५।४३	४।२५	२३।२४	२५।१२	२।११	२०।३४	९।१६	२।१५	११।४०	१३।४७	५। ७			
२०	१०। १	१७।१४	४।५७	१९।३०	२६।४५	३।४७	२३।२५	२२।२६	-०। ५	२०।२१	-३। ५	३।२०	११।१९	१९। १	५।१४			
२१	१०।२३	२१। ९	४।५९	१९।४३	२६।२६	३। ०	२३।२६	१८।२७	+०। ७	२०। ९	+३।१७	४।१४	१०।५७	२३। ६	५। ०			
२२	१०।४४	२४।१३	४।४८	१९।५७	२४।४४	२। २	२३।२७	१३।२८	१।१९	१९।५७	९।३०	४।५३	१०।३६	२५।४४	४।२९			
२३	११। ६	२६।१२	४।२४	२०।१०	२१।४३	-०।५६	२३।२७	७।४७	२।२८	१९।४२	१५।१४	५।१४	१०।१४	२६।४५	३।४३			
२४	११।२७	२६।५८	३।४८	२०।२२	१७।३३	+०।१३	२३।२६	-१।३९	३।२९	१९।२८	२०। ८	५।१५	९।५२	२६। ८	२।४५			
२५	११।४८	२६।२२	२।५९	२०।३५	१२।२७	१।२३	२३।२५	+४।३७	४।११	१९।१४	२३।५३	४।५८	९।३०	२४। १	१।३८			
२६	१२। ९	२४।२३	२। १	२०।४७	६।३७	२।३०	२३।२४	१०।४५	४।५४	१८।५९	२६।१०	४।२३	९। ८	२०।३९	+०।२८			
२७	१२।२९	२१। ५	-०।५६	२०।५८	-०।२०	३।३०	२३।२२	१६।२२	५।११	१८।४४	२६।४९	३।३३	८।४५	१६।१९	-०।४२			
२८	१२।४९	१६।३६	+०।१५	२१। ९	+६। ५	४।१८	२३।२०	२१। ७	५। ९	१८।२९	२५।४७	२।३१	८।२३	११।१९	१।४९			
२९	१३।१०	११। ८	१।२६	२१।२०	१२।१८	४।५०	२३।१७	२४।३६	४।४७	१८।१३	२३।१५	१।२२	-८। ०	+५।५७	-२।५०			
३०	१३।३०	-४।५५	२।३५	-२१।३०	+१७।५५	+५। ४	२३।१३	२६।३०	४। ७	१७।५८	१९।२९	+०। ९	......	......	......			
३१	-१३।४९	+१।४२	+३।३५				-२३।१०	+२६।३७	+३।१२	-१७।४१	+१४।५०	-१। ३						

(मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टैं. टा. के लिए)

(सं० २०२८)

तारीख सन् १९७१	मंगल क्रान्ति अं.क.	मंगल शर अं.क.	बुध क्रान्ति अं.क.	बुध शर अं.क.	गुरु क्रान्ति अं.क.	गुरु शर अं.क.	शुक्र क्रान्ति अं.क.	शुक्र शर अं.क.	शनि क्रान्ति अं.क.	शनि शर अं.क.
मार्च	-२३।३१	-०।२०	+९।[illegible]	+१।२७	-२०।२५	+१। ०	-१३।१७	-०।२२	+१५।४३	-२। ०
३०	२३।२७	०।२६	१२।३४	२।१३	२०।२४	१। ०	११।५१	०।३५	१५।५०	१।५९
अ. ३	२३।२१	०।३१	१४।३२	२।४९	२०।२२	१। ०	१०।१९	०।४७	१५।५८	१।५८
७	२३।१२	०।३८	१५।३५	३। ८	२०।२२	१। १	८।४२	०।५८	१६। ६	१।५८
११	२३। २	०।४५	१५।४१	३। ८	२०।१८	१। १	७। २	०। ८	१६।१३	१।५७
१५	२२।५०	०।५१	१४।५१	२।४३	२०।१५	१। १	५।१८	१।१७	१६।२१	१।५६
१९	२२।३७	०।५९	१३।१५	१।५६	२०।१२	१। १	३।३१	१।२४	१६।२३	१।५६
२३	२२।२२	१। ७	११।१७	+०।५३	२०। ८	१। १	-१।४२	१।३१	१६।३७	१।५५
२७	२२। ७	१।१५	९।२२	-०।१५	२०। ४	१। १	+०। ८	१।३६	१६।४५	१।५५
मई १	२१।५०	१।२४	७।५३	१।१८	२०। ०	१। १	१।५९	१।३९	१६।५३	१।५५
५	२१।३३	१।३३	७। २	२। ९	१९।५५	१। १	३।५०	१।४२	१७। १	१।५४
९	२१।१५	१।४३	६।५२	२।४६	१९।५०	१। १	५।४०	१।४३	१७। ८	१।५४
१३	२०।५६	१।५३	७।१९	३।१०	१९।४४	१। १	७।२८	१।४३	१७।१६	१।५४
१७	२०।३८	२। ३	८।१८	३।१६	१९।३९	१। १	९।१४	१।४२	१७।२३	१।५३
२१	२०।२१	२।१५	९।४५	३।१८	१९।३३	१। ०	१०।५७	१।३३	१७।३१	१।५३
२५	२०। ४	२।२७	११।३२	३। ५	१९।२८	१। ०	१२।३७	१।३६	१७।३८	१।५३
२९	१९।४७	२।३९	१३।३५	२।४३	१९।२२	१। ०	१४।१२	१।३१	१७।४५	१।५३
जून २	१९।३२	२।५३	१५।४२	२।१२	१९।१६	०।५९	१५।४२	१।२५	१७।५२	१।५३
६	१९।१९	३। ६	१८। ६	१।३५	१९।११	०।५८	१७। ६	१।१३	१७।५३	१।५३
१०	१९। ८	३।२१	२०।१९	०।५३	१९। ५	०।५८	१८।२३	१।१२	१८। ५	१।५३
१४	१८।५९	३।३६	२२।१६	-०। ८	१९। ०	०।५७	१९।३२	१। ४	१८।१२	१।५३
१८	१८।५२	३।५१	२३।४६	+०।३४	१८।५६	०।५६	२०।३४	०।५५	१८।१८	१।६३
२२	१८।४३	४। ७	२४।३६	१।१०	१८।५१	०।५६	२१।२७	०।४६	१८।२४	१।५३
२६	१८।५०	४।२४	२४।४२	१।३६	१८।४७	०।५५	२२।१०	०।३७	१८।२९	१।५३
३०	१८।५३	४।४१	२४। ६	१।५३	१८।४४	०।५४	२२।४३	०।२७	१८।३४	१।५४
जुलाई ४	१९। ०	४।५८	२२।५३	१।५३	१८।४१	०।५३	२३। ६	०।१७	१८।४०	१।५४
८	१९।११	५।१५	२१।१३	१।४५	१८।३९	०।५२	२३।१३	-०। ८	१८।४४	१।५४
१२	१९।२६	५।३२	१९।१२	१।२८	१८।३८	०।५१	२३।२०	+०। २	१८।४९	१।५५
१६	१९।४४	५।४८	१७। २	१। २	१८।३७	०।५०	२३।११	०।१२	१८।५३	१।५५
२०	२०। ५	६। ४	१४।४४	+०।२३	१८।३६	०।४९	२२।५१	०।२२	१८।५७	१।५५
२४	२०।२८	६।१७	१२।२५	-०। ९	१८।३७	०।४८	२२।१९	०।३१	१९। १	१।५६
२८	२०।५४	६।२२	१०।१०	०।५२	१८।३८	०।४७	२१।३८	०।४०	१९। ४	१।५६
अग. १	२१।२०	६।३२	८। ५	१।३२	१८।४०	०।४६	२०।४६	०।४८	१९। ७	१।५७
५	-२१।४५	-६।४५	+६।१६	-२।२७	-१८।४२	+०।४५	+१९।४५	+०।५५	+१९।१०	-१।५७

तारीख सन् १९७१	मंगल क्रान्ति अं.क.	मंगल शर अं.क.	बुध क्रान्ति अं.क.	बुध शर अं.क.	गुरु क्रान्ति अं.क.	गुरु शर अं.क.	शुक्र क्रान्ति अं.क.	शुक्र शर अं.क.	शनि क्रान्ति अं.क.	शनि शर अं.क.
अग. ९	-२२।१८	-६।५०	+४।५०	-३।१५	-१८।४५	+०।४५	+१८।३५	+१। २	+१९।१३	-१।५८
१३	२२।२८	६।५०	३।५७	३।५७	१८।४९	०।४४	१७।१६	१। ८	१९।१५	१।५८
१७	२२।४५	६।४९	३।४५	४।२९	१८।५३	०।४३	१५।४९	१।१३	१९।१७	१।५९
२१	२२।५७	६।४२	४।२३	४।४२	१८।५८	०।४२	१४।१६	१।१८	१९।१९	२। ०
२५	२३। ५	६।३४	५।४८	४।२८	१९। ३	०।४१	१२।३६	१।२१	१९।२०	२। ०
२९	२३। ६	६।२४	७।४४	३।४५	१९।१०	०।४०	१०।५१	१।२३	१९।२१	२। १
सित. २	२३। ३	६।११	९।४०	२।३८	१९।१६	०।३९	९। १	१।२५	१९।२२	२। २
६	२२।५४	५।५६	११।१५	१।२३	१९।२३	०।३८	७। ७	१।२५	१९।२२	२। २
१०	२२।४१	५।४१	११।३८	-०।१२	१९।३०	०।३८	५। ९	१।२४	१९।२२	२। ३
१४	२२।२३	५।२५	११।११	+०।४५	१९।३७	०।३७	३।१०	१।२२	१९।२२	२। ३
१८	२२। १	५। ८	९।४६	१।२५	१९।४५	०।३६	+१। ९	१।२०	१९।२२	२। ४
२२	२१।३५	५।५१	७।३५	१।४६	१९।५३	०।३५	-०।५४	१।१६	१९।२१	२। ५
२६	२१। ६	५।३४	४।५३	१।५२	२०। १	०।३५	२।५६	१।११	१९।२०	२। ५
३०	२०।३३	५।१७	+१।५४	१।४६	२०। ९	०।३४	४।५७	१। ५	१९।१९	२। ६
अक्तू. ४	१९।५८	४। १	-२।१२	१।३१	२०।१८	०।३३	६।५७	०।५६	१९।१७	२। ७
८	१९।१९	३।४५	४।१७	१।११	२०।२६	०।३३	८।५५	०।५२	१९।१६	२। ७
१२	१८।३८	३।२३	७।१६	०।४७	२०।३५	०।३२	१०।४३	०।४४	१९।१४	२। ८
१६	१७।५५	३।१४	१०। ८	+०।२१	२०।४४	०।३२	१२।३३	०।३५	१९।११	२। ८
२०	१७। ९	३। ३	१२।५०	-०। ६	२०।५२	०।३१	१४।२५	०।२६	१९। ९	२। ८
२४	१६।२२	२।४६	१५।२१	०।३४	२१। १	०।३१	१६। ५	०।१६	१९। ६	२। ९
२८	१५।३२	२।३३	१७।३८	१। ०	२१। ९	०।३०	१७।३३	+०। ७	१९। ३	२। ९
नव. १	१४।३९	२।२१	१९।४२	१।२५	२१।१७	०।३०	१९। ५	-०। ४	१९। ०	२। ९
५	१३।४६	२। ९	२१।३०	१।४८	२१।२५	०।२९	२२।२२	०।१४	१८।५७	२।१०
९	१२।५०	१।५७	२३। १	२। ७	२१।३३	०।२९	२१।३१	०।२४	१८।५४	२।१०
१३	११।५३	१।४६	२४।१४	२।२३	२१।४१	०।२८	२२।३०	०।३४	१८।५१	२।१०
१७	१०।५४	१।३६	२५। ६	२।३२	२१।४८	०।२८	२३।१३	०।४४	१८।४१	२।१०
२१	९।५४	१।२६	२५।३६	२।३४	२१।५६	०।२७	२३।५७	०।५४	१८।४४	२। ९
२५	८।५२	१।१७	२५।४३	२।२५	२२। ३	०।२७	२४।२३	१। ३	१८।४०	२। ९
२९	७।५०	१। ८	२५।२६	२।२	२२। ९	०।२७	२२।३८	१।११	१८।३७	२। ९
दिस. ३	६।४६	०।५९	२४।४५	१।१९	२२।१५	०।२६	२४।४०	१।१९	१८।३३	२। ९
७	५।४२	०।५१	२३।३८	-०।१४	२२।२१	०।२६	२४।३१	१।२६	१८।३०	२। ८
११	४।३७	०।४४	२२। ९	+१। ६	२२।२७	०।२५	२४। ९	१।३२	१८।२७	२। ८
१५	३।३१	०।३६	२०।३५	२।१६	२२।३२	०।२५	२३।३६	१।३८	१८।२३	२। ७
१९	-२।२५	-०।३०	-१६।३६	+२।५३	-२२।३७	+०।२५	-२२।५२	-१।४२	+१८।२१	-२। ६

(उत्तर) (−दक्षिण)

मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा.स्टैं.टा.) (सं. २०२८)

ता.	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
सन् १९७१–७२	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.
दि. २३	−१।१८	−०।२३	−१९।१९	+२।५६	−२२।४१	+०।२५	−२१।५६	−१।४५	+१८।१९	−२। ५
२७	−०।१२	०।१७	१९।४७	२।३७	२२।४५	०।२४	२०।५१	१।४७	१८।१६	२। ५
३१	+०।५५	०।११	२०।३७	२। ७	२२।४९	०।२४	१९।३५	१।४८	१८।१४	२। ४
जन. २	१।२९	०। ८	२१। ५	१।५१	२२।५०	०।२४	१८।५५	१।४७	१८।१३	२। ३
६	२।३५	−०। ३	२१।५९	१।१६	२२।५३	०।२४	१७।२७	१।४६	१८।१२	२। २
१०	३।४१	+०। १२	२२।४४	०।४१	२२।५६	०।२३	१५।५१	१।४४	१८।११	२। १
१४	४।४७	०। ७	२३।१६	+०। ८	२२।५८	०।२३	१४। ९	१।४०	१८।१०	२। ०
१८	५।५३	०।१२	२३।३२	−०।२३	२३। ०	०।२३	१२।२१	१।३४	१८। ९	१।५९
२२	६।५७	०।१६	२३।२९	०।५०	२३। २	०।२३	१०।२८	१।२८	१८। ९	१।५८
२६	८। १	०।२०	२३। ५	१।१४	२३। ३	०।२२	८।३०	१।२०	१८।१०	१।५७
३०	९। ४	०।२४	२२।२०	१।३५	२३। ४	०।२२	६।३०	१।१०	१८।११	१।५६
फर. ३	१०। ६	०।२७	२१।१३	१।५०	२३। ५	०।२२	४।२७	१। ०	१८।१२	१।५५
७	११। ७	०।३१	१९।४४	२। १	२३। ५	०।२२	२।२२	०।४८	१८।१३	१।५४
११	१२। ६	०।३४	१७।५१	२। ५	२३। ५	०।२१	−०।१६	०।३५	१८।१५	१।५३
१५	१३। ४	०।३७	१५।३५	२। ३	२३। ५	०।२१	+१।५०	०।२१	१८।१७	१।५२
१९	१४। ०	०।४०	१२।५७	१।५४	२३। ४	०।२१	३।५६	−०। ७	१८।२०	१।५१
२३	१४।५५	०।४०	९।५७	१।३६	२३। ४	०।२१	६। ०	+०। ९	१८।२३	१।४९
२७	१५।४८	०।४५	९।३८	१। ८	२३। ३	०।२१	८। २	०।२५	१८।२६	१।४८
मार्च २	१६।३८	०।४७	−३। ६	−०।३०	२३। २	०।२१	१०। १	०।४२	१८।३०	१।४८
६	१७।२७	०।५०	+०।२७	+०।१६	२३। १	०।२०	११।५७	१। ०	१८।३४	१।४६
१०	१८।१४	०।५२	३।४६	१। ९	२३। ०	०।२०	१३।४८	१।१८	१८।३८	१।४५
१४	१८।५८	०।५४	६।३२	२। २	२२।५९	०।२०	१५।३५	१।३६	१८।४२	१।४४
१८	+१९।४०	+०।५५	+८।२७	+२।४८	−२२।५८	+०।२०	+१७।१६	+१।५३	+१८।४७	−१।४३

ग्रहों के उदयास्त—ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के हैं — (१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त, (२) सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त। दैनिक उदयास्त भूभ्रमण के कारण होते हैं। पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य चन्द्र के समान प्रतिदिन उदित होकर अस्त होता है। सूर्य चन्द्र के दैनिक उदयास्त काल इस पंचांग में दिए रहते हैं, अन्य ग्रहों के दैनिक उदयास्त फलित एवं धार्मिक कृत्यों में निरुपयोगी होने से नहीं दिए जाते। सूर्य के समीप होने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है, एवं सूर्य से दूर हो जाने पर दृश्य (उदित) हो जाता है—इसे ग्रह का सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त कहते हैं। इस पृष्ठ पर दिए गए ग्रहों के उदयास्त सूर्य कैन्द्रिक हैं।

यूरेनस-नेप्च्यून के क्रान्ति-शर (सं. २०२८)

तारीख	यूरेनस		नेप्च्यून	
१९७१-७२	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.	क्रान्ति अं.क.	शर अं.क.
१ मार्च	+४।२४	+०।४३	−१९। ८	+१।४१
१ अप्रै.	३।५५	०।४३	१९। ४	१।४२
१ मई	३।२६	०।४३	१८।५७	१।४३
१ जून	३। ९	०।४२	१८।४७	१।४३
१ जुला.	३। ९	०।४१	१८।३९	१।४२
१ अग.	३।२८	०।४०	१८।३५	१।४१
१ सित	४। २	०।३९	१८।३८	१।३९
१ अक्तू.	४।४५	०।३८	१८।४६	१।३७
१ नवं.	५।३०	०।३८	१८।५८	१।३६
१ दिसं.	६। ६	०।३९	१९।१२	१।३६
१ जन.	६।२९	०।३९	१९।२४	१।३६
१ फर.	६।३१	०।४०	१९।२९	१।३७
१ मार्च	+६।१९	+०।४१	−१९।३३	+१।३९

ग्रहों के वक्र मार्ग की तारीखें सं. २०२८)

ग्रह	वक्र मार्ग	तारीख
म.	वक्री	११ जुला. १९७१
,,	मार्गी	९ सित. '७१
बु.	वक्री	९ अप्रै. '७१
,,	मार्गी	३ मई '७१
,,	वक्री	१३ अग. '७१
,,	मार्गी	५ सित '७१
,,	वक्री	३ दिसं. ,७१
,,	मार्गी	२३ दिसं. '७१
गु.	मार्गी	२५ जुला. '७१
श.	वक्री	१९ सित. '७१
,,	मार्गी	३१ जन. १९७२
यू.	मार्गी	१७ जून १९७१
,,	वक्री	२३ जन. १९७२
ने.	मार्गी	१२ अग. १९७१
ने.	वक्री	७ माच १९७२

ग्रहों के उदयास्त (सं. २०२८)

ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीख	ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीख	ग्रह	उदय अस्त दिशा	तारीख
बु.	प. अ.	१ अप्रै. '७१	बु.	प. अ.	७ दिसं. '७१	श.	प. अ.	२ मई '७१
,,	पू. उ.	१ मई '७१	,,	पू. उ.	१७ दिसं. '७१	,	पू. उ.	६ जून '७१
,,	पू. अ.	१० जून '७१	,,	पू. अ.	२८ जन. '७२	अगस्त्य	अस्त	२१ अप्रै. '७१
,,	प. उ.	३० जून '७१	,,	प. उ.	२८ फर. '७२	अगस्त्य	उदित	४ सित. '७१
,,	प. अ.	१३ अग. '७१	गु.	प. अ.	२६ नवं. '७१			
,,	पू. उ.	२ सि. '७१	,,	पू. उ.	२४ दिसं. '७१			
,,	पू. अ.	२६ सि. '७१	शु.	पू. अ.	५ अग. '७१			
,,	प. उ.	३१ अक्तू. '७१	,,	प. उ.	१५ अक्तू. ७१			

चन्द्रोदयास्त (चण्डीगढ़) वि० सं० २०२८ भा. स्टैं. टा.

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रो.	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
मार्च १९७१	चैत्र शु.	घं. मि.	अप्रै.	वैशा. कृ.	घं. मि.	अप्रै.	वैशा. शु.	घं. मि.	मई	ज्येष्ठ कृ.	घं. मि.	मई	ज्येष्ठ शु.	घं. मि.	जून	आषा. कृ.	घं. मि.	जून	आषा. शु.	घं. मि.	जुला.	श्राव. कृ.	घं. मि.
२७	१	१९।२६	११	१	१९।२६	२६	१	२०।३५	११	१	२०।१५	२५	१	२०।२९	१०	२	२०।५८	२३	१	२०। ९	९	१	२०।२५
२८	२	२०।३७	१२	२	२०।२३	२७	३	२१।४५	१२	२	२१।१४	२६	२	२१।२८	११	३	२१।४६	२४	२	२०।५६	१०	२	२१। ६
२९	३	२१।४९	१३	३	२१।२३	२८	४	२२।४७	१३	३	२२।१०	२७	३	२२।१८	१२	४	२२।२९	२६	३	२१।३५	११	३	२१।४२
३०	४	२२।५९	१४	३	२२।२२	२९	५	२३।४१	१४	४	२३। २	२८	४	२३। १	१३	५	२३। ६	२६	४	२२। ९	१२	४	२२।१४
३१	५	——	१५	४	२३।२०	३०	६	——	१५	५	२३।४८	२९	५	२३।३७	१४	६	२३।४९	२७	५	२२।३८	१३	६	२२।४७
अप्रै. १	६	०। ४	१६	५	२३।१६	मई १	७	०।२८	१६	६	——	३०	६	——	१५	७–	——	२८	५	२३। ६	१४	७	२३।२०
२	७	१। १	१७	६–	——	२	८	१। ७	१७	७	०।२९	३१	७	०। ९	१६	८	०।१२	२९	६	२३।३०	१५	८	२३।५४
३	८	१।५१	१८	७	१। ६	३	९	१।४०	१८	८	१। ४	जून १	८	०।३७	१७	९	०।४४	३०	७	२३।५६	१६	९	——
४	९	२।३२	१९	९	१।४९	४	१०	२। ९	१९	९	१।३६	२	९	१। ३	१८	१०	१।१६	जु. १	८	——	१७	१०	०।३४
५	१०	३। ८	२०	१०	२।२९	५	१०	२।३६	२०	१०	२। ९	३	१०	१।२९	१९	११	१।५२	२	९	०।२४	१८	११	१।२०
६	११	३।३९	२१	११	३। ४	६	११	३। १	२१	१२	२।४२	४	११	१।५५	२०	१२	२।३५	३	१०	०।५६	१९	१२	२।१२
७	१२	४। ८	२२	१२	३।३९	७	१२	३।२८	२२	१३	३।१७	५	१२	२।२४	२१	१३	३।२३	४	११	१।३०	२०	१३	३। ७
८	१३	४।३४	२३	१३	४।१०	८	१३	३।५४	२३	१४	३।५६	६	१३	२।५५	२२	३०	४।१७	५	१२	२। ९	२१	१४	४। ८
९	१४	४।५९	२४	१४	४।४६	९	१४	४।२४	२४	३०	४।४२	७	१४	३।३२				६	१३	२।५७	२२	३०	५।१२
१०	१५	५।२५	२५	३०	५।२४	१०	१५	४।५७				८	१४	४।१६				७	१४	३।५२			
												९	१५	५। ५				८	१५	४।५३			

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
जुला.	श्राव. शु.	घं. मि.	अग.	भाद्र कृ.	घं. मि.	अग.	भाद्र शु.	घं. मि.	सितं.	अश्वि. कृ.	घं. मि	सित.	आश्वि शु.	घं.मि.	अक्तू.	कार्ति. कृ.	घं. मि.	अक्तू.	कार्ति. शु.	घं. मि.	नवं.	मार्ग. कृ.	घं. मि.
२३	१	२०। ६	७	१	१९।३८	२१	१	१९। ८	६	२	१९।१७	२०	१	१८।३०	५	१	१८।२४	२०	१	१८। १	३	१	१७।४०
२४	२	२०।३८	८	२	२०।१४	११	१	१९।३५	७	३	१९।५३	२१	२	१८।५८	६	२	१९। ७	२१	२	१८।३८	४	२	१८।३३
२५	३	२१। ७	९	३	२०।४७	२३	२	२०। १	८	४	२०।३१	२२	३	१९।२८	७	३	१९।५५	२२	३	१९।२०	५	३	१९।३०
२६	४	२१।३२	१०	४	२१।२०	२४	३	२०।२६	९	५	२१।१४	२३	४	२०। १	८	५	२०।४८	२३	४	२०। ७	६	४	२०।३३
२७	५	२१।५८	११	५	२१।५६	२५	४	२०।५४	१०	६	२२। २	२४	५	२०।३८	९	६	२१।४६	२४	५	२१। ०	७	५	२१।३७
२८	६	२२।२५	१२	६	२२।३४	२६	५	२१।२५	११	७	२२।५७	२५	५	२१।२२	१०	७	२२।४८	२५	६	२१।५९	८	६	२२।४०
२९	७	२२।५३	१३	८	२३। ८	२७	६	२१।५९	१२	८	२३।५५	२६	६	२२।११	११	८	२३।५०	२६	७	२३। ३	९	७	२३।४०
३०	८	२३।२५	१४	९	——	२८	७	२२।३९	१३	९	——	२७	७	२३। ८	१२	९–	——	२७	८	——	१०	८	——
३१	९	——	१५	१०	०। ७	२९	८	२३।२५	१४	१०	०।५६	२८	८	——	१३	१०	०।५१	२८	९	०। ६	११	९	०।३९
अग. १	९	०। १	१६	११	१। १	३०	९–	——	१५	११	१।५७	२९	९	०। ९	१४	११	१।४९	२९	१०	१।१२	१२	१०	१।३३
२	१०	०।४५	१७	१२	२। ०	३१	१०	०।१९	१६	१२	२।५६	३०	१०	१।१३	१५	१२	२।४५	३०	११	२।१७	१३	११	२।२७
३	११	१।३६	१८	१३	३। ३	सि. १	११	१।२०	१७	१३	३।५५	अक्तू. १	११	२।२२	१६	१३	३।३९	३१	१२	३।२५	१४	१२	३।२०
४	१२	२।५३	१९	१४	४। ३	२	१२	२।२६	१८	१४	४।४९	२	१३	३।३०	१७	१३	४।३२	नवं १	१३	४।२३	१५	१३	४।१३
५	१४	३।४०	२०	३०	५। २	३	१३	३।३५	१९	३०	५।४३	३	१४	४।३८	१८	१४	५।२५	२	१५	५।४५	१६	१४	५। ८
६	१५	४।४९				४	१४	४।४४				४	१५	५।४९	१९	३०	६।२०				१७	३०	६। ४
						५	१५	५।५४													१८	३०	७। २

चन्द्रोदयास्त (चण्डीगढ़) सं० २०२८ भा० स्टै टा०

ता. नवं. १९७१	ति. मार्ग. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. दिसं.	ति. पौष कृ.	चंद्रोदय घं. मि.	ता. दिसं.	ति. पौष शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. जन. १९७२	ति. माघ कृ.	चंद्रोदय घ. मि.	ता. जन.	ति. माघ शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. जन.	ति. फाल्गु. कृ.	चंद्रोदय घं. मि.	ता. फर.	ति. फाल्गु. शु.	चन्द्रास्त घं. म.	ता. मार्च	ति. चैत्र कृ.	चंद्रोदय घं. मि.
१९	१	१८। ५	३	१	१८।१३	१८	१	१७।४८	१	१	१८। ५	१७	१	१८।३६	३१	१	१८।५७	१५	१	१८।४१	१	१	१९।३७
२०	२	१९। ८	४	२	१९।१८	१९	२	१८।४८	२	२	१९।१०	१८	२	१९।५१	फ. १	२	१९।५६	१६	२	१९।४७	२	२	२०।२१
२१	३	२०। ५	५	४	२०।२३	२०	३	१९।५३	३	३	२०।१२	१९	३	२०।५६	२	३	२०।५२	१७	३	२०।५४	३	३	२१।२७
२२	४	२०।५५	६	५	२१।२७	२१	४	२०।५६	४	४	२१।११	२०	४	२२। १	३	४	२१।४६	१८	४	२२। १	४	४	२२।२२
२३	५	२१।४९	७	६	२२।२७	२२	५	२२। ०	५	५	२२। ८	२१	५	२३। ६	४	५	२२।४०	१९	५	२३।१०	५	५	२३।१७
२४	६	२३। ३	८	७	२३।२४	२३	६	२३। ३	६	६	२३। ३	२२	७	——	५	६	२३।३५	२०	६	——	६	६	——
२५	७	——	९	७	——	२४	७	——	७	७	२३।५७	२३	८	०।१२	६	७	——	२१	७	०।१९	७	७	०।१३
२६	८	०। ६	१०	८	०।२०	२५	८	०। ७	८	८	——	२४	९	१।२०	७	८	०।३०	२२	८	१।२७	८	८	१। ९
२७	९	१। ९	११	९	१।१३	२६	९	१।११	९	८	०।५१	२५	१०	२।२८	८	९	१।२८	२३	९	२।३०	९	९	२। २
२८	११	२।१५	१२	१०	२।१६	२७	१०	२।१८	१०	९	१।४७	२६	११	३।३५	९	९	२।२५	२४	१०	३।२८	१०	१०	२।५२
२९	१२	३।२२	१३	११	३। ०	२८	११	३।२७	११	१०	२।४३	२७	१२	४।३७	१०	१०	३।२०	२५	१२	४।१८	११	११	३।३८
३०	१३	४।३२	१४	१२	३।५६	२९	१२	४।३७	१२	११	३।४१	२८	१३	५।३३	११	११	४।१४	२६	१३	५। ०	१२	१२	४।१९
दि. १	१४	५।४३	१५	१३	४।५३	३०	१४	५।४५	१३	१२	४।३९	२९	१४	६।२१	१२	१२	५। २	२७	१३	५।३६	१३	१३	४।५७
२	१५	६।५६	१६	१४	५।५२	३१	१५	६।४८	१४	१३	५।३४	३०	१५	७। ३	१३	१३	५।४७	२८	१४	६। ९	१४	१४	५।३२
			१७	३०	६।४९				१५	१४	६।२५				१४	१४	६।२७	२९	१५	६।३९	१५	३०	६। ७
									१६	३०	७।१३												

चन्द्रदर्शन—जैसा कि पृ. ८१ पर बतलाया गया है, स्वगति अनुसार चलते हुए जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आ जाता है, तब वह सूर्य के तेज में अदृश्य हो जाता है, इसी प्रकार चन्द्रमा अमावस्या के लगभग सूर्य के निकट आ जाने के कारण अदृश्य हो जाता है। तदनन्तर वह शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया को सायं पश्चिम क्षितिज से कुछ ऊपर दीखने लगता है। इसे चन्द्र दर्शन कहते हैं। अक्षांश भेद से विभिन्न स्थलों पर चन्द्रदर्शन एक दिन आगे पीछे हो जाता है। आकाशीय वातावरण आदि अनेक कारणों से कई बार चन्द्र दर्शन की तारीख का गणित द्वारा प्रतिज्ञापूर्वक निश्चय करना कठिन हो जाता है। यहां दिए गए चन्द्र शृंगोन्नति के अंश लगभग हैं, इनमें एक अंश तक की स्थलता कहीं २ संभव है।

(+उत्तर शृंग) अक्षांश भेद से समस्त भारत में चन्द्र दर्शन की तारीख एवं उन्नत-शृङ्ग (वि. सं. २०२८) (–दक्षिण शृङ्ग)

मास	चैत्र		वैशा.		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्राव.		भाद्र.		आश्वि.		कार्ति.		मार्ग.		पौष		माघ		फाल्गु.	
भारतीय अक्षांश	चन्द्र दर्शन ता. १९७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. '७१	शृंगोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७२	शृंगोन्नति अंश	चन्द्रदर्शन ता. '७२	शृंगोन्नति अंश
	मार्च		अप्रै.		मई		जून		जुला.		अग.		सित.		अक्तू.		नवं.		दिस		जन.		फर.	
५	२८	–३२	२६	–३१	२५	–२५	२४	०	२३	+१६	२२	+३६	२१	+४२	२१	+४०	१९	+३३	१९	+१२	१७	– ७	१६	–२५
१५	,,	–२२	,,	–२१	,,	–१५	,,	+११	,,	+२६	,,	+४६	,,	+५२	,,	+५०	,,	+४४	,,	+२२	,,	+ ३	,,	–१५
२५	,,	–११	,,	–११	,,	– ५	,,	+२१	२४	+४२	,,	+५६	,,	+६२	,,	+६०	२०	+४८	,,	+३२	,,	+१३	,,	– ४
३५	,,	०	,,	०	,,	+ ५	,,	+३१	,,	+५२	,,	+६६	,,	+७२	,,	+७०	,,	+५८	,,	+४२	*१८	+२३	,,	+ ६

*श्रीनगर से ऊपर उत्तरी काश्मीर में चन्द्रदर्शन १७ जनवरी (१९७२ ई.) को नहीं होगा। श्रीनगर में भी १७ जनवरी को चन्द्रदर्शन संभवतः न हो।

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार (सं. २०२८ वि.)
(सन् १९७१–७२)

सूर्य-चार								मङ्गल-चार				बुध चार			
तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१-१९७२	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७२-१९७१	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि
मार्च २८	उ.भा. ४	जुला. १३	पुन. ३	अक्तू. २७	स्वा. २	फर. ६	धनि. १	सित. ९	मार्गी	मार्च २७	अश्वि. १ मेष	जून २३	आर्द्रा २	सि. २१	पू.फा. ३
३१	रेव. १	१६	४ कर्क	३१	३	१०	२	२५	श्रव. ४	२९	२	२५	३	२३	४
अप्रै. ३	२	२०	पुष्य १	नवं. ३	४	१३	ध. ३ कुम्भ	अक्तू. ७	धनि १	अप्रै. १	३	२६	४	२५	उ.फा. १
७	३	२३	२	६	विशा. १	१६	४	१६	२	७	४	२८	पुन. १	२७	उ.फा. २ कन्या
१०	४	२७	३	१०	२	१९	शत. १	२४	धनि ३ कुं.	९	वक्री	२९	२	२८	उ.फा. ३
१४	अश्वि. १ मेष	३०	४	१३	३	२३	२	३१	४	१२	अश्वि. ३	जुला. १	३	३०	४
१७	२	अग. ३	आश्ले. १	१६	४ वृश्चि.	२६	३	नवं. ७	शत. १	१९	२	३	पुन. ४ कर्क	अक्तू. २	हस्त १
२१	३	६	२	२०	अनु. १	२९	४	१३	२	२३	१	४	पुष्य १	४	२
२४	४	१०	३	२३	२	मार्च ४	पू.भा. १	१९	३	३०	रेव. ४ मीन	६	२	६	३
२७	भर. १	१३	४	२६	३	७	२	२४	४	मई ३	मार्गी	८	३	८	४
मई १	२	१७	मघा १ सिंह	२९	४	१०	३	३०	पू.भा. १	६	अश्वि. १ मेष	१०	४	१०	चित्रा. १
४	३	२०	२	दिसं. ३	ज्ये. १	१४	पू.भा ४ मीन	दिसं. ५	२	१३	२	१२	आश्ले. १	१२	२
८	४	२४	३	६	२	मंगल-चार		११	३	१७	३	१४	२	१४	चि. ३ तुला
११	कृ. १	२७	४	९	३	मार्च २९	पू.षा. २	१६	पू.भा. ४ मीन	२०	४	१६	३	१५	४
१५	२ वृष	३१	पू.फा. १	१३	४	अप्रै. ४	३	२१	उ.भा. १	२३	भर. १	१९	४	१८	स्वा. १
१८	३	सितं. ३	२	१६	मू. १ धनु	१०	४	२७	२	२६	२	२१	म. १ सिंह	२०	२
२२	४	६	३	१९	२	१५	उ.षा. १	जन. १	३	२८	३	२४	२	२२	३
२५	रो. १	१०	४	२२	३	२१	उ.षा. २ मकर	६	४	३०	४	२७	३	२४	४
२९	२	१३	उ.फा. १	२६	४	२८	३	११	रेव. १	जून १	कृ. १	३०	४	२६	विशा. १
जू. १	३	१७	२ कन्या	२९	पू.षा. १	मई ४	४	१६	२	३	कृ. २ वृष	अग. ३	पू.फा. १	२८	२
४	४	२०	३	जन. १	२	१०	श्रव. १	२१	३	५	३	९	२	३०	३
८	मृ. १	२४	४	४	३	१७	२	२६	४	७	४	१३	वक्री	नवं. २	वि. ४ वृश्चि.
११	२	२७	हस्त १	८	४	२५	३	३१	अश्वि १ मेष	९	रो. १	१६	पू.फा. १	४	अनु १
१५	मृ. ३ मिथु.	३०	२	११	उ.षा १	जून २	४	फर. ५	२	११	२	२२	मघा ४	६	२
१८	४	अक्तू. ४	३	१४	२ मक.	११	धनि. १	११	३	१२	३	२६	३	८	३
२२	आर्द्रा १	७	४	१८	३	२४	२	१६	४	१४	४	२९	२	११	४
२५	२	११	चित्रा १	२१	४	जुला ११	वक्री	२१	भर. १	१५	मृ. १	सितं. ५	मार्गी	१३	ज्ये. १
२९	३	१४	२	२४	श्रव. १	२७	धनि. १	२६	२	१७	२	११	मघा ३	१६	२
जुला. २	४	१७	३ तुला	२७	२	अग. ११	श्रव. ४	माच २	३	१८	मृ. ३ मिथुन	१४	४	१८	३
६	पुन. १	२१	४	३१	३	२५	३	७	४	२०	मृग. ४	१७	पू.फा. १	२१	४
९	२	२४	स्वा. १	फर. ३	४			१२	कृ. १	२१	आर्द्रा १	१९	२	२४	मू. १ [illegible]

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र-चरण चार (सं० २०२८ वि.)

(सन् १९७१-७२)

बुध-चार

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
नव. २८	मूल २
दिसं. ३	वक्री
७	मू. १
१०	ज्ये.४ वृश्चि.
१३	ज्ये. ३
१५	२
१८	१
२३	मार्गी
२७	ज्ये. २
३१	३
जन. ४	४
६	मू. १ धनु
९	मू. २
१२	३
१४	४
१६	पू.षा. १
१९	२
२१	३
२३	४
२५	उ.षा. १
२८	उ.षा. २ मक.
३०	उ.षा. ३
फर. १	४
३	श्रव. १
५	२
७	३
९	४
११	धनि. १
१३	२
१५	ध. ३ कुम्भ

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
फर. १७	धनि. ४
१८	शत. १
२०	२
२२	३
२४	४
२५	पू.भा. १
२७	२
२९	३
मार्च २	पू.भा.४ मीन
४	उ.भा. १
६	२
८	३
१०	४
१२	रेव. १

गुरु-चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ८	अनु. २
जून ४	१
जुला. १३	विशा. ४
२५	मार्गी
अग. ५	अनु. १
सितं. १२	२
अक्तू. ४	३
२२	४
नवं. ७	ज्ये. १
२२	२
दिसं ७	३
२२	४
जन. ६	मू. १ धनु
२१	मू २

गुरु चार

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
फर. ७	म. ३
२७	४

शुक्र-चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मार्च २७	धनि. ४
२९	शत. १
अप्र. १	२
४	३
७	४
१०	पू.भा. १
१२	२
१५	३
१८	पू.भा.४ मीन
२१	उ.भा. १
२३	२
२६	३
२९	४
मई २	रेव. १
५	२
७	३
१०	४
१३	अश्वि. १ मेष
१६	अश्वि. २
१८	३
२१	४
२४	भर १
२७	२
२९	३
जून १	४
४	कृत्ति. १

शुक्र-चार

तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि
जन ७	कृत्ति.२ वृष
९	कृत्ति. ३
१२	४
१५	रो. १
१८	२
२०	३
२४	४
२६	मृग. १
२९	२
जुला. १	मृग. ३ मिथु.
४	मृग. ४
७	आर्द्रा १
९	२
१२	३
१५	४
१८	पुन. १
२०	२
२३	३
२६	पुन. ४ कर्क
२९	पुष्य १
३१	२
अग. ३	३
६	४
९	आश्ले. १
११	२
१४	३
१६	४
१९	मघा १ सिंह
२२	मघा २
२५	३

तारीख सन् १९७१	नक्षत्र चरण राशि
अग. २७	मघा ४
३०	पू.फा. १
सितं. २	२
४	३
७	४
१०	उ.फा. १
१२	उ.फा.२ कन्या
१५	उ.फा. ३
१८	४
२०	हस्त १
२३	२
२६	३
२८	४
अक्तू. १	चित्रा १
४	२
६	चि. ३ तुला
९	चित्रा ४
१२	स्वा. १
१४	२
१७	३
२०	४
२२	विशा. १
२५	२
२८	३
३१	विशा. ४ वृश्चि
नवं. २	अनु. १
५	२
८	३
१०	४
१३	ज्ये. १

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
नवं. १६	ज्ये. २
१८	३
२१	४
२४	मू. १ धनु
२६	मूल २
२९	३
दिसं. २	४
४	पू.षा १
७	२
१०	३
१२	४
१५	उ.षा. १
१८	उ.षा.२ मक.
२०	उ.षा. ३
२३	४
२६	श्रव. १
२८	२
३१	३
जन. ३	४
६	धनि. १
८	२
११	धनि. ३ कुम्भ
१४	धनि. ४
१६	शत. १
१९	२
२२	३
२५	४
२७	पू.भा. १
३०	२
फर. २	३

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
फर. ५	पू.भा.४ मीन
७	उ.भा. १
१०	२
१३	३
१६	४
१९	रेव. १
२२	२
२४	३
२७	४
मार्च १	अश्वि. १ मेष
४	अश्वि. २
७	३
१०	४
१३	भर. १

शनि-चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मार्च ३१	कृत्ति. १
अप्रै. २८	कृ. २ वृष
मई २५	कृ. ३
जून १९	४
जुला. २०	रो. १
सितं. १९	वक्री
नवं. २०	कृत्ति. ४
जन. ७	३
जन. ३१	मार्गी
फर. २५	कृ. ४

राहु-चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २१	धनि. १
जून २३	श्रव. ४

राहु-चार

तारीख सन् १९७१-७२	नक्षत्र चरण राशि
अग. २५	श्रव. ३
अक्तू. २७	२
दि. २६	१
फर. २९	उ.षा. ४

केतु-चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २१	आश्ले. ३
जून २३	आश्ले. २
अग. २५	१
अक्तू. २७	पुष्य ४
दि. २८	३
फर. २९	२

यूरेनस चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मई ७	हस्त २
जून १७	मार्गी
जुला. २७	हस्त ३
सितं ३०	४
नवं २६	चित्रा १
जन. २३	वक्री

नेप्च्यून चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अग. १२	मार्गी
दिसं १३	अनु. ३
मार्च ७	वक्री

यहाँ दी गई तारीखें अंग्रेजी पद्धति के अनुसार हैं, अर्थात् रात्रि के १२ बजे के बाद ग्रह ने राशि आदि बदली हों तो तारीख आगे वाली ली गई है,+

+ऐसा ही समय सूर्योदय से पहिले का है

लघुरिक्थकोष्ठक

मिनट	घं. ०	घं. १	घं. २	घं. ३	घं. ४	घं. ५	घं. ६	घं. ७	घं. ८	घं. ९	घं. १०	घं. ११
०	अनन्त	१·३८०२	१·०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८
१	३·१५८४	१·३७३०	१·०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२
२	२·८५७३	१·३६६०	१·०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५
३	२·६८१२	१·३५९०	१·०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८
४	२·५५६३	१·३५२२	१·०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२
५	२·४५९४	१·३४५४	१·०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५
६	२·३८०२	१·३३८८	१·०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२९०	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९
७	२·३१३३	१·३३२३	१·०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२
८	२·२५५३	१·३२५८	१·०५१२	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६
९	२·२०४१	१·३१९५	१·०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९१	४१८८	३७३७	३३२९
१०	२·१५८४	१·३१३३	१·०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३
११	२·११७०	१·३०७१	१·०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६
१२	२·०७९२	१·३०१०	१·०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०
१३	२·०४४४	१·२९५०	१·०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६७	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३
१४	२·०१२२	१·२८९१	१·०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४९	३७०२	३२९७
१५	१·९८२३	१·२८३३	१·०२८०	८६८३	७५१८	६६०१	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१
१६	१·९५४२	१·२७७५	१·०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४
१७	१·९२७९	१·२७१९	१·०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८
१८	१·९०३१	१·२६६३	१·०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१
१९	१·८७९६	१·२६०७	१·०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५
२०	१·८५७३	१·२५५३	१·०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५८
२१	१·८३६१	१·२४९९	१·००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२
२२	१·८१५९	१·२४४५	१·००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६
२३	१·७९६६	१·२३९३	१·००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९
२४	१·७७८१	१·२३४१	१·००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३
२५	१·७६०४	१·२२८९	०·९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७
२६	१·७४३४	१·२२३९	०·९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०
२७	१·७२७०	१·२१८८	०·९९१०	८४२४	७३१९	६४३८	५७०७	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४
२८	१·७११२	१·२१३९	०·९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८
२९	१·६९६०	१·२०९०	०·९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३२०१
३०	१·६८१२	१·२०४१	०·९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५
३१	१·६६७०	१·१९९३	०·९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९
३२	१·६५३२	१·१९४६	०·९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३
३३	१·६३९८	१·१८९९	०·९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६
३४	१·६२६९	१·१८५२	०·९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०
३५	१·६१४३	१·१८०६	०·९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००४	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४
३६	१·६०२१	१·१७६१	०·९६५२	८२३९	७१७५	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५८
३७	१·५९०२	१·१७१६	०·९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१
३८	१·५७८६	१·१६७१	०·९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५
३९	१·५६७३	१·१६२७	०·९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९
४०	१·५५६३	१·१५८४	०·९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३
४१	१·५४५६	१·१५४०	०·९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६
४२	१·५३५१	१·१४९८	०·९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०
४३	१·५२४९	१·१४५५	०·९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०२	३११४
४४	१·५१४९	१·१४१३	०·९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८
४५	१·५०५१	१·१३७२	०·९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२
४६	१·४९५६	१·१३३१	०·९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६
४७	१·४८६३	१·१२९०	०·९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६६	३८९७	३४७५	३०८९
४८	१·४७७१	१·१२४९	०·९३३१	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३
४९	१·४६८२	१·१२०९	०·९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७
५०	१·४५९४	१·११७०	०·९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१
५१	१·४५०८	१·११३०	०·९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५
५२	१·४४२४	१·१०९१	०·९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३४	४८४४	४३२५	३८६०	३४४१	३०५९
५३	१·४३४१	१·१०५३	०·९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३
५४	१·४२६०	१·१०१५	०·९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७
५५	१·४१८०	१·०९७७	०·९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१
५६	१·४१०२	१·०९३९	०·९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४
५७	१·४०२५	१·०९०२	०·९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८
५८	१·३९४९	१·०८६५	०·९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२
५९	१·३८७५	१·०८२८	०·९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६

घं. १२	घं. १३	घं. १४	घं. १५	घं. १६	घं. १७	घं. १८	घं. १९	घं. २०	घं. २१	घं. २२	घं. २३	मिनट
३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	०
३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७६	०३७५	०१८२	१
२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	२
२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	३
२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	४
२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	५
२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	६
२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६७	०५५६	०३५५	०१६३	७
२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	८
२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४५९	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	९
२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३	१०
२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१४
२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८५	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५	१९
२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५१२	०३१३	०१२२	२०
२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१६	०५०८	०३०९	०११९	२१
२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२८७४	२५३६	२२२४	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२८६२	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९२	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२८५६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८४	०२८७	००९८	२८
२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८३	००९४	२९
२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१८	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९	३४
२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६३	०४५८	०२६१	००७३	३६
२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९१	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२६	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५	४२
२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८	४४
२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५	४५
२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२८	०४२४	०२२९	००४२	४६
२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६	४८
२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०	५०
२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	[illegible]	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	[illegible]	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२८	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५४	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ मानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं॰ मि॰

[illegible]	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं॰ मि॰

प्र	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्न सारणी में जो घण्टा मिनट लिखे हैं वे रेल्वे (भा. स्टै.) टा. के हैं। यहां रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३ तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा गया है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है, तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है, याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया, जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ३ बज कर ९ मिनट पर है। लग्न की सन्धि में एक-दो मिनट का कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है।

—दैनिक लग्न-सारणी से लग्न के भुक्त अंशों का ज्ञान—

अपने अभीष्ट भा. स्टै. टा. में से गत-लग्न के समाप्ति-काल के घण्टा मिनट टा कर जो शेष बचे, उसके मिनट बनाकर उन्हें ३० से गुणा करके वर्तमान लग्न के निरयण स्वोदय के मिनटों से (जो नीचे दिए गए हैं) भाग दें। जो लब्धि आए वह वर्तमान लग्न के भुक्त अंश होंगे।

—लग्नों के निरयण स्वोदयों के मिनट—

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
निरयण स्वोदय मिनट	९४	११५	१३४	१४२	१४०	१४०	१४२	१४०	१२४	१०२	८६	८२

दैनिकलग्न-सारणी से लग्न का नवमांश ज्ञात करना

अपने अभीष्ट भा. स्टै. टा. के घन्टा-मिनटों में से 'दैनिक-लग्न-सारणी में दिए गए गत–लग्न के समाप्ति काल के घं. मिनटों को घटा कर जो शेष बचें उसके मिनट बनाएं। फिर नीचे दी गई लग्न नवमांश सारणी में वर्तमान लग्न के नीचे उन मिनटों से नवमांश ज्ञात करें। जैसे––चण्डीगढ़ में वैशाख प्रविष्टा ५ को दिन के १२ बज कर ३५ मिनट पर वर्तमान लग्न कर्क है, इस समय कर्क का वर्तमान नवमांश ज्ञात करने के लिए गत लग्न मिथुन के समाप्ति काल ११ घं. २७ मि. को १२ घं. ३५ मि. में से घटाने पर शेष १ घं. ८ मि. (मि. ६८) प्राप्त हुए। नीचे सारणी में वर्तमान लग्न कर्क नीचे ६३ मिनट पर चौथे नवमांश की एवं ७९ मिनट पर पांचवें नवमांश की समाप्ति लिखी है, अतः स्पष्ट है शेष ६८ मिनट पर कर्क लग्न का पांचवां (वृश्चिक का) नवमांश है।

लग्न नवमांश ज्ञानसारिणी––

लग्न		मे. मि.	वृ. मि.	मि. मि.	क. मि.	सि. मि.	क. मि.	तु. मि.	वृ. मि.	ध. मि.	म. मि.	कुं. मि.	मी. मि.
१ला	नवमांश समाप्त	१० (मे)	१३ (म)	१५ (तु)	१६ (क)	१६ (मे)	१६ (म)	१६ (तु)	१६ (क)	१४ (म)	११ (म)	९ (तु)	९ (क)
२रा	,, ,,	२१ (वृ)	२६ (कुं)	३० (वृ)	३२ सि.	३१ (वृ)	३१ (कुं)	३२ (वृ)	३१ सि.	२८ (वृ)	२२ (कुं)	१९ (वृ)	१८ सि.
३रा	,, ,,	३१ मि	३९ मी	४५ (ध)	४८ (क)	४७ मि.	४७ मी.	४८ (ध)	४७ (क)	४१ मि	३४ मी	२८ (ध)	२७ (क)
४वां	,, ,,	४२ (क)	५१ (मे)	६० (म)	६३ (तु)	६२ (क)	६२ (मे)	६३ (म)	६२ (तु)	५५ (क)	४५ (मे)	३८ (म)	३६ (तु)
५वां	,, ,,	५२ सि.	६४ (वृ)	७५ (कुं)	७९ (वृ)	७८ सि.	७८ (वृ)	७९ (कुं)	७८ (वृ)	६९ सि.	५६ (वृ)	४७ (कुं)	४६ (वृ)
६वां	,, ,,	६३ (क)	७६ मि.	९० मी	९४ (ध)	९३ (क)	९३ मि.	९४ मी	९३ (ध)	८२ (क)	९८ मि.	५७ मी.	५५ (ध)
७वां	,, ,,	७३ (तु)	८९ (क)	१०५ (मे)	११० (म)	१०८ (तु)	१०८ (क)	११० (मे.)	१०८ (म)	९६ (तु)	७९ (क)	६६ (मे)	६४ (म)
८वां	,, ,,	८४ (वृ)	१०२ सि.	१२० (वृ)	१२६ (कुं)	१२४ (वृ)	१२४ सि.	१२६ (वृ)	१२४ (कुं)	११० (वृ)	९० सि.	७६ (वृ)	७३ (कुं)
९वां	,, ,,	९४ (ध)	११५ (क)	१३५ मि.	१४२ मी	१४० (ध)	१४० (क)	१४२ मि.	१४० मी	१२४ (ध)	१०२ (क)	८६ मि.	८२ मी

(कोष्ठों में दी गई राशियां नवमांश की राशियां हैं।)

सूचना––श्री मार्तण्ड पञ्चांग में दी गई दैनिक-लग्न-सारणियां चण्डीगढ़ के लिए बनाई गई हैं। परन्तु इन्हें सामान्यतया लग्न के समाप्तिकाल एवं नवमांश-ज्ञान के लिए दिल्ली, समस्त पञ्जाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू-काश्मीर के किसी भी नगर के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पञ्चांग में अन्यत्र दी हुई 'पञ्चाङ्ग-परिवर्तन-सारणी' की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में पर्याप्त सूक्ष्मता से लग्न-समाप्ति-काल जाना जा सकता है।

सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि :—

यह मानना पड़ेगा, कि पाश्चात्य गणना-पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना-पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट-सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ पाती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य-ज्योतिषियों ने साम्पातिक-काल (Sidereal time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है ?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं :—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) के बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

* (१) **अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)**
* (२) **अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)**
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या −)

} ये तीनों उपकरण ९८ एवं ९९ पृष्ठस्थ 'अक्षांशादि सारिणी' से उठाइए।

विशेष:—यदि "अक्षांशादि सारिणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल**—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहा) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल' बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं '−' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश** :—पृ० १०१ पर अयनांश सारिणी को तीन भागों में दिया गया है। सारिणी के प्रथम भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें, और उनमें सारिणी के द्वितीय भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का कलादि फल लेकर जोड़ दें। यह मध्यम अयनांश होगा। इसे स्पष्ट करने के लिए अयनांश सारिणी भाग ३ य की सहायता से सायन राहु (निरयण राहु + अयनांश-सारिणी १ म तथा २ य के फलों का जोड़) से संस्कार करें। सारणी न. ३ की उपेक्षा की जा सकती है, क्योंकि यह संस्कार बहुत थोड़ा है।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिक काल** :—पृष्ठ १००-१०१ पर साम्पातिक काल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्टकालिक सां० का० इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन् का सां० का० उठाएं। उसमें सां० का० कोष्ठक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का (लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां० का० लेकर जोड़ें। इसमें सां० का० कोष्ठक नं० (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सां० का० के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीय मध्यम समय, (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा-मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहां यदि घण्टे २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

(इस पञ्चाङ्ग में दिये गये सां० का कोष्ठकों से सन् १८८८ से सन् १९८३ तक का सां० का० जाना जा सकता है।)

इस प्रकार ऊपर बतलाए गए ६ उपकरण तैयार हो जानेपर नीचे लिखी विधि से सारणी द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट कीजिए—

पृ. १०२ पर ३०, ३१, ३२, ३३ अक्षांशों वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न-सारणी दी गई है, जो पंजाब-हिमाचल प्रदेश के समस्त नगरों एवं हरियाणा जम्मू-काश्मीर के अनेक नगरों के लिए उपयोगी हैं। ऊपर दी गई विधि से ज्ञात किए गए अभीष्ट साम्पातिक-काल के घण्टा मिनटों को इस लग्न सारिणी के बांई ओर वाले पहले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो रा. अं. क. लिखे हैं, उन्हें अलग नोट करें। क्योंकि सारणी के पहले कालम में ३०-३० मि. के अन्तर पर साम्पातिक काल दिया गया है। अतः सम्भव है, कि अभीष्ट साम्पातिक काल वहां पूरा पूरा न मिले, ऐसी दशा में वहां अभीष्ट साम्पातिक-काल के बिल्कुल समीप वाले परन्तु उससे कम सां० का० के आगे लिखे रा. अं. क. को नोट करें और उसके आगे सारिणी में ही दिए गए अन्तर की कलाओं को भी उठा लें। सां० का० के शेष मिनट एवं सेकण्डों को सपिण्डित करके (सेकण्ड बनाकर) उन्हें सारिणी से उठाई गई अन्तर कलाओं से गुणा करके १८०० से भाग दें। लब्धि कला होगी। जो शेष बचे उसे ३० से भाग देने पर लब्धि विकला होगी। इन कला-विकलाओं को सारणी से प्राप्त किए गए रा. अं. क. में जोड़ने पर इष्ट कालिक सायन लग्न होगा। इसमें से उस दिन का अयनांश (जिस की ज्ञात करने की विधि ऊपर दी गई है) घटा देने से फलितोपयोगी निरयण लग्न बन जाएगा। ठीक इसी प्रकार जिस साम्पातिक-काल से लग्न स्पष्ट किया है, उसी सां०का० से पृष्ठ १०२ वाली सारणी में ही दी गई दशम-लग्न-सारणी द्वारा सायन-दशम लग्न स्पष्ट करके उसमें से भी अयनांश घटा देना चाहिए। दशम-लग्न-सारणी सभी अक्षांश वाले प्रदेशों के लिए एक सी ही होती है।

ध्यान रहे, ऊपर दी गई विधि में लग्न-स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांशों के केवल अंशों का ही उपयोग किया गया है, अक्षांशों की कलाओं का नहीं। शुद्ध-सूक्ष्म लग्न प्राप्त करने के लिए इसी सारणी में अभीष्ट साम्पातिक-काल के आगे अक्षांश की कलाओं के नीचे दी गई कलाओं को उपरोक्त स्पष्ट निरयण-लग्न में चिह्न के अनुसार जोड़ना या घटाना जरूरी है।

---

* भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।

* भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं।

लग्न-साधन का उदाहरण—यहां हम १५ जुला. १९६९ को भा. स्टै. टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि. पर चम्बा (हि. प्र.) में लग्न स्पष्ट करेंगे—

'अक्षांशादि सारिणी' में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैण्डर्ड अन्तर—२५ मि. २० से है। १० घं. ४५ मि. में से स्टैण्डर्ड अन्तर के. मि. से. घटने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीय मध्यम काल हुआ। सांपातिक काल कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ का सां. का. (६ घं. ४१ मि. २ से.) लिया, इसमें कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां. का. (१२ घं. ४८ मि. ४९ से.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ से. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अतः १९ घं. २९ मि. ५१ से० में चम्बा का स्थानीय मध्यम काल १० घं. १९ मि. ४० से. जोड़ा और योग फल में कोष्ठक नं. (४) से स्थानीय मध्यम काल के १० घं. १९ मि. से उठाए गए १ मि. ४२ से. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुआ। क्योंकि यहां घण्टे २४ से ज्यादा हैं अतः २४ घण्टे घटाएं तो ५ घं. ५१ मि. १३ से. हमारा अभीष्ट साम्पातिक काल हुआ।

इसी दिन (१५ जुला. १९६९ को) अयनांश जानने के लिए 'अयनांश सारणी भाग १ में' से सन् १९६९ के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया, इसमें 'अयनांश सारणी भाग २' से प्राप्त की गई १५ जुला. की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ। "अयनांश सारणी भाग ३" का उपयोग स्वल्पान्तर होने के कारण छोड़ दिया गया है।

अब ऊपर स्पष्ट किए गए सां. का. द्वारा लग्न-सारणी की सहायता से इस प्रकार लग्न स्पष्ट करेंगे—

पृ. १०२ पर दी गई लग्न सारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न ५ रा. २३ अं. ३४ क. लिखा है, इसे अलग नोट किया। लग्न के ये राश्यादि ५ घं. ३० मि. सां. का. के हैं। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक काल के राश्यादि चाहिएं। अतः हमें ५ रा. २३ अं. ३४ क. में २१ मि. १३ से. (अथवा १२७३ सेकण्ड) का चालन देना है। लग्न सारणी में ३२ अक्षांश के नीचे ५ घं. ३० मि. सा. का. के आगे अन्तर की कलाएं ३८६ दी हैं। इन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० से भाग देने पर लब्धि २७३ कला हुई। शेष ११३६ को ३० से भाग देने पर लब्धि ३८ वि. हुई। २७३ क. ३८ वि. (अर्थात् ४ अं. ३३ क. ३८ वि.) को ५ रा. २३ अं. ३४ क. में जोड़ने पर ५ रा. २८ अं. ७ क. ३८ वि. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटा देने पर ५ रा ४ अं. ४१ क. ४५ वि. फलितोपयोगी निरयण लग्न हुआ। हमने ३२ अक्षांश की लग्न सारणी से लग्न साधन किया है, परन्तु चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ कला है। अतः इस लग्न में हमें २९ कला (स्वल्पान्तर से ३० कला) का संस्कार देना है। इसके लिए लग्न सारणी के दाईं ओर "लग्न में अक्षांश कला संस्कार" वाले कोष्ठक में ३० कला के नीचे और सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे +१ कला प्राप्त हुई। इसे ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ मि. में जोड़ने से ५ रा. ४ अं. ४२ क. ४५ वि. —यह हमारा अभीष्ट-कालिक सूक्ष्म निरयण-लग्न स्पष्ट हुआ।

ठीक इसी तरह इसी सां. का. (५ घं. ५१ मि. १३ से.) से पृ. १०२ पर 'लग्न सारणी' के साथ ही दी हुई 'दशम लग्न सारणी' से दशमलग्न स्पष्ट किया जाएगा। उदाहरण नीचे दिया गया है—

दशम-लग्न-साधन का उदाहरण—१५ जुला. १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. पर ही चम्बा में दशम-लग्न स्पष्ट करना है। इस समय सा. का. ५ घं. ५१ मि. १३ से. है। पृ. १०२ पर दशम लग्न सारणी में सा. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न २ रा. २३ अं. ७ क. दिया है। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक-काल का दशम लग्न चाहिए। अतः २ रा. २३ अं. ७ क. में २१ मि. १३ से. (१२७३ सेकण्ड) का चालन देना होगा। सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न सारणी में अन्तर कलाएं ४१३ लिखी हैं, इन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० का भाग देने पर लब्धि २९२ कला हुई। शेष १४९ को ३० से भाग देने पर लब्धि ५ विकला हुई। इन २९२ क. ५ वि. (४ अं. ५२ क. ५ वि.) को २ रा. २३ अं. ७ क. में जोड़ देने पर २ रा. २७ अं. ५९ क. ५ वि. सायन दशम लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटाने पर २ रा. ४ अं. ३३ क. १२ वि. यह हमारा फलितोपयोगी अभीष्ट कालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान रहे, दशम-लग्न में 'अक्षांश कला-संस्कार' (जो लग्न में दिया जाता है) नहीं दिया जाता।

लग्न एवं भावों की सूक्ष्मता की सीमा?
लग्न एवं दशम लग्न को कला तक ही स्पष्ट करें

लग्न एवं दशम लग्न में विकला तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास व्यर्थ है। क्योंकि मध्यम-मान से एक मिनट में १५ कला (अथवा एक सैकण्ड में १५ विकला) का अन्तर लग्न एवं दशम में पड़ता है और हम जातक के जन्मादि के काल को समान्यतः एक मिनट तक की सूक्ष्मता से ज्ञात कर सकते हैं। अत्यधिक सूक्ष्मता से काल जानने का प्रयत्न करने पर भी काल में १०-१५ सैकण्ड की अशुद्धि रह ही जाती है, जिससे लग्न दशम में तीन चार कला की अशुद्धि का फिर भी रह जाना स्वाभाविक है। किञ्च-हम अधिकतर अपने स्थान के रेखांश-अक्षांश की जगह ५-१० मील या इससे भी अधिक दूरी पर स्थित किसी प्रसिद्ध नगर के रेखांश-अक्षांश लेकर लग्नादि-साधन करते हैं, इससे भी लग्नादि में काफी अन्तर पड़ता है। ध्यान रहे, यदि रेखांश एक मील दूर के स्थल का लिया गया हो, तो भारत में लगभग १ कला की अशुद्धि लग्न-दशम में आती है। इसी प्रकार अक्षांश की स्थूलता का भी लग्नदशम पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। इससे स्पष्ट है, कि—लग्नदशम में कला तक की सूक्ष्मता पर ही सन्तोष करना चाहिए। वैसे तो यहां कला तक की सूक्ष्मता भी विश्वसनीय नहीं है, विकला तक की सूक्ष्मता की बात तो बहुत दूर है। हां, यदि काल लगभग ४ प्रतिसैकण्ड तक एवं रेखांश-अक्षांश विकला तक शुद्ध हों, तो लग्न दशम में विकलान्त सूक्ष्मता लाई जा सकती है, अन्यथा नहीं।

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टैं.टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

अक्षांशादि सारिणी

रेखांश— ग्रीन्विच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर,
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाइम का स्थानीय टाईम से अन्तर,

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२ अंश ३० कला के अंशादि अन्तर को ४ से गुणा करने पर प्राप्त होगा।

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं क.	मिनट से.		अं क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	-२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	-१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	-२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	कुम्भकोणम	१०।५८	७९।२५	-१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	-१५।३२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	-१०।५२	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	-२६।३२	झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	- ४।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	-३०।४८	कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	-१०।१६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	-२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	-२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	-३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	-२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	- १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	-२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	-१७। ०
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०	खंभात	२२।१९	७२।३६	-३९।३६	डेरा इस्माइलखां (पा.)	३१।५१	७०।५६	-१६।१६
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	+१०। ४	डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	-१६।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	-३०।४८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	+ १।४४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	-३९।२८	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	-४०। ८
अलीगढ़ (यू.पी.)	२७।५४	७८। ६	-१७।३६	गिलगित	३५।५५	७४।२२	-३२।३२	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	-१४।५६
आगरा (,,)	२७।१०	७८। ५	-१७।४०	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	- ३।४०	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+ १३।४८
आजमगढ़ (,)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	- ३। ४	द्वारिका	२२।१४	६९। १	-५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	-३९। ०	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	-२८।१२	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+ २३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	-१३।५२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	-२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	-२६।४०	गोवा	१५।३०	७३।५७	-३४।१२	देहरादून	३०।१९	७८। ४	-१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	-२७। ८	चम्बा	३२।२९	७६।१०	-२५।२०	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	-३८।२०
एलिचपुर (म.रा.)	२१।१८	७७।३३	-१९।४८	चीरापुञ्जी	२५।१७	९१।४७	+ ३७। ८	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	-३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	-२८।२८	छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	-११।२८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	-१३।२४
कठुआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	-२७।३६	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाभा	३०।२५	७६। ९	-२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	-२८।२०	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+ २५। ४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	-२१।५२	जम्मू	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	नासिक	२०। २	७३।५०	-३४।४०
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	-३१।४४	जबलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०। ४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+ २३।३६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+ १०।५२
काठमाण्डू (नेपा.)	२७।४२	८५।१२	+ १०।४८	जालन्धर	३१।१९	७५।१८	-२८।४८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	-२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	- ८।२४	जामनगर	२२।२७	७०। ७	-४९।३२	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	-२७।१२
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	-१३।३६	जीन्द	२९।१९	७६।२३	-२४।२८	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	- २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	-४७।३६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	-१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	-२४।४८	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-४६।१२	पुन्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	-३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	-३४।२४	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	-३७।४४	पूना	१९। ०	७२।५५	-३८।२०
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	-२२।४८	जौनपुर	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६	पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	-१३।३२

नगर का रेखांश ८२°।३०' से अधिक या कम होने पर स्टैंडर्ड अन्तर क्रमशः धन या ऋण होगा।

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. स.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	−५०।४४	रतलाम	२३।२१	७५। ७	−२९।३२
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	−११।३२	रत्नागिरि	१७। ८	७३।१९	−३६।४४
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	−३०।१२	रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	−१२।३२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	−३१।२०	रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	− ७।३६
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	−३६। ०	राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७।१०	८१।४८	− २।४८
बम्बई	१९। ०	७२।५४	−३८।२४	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	−२३।२०
बरेली	२८।२२	७९।२७	−१२।१२	रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	− ४।४४
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	−११।५२	रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	− ३।१६
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	राजकोट	२२।१८	७०।५६	−४६।१६
बहावलपुर	२९।२४	७१।४७	−४२।५२	रोहतक	२८।५४	७६।३८	−२३।२८
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	− १। ८	रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	−२४।००
बीकानेर	२८। १	७३।२२	−३६।३२	लखनऊ	२६।५५	८०।५९	− ६। ४
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	−२६।५२	लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	− ७।४०
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	−१९।२८	लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	− २।१६
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	−३०। ०	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	−२६।२४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	−२०। ०	शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	−५५।२०
भागलपुर (वि.)	२५।१४	८६।५९	−१७।५६	शिमला	३१। ६	७७।१३	−२१। ८
भोपाल (म.भा.)	२३।१६	७७।२६	−१९।३६	श्रीनगर (का)	३४। ६	७४।५१	−३०।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	− ९।२०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	− ८।५२	सहारनपुर	२९।५८	७७।३३	−२०।२८
मथुरा	२७।२८	७७।४१	−१९।१६	सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	− १।३६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	−२६। ४	सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	−३३।५२
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	−१३।४८	सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	−१५। ०
मिण्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	− ६।३६	सूरत	२१।१२	७२।५२	−३८।३२
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	−१३।५६	सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	−२१।२४
मुजफ्फरपुर (वि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	−१७। ८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	हिसार	२९।१०	७५।४६	−२६।५६
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	−१४।४४	हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	−५५।२८
मेरठ	२९। १	७७।४५	−१९। ०	हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	−१६। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	−२३।१२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	−२६।१२
मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	−२२। ८	होशंगाबाद (म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	−१९। ०

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं.टा. से देशीय स्टै.टा. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३०	पू. ६९।१८	− १। ०	+ ७।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू. ६५।३०	− १। ०	− ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१२	पू. ६७। ०	− ०।३०	−३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू. ९६। ८	+ १। ०	− ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू. ९६।१३	+ १। ०	− ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१७	पू.१०३।५१	+ २। ०	−३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू. ४४।२७	− २।३०	− २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू. ३९।५४	− २।३०	−२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू. ५१।२५	− २। ०	− ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू. ३१।१५	− ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विट्जर पू.)	उ.४६।१३	पू ६। ७	− ४।४०	−३५।३२
जेरुशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू. ३५।१४	− ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प. ७४। ०	−१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प. ७७। ४	−१०।३०	− ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू. १३।२५	− ४।३०	− ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू. १९। ३	− ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	− ५।३०	− ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	०। ०	− ५।३०	०। ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू. ९१। ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९। ९	− ५।३०	−३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू. ९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू. ६७। ४	− ०।३०	−२१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू. ३६।५२	− २।३०	−३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू. ३९।४०	− २।३०	−२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू. ३२।५६	− २।३०	−४८।१६
मोशी "	द. ३।२१	पू. ३७।२०	− २।३०	−३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	पू.१३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	पू. २।२०	− ४।३०	−५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू. ३७।३७	− २।३०	−२९।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू. १२।२८	− ४।३०	−१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू. ११४।११	+ २।३०	−२३।१२
पेकिंग "	उ ३९।५५	पू.११६।२४	+ २।३०	−१४।२४

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०
	घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०
१९७२	६।३८।१०	१८८८	६।३९।३०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१८	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	६।३७।४७
१९७३	६।४१।१०	१८८९	६।४२।२९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	६।४०।२४	१९६१	६।४०।४७
१९७४	६।४०।१२	१८९०	६।४१।३२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२७	१९६२	६।३९।५०
१९७५	६।३९।१५	१८९१	६।४०।३४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५३
१९७६	६।३८।१७	१८९२	६।३९।३७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२७	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३३	१९६४	६।३७।५६
१९७७	६।४१।१६	१८९३	६।४२।३७	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३३	१९६५	६।४०।५५
१९७८	६।४०।१९	१८९४	६।४१।४०	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३५	१९६६	६।३९।५७
१९७९	६।३९।२२	१८९५	६।४०।४३	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३८	१९६७	६।३९। ०
१९८०	६।३८।२४	१८९६	६।३९।४६	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५६	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।४१	१९६८	६।३८। ३
१९८१	६।४१।२३	१८९७	६।४२।४५	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१६	१९५७	६।४०।४०	१९६९	६।४१। २
१९८२	६।४०।२६	१८९८	६।४१।४८	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४३	१९७०	६।४०। ५
१९८३	६।३९।२९	१८९९	६।४०।५१	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४५	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० प्लुतवर्ष (लीप इयर) नहीं था।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४
३०	१।५४।२०	. .	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११
३१	१।५८।१६	. . . .	५।५०।५४		९।५१।२४	.	१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८	. . .	२३।५५। ७
३२												२३।५९। ३

(कोष्ठक नं० १) अयनांश सारिणी

अं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५

(कोष्टक नं० १)	
पूर्व रेखांश	का० अन्त० संस्कार
अं० क०	[illegible]
८। ०	+ ४५
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
३०। ०	+ ३१
३२। ०	+ २९
३४। ०	+ २८
३६। ०	+ २७
३८। ०	+ २५
४०। ०	+ २४
४२। ०	+ २३
४४। ०	+ २१
४६। ०	+ २०
४८। ०	+ १९
५०। ०	+ १७
५२। ०	+ १६
५४। ०	+ १५
५६। ०	+ १३
५८। ०	+ १२
६०। ०	+ ११
६२। ०	+ १०
६४। ०	+ ८
६६। ०	+ ७
६८। ०	+ ६
७०। ०	+ ४
७२। ०	+ ३
७४। ०	+ २
७६।३०	०
७९। ०	- २
८१। ०	- ३
८३। ०	- ४
८५। ०	- ६
८७। ०	- ७
८९। ०	- ८
९१। ०	- १०
९३। ०	- ११
९५। ०	- १२
९७। ०	- १३
९९। ०	- १५
१०१। ०	- १६
१०३। ०	- १७

अयनांश सारिणी
(भाग ३)
(धूनन संस्कार)
उपकरण=
निरयण राहु+
सारिणी १ म,
द्वितीय से प्राप्त
मध्यम अयनांश
(=सायन राहु)

उप. रा.।अं	संस्कार वि.
०। ०	−०
०।१५	−५
१। ०	−९
१।१५	−१२
२। ०	−१५
२।१५	−१६
३। ०	−१७
३।१५	−१६
४। ०	−१५
४।१५	−१२
५। ०	− ९
५।१५	−−५
६। ०	+०
६।१५	+५
७। ०	+९
७।१५	+१२
८। ०	+१५
८।१५	+१६
९। ०	+१७
९।१५	+१६
१०। ०	+१५
१०।१५	+१२
११। ०	+९
११।१५	+५.

घं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९५१	२३।१०।२१
१९२२	२२।४६। ३	१९५२	२३।११।११
१९२३	२२।४६।५४	१९५३	२३।१२। ३
१९२४	२२।४७।४४	१९५४	२३।१२।५३
१९२५	२२।४८।३४	१९५५	२३।१३।४३
१९२६	२२।४९।२५	१९५६	२३।१४।३३
१९२७	२२।५०।१५	१९५७	२३।१५।२३
१९२८	२२।५१। ५	१९५८	२३।१६।१३
१९२९	२२।५१।५५	१९५९	२३।१७। ३
१९३०	२२।५२।४५	१९६०	२३।१७।५३
१९३१	२२।५३।३६	१९६१	२३।१८।४४
१९३२	२२।५४।२६	१९६२	२३।१९।३४
१९३३	२२।५५।१६	१९६३	२३।२०।२४
१९३४	२२।५६। ७	१९६४	२३।२१।१५
१९३५	२२।५६।५७	१९६५	२३।२२। ५
१९३६	२२।५७।४७	१९६६	२३।२२।५५
१९३७	२२।५८।३७	१९६७	२३।२३।४५
१९३८	२२।५९।२८	१९६८	२३।२४।३६
१९३९	२३। ०।१८	१९६९	२३।२५।२६
१९४०	२३। १। ८	१९७०	२३।२६।१६
१९४१	२३। १।५८	१९७१	२३।२७। ६
१९४२	२३। २।४९	१९७२	२३।२७।५७
१९४३	२३। ३।३९	१९७३	२३।२८।४७
१९४४	२३। ४।२९	१९७४	२३।२९।३७
१९४५	२३। ५।१९	१९७५	२३।३०।२७
१९४६	२३। ६।१०	१९७६	२३।३१।१८
१९४७	२३। ७। ०	१९७७	२३।३२। ८
१९४८	२३। ७।५०	१९७८	२३।३२।५८
१९४९	२३। ८।४१	१९७९	२३।३३।४८
१९५०	२३। ९।३१	१९८०	२३।३४।३९

लग्न-सारणी
(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

साम्पातिक काल	दशम लग्न-सारणी		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		लग्न में अक्षांश कला-संस्कार					
											अक्षांश-कला					
घ. मि.	दशम लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	१०क. कला	२०क. कला	३०क. कला	४०क. कला	५०क. कला	६०क. कला
०।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	३१
०।३०	०।८।९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७	५	१०	१५	२०	२५	२९
१।०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४६	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४१	३७७	३।२७।१०	३७५	४	९	१३	१८	२२	२६
१।३०	०।२४।१८	४७३	४।२।११	३८०	४।२।३५	३७९	४।३।०	३७७	४।३।२५	३७२	४	८	१२	१६	२०	२४
२।०	१।२।११	४६४	४।८।३१	३७९	४।८।५४	३७७	४।९।१७	३७३	४।९।३७	३७४	४	७	११	१५	१८	२२
२।३०	१।९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७२	+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
३।०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८३	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२।३	३७६	+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८।४	३८०	४।२८।१९	३७६	२	५	८	१०	१२	१५
४।०	२।२।५	४२७	५।३।५९	३८८	५।४।११	३८५	५।४।२४	३८२	५।४।३६	३७९	२	४	६	८	१०	१२
४।३०	२।९।१२	४१९	५।१०।२७	३९०	५।१०।३६	३८७	५।१०।४९	३८३	५।१०।५५	३८१	२	३	५	६	८	१०
५।०	२।१६।११	४१६	५।१६।५७	३९१	५।१७।३	३८८	५।१७।९	३८५	५।१७।१६	३८१	१	२	३	४	५	+६
५।३०	२।२३।७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३	+०	+१	+१	+२	+२	३
६।०	३।०।०	४१२	६।०।०	३९२	६।०।०	३८९	६।०।०	३८६	६।०।०	३८२	०	०	०	०	०	
६।३०	३।६।५२	४१७	६।६।३२	३९१	६।६।२९	३८८	६।६।२६	३८५	६।६।२३	३८१	−०	−१	−१	−२	−२	−३
७।०	३।१३।४९	४२०	६।१३।३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१	१	२	३	४	५	६
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९।५	३७९	१	३	५	६	८	१०
८।०	३।२७।५५	४३४	६।२६।१	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७	२	४	६	८	१०	१२
८।३०	४।५।९	४४३	७।२।२७	३८२	७।२।११	३८१	७।१।५६	३७९	७।१।४१	३७६	−२	−५	−८	−१०	−१२	−१५
९।०	४।१२।३२	४५४	७।८।४९	३८१	७।८।३२	३७८	७।८।१५	३७५	७।७।५७	३७२	−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
९।३०	४।२०।६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७९	७।१४।३०	३७५	७।१४।९	३७४	३	६	१०	१३	१६	२०
१०।०	४।२७।३१	४८३	७।२१।२९	३८०	७।२१।६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२	४	७	११	१५	१८	२२
१०।३०	५।५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७।०	३७७	७।२६।३५	३७५	४	८	१२	१६	२०	२४
११।०	५।१३।४२	४८७	८।४।११	३८३	८।३।४४	३८०	८।३।१७	३७९	८।२।५०	३७७	४	९	१३	१७	२२	२७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०।४	३९०	८।९।३६	३८७	८।९।७	३८४	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३०
१२।०	६।०।०	४८९	८।१७।३	३९९	८।१६।३४	३९४	८।१६।३	३९३	८।१५।३१	३९१	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
१२।३०	६।८।९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३।८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२।२	४०४	५	१०	१६	२१	२६	३२
१३।०	६।१६।१७	४८१	९।०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७	५	१०	१६	२१	२७	३३
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९।७।२८	४४०	९।६।५४	४४०	९।६।१९	४३९	९।५।४३	४३८	५	११	१७	२२	२८	३४
१४।०	७।२।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३।१	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३५
१४।३०	७।९।५५	४५३	९।२२।३०	४८६	९।२१।५७	४८६	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३६
१५।०	७।१७।२८	४४४	१०।०।३६	५२१	१०।०।३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०।९।१७	५५०	१०।८।४५	५५४	१०।८।११	५५७	१०।७।३८	५६१	५	१०	१६	२१	२७	३३
१६।०	८।२।५	४२७	१०।१८।२७	५८५	१०।१७।५९	५९१	१०।१७।३०	५९५	१०।१६।५९	६००	५	१०	१५	१९	२४	२९
१६।३०	८।९।१२	४१९	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२५	६२९	१०।२६।५९	६३६	४	८	१२	१६	२०	२३
१७।०	८।१६।११	४१६	११।८।२९	६४१	११।८।१२	६४७	११।७।५४	६५५	११।७।३५	६६५	३	६	९	१२	१५	१८
१७।३०	८।२३।७	४१३	११।१९।८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०	−२	−३	−४	−६	−८	−९
१८।०	९।०।०	४१२	०।०।०	६५२	०।०।०	६६०	०।०।०	६७१	०।०।०	६८०	०	०	०	०	०	
१८।३०	९।६।५२	४१७	०।१०।५२	६३९	०।११।०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५	+१	+२	+४	+५	+६	+८
१९।०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२।६	६२९	०।२२।२५	६३६	३	६	९	१२	१५	१८
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१।१।४८	५८५	१।२।१०	५९१	१।२।३५	५९५	१।३।१	६००	४	८	१२	१६	२०	२४
२०।०	९।२७।५५	४३४	१।११।३३	५५०	१।१२।१	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३।१	५६१	५	१०	१५	२०	२५	३०
२०।३०	१०।५।९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६	+५	+११	+१७	+२२	+२८	३४
२१।०	१०।१२।३२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२।०।३२	४८८	२।१।८	४८९	+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
२१।३०	१०।२०।६	४५३	२।७।३०	४६२	२।८।३	४६३	२।८।४०	४६४	२।९।१७	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।०	१०।२७।३१	४८३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।३०	११।५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३।६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७	६	१२	१८	२४	३०	३५
२३।०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३३	४०७	३।०।६	४०६	३।०।३९	४०५	३।१।१४	४०४	५	११	१६	२१	२७	३३
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३।६।२०	३९७	३।६।५२	३९४	३।७।२४	३९३	३।७।५८	३९१	५	११	१६	२१	२७	३३
२४।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
ऊना	३१।२२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	−२४।४८	पालम पुर	३२। ७	७६।३५	−२३।४०
कुल्लू	३१।५८	७७। ०	−२२। ०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२३। ८
कोटखाई	३१। ८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७। ५	−२१।४०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२९	७७।४५	−१९। ०
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३। ०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	−२२।४०
डल्हौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	−२२।३६
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।२४
नालागढ़	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१। ६	७७।१३	−२१। ८
				हमीरपुर	३१।४३	७६।३०	−२४। ०

॥ लग्न सारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंश.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८

अंश.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	
०	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	२०६
वृषभ	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	
१	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	२४२
मिथुन	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	
२	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	२९९
कर्क	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	
३	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	३४७
सिंह	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	
४	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३५६
कन्या	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	
५	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	३५०
तुला	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	
६	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	३५०
वृश्चिक	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	
७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	३५६
धनु	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	
८	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	३४७
मकर	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	
९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	२९९
कुम्भ	५७	५७	५७	५७	५७	५८	२८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	
१०	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	२४२
मीन	०	१	१	१	१	१	६	१	१	१	२	२	२	२	२	
११	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	२०६

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठकसे अल्पकोष्ठकसारिणी में देखा तो(१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला५० बिकला ४०युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक१७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल२ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१और ऐष्य(आगे का) कोष्ठक१८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया

११) २ (०।१०।५५ ६० १२० ११० १ ६० ६० ६०५	तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई। शेष १० बचे इस को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया। तो लब्ध

५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्न साधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला आवें, वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है॥

॥ दशम लग्न-सारिणी ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१७
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	[illegible]	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

नोट--हमारे यहां से समीपवर्ती जसे चाईगढ़, अम्बहेला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारिणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है।

अथ दशम लग्न साधनम्— "उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य भवेदिष्टं सारिखागौ-सखांगने ॥१॥"

अथ—सूर्योदय से घटचादि इष्टकाल में से दिनार्ध-हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना) । इसी शदम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मानकर इस दशमलग्नसारिणी को जन्मकालीन इष्ट मानकर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है।

भाव-साधनम्—"विलग्नतूर्यं षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत् । एकद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड्-युताः परे। ।२॥" अर्थः—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भ सन्धि होगी । फिर उसी आरभ संधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ-भाव को आरंभ संधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इनके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की अचेरंभ संधि से लग्न की विरा सन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशि ख्या में युक्त करने से सन्धिरहित ६ भाव हो जावग, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा इसा प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे। इसक अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिर हि (६) छः भावों में (६) छः राशि युक्त

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धतिः—

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धतिः—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए पृ० १०६-१०७ पर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार के गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधियाँ नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' (पृष्ठ १०६-१०७) में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी (पृष्ठ ८९ से ९४) में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिह्नानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे –४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें दैनिक लग्न सारिणी" में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त के परिवर्तन की विधिः—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यक्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग में दिए गए चण्डीगढ़ सूर्योदय में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३६ मि० लिखा है। इस समय सूर्यक्रान्ति + १७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे + ३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३६ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ९ मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिएँ। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त काल ७ घं० २ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति + १८ अंश (उत्तर क्रान्ति १८ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १८ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे –३ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० २ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त काल ६ घं० ५९ मि० आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधि—सूर्योदयास्त के परिवर्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहाँ भी सूर्योदयास्त के परिवर्तन की भाँति चन्द्रोदय परिवर्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें।

जैसे—१३ अप्रैल १९७१ को मद्रास में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। (इस दिन पञ्चाङ्ग में चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय २१ घं. २३ मि. लिखा है। इसी समय चन्द्र क्रान्ति—२४ (दक्षिण क्रान्ति २४) है। सारिणी में मद्रास के नीचे एवं उदय-कालिक दक्षिण-क्रान्ति २४ के आगे—५१ मि. लिखा है। इस पञ्चाङ्ग में दिये चन्द्रोदय २१घं. २३मि. में से ५१मि. घटाने पर २० घं. ३२ मि. मद्रास में १३ अप्रैल १९७१ को चन्द्रोदयकाल हुआ। चन्द्रास्त-काल-परिवर्तन का उदाहरण भी लीजिए—१० अप्रैं. १९७१ को इस वर्ष के पञ्चाङ्ग में चन्द्रास्त ५ घं. २५ मि. लिखा है। इस समय चन्द्र-क्रान्ति–८ (दक्षिण क्रान्ति ८ अंश) है। सारिणी में मद्रास के नीचे अस्तकालिका दक्षिण चन्द्र-क्रान्ति ८ के आगे–२ मि. लिखा है। चण्डीगढ़ के इस दिन के चन्द्रास्त ५ घं. २५ मि. में से २ मि. घटाने पर ५ घं. २३ मि. (भा. स्टैं. टा.) १० अप्रैल को मद्रास में चन्द्रास्त का समय प्राप्त हुआ।

नोट—चन्द्रोदयास्त पृष्ठ ८४-८५ एवं चन्द्र-सूर्य क्रान्ति पृ. ८०-८१ पर देखें।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—जिस दिन तिथि, नक्षत्र योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आगे दिए गये मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिह्न के विपरीत तिथ्यादि के समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोटः—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य चन्द्र की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिह्न उत्तर क्रान्ति एवं – यह चिह्न दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तियाँ ५घं. ३० मि. प्रातः की हैं। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

स्थूल चन्द्रोदयास्त जानने की विधिः—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम् ॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणे, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उन में २घटी जोड़ना, यदि कृष्ण पक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा। यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे, उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा।

पंचाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग १ म)

(लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन के लिए)

लग्न	उदयकालिक दक्षिण क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	काँगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मंडी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर	हरिद्वार	हिसार	अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+ ८	+ ५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	− ५	+८	+४	−१	− ९	−३३	+२	+ ५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+ ८	−५	+ ४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
कुम्भ	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+१	१	९	६	४	२
	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+ १	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	३	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	− १	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
कन्या	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+१	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	−१	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+१	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	- १०	१०	०	४	१९	३९	२	७	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
मकर	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	१०	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	−१	४	२१	४०	२	७	२७	+२	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	−१	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	−१	१२	११	२	५	२४	४१	२	८	२८	२	१	३९	२	१	१४	७	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	२	४१	२	१	१४	७	२	१८
तुला	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
	२०	१०	९	+ १	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
धनु	२१	१०	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	२	१	१५	७	१	२१
	२२	१०	११	०	६३	३६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
वृश्चि.	२३	१०	१२	− १	६४	३६	५	१	१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
	२४	१०	१३	२	६५	३७	६	१	१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३२	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४	२	६६	३८	६	१	१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	− १	१७	७	+ १	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८	६	१	१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३५	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०	[illegible]	२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३५	[illegible]	३	६१	४	०	१९	७	०	२९
	३०	+ ११	−१८	− ६	−७१	−४१	+७	− २	−१९	+१५	−८	−८	−३८	−४९	+१	+ १०	३६	−१८	+ ३	६३	−४	−०	२०	−७	+०	३०

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ य)

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अं.	मि	मि	मि	मि	मि	मि.	मि.	मि	मि	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
सिंह	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	११	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४२	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
मीन	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	११	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	४	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	२	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	२	१४	३०	२	७	३	२	३	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	२	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	२	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२४	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	२	१	११	३६	२	१५	४	२	१	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	३	१७	४	२	१	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२५	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	+१	४	७	२१
	२२	६	२०	२५	२९	१३	१	२	४	३	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	५	२	०	४	८	२२
वृष	२३	६	२१	२६	२८	१३	१	२	५	३	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२७	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	−१	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	२६	११	१	२	६	२	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	२	१	४	८	२५
	२६	६	२४	२८	२६	११	१	२	६	२	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	२	२	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२५	१०	२	२	७	२	१४	५	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	[illegible]	९	२७
	२८	६	२५	३०	२४	९	२	३	७	२	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	[illegible]	९	२८
	२९	६	२६	३१	२२	९	२	३	८	१	१५	५	१८	१८	२	१	५	४९	४	३४	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	२९
	३०	+५	+२७	+३२	−२१	−८	−२	+३	+९	+१	+१६	+५	+२०	−१७	+२	−१	−४	+५०	−४	+३६	+६	−[illegible]	−४	−३	+९	३०

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा० स्टै० टा०)

तारीख	कलकत्ता		गौहाटी		वाराणसी		मद्रास		नागपुर		दिल्ली		जम्मू		जयपुर		बम्बई	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घं. मि.	घ. मि.	घ.मि.	घ. मि.	घ.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घ. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घ.मि.
जन. १	६।१८	१७। १	६।१२	१६।४१	६।४५	१७।१७	६।३३	१७।५२	६।५२	१७।४१	७।१५	१७।३४	७।३१	१७।३६	७।१७	१७।४३	७।१३	१८।११
६	६।२०	१७। ५	६।१३	१६।४४	६।४७	१७।२१	६।३५	१७।५५	६।५४	१७।४५	७।१६	१७।३७	७।३२	१७।३९	७।१८	१७।४६	७।१५	१८।१४
११	६।२०	१७। ८	६।१४	१६।४८	६।४७	१७।२४	६।३६	१७।५८	६।५५	१७।४८	७।१७	१७।४१	७।३२	१७।४३	७।१८	१७।५०	७।१६	१८।१७
१६	६।२१	१७।१२	६।१४	१६।५१	६।४७	१७।२८	६।३७	१८। ०	६।५५	१७।५१	७।१७	१७।४५	७।३१	१७।४८	७।१८	१७।५६	७।१६	१८।२०
२१	६।२०	१७।१५	६।१३	१६।५५	६।४७	१७।३२	६।३७	१८। ३	६।५५	१७।५४	७।१६	१७।४९	७।३०	१७।५३	७।१७	१७।५९	७।१६	१८।२४
२६	६।१९	१७।१८	६।१२	१६।५९	६।४५	१७।३५	६।३७	१८। ५	६।५४	१७।५७	७।१४	१७।५३	७।२८	१७।५८	७।१६	१८। ३	७।१६	१८।२६
३१	६।१८	१७।२२	६।१०	१७। ३	६।४३	१७।३९	६।३७	१८। ८	६।५३	१८। १	७।१२	१७।५७	७।२५	१८। २	७।१४	१८। ७	७।१५	१८।३०
फर. ५	६।१६	१७।२५	६। ७	१७। ७	६।४१	१७।४३	६।३६	१८।१०	६।५१	१८। ४	७। ९	१८। १	७।२२	१८। ७	७।११	१८।११	७।१३	१८।३२
१०	६।१३	१७।२८	६। ४	१७।१०	६।३८	१७।४६	६।३५	१८।१२	६।४९	१८। ७	७। ६	१८। ५	७।१८	१८।१२	७। ८	१८।१५	७।११	१८।३५
१५	६।१०	१७।३१	६। १	१७।१४	६।३५	१७।५०	६।३३	१८।१३	६।४६	१८।१०	७। २	१८। ९	७।१४	१८।१६	७। ४	१८।१८	७। ९	१८।३७
२०	६। ७	१७।३४	५।५७	१७।१७	६।३१	१७।५३	६।३१	१८।१५	६।४३	१८।१२	६।५७	१८।१३	७। ९	१८।२०	७। ०	१८।२१	७। ६	१८।३९
२५	६। ३	१७।३६	५।५३	१७।२०	६।२७	१७।५६	६।२९	१८।१६	६।३९	१८।१५	६।५३	१८।१६	७। ४	१८।२४	६।५६	१८।२४	७। ३	१८।४१
मार्च २(१)	५।५९	१७।३९	५।४८	१७।२३	६।२२	१७।५८	६।२६	१८।१६	६।३६	१८।१७	६।४८	१८।२०	६।५८	१८।२८	६।५२	१८।२७	६।५९	१८।४३
७(६)	५।५५	१७।४१	५।४३	१७।२६	६।१८	१८। १	६।२३	१८।१७	६।३१	१८।१८	६।४२	१८।२३	६।५२	१८।३१	६।४७	१८।३०	६।५६	१८।४५
१२(११)	५।५०	१७।४३	५।३८	१७।२८	६।१३	१८। ३	६।२०	१८।१८	६।२७	१८।२०	६।३७	१८।२६	६।४६	१८।३५	६।४२	१८।३३	६।५२	१८।४६
१७(१६)	५।४६	१७।४५	५।३३	१७।३१	६। ८	१८। ६	६।१७	१८।१८	६।२३	१८।२२	६।३०	१८।२८	६।४०	१८।३८	६।३६	१८।३५	६।४८	१८।४७
२२(२१)	५।४१	१७।४६	५।२७	१७।३३	६। २	१८। ८	६।१४	१८।१९	६।१८	१८।२४	६।२५	१८।३१	६।३४	१८।४१	६।३०	१८।३८	६।४३	१८।४९
२७(२६)	५।३६	१७।४८	५।२२	१७।३६	५।५७	१८।१०	६।१०	१८।१९	६।१३	१८।२५	६।१९	१८।३४	६।२७	१८।४४	६।२४	१८।४०	६।३९	१८।५०
अप्रै. १(०)	५।३१	१७।५०	५।१६	१७।३८	५।५२	१८।१२	६। ७	१८।१९	६। ९	१८।२७	६।१४	१८।३७	६।२१	१८।४८	६।१८	१८।४३	६।३५	१८।५१
६(५)	५।२७	१७।५२	५।११	१७।४०	५।४७	१८।१५	६। ४	१८।२०	६। ४	१८।२८	६। ८	१८।३९	६।१५	१८।५२	६।१३	१८।४६	६।३१	१८।५२
११(१०)	५।२२	१७।५४	५। ६	१७।४३	५।४१	१८।१७	६। ०	१८।२०	६। ०	१८।३०	६। २	१८।४२	६। ९	१८।५५	६। ९	१८।४९	६।२७	१८।५३
१६(१५)	५।१८	१७।५५	५। १	१७।४५	५।३७	१८।१९	५।५७	१८।२०	५।५६	१८।३१	५।५७	१८।४५	६। ३	१८।५८	६। ४	१८।५१	६।२३	१८।५५
२१	५।१३	१७।५७	४।५६	१७।४७	५।३२	१८।२१	५।५५	१८।२१	५।५२	१८।३३	५।५२	१८।४८	५।५७	१९। १	५।५९	१८।५३	६।१९	१८।५६
२६	५।१०	१७।५९	४।५२	१७।५०	५।२८	१८।२४	५।५२	१८।२२	५।४८	१८।३५	५।४७	१८।५१	५।५१	१९। ५	५।५४	१८।५६	६।१६	१८।५७
मई १	५। ६	१८। १	४।४८	१७।५२	५।२४	१८।२६	५।५०	१८।२३	५।४५	१८।३७	५।४३	१८।५४	५।४६	१९। ८	५।५०	१८।५९	६।१३	१८।५९
६	५। ३	१८। ४	४।४४	१७।५५	५।२०	१८।२९	५।४८	१८।२४	५।४२	१८।३९	५।३९	१८।५७	६।४१	१९।११	५।४६	१९। १	६।१०	१९। १
११	५। ०	१८। ६	४।४१	१७।५८	५।१७	१८।३१	५।४६	१८।२५	५।३९	१८।४१	५।३५	१९। ०	५।३७	१९।१५	५।४३	१९। ४	६। ८	१९। २
१६	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।१४	१८।३४	५।४५	१८।२६	५।३७	१८।४३	५।३२	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।४०	१९। ७	६। ६	१९। ४
२१	४।५६	१८।१०	४।३६	१८। ३	५।१२	१८।३७	५।४४	१८।२७	५।३५	१८।४५	५।३०	१९। ६	५।३१	१९।२१	५।३७	१९।१०	६। ४	१९। ६
२६	४।५४	१८।१३	४।३४	१८। ६	५।१०	१८।३९	५।४३	१८।२९	५।३४	१८।४७	५।२८	१९। ८	५।२८	१९।२५	५।३५	१९।१३	६। ३	१९। ८
३१	४।५३	१८।१५	४।३३	१८। ८	५। ९	१८।४१	५।४३	१८।३०	५।३३	१८।४९	५।२६	१९।११	५।२६	१९।२८	५।३३	१९।१५	६। २	१९।१०
जून ५	४।२३	१८।१७	४।३२	१८।१०	५। ९	१८।४४	५।४३	१८।३२	५।३३	१८।५१	५।२५	१९।१३	५।२५	१९।३१	५।३३	१९।१७	६। २	१९।१२
१०	४।५३	१८।१९	४।३२	१८।१३	५। ९	१८।४६	५।४३	१८।३३	५।३३	१८।५३	५।२५	१९।१६	५।२५	१९।३४	५।३३	१९।२०	६। २	१९-१३
१५	४।५३	१८।२०	४।३२	१८।१४	५। ९	१८।४८	५।४४	१८।३५	५।३३	१८।५५	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।३३	१९।२२	६। ३	१९।१५
२०	४।५४	१८।२२	४।३३	१८।१६	५।१०	१८।४९	५।४५	१८।३६	५।३४	१८।५६	५।२६	१९।१९	५।२६	१९।३७	५।३४	१९।२३	६। ४	१९।१६
२५	४।५५	१८।२३	४।३४	१८।१७	५।११	१८।५०	५।४६	१८।३७	५।३५	१८।५७	५।२५	१९।२०	५।२७	१९।३८	५।३५	१९।२४	६। ५	१९।१७

कोष्ठक में दी गई तारीख प्लुत-वर्ष (लीप इयर) में है।

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरणवक्रीभवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट साधन के लिए सूर्योदय में लगभग २।। मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २।। मिनट घटाने पर वास्तविक सूर्योदय होते हैं।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा. स्टे. टा.)

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा. स्टे. टा.)

तारीख	कलकत्ता		गोहाटी		बाराणसी		मद्रास		नागपुर		दिल्ली		जम्मू		जयपुर		बम्बई	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून ३०	४।५६	१८।२३	४।३६	१८।१७	५।१२	१८।५१	५।४७	१८।३८	५।३७	१८।५८	५।२९	१९।२१	५।२९	१९।३८	५।३६	१९।२४	६। ६	१९।१८
जुला. ५	४।५८	१८।२४	४।३७	१८।१७	५।१४	१८।५१	५।४९	१८।३८	५।३८	१८।५८	५।३०	१९।२१	५।३१	१९।३८	५।३८	१९।२४	६। ८	१९।१८
१०	५। ०	१८।२३	४।३९	१८।१७	५।१६	१८।५०	५.५०	१८।३८	५।४०	१८।५८	५।३३	१९।२०	५।३३	१९।३७	५।४०	१९।२३	६। ९	१९।१८
१५	५। २	१८।२३	४।४२	१८।१६	५।१८	१८।४९	५।५१	१८।३८	५।४२	१८।५७	५।३५	१९।१९	५।३५	१९।३६	५।४३	१९।२२	६।११	१९।१८
२०	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।२१	१८।४८	५।५३	१८।३८	५।४४	१८।५६	५।३८	१९।१७	५।३८	१९।३४	५।४६	१९।२०	६।१३	१९।१७
२५	५। ६	१८।२०	४।४७	१८।१२	५।२३	१८।४६	५।५४	१८।३७	५।४६	१८।५४	५।४०	१९।१५	५।४१	१९।३१	५।४८	१९।१८	६।१५	१९।१६
३०	५। ८	१८।१७	४।४९	१८।१०	५।२५	१८।४३	५।५५	१८।३६	५।४८	१८।५२	५।४३	१९।१२	५।४५	१९।२८	५।५१	१९।१५	६।१६	१९।१४
अग. ४	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ७	५।२८	१८।४०	५।५६	१८।३४	५।५०	१८।५०	५।४६	१९। ८	५।४८	१९।२४	५।५४	१९।१२	६।१८	१९।१२
९	५।१२	१८।१२	४।५४	१८। ३	५।३०	१८।३७	५।५७	१८।३२	५।५१	१८।४७	५।४९	१९। ५	५।५१	१९।१९	५।५६	१९। ८	६।२०	१९। ९
१४	५।१४	१८। ८	४।५६	१७।५९	५।३२	१८।३३	५।५८	१८।३०	५।५३	१८।४४	५।५१	१९। ०	५।५४	१९।१४	५।५९	१९। ४	६।२१	१९। ६
१९	५।१६	१८। ४	४।५९	१७।५५	५।३४	१८।२९	५।५८	१८।२७	५।५५	१८।४०	५।५४	१८।५६	५।५८	१९। ८	६। १	१८।५९	६।२२	१९। ३
२४	५।१८	१८। ०	५। १	१७।५०	५।३७	१८।२४	५।५९	१८।२४	५।५६	१८।३६	५।५७	१८।५१	६। १	१९। ३	६। ३	१८।५५	६।२४	१८।५९
२९	५।१९	१७।५६	५। ३	१७।४५	५।३९	१८।१९	५।५९	१८।२१	५।५८	१८।३२	५।५९	१८।४५	६। ४	१८।५८	६। ५	१८।५०	६।२५	१८।५५
सितं. ३	५।२१	१७।५१	५। ५	१७।४०	५।४१	१८।१४	५।५९	१८।१७	५।५९	१८।२७	६। २	१८।४०	६। ७	१८।५२	६। ७	१८।४४	६।२५	१८।५१
८	५।२२	१७।४६	५। ७	१७।३५	५।४२	१८। ९	५।५९	१८।१५	६। ०	१८।२३	६। ४	१८।३४	६।१०	१८।४५	६।१०	१८।३९	६।२६	१८।४७
१३	५।२४	१७।४२	५। ९	१७।२९	५।४४	१८। ४	५।५९	१८।११	६। १	१८।१८	६। ६	१८।२८	६।१३	१८।३९	६।१२	१८।३३	६।२७	१८।४३
१८	५।२५	१७।३६	५।११	१७।२४	५।४६	१७।५८	५।५९	१८। ७	६। ३	१८।१३	६। ९	१८।२२	६।१६	१८।३२	६।१५	१८।२८	६।२८	१८।३८
२३	५।२७	१७।३१	५।१३	१७।१८	५।४८	१७।५३	५।५९	१८। ४	६। ४	१८। ९	६।११	१८।१६	६।१९	१८।२६	६।१६	१८।२२	६।२९	१८।३४
२८	५।२८	१७।२७	५।१५	१७।१३	५।५०	१७।४८	६। ०	१८। ०	६। ५	१८। ४	६।१४	१८।१०	६।२२	१८।१९	६।१८	१८।१६	६।३०	१८।२९
अक्तू. ३	५।३०	१७।२२	५।१८	१७। ७	५।५२	१७।४२	६। ०	१७।५७	६। ७	१७।५९	६।१६	१८। ४	६।२६	१८।१३	६।२१	१८।११	६।३१	१८।२५
८	५।३२	१७।१७	५।२०	१७। २	५।५४	१७।३७	६। ०	१७।५४	६। ८	१७।५५	६।१९	१७।५९	६।२९	१८। ७	६।२४	१८। ६	६।३२	१८।२१
१३	५।३३	१७।१२	५।२२	१६।५७	५।५७	१७।३४	६। ०	१७।५०	६।१०	१७।५०	६।२२	१७।५३	६।३२	१८। १	६।२६	१८। ०	६।३३	१८।१७
१८	५।३५	१७। ८	५।२५	१६।५२	५।५९	१७।२७	६। १	१७।४८	६।११	१७।४६	६।२५	१७।४८	६।३५	१७।५५	६।२९	१७।५५	६।३५	१८।१३
२३	५।३८	१७। ४	५।२८	१६।४७	६। २	१७।२३	६। २	१७।४५	६।१४	१७।४३	६।२८	१७।४३	६।३९	१७।५०	६।३२	१७।५१	६।३७	१८।१०
२८	५।४०	१७। १	५।३१	१६।४३	६। ५	१७।१९	६। ३	१७।४३	६।१६	१७।३९	६।३१	१७।३९	६।४३	१७।४५	६।३५	१७।४६	६।३८	१८। ७
नवं. २	५।४३	१६।५८	५।३४	१६।४०	६। ८	१७।१६	६। ४	१७।४१	६।१८	१७।३६	६।३५	१७।३५	६।४७	१७।४०	६।३८	१७।४२	६।४०	१८। ४
७	५।४६	१६।५५	५।३७	१६।३६	६।११	१७।१२	६। ६	१७।४०	६।२१	१७।३४	६।३९	१७।३१	६।५१	१७।३६	६।४१	१७।३९	६।४३	१८। २
१२	५।४९	१६।५३	५।४१	१६।३४	६।१४	१७।१०	६। ८	१७।३८	६।२४	१७।३२	६।४२	१७।२८	६।५६	१७।३२	६।४५	१७।३६	६।४५	१८। ०
१७	५।५२	१६।५१	५।४४	१६।३२	६।१८	१७। ८	६।१०	१७।३८	६।२७	१७।३१	६।४६	१७।२६	७। १	१७।२९	६।४९	१७।३४	६।४८	१७।५९
२२	५।५५	१६।५०	५।४८	१६।३०	६।२१	१७। ७	६।१२	१७।३८	६।३०	१७।३०	६।५०	१७।२४	७। ६	१७।२७	६।५३	१७।३३	६।५१	१७।५९
२७	५।५९	१६।५०	५।५२	१६।३०	६।२५	१७। ६	६।१५	१७।३८	६।३३	१७।२९	६।५४	१७।२३	७।१०	१७।२६	६।५७	१७।३३	६।५४	१७।५९
दिसं. २	६। २	१६।५०	५।५५	१६।२९	६।२९	१७। ६	६।१७	१७।३९	६।३६	१७।३०	६।५८	१७।२३	७।१४	१७।२६	७। ०	१७।३३	६।५७	१७।५९
७	६। ५	१६।५०	५।५९	१६।३०	६।३२	१७। ६	६।२०	१७।४०	६।३९	१७।३०	७। २	१७।२३	७।१८	१७।२६	७। ४	१७।३३	७। ०	१८। ०
१२	६। ८	१६।५२	६। २	१६।३१	६।३५	१७। ७	६।२३	१७।४२	६।४३	१७।३२	७। ५	१७।२४	७।२१	१७।२७	७। ७	१७।३४	७। ३	१८। १
१७	६।११	१६।५३	६। ५	१६।३३	६।३९	१७। ९	६।२६	१७।४४	६।४६	१७।३४	७। ९	१७।२५	७।२४	१७।२८	७।१०	१७।३६	७। ६	१८। ३
२२	६।१४	१६।५६	६। ८	१६।३४	६।४१	१७।११	६।२८	१७।४६	६।४८	१७।३६	७।११	१७।२७	७।२७	१७।३०	७।१३	१७।३८	७। ९	१८। ५
२७	६।१६	१६।५८	६।१०	१६।३७	६।४३	१७।१४	६।३०	१७।४९	६।५०	१७।३८	७।१४	१७।३०	७।२९	१७।३३	७।१५	१७।४०	७।११	१८। ८

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरण-वक्री-भवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट-साधन के लिये सूर्योदय में लगभग २।। मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २।। मिनट घटाने का पर वास्तविक सूर्योदयास्त होते हैं।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा० स्टैं० टा०)

तारीख	कलकत्ता उदय	कलकत्ता अस्त	गौहाटी उदय	गौहाटी अस्त	वाराणसी उदय	वाराणसी अस्त	मद्रास उदय	मद्रास अस्त	नागपुर उदय	नागपुर अस्त	दिल्ली उदय	दिल्ली अस्त	जम्मू उदय	जम्मू अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	बम्बई उदय	बम्बई अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घं. मि.	घ. मि.	घ.मि.	घ. मि.	घ.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घ. मि.	घं.मि.	घ. मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घ.मि.
जन. १	६।१८	१७। १	६।१२	१६।४१	६।४५	१७।१७	६।३३	१७।५२	६।५२	१७।४१	७।१५	१७।३४	७।३१	१७।३६	७।१७	१७।४३	७।१३	१८।११
६	६।२०	१७। ५	६।१३	१६।४४	६।४७	१७।२१	६।३५	१७।५५	६।५४	१७।४५	७।१६	१७।३७	७।३२	१७।३९	७।१८	१७।४६	७।१५	१८।१४
११	६।२०	१७। ८	६।१४	१६।४८	६।४७	१७।२४	६।३६	१७।५८	६।५५	१७।४८	७।१७	१७।४१	७।३२	१७।४३	७।१८	१७।५०	७।१६	१८।१७
१६	६।२१	१७।१२	६।१४	१६।५१	६।४७	१७।२८	६।३७	१८। ०	६।५५	१७।५१	७।१७	१७।४५	७।३१	१७।४८	७।१८	१७।५६	७।१६	१८।२०
२१	६।२०	१७।१५	६।१३	१६।५५	६।४७	१७।३२	६।३७	१८। ३	६।५५	१७।५४	७।१६	१७।४९	७।३०	१७।५३	७।१७	१७।५९	७।१६	१८।२४
२६	६।१९	१७।१८	६।१२	१६।५९	६।४५	१७।३५	६।३७	१८। ५	६।५४	१७।५७	७।१४	१७।५३	७।२८	१७।५८	७।१६	१८। ३	७।१६	१८।२६
३१	६।१८	१७।२२	६।१०	१७। ३	६।४३	१७।३९	६।३७	१८। ८	६।५३	१८। १	७।१२	१७।५७	७।२५	१८। २	७।१४	१८। ७	७।१५	१८।३०
फर. ५	६।१६	१७।२५	६। ७	१७। ७	६।४१	१७।४३	६।३६	१८।१०	६।५१	१८। ४	७। ९	१८। १	७।२२	१८। ७	७।११	१८।११	७।१३	१८।३२
१०	६।१३	१७।२८	६। ४	१७।१०	६।३८	१७।४६	६।३५	१८।१२	६।४९	१८। ७	७। ६	१८। ५	७।१८	१८।१२	७। ८	१८।१५	७।११	१८।३५
१५	६।१०	१७।३१	६। १	१७।१४	६।३५	१७।५०	६।३३	१८।१३	६।४६	१८।१०	७। २	१८। ९	७।१४	१८।१६	७। ४	१८।१८	७। ९	१८।३७
२०	६। ७	१७।३४	५।५७	१७।१७	६।३१	१७।५३	६।३१	१८।१५	६।४३	१८।१२	६।५७	१८।१३	७। ९	१८।२०	७। ०	१८।२१	७। ६	१८।३९
२५	६। ३	१७।३६	५।५३	१७।२०	६।२७	१७।५६	६।२९	१८।१६	६।३९	१८।१५	६।५३	१८।१६	७। ४	१८।२४	६।५६	१८।२४	७। ३	१८।४१
मार्च २(१)	५।५९	१७।३९	५।४८	१७।२३	६।२२	१७।५८	६।२६	१८।१६	६।३६	१८।१७	६।४८	१८।२०	६।५८	१८।२८	६।५२	१८।२७	६।५९	१८।४३
७(६)	५।५५	१७।४१	५।४३	१७।२६	६।१८	१८। १	६।२३	१८।१७	६।३१	१८।१८	६।४२	१८।२३	६।५२	१८।३१	६।४७	१८।३०	६।५६	१८।४५
१२(११)	५।५०	१७।४३	५।३८	१७।२८	६।१३	१८। ३	६।२०	१८।१८	६।२७	१८।२०	६।३७	१८।२६	६।४६	१८।३५	६।४२	१८।३३	६।५२	१८।४६
१७(१६)	५।४६	१७।४५	५।३३	१७।३१	६। ८	१८। ६	६।१७	१८।१८	६।२३	१८।२२	६।३०	१८।२८	६।४०	१८।३८	६।३६	१८।३५	६।४८	१८।४७
२२(२१)	५।४१	१७।४६	५।२७	१७।३३	६। २	१८। ८	६।१४	१८।१९	६।१८	१८।२४	६।२५	१८।३१	६।३४	१८।४१	६।३०	१८।३८	६।४३	१८।४९
२७(२६)	५।३६	१७।४८	५।२२	१७।३६	५।५७	१८।१०	६।१०	१८।१९	६।१३	१८।२५	६।१९	१८।३४	६।२७	१८।४४	६।२४	१८।४०	६।३९	१८।५०
अप्रै. १(०)	५।३१	१७।५०	५।१६	१७।३८	५।५२	१८।१२	६। ७	१८।१९	६। ९	१८।२७	६।१४	१८।३७	६।२१	१८।४८	६।१८	१८।४३	६।३५	१८।५१
६(५)	५।२७	१७।५२	५।११	१७।४०	५।४७	१८।१५	६। ४	१८।२०	६। ४	१८।२८	६। ८	१८।३९	६।१५	१८।५२	६।१३	१८।४६	६।३१	१८।५२
११(१०)	५।२२	१७।५४	५। ६	१७।४३	५।४१	१८।१७	६। ०	१८।२०	६। ०	१८।३०	६। २	१८।४२	६। ९	१८।५५	६। ९	१८।४९	६।२७	१८।५३
१६(१५)	५।१८	१७।५५	५। १	१७।४५	५।३७	१८।१९	५।५७	१८।२०	५।५६	१८।३१	५।५७	१८।४५	६। ३	१८।५८	६। ४	१८।५१	६।२३	१८।५५
२१	५।१३	१७।५७	४।५६	१७।४७	५।३२	१८।२१	५।५५	१८।२१	५।५२	१८।३३	५।५२	१८।४८	५।५७	१९। १	५।५९	१८।५३	६।१९	१८।५६
२६	५।१०	१७।५९	४।५२	१७।५०	५।२८	१८।२४	५।५२	१८।२२	५।४८	१८।३५	५।४७	१८।५१	५।५१	१९। ५	५।५४	१८।५६	६।१६	१८।५७
मई १	५। ६	१८। १	४।४८	१७।५२	५।२४	१८।२६	५।५०	१८।२३	५।४५	१८।३७	५।४३	१८।५४	५।४६	१९। ८	५।५०	१८।५९	६।१३	१८।५९
६	५। ३	१८। ४	४।४४	१७।५५	५।२०	१८।२९	५।४८	१८।२४	५।४२	१८।३९	५।३९	१८।५७	६।४१	१९।११	५।४६	१९। १	६।१०	१९। १
११	५। ०	१८। ६	४।४१	१७।५८	५।१७	१८।३१	५।४६	१८।२५	५।३९	१८।४१	५।३५	१९। ०	५।३७	१९।१५	५।४३	१९। ४	६। ८	१९। २
१६	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।१४	१८।३४	५।४५	१८।२६	५।३७	१८।४३	५।३२	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।४०	१९। ७	६। ६	१९। ४
२१	४।५६	१८।१०	४।३६	१८। ३	५।१२	१८।३७	५।४४	१८।२७	५।३५	१८।४५	५।३०	१९। ६	५।३१	१९।२१	५।३७	१९।१०	६। ४	१९। ६
२६	४।५४	१८।१३	४।३४	१८। ६	५।१०	१८।३९	५।४३	१८।२९	५।३४	१८।४७	५।२८	१९। ८	५।२८	१९।२५	५।३५	१९।१३	६। ३	१९। ८
३१	४।५३	१८।१५	४।३३	१८। ८	५। ९	१८।४१	५।४३	१८।३०	५।३३	१८।४९	५।२६	१९।११	५।२६	१९।२८	५।३३	१९।१५	६। २	१९।१०
जून ५	४।२३	१८।१७	४।३२	१८।१०	५। ९	१८।४४	५।४३	१८।३२	५।३३	१८।५१	५।२५	१९।१३	५।२५	१९।३१	५।३३	१९।१७	६। २	१९।१२
१०	४।५३	१८।१९	४।३२	१८।१३	५। ९	१८।४६	५।४३	१८।३३	५।३३	१८।५३	५।२५	१९।१६	५।२५	१९।३४	५।३३	१९।२०	६। २	१९-१३
१५	४।५३	१८।२०	४।३२	१८।१४	५। ९	१८।४८	५।४४	१८।३५	५।३३	१८।५५	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।३३	१९।२२	६। ३	१९।१५
२०	४।५६	१८।२२	४।३३	१८।१६	५।१०	[illegible]	५।४५	१८।३६	५।३४	१८।५६	५।२६	१९।१९	५।२६	१९।३७	५।३४	१९।२३	६। ४	१९।१६

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरणवक्रीभवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट साधन के लिए सूर्योदय में लगभग २॥ मिनट घटाने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २॥ मिनट जोड़ने पर वास्तविक सूर्योदय होंगे।

कोष्ठक में दी गई तारीख प्लुत-वर्ष (लीप इयर) में लागू।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा. स्टै. टा.)

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा. स्टै. टा.)

तारीख	कलकत्ता		गोहाटी		बाराणसी		मद्रास		नागपुर		दिल्ली		जम्मू		जयपुर		बम्बई	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घ. मि	घं. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून ३०	४।५६	१८।२३	४।३६	१८।१७	५।१२	१८।५१	५।४७	१८।३८	५।३७	१८।५८	५।२९	१९।२१	५।२९	१९।३८	५।३६	१९।२४	६। ६	१९।१८
जुला. ५	४।५८	१८।२४	४।३७	१८।१७	५।१४	१८।५१	५।४९	१८।३८	५।३८	१८।५८	५।३०	१९।२१	५।३१	१९।३८	५।३८	१९।२४	६। ८	१९।१८
१०	५। ०	१८।२३	४।३९	१८।१७	५।१६	१८।५०	५.५०	१८।३८	५।४०	१८।५८	५।३३	१९।२०	५।३३	१९।३७	५।४०	१९।२३	६। ९	१९।१८
१५	५। २	१८।२३	४।४२	१८।१६	५।१८	१८।४९	५।५१	१८।३८	५।४२	१८।५७	५।३५	१९।१९	५।३५	१९।३६	५।४३	१९।२२	६।११	१९।१८
२०	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।२१	१८।४८	५।५३	१८।३८	५।४४	१८।५६	५।३८	१९।१७	५।३८	१९।३४	५।४६	१९।२०	६।१३	१९।१७
२५	५। ६	१८।२०	४।४७	१८।१२	५।२३	१८।४६	५।५४	१८।३७	५।४६	१८।५४	५।४०	१९।१५	५।४१	१९।३१	५।४८	१९।१८	६।१५	१९।१६
३०	५। ८	१८।१७	४।४९	१८।१०	५।२५	१८।४३	५।५५	१८।३६	५।४८	१८।५२	५।४३	१९।१२	५।४५	१९।२८	५।५१	१९।१५	६।१६	१९।१४
अग. ४	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ७	५।२८	१८।४०	५।५६	१८।३४	५।५०	१८।५०	५।४६	१९। ८	५।४८	१९।२४	५।५४	१९।१२	६।१८	१९।१२
९	५।१२	१८।१२	४।५४	१८। ३	५।३०	१८।३७	५।५७	१८।३२	५।५१	१८।४७	५।४९	१९। ५	५।५१	१९।१९	५।५६	१९। ८	६।२०	१९। ९
१४	५।१४	१८। ८	४।५६	१७।५९	५।३२	१८।३३	५।५८	१८।३०	५।५३	१८।४४	५।५१	१९। ०	५।५४	१९।१४	५।५९	१९। ४	६।२१	१९। ६
१९	५।१६	१८। ४	४।५९	१७।५५	५।३४	१८।२९	५।५८	१८।२७	५।५५	१८।४०	५।५४	१८।५६	५।५८	१९। ८	६। १	१८।५९	६।२२	१९। ३
२४	५।१८	१८। ०	५। १	१७।५०	५।३७	१८।२४	५।५९	१८।२४	५।५६	१८।३६	५।५७	१८।५१	६। १	१९। ३	६। ३	१८।५५	६।२४	१८।५९
२९	५।१९	१७।५६	५। ३	१७।४५	५।३९	१८।१९	५।५९	१८।२१	५।५८	१८।३२	५।५९	१८।४५	६। ४	१८।५८	६। ५	१८।५०	६।२५	१८।५५
सितं. ३	५।२१	१७।५१	५। ५	१७।४०	५।४१	१८।१४	५।५९	१८।१७	५।५९	१८।२७	६। २	१८।४०	६। ७	१८।५२	६। ७	१८।४४	६।२५	१८।५१
८	५।२२	१७।४६	५। ७	१७।३५	५।४२	१८। ९	५।५९	१८।१५	६। ०	१८।२३	६। ४	१८।३४	६।१०	१८।४५	६।१०	१८।३९	६।२६	१८।४७
१३	५।२४	१७।४२	५। ९	१७।२९	५।४४	१८। ४	५।५९	१८।११	६। १	१८।१८	६। ६	१८।२८	६।१३	१८।३९	६।१२	१८।३३	६।२७	१८।४३
१८	५।२५	१७।३६	५।११	१७।२४	५।४६	१७।५८	५।५९	१८। ७	६। ३	१८।१३	६। ९	१८।२२	६।१६	१८।३२	६।१५	१८।२८	६।२८	१८।३८
२३	५।२७	१७।३१	५।१३	१७।१८	५।४८	१७।५३	५।५९	१८। ४	६। ४	१८। ९	६।११	१८।१६	६।१९	१८।२६	६।१६	१८।२२	६।२९	१८।३४
२८	५।२८	१७।२७	५।१५	१७।१३	५।५०	१७।४८	६। ०	१८। ०	६। ५	१८। ४	६।१४	१८।१०	६।२२	१८।१९	६।१८	१८।१६	६।३०	१८।२९
अक्तू. ३	५।३०	१७।२२	५।१८	१७। ७	५।५२	१७।४२	६। ०	१७।५७	६। ७	१७।५९	६।१६	१८। ४	६।२६	१८।१३	६।२१	१८।११	६।३१	१८।२५
८	५।३२	१७।१७	५।२०	१७। २	५।५४	१७।३७	६। ०	१७।५४	६। ८	१७।५५	६।१९	१७।५९	६।२९	१८। ७	६।२४	१८। ६	६।३२	१८।२१
१३	५।३३	१७।१२	५।२२	१६।५७	५।५७	१७।३४	६। ०	१७।५०	६।१०	१७।५०	६।२२	१७।५३	६।३२	१८। १	६।२६	१८। ०	६।३३	१८।१७
१८	५।३५	१७। ८	५।२५	१६।५२	५।५९	१७।२७	६। १	१७।४८	६।११	१७।४६	६।२५	१७।४८	६।३५	१७।५५	६।२९	१७।५५	६।३५	१८।१३
२३	५।३८	१७। ४	५।२८	१६।४७	६। २	१७।२३	६। २	१७।४५	६।१४	१७।४३	६।२८	१७।४३	६।३९	१७।५०	६।३२	१७।५१	६।३७	१८।१०
२८	५।४०	१७। १	५।३१	१६।४३	६। ५	१७।१९	६। ३	१७।४३	६।१६	१७।३९	६।३१	१७।३९	६।४३	१७।४५	६।३५	१७।४६	६।३८	१८। ७
नवं. २	५।४३	१६।५८	५।३४	१६।४०	६। ८	१७।१६	६। ४	१७।४१	६।१८	१७।३६	६।३५	१७।३५	६।४७	१७।४०	६।३८	१७।४२	६।४०	१८। ४
७	५।४६	१६।५५	५।३७	१६।३६	६।११	१७।१२	६। ६	१७।४०	६।२१	१७।३४	६।३९	१७।३१	६।५१	१७।३६	६।४१	१७।३९	६।४३	१८। २
१२	५।४९	१६।५३	५।४१	१६।३४	६।१४	१७।१०	६। ८	१७।३८	६।२४	१७।३२	६।४२	१७।२८	६।५६	१७।३२	६।४५	१७।३६	६।४५	१८। ०
१७	५।५२	१६।५१	५।४४	१६।३२	६।१८	१७। ८	६।१०	१७।३८	६।२७	१७।३१	६।४६	१७।२६	७। १	१७।२९	६।४९	१७।३४	६।४८	१७।५९
२२	५।५५	१६।५०	५।४८	१६।३०	६।२१	१७। ७	६।१२	१७।३८	६।३०	१७।३०	६।५०	१७।२४	७। ६	१७।२७	६।५३	१७।३३	६।५१	१७।५९
२७	५।५९	१६।५०	५।५२	१६।३०	६।२५	१७। ६	६।१५	१७।३८	६।३३	१७।२९	६।५४	१७।२३	७।१०	१७।२६	६।५७	१७।३३	६।५४	१७।५९
दिसं. २	६। २	१६।५०	५।५५	१६।२९	६।२९	१७। ६	६।१७	१७।३९	६।३६	१७।३०	६।५८	१७।२३	७।१४	१७।२६	७। ०	१७।३३	६।५७	१७।५९
७	६। ५	१६।५०	५।५९	१६।३०	६।३२	१७। ६	६।२०	१७।४०	६।३९	१७।३०	७। २	१७।२३	७।१८	१७।२६	७। ४	१७।३३	७। ०	१८। ०
१२	६। ८	१६।५२	६। २	१६।३१	६।३५	१७। ७	६।२३	१७।४२	६।४३	१७।३२	७। ५	१७।२४	७।२१	१७।२७	७। ७	१७।३४	७। ३	१८। १
१७	६।११	१६।५३	६। ५	१६।३३	६।३९	१७। ९	६।२६	१७।४४	६।४६	१७।३४	७। ९	१७।२५	७।२४	१७।२८	७।१०	१७।३६	७। ६	१८। ३
२२	६।१४	१६।५६	६। ८	१६।३४	६।४१	१७।११	६।२८	१७।४६	६।४८	१७।३६	७।११	१७।२७	७।२७	१७।३०	७।१३	१७।३८	७। ९	१८। ५
२७	६।१६	१६।५८	६।१०	१६।३७	६।४३	१७।१४	६।३०	१७।४९	६।५०	१७।३८	७।१४	१७।३०	७।२९	१७।३३	७।१५	१७।४०	७।११	१८। ८

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरण-वक्री-भवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट-साधन के लिए सूर्योदय में लगभग २॥ मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २॥ मिनट घटाने का पर वास्तविक सूर्योदयास्त होते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध नगरों का सूर्योदयास्त काल (भा. स्टै. टा.)

महीना तारीख	शिमला, सोलन सू. उ. घं. मि.	शिमला, सोलन सू. अ. घं. मि.	रामपुर सू. उ. घं. मि.	रामपुर सू. अ. घं. मि.	मण्डी, कुल्लू, सुन्दर नगर सू. उ. घं. मि.	मण्डी, कुल्लू, सुन्दर नगर सू. अ. घं. मि.	चम्बा सू. उ. घं. मि.	चम्बा सू. अ. घं. मि.	धर्मशाला कांगड़ा सू. उ. घं. मि.	धर्मशाला कांगड़ा सू. अ. घं. मि.	बिलासपुर सू. उ. घं. मि.	बिलासपुर सू. अ. घं. मि.
जन. १	७।१९	५।३०	७।१८	५।२७	७।२२	५।२९	७।२७	५।३१	७।२६	५।३०	७।२२	५।३१
७	७।२०	५।३५	७।१९	५।३२	७।२३	५।३४	७।२८	५।३५	७।२७	५।३४	७।२३	५।३६
१३	७।२०	५।४०	७।१९	५।३७	७।२२	५।३९	७।२७	५।४०	७।२६	५।३९	७।२३	५।४१
१९	७।१९	५।४५	७।१८	५।४२	७।२१	५।४५	७।२६	५।४६	७।२५	५।४५	७।२२	५।४६
२५	७।१७	५।५०	७।१६	५।४७	७।१९	५।५०	७।२४	५।५२	७।२३	५।५०	७।२०	५।५१
३१	७।१४	५।५६	७।१३	५।५३	७।१५	५।५६	७।२१	५।५७	७।२०	५।५६	७।१७	५।५७
फ़र. ६	७।१०	६। १	७। ८	५।५८	७।११	६। १	७।१६	६। ३	७।१५	६। २	७।१३	६। २
१२	७। ५	६। ६	७। ३	६। ३	७। ६	६। ६	७।११	६। ९	७।१०	६। ८	७। ७	६। ७
१८	७। ०	६।११	६।५८	६। ८	७। १	६।११	७। ६	६।१४	७। ५	६।१३	७। २	६।१२
२४	६।५४	६।१६	६।५२	६।१३	६।५५	६।१६	६।५९	६।१९	६।५८	६।१८	६।५६	६।१७
मार्च २	६।४७	६।२०	६।४५	६।१७	६।४८	६।२०	६।५२	६।२३	६।५१	६।२२	६।४९	६।२१
८	६।४०	६।२४	६।३८	६।२१	६।४१	६।२४	६।४५	६।२८	६।४४	६।२७	६।४२	६।२५
१४	६।३३	६।२८	६।३१	६।२६	६।३४	६।२९	६।३७	६।३२	६।३६	६।३१	६।३५	६।३०
२०	६।२५	६।३२	६।२३	६।३०	६।२६	६।३३	६।२९	६।३६	६।२८	६।३५	६।२७	६।३४
२६	६।१८	६।३६	६।१५	६।३४	६।१८	६।३७	६।२२	६।४१	६।२१	६।४०	६।१९	६।३८
अप्रै. १	६।१०	६।४०	६। ७	६।३८	६।१०	६।४१	६।१४	६।४६	६।१३	६।४०	६।११	६।४२
७	६। ३	६।४४	६। ०	६।४२	६। ३	६।४५	६। ६	६।५०	६। ५	६।४९	६। ४	६।४६
१३	५।५६	६।४८	५।५३	६।४६	५।५६	६।४९	५।५९	६।५४	५।५८	६।५३	५।५७	६।५०
१९	५।४९	६।५२	५।४६	६।५०	५।४९	६।५३	५।५२	६।५८	५।५१	६।५७	५।५०	६।५४
२५	५।४३	६।५६	५।४०	६।५४	५।४३	६।५७	५।४५	७। २	५।४४	७। ०	५।४४	६।५८
मई १	५।३७	७। ०	५।३५	६।५८	५।३८	७। १	५।३९	७। ६	५।३८	७। ४	५।३९	७। २
७	५।३२	७। ४	५।२९	७। ३	५।३२	७। ६	५।३३	७।११	५।३२	७। ९	५।३३	७। ७
१३	५।२७	७। ८	५।२४	७। ७	५।२७	७।१०	५।२८	७।१५	५।२७	७।१४	५।२८	७।११
१९	५।२३	७।१२	५।२०	७।११	५।२३	७।१४	५।२४	७।१९	५।२३	७।१८	५।२४	७।१५
२५	५।२०	७।१६	५।१७	७।१५	५।२०	७।१८	५।२१	७।२३	५।२०	७।२२	५।२१	७।१९
३१	५।१८	७।१९	५।१५	७।१८	५।१८	७।२१	५।१९	७।२६	५।१८	७।२५	५।१९	७।२२
जून ६	५।१७	७।२२	५।१४	७।२१	५।१७	७।२५	५।१८	७।३०	५।१७	७।२९	५।१८	७।२५
१२	५।१७	७।२५	५।१४	७।२४	५।१६	७।२७	५।१७	७।३३	५।१६	७।३२	५।१८	७।२८
१८	५।१७	७।२७	५।१४	७।२६	५।१७	७।२९	५।१८	७।३५	५।१७	७।३४	५।१८	७।३०
२४	५।१८	७।२८	५।१५	७।२७	५।१८	७।३१	५।१९	७।३६	५।१८	७।३५	५।१९	७।३१
३०	५।२०	७।२९	५।१७	७।२८	५।२०	७।३१	५।२१	७।३७	५।२०	७।३६	५।२१	७।३२
जुला. ६	५।२३	७।२८	५।२०	७।२७	५।२३	७।३०	५।२४	७।३६	५।२३	७।३५	५।२४	७।३१
१२	५।२६	७।२७	५।२३	७।२६	५।२६	७।२९	५।२७	७।३५	५।२६	७।३४	५।२७	७।३०
१८	५।२९	७।२५	५।२६	७।२४	५।२९	७।२७	५।३०	७।३३	५।२९	७।३२	५।३०	७।२८
२४	५।३२	७।२२	५।३०	७।२१	५।३३	७।२४	५।३४	७।३०	५।३४	७।२९	५।३४	७।२५
३०	५।३६	७।१८	५।३३	७।१७	५।३६	७।२०	५।३८	७।२६	५।३७	७।२५	५।३७	७।२१
अग. ५	५।४०	७।१३	५।३७	७।१२	५।४०	७।१५	५।४२	७।२१	५।४१	७।२०	५।४१	७।१६
११	५।४४	७। ८	५।४१	७। ६	५।४४	७। ९	५।४६	७।१४	५।४५	७।१४	५।४५	७।१०
१७	५।४८	७। २	५।४५	७। ०	५।४८	७। ३	५।५०	७। ८	५।४९	७। ७	५।४९	७। ४
२३	५।५१	६।५५	५।४९	६।५३	५।५२	६।५७	५।५४	७। १	५।५३	७। ०	५।५३	६।५७
२९	५।५४	६।४८	५।५२	६।४६	५।५५	६।५०	५।५८	६।५४	५।५७	६।५३	५।५६	६।५०
सितं. ४	५।५८	६।४१	५।५६	६।३९	५।५९	६।४२	६। २	६।४६	६। १	६।४५	६। ०	६।४३
१०	६। १	६।३३	६। ०	६।३१	६। ३	६।३४	६। ६	६।३८	६। ५	६।३७	६। ४	६।३५
१६	६। ५	६।२६	६। ४	६।२४	६। ७	६।२७	६। ९	६।३०	६। ८	६।२९	६। ६	६।२८
२२	६। ८	६।१८	६। ७	६।१६	६।१०	६।१९	६।१३	६।२२	६।१२	६।२१	६।११	६।२०
२८	६।१२	६।१०	६।११	६। ८	६।१४	६।११	६।१७	६।१४	६।१६	६।१३	६।१५	६।१२
अक्तू. ४	६।१६	६। ३	६।१४	६। १	६।१७	६। ४	६।२१	६। ७	६।२०	६। ६	६।१८	६। ५
१०	६।२०	५।५६	६।१७	५।५३	६।२०	५।५६	६।२५	५।५९	६।२४	५।५८	६।२१	५।५७
१६	६।२४	५।४९	६।२१	५।४६	६।२४	५।४९	६।२९	५।५२	६।२८	५।५१	६।२५	५।५०
२२	६।२९	५।४२	६।२६	५।३९	६।२९	५।४२	६।३४	५।४५	६।३३	५।४४	६।३०	५।४३
२८	६।३३	५।३६	६।३०	५।३३	६।३३	५।३६	६।३९	५।३९	६।३८	५।३८	६।३४	५।३७
नवं. ३	६।३८	५।३१	६।३५	५।२८	६।३८	५।३१	६।४४	५।३३	६।४३	५।३२	६।३९	५।३२
९	६।४४	५।२७	६।४०	५।२४	६।४३	५।२७	६।४९	५।२८	६।४८	५।२७	६।४४	५।२८
१५	६।४८	५।२३	६।४६	५।२०	६।४९	५।२३	६।५५	५।२४	६।५४	५।२३	६।५०	५।२४
२१	६।५४	५।२०	६।५१	५।१८	६।५४	५।२१	७। ०	५।२२	६।५९	५।२१	६।५५	५।२२
२७	६।५८	५।१९	६।५६	५।१६	६।५९	५।१९	७। ५	५।२०	७। ४	५।१९	७। ०	५।२०
दिसं. ३	७। ३	५।१८	७। १	५।१५	७। ५	५।१८	७।१०	५।१९	७। ९	५।१८	७। ५	५।१९
९	७। ८	५।१८	७। ६	५।१५	७।१०	५।१९	७।१५	५।२०	७।१४	५।१९	७।१०	५।१९
१५	७।१२	५।१९	७।१०	५।१७	७।१४	५।२०	७।१९	५।२१	७।१७	५।२०	७।१४	५।२१
२१	७।१५	५।२२	७।१३	५।१९	७।१७	५।२२	७।२२	५।२३	७।२०	५।२२	७।१७	५।२३
२७	७।१७	५।२५	७।१६	५।२२	७।२०	५।२५	७।२५	५।२६	७।२३	५।२५	७।२०	५।२६
३१	७।१९	५।२८	७।१८	५।२५	७।२२	५।२८	७।२७	५।२९	७।२५	५।२९	७।२२	५।३०

हिमाचल-प्रदेश के अन्य नगरों का सूर्योदयास्त काल—शिमला के सूर्योदयास्त काल में १½ मिनट हटाने से कोटखाई का और २½ मिनट जोड़ने से मालरोड़ का. धर्मशाला के सूर्योदयास्त में ३ मि. घटाने से मनाली का और १ मिनट घटाने से पालमपुर का, मण्डी के सूर्योदयास्त में ३ मि. जोड़ने से ऊना का. १ मि. जोड़ने से जोगिन्दर नगर का. और २ मि. जोड़ने से हमीरपुर का तथा चम्बा के सूर्योदयास्त मे १ मि. जोड़ने से डलहौजी का सूर्योदय एवं सूर्यास्त-काल बन जाता है। तिथ्यादि पंचांग के साथ दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदयास्त काल में से २ मि. घटाने से नाहन का सूर्योदयास्त काल प्राप्त होगा।

सूचना—ऊपर कोष्टक में दिए गए सूर्योदयास्त-काल किरण-वक्री-भवन संस्कार से संस्कृत हैं, और ये सूर्य-बिम्ब के ऊर्ध्व बिन्दु (चोटी) के उदयास्त को बतलाते हैं, अतः लग्न-साधन के लिए इस कोष्ठक से प्राप्त सूर्योदय में ४ मिनट जोड़कर सूर्य-केन्द्रोदयात् इष्ट बनाना चाहिए। तिथ्यादि के साथ दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय में ४ मि. जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशाज्ञान-चक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा				पु. ऽनु उ. भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं	१	७	०
र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशाः वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. ऽनु पूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष-
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहाः
भ. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	नेष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पृ भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदयः	विजयः	धनला.	व्ययः
भौम	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह्. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला	सखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षमला	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्रभी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहाः	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्थः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभः	कष्टम्

वर्ष प्रवेश सारणी

गत वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
गत वर्ष	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
वा.	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घ.	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८
प.	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१
वि.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गत वर्ष	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१
वा.	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३
घ.	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७
प.	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

अथ त्रिपताकीचक्रम्–तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकरण उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रखकर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है, कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर-भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है। शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देखकर वर्ष का फल कहे ॥

सूचना-वेध सिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष मान से ८।। पल कम है। अतः सूक्ष्म नवीन मानसे वर्ष प्रवेश कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।।से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साबित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष-मानानुसारी इष्ट होगा।

वर्षफल-साधनप्रकार–(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करनाहो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक वे उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिलें उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जबकि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थानकी स्वदेशीय सारिणीसे वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्ष पत्र अशुद्ध होगा। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः		
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि.	ल.	प.
बृ	चं	बृ	मं	[illegible]	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	रा.	ल.	प.

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श. १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल–सू. १।५, चं० २।४। मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल–स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बु०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल–दिन के वर्षेष्ठ में पुरुषग्रह ५ बल तेदे हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञान—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रहसे ३।५।९।११ इन स्थानोंपर जो ग्रह हों उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें तो सम, १।४।७।१०वें हों तो शत्रु

वर्षेशनिर्णये दृष्टि ज्ञानम्–९।५ वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १।७ वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है **अथ वर्षेश निर्णय**–जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राका स्वामी और रात्रिमें हो तो चन्द्र राशिका स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, (शेष पृष्ठ ११३ पर)

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पिं.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वह वर्षेश होगा, (शेष पृष्ठ ११३ पर)

ग्रहाणां दृष्ट्यादि चक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टि:
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि:
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि:
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टि:
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपाय सामनानि
कृ.उ.फा. उ.षा.	रो.ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ.पू.फा. पू. षा.	पुष्य.अ. उ.भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र.रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बृ.	मित्र-ग्रहा:
बु.	मं. श. बृ. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा.श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु.शु.	र. चं.	र. च. म.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष १०	वृष ३	मकर १८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धन १५	उच्चराशय: परमोच्चांशा:
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क १८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशय: नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध.मी.	वृष.तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	छिद्र	विवर	विवर	स्थान

(पृष्ठ ११२ का शेष) यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा ॥ फल——वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

सर्वशुभ कार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य-रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन ३ दिन या ५ मुहूर्त्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभ मुहूर्त्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन चातुर्मास्य याग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए॥ सीमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार पश्चिमास्त में प्रथम ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है, कि-आवश्यक कम में गुरु-शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौजिबन्धे, प्रथम युवति-संगारामकूपा-दिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना चाहिए ?

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	लोहपत्रे दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एषु कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः

वध बंध विषाग्न्यस्त्र च्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां तु सिद्धयति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात्॥ **आवश्यके परिहारः**— दिवापरार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्थिता यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	न.	ई.	द.	वा.	पू	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्क्षे व्रतबन्धोद्वाहकाद्यः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमिते ज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः)॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहज्ये च शुभप्रदः॥ **आवश्यके परिहारः**—सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टइति मुहूर्तचिन्तामणौ॥ नीचराशौ-मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता॥ यात्रोद्वाही प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चव जीवे वक्रातिचारगे॥ **अपवादः**—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीश मासमेकं विवर्जयेत्॥ अन्यच्च-वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलं। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ **ताराऽपवादः**—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरेः चरमोऽशुभः। वधेस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

शुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | शुभ

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करे, तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ-तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। शुभ-नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. घ. श.। शुभ-लग्न—जब लग्न और ४. ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजो-दर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधन तारा, जन्म नक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वधृतियोग, माता, पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत-नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त-संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार— बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन-पान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्ताभा, भद्रा, व्यतिपात, धृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रा. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. भू. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म-दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रा में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पू. अनु. श्र. र. ध. नक्षत्रों में भौम शनि को छोड़कर अन्य वारा में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करे। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तंत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं कलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मष बश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों. दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि.पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हार्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तर ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नही करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष–स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—'यथा-कुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है, कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त–जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूय में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन, हस्त, चि., स्वा., श्र. ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा, भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीन पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त–अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र बृ., श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र.,ध., मू., मृ. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्याह्न के पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्ण-चंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के भ. घ.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे	१८
ह	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	भ.	कृ.	१०
ध	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्यर्के ताम्र सुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मष-ष्ठीक्षके। रौप्यं कांस्यमथैक नाड़ि-युजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

मेलापक सारिणी

राशि	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥
तुला	चि ॥	२२	१४ १२	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	१९ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४.	२० ३४
	स्वा १	२९ ३+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३५	२४ -६	२६ ५०	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ .४	२७॥ ४+	२१ ४.
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १६२	१८॥ ०+	२६ ४+
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	२२॥ २	१३॥ २३	२१॥	१९ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ २	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३
	ज्ये १	१० ३५	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ११६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४
धनु	मू १	१९॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१३॥ १६	१३॥ ६	२६	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६
	पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ .+	२८॥	२८॥	२० १
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० .	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५
कुम्भ	ध ॥	२९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५.	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६
	शत १	१४॥ ३	२७॥ १	२६॥	३०	२५ १	२६॥	२३ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	१९॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६
मीन	पूभा ।	२४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२०	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	११

राशि	नक्षत्र	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ॥	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	१९ ३६
	वि ।।।	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९ ३५
	अनु १	६॥ ३६	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ॥	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	३२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२३॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३.	२९ ०१३	८ १३००	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२ १३६	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ०

बिना येक के विवाह —[illegible]

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७।	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ १	२२	२८ -२	२२	१८॥ -१	२४॥ -१	१३ ३१	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ६+	२६ ४+
मेष	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०६१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ १	३॥ १३६	१३ १३	२८	२२ -०	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
मेष	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ १	१८ ३४	१० ०१६४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ १	२७	१६ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१९॥ १४	२०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३०	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ०४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -१	९ ३६	१६ ३६	२९॥ ३	२८॥	३०॥	२२ १	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
वृष	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३६१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	२३॥ १६	१९॥ ६	१४ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२८ -१	२१	२६	२७	१९ ३
वृष	मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३६	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१५॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	१९॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -१	२३॥	२९॥ ३	२४॥	१४॥ १	१०॥ ३६	१६॥ ३६	२९॥ २५+	२६ ५+	१९ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२२॥	१९ +६	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३४॥	१८॥ -६	१४॥ ३६	१३॥ ४	२७॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ १	१३ ३६	१४ १	२३	१९ ३	२५ ५+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१३ ३	२६
मिथुन	आ १	१८॥ ३	२०॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ ४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१४	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१० २६	५ १११२	१५ १३	२८	२७	२४॥ -६	२२॥ -६	१३ -१६	१९ १५+	१९ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२३
मिथुन	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२२ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ६०	१५॥ -६	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ २	२७	२७	२४॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ १५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ २	२६॥	२४
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ १	३४ ०	२८॥	१६॥ +२६	२०॥ २०	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५५	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -२	२०॥ -२	२२	२७	२१	२२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ २+
कर्क	पु १	२६॥	२०॥ ६	२६॥	२३	२५	२८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३०	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	१९॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	२७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	८ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
कर्क	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१४ ३१	१६	१२॥ ४	१४॥ १६	१३ ४	२७॥	२८	२८ २	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२८	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ १	२६	१७ ६	१८ १६	१४ १६	१७॥ २५	२० १५	१९ ३५
सिंह	म १	१९ +५	१९ २५	१५॥ ३५	१६॥ १	११॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२६	१८॥ ४+	१६ ३६२	२० ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१५॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२८ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३३	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१३॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ २६
सिंह	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२६	१६॥ ३४	१६॥ -११४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२७ ०७	२०॥ ४	५॥ १३६	९॥ १३	२४॥	१७॥ -१	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
सिंह	उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ६	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३०	२८ ३	१६ ३७	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १२५	२५ ५+	२५ ५+	२० ५	२० ६	१९॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२५॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	१९ ३६	२१ १	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ १	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२६	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२८	१२ १३	१८ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१६॥ ३६	१७ ३	२८	२४
कन्या	ह १	११ २३६	१८॥ १	२९ १	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ १	२३॥ १	१८॥ १	२६॥	२१॥	१६ +८	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ०	२८ ०	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२२	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
कन्या	चि ॥	१२॥ १	४॥ १३६	१८॥ १	२३ ४+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ १	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ १	२५॥	२०॥ +८	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ०	११ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	११ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९

टिप्पणी उद्योत — रोहिण्याद्रामघेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ शौनके अन्य … एकराशौ … पदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादि-दोषजां कन्यामच्युत-विवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्यते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वरके गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनातथा ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएँ;—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैषम्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण-मुहूर्त—उ ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासयमेव यावत्। विवाहशुद्धि प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः— दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह क पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण(—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या, कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरण	४	साधनाद्धितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिक मास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सतीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. प्रो. ग. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

(विष्णुमन्त्र स्थिर शिवस्य चर दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है ।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है । वह भी जन्म में भयप्रद होता है ।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तरम् । त्याज्यो ऽर्कों धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ।। वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः । तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ।।१।। केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम् । तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ।।२।।

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है । द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं । अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः । तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ।।

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें । इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करो ।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है । अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादिपूर्वक करें ।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो । पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे । वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले । वहां छः मास का विचार नहीं है ।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १।। मास, कुलवालों के मरण से २२।। दिन तक कोई शुभ कार्य न करे । अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे ।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त अन्यत्र दिये गये हैं । उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी-दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या की राशि से चन्द्र गुरु देखिए बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं । यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है । यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ठ हो तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना । इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें । "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ।। अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् । उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः । नीचे नीचांशके त्याज्यःअरिलाभादिगोऽपि चेत् ।। (रणवीर ज्यो. नि.)

(बृ०) । तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मं धी घन गतो दिवाकरस्तौलिराशि जनितस्य शोभतः । आवश्यके पूज्य रवि परिहारः— गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति । द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः ।। (मु० प्र० मा०) ।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः— १०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३.६।१०।११
पूज्यरविः—२।५।९
विशेष पूज्य रवि—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ठ गुरु भी श्रेष्ठ है ।

कन्या-वरयोः तैलादि-लापने (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	७

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायन मते अश्वि. चि.श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ।।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ६।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है ।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दसदोषों का विचार करना आवश्यक है । इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं । इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किये गये हैं । उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ । इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें ।

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादि-दोषजां कन्यामच्युत-विवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्यते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वरके गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनातथा ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे १२ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू बन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएँ;—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैषम्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण-मुहूर्त—उ ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा **"मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥** द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—**दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥**

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह क पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण(—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चने कन्या, कन्यायाः नवने वरः" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरण	४	साधनाद्वितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिक मास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. प्रो. ग. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तरम्। त्याज्योऽर्कौ धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करो।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त अन्यत्र दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी-दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या की राशि से चन्द्र गुरु देखिए बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ठ हो तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यःअरिलाभादिगोऽपि चेत् ॥ (रणवीर ज्यो. नि.)

(बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मे धी घन गतो दिवाकरस्तौलिराशि जनितस्य शोभतः। आवश्यके पूज्य रवि परिहारः— गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः॥ (मु० प्र० मा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः— १०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३.६।१०।११
पूज्यरविः—२।५।९
विशेष पूज्य रवि—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

(ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ठ गुरु भी श्रेष्ठ है।)

कन्या-वरयोः तैलादि-लापने (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	७

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायन मते अश्वि. चि.श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ६।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि— इन दसदोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ.	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	सूर्याक्रान्त नक्षत्र
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	सि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूभा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	०	पूषा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मृ	स्वा	

हर्षण, वधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्रवण.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और बीच के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्र दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ. फा.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	वि. न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	मृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्रहनक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्यके नक्षत्र से विवाहका नक्षत्र अभिजित् सहित गिननेसे विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूलक्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	मि०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमामें। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का निर्णय महापात गणितसे करना चाहिए।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

वाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ ५ अर्कस्य	कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे संध्ययोः वर्ज्यम्

१० दग्धातिथिदोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं तो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंग क्रान्तिसाम्यञ्च वाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त), एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्निकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च त्यजेद लत्ताभं त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः, पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहारः**—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ **अस्यापवादः**—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्त्वानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। **जामित्रपरिहारः**—(व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगः। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्॥ मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्न-शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पाप	०	०	रा.	०	चं. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेशः	०	०	०	श.	त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च				चं		चं.	विद्धंभञ्च				गोधूली त्याज्या

लग्न भंग-योगाः--व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखलौ न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च भदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरुसमौ) ।। वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोतमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ।। दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ।। संग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, वादरायणः--मासशून्याह्वयास्तारा राशयो दधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ।।

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्टाग्रगयोश्च साघ्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ।। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः--पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ चैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ।।

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ।। अपवादान्तरम्--उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति गली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ।। मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश-ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ।। अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षति-थ्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ।। लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्ना-देकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ।। बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ।। स्मरण रहे, कि-पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपती
३	२	३	१	१	१	३	३		स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम् ।
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।		विंशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः--लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ।। लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ।। मार्ग., माघ, फाल्गुन संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. मा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्यदोषः--कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः । "अस्तं याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूय अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां वामे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम् । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः ।।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानम् चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च--सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ।। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेशस्य समयमाह--वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्री च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ।।

विवाहतःप्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्--विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मु. मू. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथि-संयोगो न वारसुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है। अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में वृष, कन्या मकर में हो तो दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुंभ में हो तो पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है। ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधू जावे तो बन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्य-पात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता-फलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथमस्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद कमरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषा-धिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुक्त शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बंदर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र.ध.श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणविधारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजत-दन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्य-वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषण-घट्टन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है. चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूवा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३. ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान फल	आसन सौख्य	मुख विक्रयनाश	अग्नि अर्थनाश	नैर्ऋत सुख	सन्मुख महाश्रेष्ठ	वायव्य चोर भय	ईशान सर्वहानि	मध्य शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)—**मुहूर्तः**—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहित-तिथौ. र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्य भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशी-शयोनिमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)—**पत्रारम्भ-मुहूर्तः**—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभाव च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगः शुभः स्यात्।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुध वार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्टा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य., पू. भा., अनु. श्र.ह. म. स्वा. उत्तरा.३, आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। पट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं ।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. ध. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है ।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थान-नक्षत्र-फलम		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं । १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भः, ७ हस्ती, ८(०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही । ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है । अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं ।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने । इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने । आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवे । प्रातःकाल उसको देखें । यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है ।

मकान बनाने के लिए पृथवी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे । खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनानेवाले को व्याधि पीड़ा हो ।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है । २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में, रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेध रहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है । केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना ।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें ।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति ।
द. कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. ... इनमें से जिस पर वृहस्पति हो उस नक्षत्र में और वृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है । रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. बु. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय । दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथवी सोय । तत्रात्यावश्यके क्रमात्: ५।११।७।६।२।१०एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः । अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता ।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम् । एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वग । त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः

अथ चुल्लिचक्रविचारः

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद । ४ मस्तक के मृत्युप्रद : ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक । ५ गर्भ के नाशक । २ भुज के भोगदायक । २ चरण के नाशक । यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें । उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे ।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः । प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.) कार्तिकमासयोः ।। (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में चं. वृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यक ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगल गान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है ।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है ।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठ दिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भ सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशया-रम्भ सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातविद्या-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों, उ., रो. ध. श. म. पू. षा., रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम् | सूर्यभात्तडागचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल	वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणना-क्रम—पूर्व आग्नेय द० न० प० वा० उ० ई. मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान	पूर्व	आग्नेय
अ.भ.कृ. मध्यजल	पुन.पु.श्ले. जलाभाव	म.पूफा.उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्टजलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.पू.उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिवे ॥
मातृभैरव वाराहमारसिंह त्रिविक्रमाः ।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य०, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उतरा० ३, रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि-रहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेणलग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। एवं वेवाश्चरे क्षुद्राद्यं गदेव्यः स्थिरेऽखिलाः॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि २४ तक मृत्यु, राजभय, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (०शेषरहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रति-पदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चोलापनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरग्रहास्ते भूमिकम्पम्। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादः शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

हवन में शाकल्य-विचार--तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये ।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः--क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे । शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः--स्ववर्गद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा--अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ से भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना । राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है ।

भूमि का लेन-देन--गुरु, शुक्रवार १, ५, ६, ११, १५, तिथि मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है ।

हल-प्रवहण मुहूर्तः--मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा.पु. श्र. ध. श. म. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भमिशयनभद्रादीन वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम्					बीजवपन राहुचक्रम्								
सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः--ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः--रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्युपादस्थे भूमौ संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न भक्षण मुहूर्तः--मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियाँ और पौष चैत्र को छोड़कर सू. ब. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गो आदि पशु लेने का मुहूर्त--अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना, बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मृ. धनि रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	बवाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः--मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य. अश्वि. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । **तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः**--तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त ।

कृष्ण पक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

धनि, अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है ।

औषध का मुहूर्त--ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः--

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा ; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले.म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वारलग्नानि

१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न--जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हों । अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्								नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू.	द.	प	उ.
चं. श.	चं.श.	गुरु	मृ.शु.	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूल-परिहारः--न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य-दैत्येज्य-दिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले यच्छेन्न दोषभाक् ॥२॥

यात्रा में काल-ज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखे नेष्ट :पृष्ठे शुभः

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्या ह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय: अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घटयात्मक-चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिदोषं, यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्क-सिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयदशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण क्रमेण स्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का.	उ	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरीकन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभ शकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद।

राजदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—मृ. रे अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. एषु भेषु च. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि। ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे..	कं.	कु.	सि.	म.	मि.	ध	वृष.	मीन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष	स्त्रीचं.घात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	गं	वृद्धि	बै.	गं	व्या.	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।
"घाततिथिघतिवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्॥"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रिम चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांगविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुज	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मू. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्काप्रायः सबदिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे॥१॥ सम्मुख छीक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठ तश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान। एक सूद्र दो वैस असार।
तीन विप्र औ छत्री चार। सनमुख आवैं जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर। तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥

सिद्ध होरा मुहूर्त

सूर्य की होरा—टेण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकदमा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य के लिए शभ होती है।

शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिश्शास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूत पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घन्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन-रात के २४ घन्टों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घन्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घन्टे की होरा समझनी चाहिए।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घन्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्धयर्थ ग्रह-होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो २४
सू.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.
चं.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.-	बु.	चं.	श.	बृ.	म.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु	बु	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	वृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	वृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	वृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	ब.	मं.	सू.	शु.	ब.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	बु.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्धयर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और अठारहवें घन्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे वा तेरहवें अथवा सत्रहवें घन्टे के बाद एक-एक घन्टे तक की गुरु की होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझकर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन गुरुवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओरप्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़कर शुक्र की होरा में जाएं तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों को टडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्यः नई गद्दी-स्थापना वा नई बही लगाने का शुभ मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़कर शुभ लाभ वा अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूय में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या०	ति. ५ न. ह.	ति. ६ न. मृ	ति. ७ न. अ	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति.१० न. रे.	ति.११ न. रो.
मृत्युयोगः (अधम तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९। १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योगः	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति.६
दग्धा तिथिः	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथिः	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथिः	१२	६	७	५	९	१०	११
रव्या जन्मति	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिकमुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूत	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	१२
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	११२
यमघण्टयोगः	म	वि	आ.	मृ.	कृ.	रो.	ह.

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीव.ध:	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोपवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोपलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्ष	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शृंगोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमीकेपरशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	जंगली कबूतर-	गृहस्वा. न
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	पृथ्वीभूमिगोली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च । तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

वाराः	सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
फलम्	तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग
पातन	पुष्पं	०	मृति	०	दुर्वा	गोमय	०

तदात्राह-- रवौ भौम व्यतिपाते संक्रांतौ विधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेषः--यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्ट कार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा नवैद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काक विष्टा विचार—शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः—रोगः। भुजयोः—प्रियार्त्तिः। उदरे—शोकः। गुह्य—सन्तान कष्टम्। जंघयोः—वाहनपीड़ा। पादयोः—प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये हुए किसी के ऊपर काली बीट कर देवे तो अशुभ जानो। और यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीट करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि— घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे—यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थ हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो काय नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना) द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है, कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रखे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक वृद्ध, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व-शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊं, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तरना, तालाब में तर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लाल वस्त्र पहिनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य-हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र-कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु-कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे, कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती हुए देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष-परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाय। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुंडित केश नर, भिक्षुक तथा सूखी नदी आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये—आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहाँ पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुल रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमन करो लाभ होगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहाँ कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे ग्रह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से जय मिले।
८ सुलह हो जायेगी।
९ शत्रु के कारण धनमाण होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)
१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

क्रियाणा लेने का फल (११)
१ क्रियाणा लेने में अच्छा लाभ है।
२ क्रियाणा लेने में लाभ थोड़ा है।
३ क्रियाणा लेने में हानि है।
४ क्रियाणा लेने में हानि है, न लो।
५ क्रियाणा मत लो नुकसान है
६ क्रियाणा लेने में लाभ है।
७ क्रियाणा महंगा होगा।
८ लाभ न होगा, मत लो।
९ क्रियाणा लेने में लाभ होगा

बाग लगाने का फल (१२)
१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१३)
१. विचार छोड़ दो, कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ हुआ चाहता है, बैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है।
७. राजा आदर करे जगत् में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो पश्चात्ताप होगा।
९. राजा का दर्शन अफल होगा।

बन्ध-मोक्ष फल (१४)
१ खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३ जल्दी छूटेगा देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जायगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१५)

१ मकान बनाओ सुख मिलेगा ।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा ।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो ।
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा ।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा ।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा ।
७ इस मकान से लाभ होगा ।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे ।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा ।

इच्छा पूरी होगी, कि नहीं ? (१६)

१ इच्छा पूर्ण होगी ।
२ इच्छा पूण होगी ।
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न ।
४ निष्फलता है ।
५ देर से होगी ।
६ इच्छा पूर्ति में विघ्न ।
७ इच्छा पूर्ण होगी ।
८ इच्छा पूर्ण न होगी ।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी ।

दुकान करूं या नहीं (१७)

१ दुकान करने से लाभ अच्छा है ।
२ दुकान करने से लाभ नहीं ।
३ दुकान करो, लाभ बहुत होगा ।
४ दुकान से लाभ है, परन्तु खर्च बहुत होगा ।
५ दुकान मत करो, हानि है ।
६ लाभ-हानि समान है, न करो ।
७ लाभ अच्छा होगा, दुकान करो ।
८ दुकान में लाभ न होगा ।
९ दुकान में लाभ अच्छा होगा ।

खेती करूं या नहीं फल (१८)

१ खेती में लाभ रहेगा ।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है ।
३ खेती को कीड़े का भय है ।
४ मनोकामना सिद्ध होगी ।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ ।
६ खेती करो पर सावधानी से ।
७ खेती में ओले का भय है ।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी ।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो ।

रोगी का प्रश्न फल (१९)

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा ।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो ।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है ।
४ चिन्ता न करो आराम होगा ।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो ।
६ रोगी को पथ्य से रखो ।
७ चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी हैं ।
८ आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है ।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता ।

संतान भाग्य में वश है ? फल (२०)

१ संतान आपके भाग्य में नहीं ।
२ प्रेतशांति से होगी ।
३ संतान होगी कमजोर ।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से ।
५ नेमव्रत से होगी ।
६ गया या पिहोए विधि से ।
७ होकर नष्ट होने का भय है ।
८ संतान की आशा छोड़ो ।
९ सप्ताह श्रवण से होगी ।

धर्म दीक्षा-फल (२१)

१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो ।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो ।
३ धर्म करते रोग हो ।
४ धर्म में यश बढ़े ।
५ धर्म से आकुलता हो ।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे ।
७ धर्म करते मृत्यु हो ।
८ धर्म से वृत्ति उखड़े ।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले ।

अनाज खरीद फल (२२)

१ अनाज में भारी लाभ होगा ।
२ नफा टोटा समान रहेगा ।
३ घाटा रहेगा ।
४ अन्न के खराब होने का भय है ।
५ साझी व्यापार न करें ।
६ देर से बिकेगा ।
७ अनाज में सवाये होंगे ।
७ बेचना ठीक है, लेना मत ।
९ प्रश्न फल अशुभ है ।

पुत्र गोद लेने का फल (२३)

१ गोद लेने से नाम रहेगा ।
२ यह लड़का वफादार नहीं ।
३ लड़का खर्च करायेगा ।
४ लड़का अच्छा नहीं है ।
५ अच्छी निभेगी ।
६ सावधानी से गोद लेना ।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा ।
८ घर में अनबन रहेगी ।
९ सुखदाई नहीं है ।

तबादले का प्रश्न—(२४)

१ तबादला होगा ।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा ।
३ तबादले में विघ्न आवे ।
४ तबादला अभी नहीं ।
५ तबादला होगा ।
६ तबादले में देर है ।
७ तबादला जरूर होवे ।
८ अभी ठहरो ।
९ देरी से होगा ।

कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है ? (२५)

१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है ।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे ।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा ।
४ अन्त में मुश्किल होगी ।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया ।
६ इस जगह हानि-लाभ सम हैं ।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं ।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा ।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा ।

गर्भ में क्या है ? फल (२६)

१ इस गर्भ की सुखाशा नहीं ।
२ पुत्री का जन्म होगा ।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है ।
४ लड़की होगी पर आयु कम ।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे ।
६ पुत्र का जन्म होगा ।
७ दीर्घायु पुत्र होगा ।
८ कन्या जन्मेगी ।
९ जोड़े बालक होंगे ।

विवाह शादी का फल (२७)

१ विवाह देरी से होगा ।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं ।
३ विवाह न होगा ।
४ विवाह जरूर होगा ।
५ विवाह में रुकावटें होंगी ।
६ किसी की खुशामद करो ।
७ खर्च करो, काम बनेगा ।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा ।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी ।

रोजगार प्रश्न फल (२८)

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा ।
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा ।
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो ।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा ।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी ।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान ।
७ रोजगार ठीक होने में देर है ।
८ खोटे ग्रह की दशा में अभी चुप रहो ।
९ जो विचारा है, वह पूर्ण नहीं होगा ।

चोरी गई का फल (२९)

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी ।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा ।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा ।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा ।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा ।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी ।
७ माल आवा नष्ट हो गया ।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो ।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा ।

गुप्त चिन्ता का फल (३०)

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी ।
२ काम बनने में कुछ देर है ।
३ काम का नतीजा खराब होगा ।
४ किसी का भरोसा न करो ।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा ।
६ मन की मन ही में रहेगी ।
७ तेरा दुष्ट से वाह पड़ा है ।
८ देरी से काम बनेगा ।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो ।

... सांझा व्यापार में लाभ होगा ? (३१) ... वह प्राणी जीवित है या नहीं ? (३[illegible])

क्या मुझे सांझा व्यापार में लाभ होगा ? (३१)

१ साझे में लाभ होगा ।
२ साझे में लाभ कम होगा ।
३ साझे में हानि का भय है ।
४ लाभ होगा, परन्तु ठहर कर ।
५ हानि का भय है ।
६ लाभ होगा ।
७लाभ होगा,परन्तु अन्त में गड़बड़ीकाभयहै
८ लाभ की आशा व्यर्थ है ।
९ लाभ होगा, विश्वास रक्खो ।

खोया पशु किधर मिलेगा ? (३२)

१ पशु दक्षिण में है । नहीं मिलेगा ।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा ।
३उत्तर-पश्चिमके कोणमेंगया है,नहींमिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा ।
५ पूर्वकी ओर गयाहै, जल्दी ढूंढ़नेसेमिलेगा
६ उत्तर में ही मिलेगा ।
७ पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिनहै।
८ दक्षिण में गया है, मिलेगा ।
९ पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा ।

मेरा यह वर्ष कैसा है ? (३३)

१ यह वर्ष शुभ रहेगा ।
२ वर्ष कष्टप्रद है ।
३ वर्ष मध्यम है ।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है ।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है ।
६ वर्ष साधारण है ।
७ वर्ष शुभ है ।
८ वर्ष हानिकर है, ग्रहशान्ति करो ।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी ।

कुश्ती लड़ने का फल (३४)

१ प्रभु का ध्यान कर जीतेगा ।
२ सावधान, शत्रु प्रबल है ।
३ मत लड़, गड़बड़ मचेगी ।
४ लड़ाई-झगड़े का भय है ।
५ कुश्ती कर जीतेगा ।
६ मत घबड़ा, जीतेगा ।
७ जीतने में शत्रु विघ्न करेंगे ।
८ तेरे हारने का योग है ।
९ विजय होगी।

यह प्राणी जीवित है या नहीं ? (३५)

१ जीवित नहीं ।
२ वह जीवित है ।
३ जीवित नहीं है ।
४ जीवन में सन्देह है ।
५ जीवित है ।
६ जीवित नहीं ।
७ जीवित है ।
८ जीवित नहीं ।
९ जीवित है ।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३६)

१ विश्वास-योग्य है ।
२ कुछ विश्वास-योग्य कम है ?
३ विश्वास योग्य नहीं ।
४ ईमानदार है ।
५ भरोसा कर सकते हैं ।
६ भरोसा मत करो ।
७ विश्वास-पात्र है ।
८ विश्वास-योग्य नहीं है ।
९ विश्वास-पात्र है ।

इस काम में लाभ है कि नहीं ? (३७)

१ इस काम से सुख-लाभ होगा ।
२ इस काम में दुःख हानि होगी ।
३ इस काम में हानि-लाभ समान ।
४ इस काम में हानि दुःख होगा ।
५ इसमें लाभ सुख है ।
६ लाभ सुख मध्यम ।
७ सुख लाभ होगा ।
८ सावधान, हानि दुःख होगा ।
९ सुख लाभ होगा ।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर (३८)

१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा ।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो ।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा ।
५यहीं ठहरो,कुछ दिन बाद लाभ होनेलगेगा
६ यहीं पर ठहरो, दूसरी जगह भी कष्ट हो
७ यह स्थान मत छोड़ो, देर से लाभ है ।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है ।
९ यहीं परिश्रम करो,ग्रहशान्ति से लाभहोगा

यह खबर झूठी है या सच्ची? (३९)

१ यह खबर ठीक सच्ची है :
२ यह बात झूठी है ।
३ बात सच्ची है ।
४ बात झूठी है ।
५ बात सत्य है ।
६ सत्य है ।
७ कुछ कुछ सत्य है ।
८ निराधार झूठी है ।
९ सच्ची है ।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा? (४०)

१ आज का दिन अच्छा है ।
२ आज सावधान रहें ।
३ अच्छा दिन है ।
४ खराब है ।
५ अच्छा दिन है ।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है ।
७ शुभ दिन है ।
८ बहुत ज्यादा खराब है ।
९ मध्यम है ।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा ? (४१)

१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है ।
२ रोग से ही पीड़ित है ।
३
४ प्रेतपीड़ा है शान्ति करावें ।
५ शत्रुकृत टोना आदि असर है ।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें ।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें ।
८ रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें ।
९ कर्मजन्य फल से विवश है ।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है ? (४२)

१ शीघ्र जल मिलेगा ।
२ खण्डित जल मिलेगा ।
३ सुन्दर जल मिलेगा ।
४ जल नहीं मिलेगा ।
५ अमृत जल मिलेगा ।
६ जल मिलेगा ।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा ।
८ अभी जल नहीं मिलेगा ।
९ जल कम वा क्षार मिलेगा ।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं (४३)

१ इस व्यक्ति के द्वारा सफलता होगी ।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा ।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी ।
४ इससे काम सिद्ध न होगा ।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा ।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा ।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा ।
८ इससे कुछ आशा न करो ।
९ मिलो, कार्य बनेगा ।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं? (४४)

१ सफलता की कम आशा है ।
२ बड़े परिश्रम से सफलता होगी ।।।
३ सफलता मिलेगी ।
४ सफल होना मुश्किल है ।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो ।
६ सफलता देर में मिलेगी ।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी ।
८ सफलता की आशा नहीं ।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी ।

केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल

प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो अक्षर निकले—उसी से प्रश्न पिण्ड बनावे। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोले—अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हो तो यदि प्रश्नकर्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता का नाम, यदि शूद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण करावे ॥

॥ अथ स्पष्टार्थ चक्र (स्वर ध्रुवांक-चक्रम्) ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१९	२५

॥ अथ व्यञ्जन ध्रुवांक चक्रम् ॥

क्	ख्	ग्	घ्	ङ	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	[illegible]	३५	२८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण :—जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से गुलाब का नाम लिया। ध्रुवांक के चक्रों से अंक ग्रहण किये जैसे (ग्=२१ उ=१५ ल्=१३ आ=२१ ब=२६ अ=१२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग किया तो १०८ यह प्रश्न-पिण्ड हुआ।

लाभ के प्रश्न विचार

लाभालाभ का प्रश्न हो तो प्रश्न-पिण्ड में ४२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में लाभ, २ शेष में अल्प लाभ, ० शेष में हानि समझना।

जय-पराजय प्रश्न-विचार

जय पराजय प्रश्न-पिण्ड में ३४ जोड़ कर ३ से भाग देनेपर १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० में पराजय कहना चाहिए।

सुख-दुःख प्रश्न-विचार

सुख-दुःख प्रश्न-पिण्ड में ३८ जोड़ कर २ से भाग देने पर १ शेष में सुख, ० शेष में दुःख समझना चाहिए।

गमन-प्रश्न विचार

गमन प्रश्न-पिण्ड में ३३ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गमन, २ शेष में स्थिर और ० शेष में आधे रास्ते से ही लौटना पड़े।

जीवन-मरण विचार

जीवन-मरण प्रश्न-पिण्ड में ४० जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, शून्य में मरण फल कहना चाहिए।

यात्रा-प्रश्न

यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न-पिण्ड में ३९ जोड़ कर ३ से भाग देने से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प यात्रा तथा शून्य में यात्रा नहीं होती।

वर्षा-प्रश्न

वर्षा प्रश्न पिण्ड में ३२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य में वहां वर्षा नहीं होती।

गर्भ-विचार प्रश्न

गर्भ है या नहीं इस प्रश्न-पिण्ड में २६ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गर्भ, २ में गर्भ-स्राव सन्देह, ० शेष में गर्भ नहीं है इस प्रकार समझ।

तेजी-मन्दी का प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में तेजी समझना।

सत्यासत्य प्रश्न

यह बात सत्य है या असत्य ऐसे प्रश्न-पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना।

पुत्र-कन्या जन्म-प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शेष शून्य में गर्भ का अभाव व नपुंसक कहना।

विवाह-प्रश्न

प्रश्न पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से, विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो। ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा आदि का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण व श्वसुर का मरण, ८ याने ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगली धरे। यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो। ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे। ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे। २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है।

पंचदशी यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

खचर-गतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविध-वचन-जालांल्लोकयन् शास्त्र-सिद्धान् ।
सकल-भरत-भूमौ किञ्च पञ्चापदेशे कर-कलन-मुहूर्त्तान् संलिखामीह शुद्धान् ॥

सं० २०२८ में विवाहादि मुहूर्त्त

—समय शुद्धि—

(१) **शुक्र अस्त**–श्रावण शुक्ल १४ गु. (श्राव. प्र. २१) से कार्त्ति. कृ. ११गु. (आश्वि. प्र. २९) तक शुक्र अस्त रहेगा ।+

(२) **गुरु अस्त**—मार्ग. शु. ९ श. (मार्ग. प्र. १२) से पौष शु. ६ गु. (पौष प्र. ८) तक गुरु अस्त रहेगा ।*

(३) **त्रयोदशदिनात्मक पक्ष**– इस वर्ष आषा. कृष्ण पक्ष में दो तिथियां क्षीण हैं, जिससे यह पक्ष त्रयोदश दिनात्मक है । त्रयोदश दिन के पक्ष में धर्म शास्त्रानुसार सभी शुभ कृत्य वर्जित होते हैं ।

यहां क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है । सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

इन मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, दग्धातिथि आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, वहां मुहूर्त्त लगा दिए गए हैं ।

नोट—(१) यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो, तो बारात एक दिन पहले ही पहुँच जानी चाहिए, क्योंकि एक दिन पहिले पहुँच कर सायंकाल तक शान्ति-कृत्य आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।

(२) यदि गुरु, शुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, माईयां, पेड़े माष-हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिए ।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र—अश्विनी, चित्रा, श्रवण, घनिष्ठा में चार विवाह के नक्षत्र-विशेष कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिये ग्राह्य हैं । अन्य ऋग्वेदी सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं । प्रमाणार्थ देखिये—पारस्करगृह्य (कात्यायन) सूत्र—"उदगयने आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात् ।" ।१। त्रिषु उत्तरादिषु ।२। हरिहरभाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि तेषु, कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु—उ. फा., ह., चि. । उ. षा. श्र., ध. । उ. भा. रे., अश्विनी ।" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर विवाह-नक्षत्र-निर्णय में वेद व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—'चित्रा-श्रवण-धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम् ।'

और भी देखिये—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त्त में अग्राह्य है (मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है । ऐसे ही इस नक्षत्र चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्य (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए ।

उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें ।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेल्वे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहिले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें, ताकि सर्वसाधारण को भी यह पता चल सके कि इस लग्न को केवल इतने बजे तक या इतने बजे के बाद ही मुहूर्त्त में स्वीकार किया गया है ।

वि. स. २०२८ में शुद्ध विवाह मुहूर्त

[लग्नों के आगे कोष्ठकों में दिए गए घं. मि. (भा. स्टैं. टा.) के हैं]

समस्त प्रदेशों के लिए

वैशा. कृ. ५ शु. (वै. प्र. ३) मूल ।।।।ऽ अ. ऽऽ।ऽ ल. गोधू., ८,
" " ९ चं. (वै. प्र. ६) श्रव. ऽ बु. गु. ऽ।।।ऽऽ। ल. धूलि., ८
वैशा. शु. ३ मं. (वै. प्र. १४) रोहि. ऽ रा. ।।।ऽ गु. ऽ नृ. ऽ।। ल. ११, १२,
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. ।।।ऽ शु. ।।ऽ।। ल. धूलिमु.,
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) हस्त ऽ सू ऽ।।ऽ नृ ।।।। ल. ९, १२ (२२ घं. २० मि. बाद) चं. दा.,
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त ऽ सू ऽ।।ऽ नृ ।।।। ल. धूलिमु., ९.
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) चित्रा ।।।।ऽ शु. ।ऽ।। ल. १२ चं. दा.,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा ।।।।ऽ शु. ।ऽ।। ल. ९, ११ (३ घं. ० मि. तक)
ज्येष्ठ कृ. १ मं. (वै. प्र. २८) अनु. ।।ऽ गु. ।ऽ गु. ।ऽऽ।। ल. ११, १२ (कुम्भ से पहिले रोग पंचक, रेखा ५)
" " ५ श. (ज्ये. प्र. २) उ.षा. ।।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५, गोधू., ९, १२,
" " १० गु. (ज्ये. प्र. ७) उ.भा. ।।।।।।ऽऽ।। ल. धूलिमु. ९, ११ (शु. दा.),
" " १२ शु. (ज्ये. प्र. ८) रेव. ।।।।।ऽ चो ।ऽ।। ल. धूलि मु., ९,

---

*इस वर्ष (सं. २०२८ में) शुक्र के उदय के काल में अक्षांश भेद से भारत के नगरों में २५ दिन तक का अन्तर पाया जाएगा, जब कि अस्त की तारीख में ५–६ दिन का ही अन्तर होगा । कम अक्षांश वाले नगरों में शुक्रोदय पहिले और अधिक अक्षांश वाले नगरों में बाद में होगा । गिलगित (काश्मीर) में शुक्रोदय कन्याकुमारी से २५ दिन बाद होगा । **ध्यान रहे**—विभिन्न नगरों के शुक्रोदय की तारीखों में इतना अन्तर कभी कभी होता है ।

शुद्ध विवाह मूहूर्त (सं. २०२८) क्रमागत

ज्येष्ठ	शु.	९ बु. (ज्ये. प्र. २०) उ.फा. ।।।।ऽ रो ऽ।। दि. ल. ५, गोधू., ९, १२, (चं.दा.),
"	"	१० गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त ।।।।।।ऽ।। दि. ल. ५,
"	"	१२ श. (ज्ये. प्र. २३) स्वा. ऽ सु ।।।।ऽ अ ।।।। दि.ल. ५ (११ घं. २० मि. बाद)
"	"	१३ र. (ज्ये. प्र. २४) स्वा. ऽ सु ।।।।।।।। दि. ल. ५ (१२ घं. ११ मि. तक)
"	"	१४ चं. (ज्ये. प्र. २५) अनु. ।।ऽ गु ।ऽ बु.शु. ऽ नृ ।ऽ।। ल. ११, १२ (शु.दा.),
"	"	१५ बु. (ज्ये. प्र. २७) मूल ।।।।ऽ सु ऽ चो ऽऽ।। ल. गोधू. ११, १२ (शु. दा.)
आषा.	शु.	६ मं. (आषा. प्र. १५) उ.फा. ।ऽ।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. १२ (चं. दा.,),
"	"	७ बु. (आषा. प्र. १६) उ.फा. ।ऽ।।।ऽऽ।। दि.ल. ५ (१० घं. २७ मि. तक),
"	"	८ गु. (आषा. प्र. १७) चित्रा ।।।।ऽ चो ऽ।।। ल. धूलि. मु. ११, १२ (चं. दा.),
"	"	९ शु. (आषा. प्र. १८) चित्रा ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ५, ६,
"	"	९ शु. (आषा. प्र. १८) स्वा. ।।।।।।ऽ।। ल. ११,
"	"	१० श. (आषा. प्र. १९) स्वा. ।।।।ऽ रो. ।ऽ।। दि.ल. ५, ६, गोधूलि,

देशाचार से केवल पंजाब एवं द्विगर्त्त प्रदेशों के लिए

आषा.	शु.	११ र. (आषा. प्र. २०) अनु. ऽ सू ऽऽ गु ।ऽ श ।।।।। ल. १२ (२३ घं. २५ मि. बाद)
श्राव.	कृ.	१ शु. (आषा. प्र. २५) उ.षा. ।।।।ऽ रो. ।ऽ।। ल. गोधू.,
"	"	६ मं. (आषा. प्र. २९) उ.भा. ऽ चं. ।।।।ऽ।।। ल. धूलि मु., ११,
"	"	१२ चं. (श्राव. प्र. ४) रोहि. ।ऽ।।ऽ अ ।ऽ।। दि. ल. ५ (८ घं. ३६ मि. तक)
"	"	१२ चं. (श्राव. प्र. ४) मृग. ।।।।ऽ अ ऽ।।। दि. ल. ६ (पश्चात् क्षीण चन्द्रमा)
श्राव.	शु.	५ मं. (श्राव. प्र. १२) उ.फा. ।।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५ (८ घं. ४४ मि. तक),
"	"	६ बु. (श्राव. प्र. १३) हस्त ।।।।।ऽ अ ।।।ऽ दि.ल. ७, धूलि मु., १२ (चं.दा.)
"	"	७ गु. (श्राव. प्र. १४) चित्रा ।।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५, ७ धूलिमु.,
"	"	८ शु. (श्राव. प्र. १५) स्वाती ।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. धूलि मु. (१९ घं. १३ मि. तक क्रान्तिसाम्य),
"	"	९ र. (श्राव. प्र. १७) अनु. ।।ऽ गु. ।।।।ऽ।। दि. ल. ६, ७, गोधू.,
"	"	१० चं. (श्राव. प्र. १८) अनु. ।।ऽ गु. ।।ऽ चो. ।ऽ।। दि.ल. ५ (८ घं. २० मि. तक),
कार्त्ति.	शु.	२ गु. (का. प्र. ५) अनु. ।।ऽ गु ।।ऽ नृ ।।।। ल. ६ (४ घं. ४० मि. बाद),
"	"	३ शु. (का. प्र. ६) अनु. ।।ऽ गु ।।ऽ नृ ।।।। दि. ल. ९, ११, रा. ल. ६,
"	"	५ र. (का. प्र. ८) मूल ।।।।ऽ चो ऽऽ।। ल. धूलि मु., ६,
"	"	७ मं. (का. प्र. १०) उ.षा. ।।।।।ऽ रो ऽऽ।। ल. धूलि. मु.,
"	"	१२ र. (का. प्र. १५) उ.भा. ऽ सू ।।।।ऽ नृ ऽ।।। ल. धूलि. मु.,
कार्त्ति.	शु.	१२ र. (का. प्र. १५) रेव. ।ऽ।।।।।।। ल. ६ (४ घं. ६ मि. बाद) चं. दा.,
"	"	१३ चं. (का. प्र. १६) रेव. ।ऽ।।।।।।। दि. ल. ९, धूलिमु.,
मार्ग.	कृ.	२ गु. (का. प्र. १९) रोहि. ।।ऽ श. ।ऽ बु.गु. शु. ऽ रो ।।।। ल. गोधू.,
"	"	३ शु. (का. प्र. २०) मृग. ।।।।।ऽ।।। ल. गोधू.
"	"	११ श. (का. प्र. २८) उ.फा. ।ऽ।।ऽ रो ऽऽ।। दि.ल. १२ (चं. दा.)
"	"	१२ र. (का. प्र. २९) हस्त ।।।।।।ऽ।ऽ दि. ल. ९, १२ (च. दा.),

समस्त प्रदेशों के लिए

मार्ग	शु.	४ चं. (मार्ग. प्र. ७) उ.षा. ।ऽ।।ऽ चो ऽऽ।। ल. ६, ७,
माघ	शु.	१ चं (माघ प्र. ४) धनि. ।।।।।।।।। ल. ९ (६ घं. ८ मि. बाद)
"	"	२ मं. (माघ प्र. ५) धनि. ।।।।।ऽ नृ ।।।। दि.ल. ११, (मेष में कर्त्तरी).
"	"	४ गु. (माघ प्र. ७) उ.भा. ।।।।।ऽ चो ।।।। ल. ९,
"	"	५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. ।।।।।।।।। दि. ल. ११, धूलिमुख, (मेष में कर्त्तरी)
"	"	११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. ।।।।।ऽ अ ।ऽ।। दि.ल. ११ (९ घं. ५ मि. तक),
"	"	१२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. ।।।ऽ बु. ।।ऽ।।ऽ दि. ल. ११, (मेष में कर्त्तरी),
फाल्गु.	कृ.	४ गु. (माघ प्र. २१) उ.फा. ।।।।ऽ शु. ऽ अ ।ऽ।। ल. गोधू.,
"	"	४ गु. (माघ प्र. २१) हस्त ।।।।।ऽ अ ऽऽ।। ल. ९,
"	"	५ शु. (माघ प्र. २२) हस्त ।।।।।।ऽऽ।। दि.ल. १२ (चं. दा.), गोधू.,
"	"	५ शु. (माघ प्र. २२) चित्रा ऽ चं. ।।ऽ शु. ।।।।।। ल. ९ (४ घं. ४५ मि. तक)
"	"	६ श. (माघ प्र. २३) चित्रा ऽचं. ।।ऽ शु. ।ऽ नृ ।।।। दि.ल. १२ (चं.दा.) धूलिमु.
"	"	७ र. (माघ प्र. २४) स्वाती ।ऽ।ऽ मं. ।।।।। ल. धूलिमु., ९,
"	"	९ मं. (माघ प्र. २६) अनु. ।।।।ऽ श. ।।ऽ।। ल. धूलि. मु., ९,
"	"	९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. ।।।।ऽ श ऽ रो ।ऽ।।. दि.ल. ११ (७ घं. २५ मि. से ७ घं. ५६ मि. तक)
फाल्गु.	शु.	३ गु. (फा. प्र. ५) उ.भा. ।।ऽ शु. ।।ऽ नृ ।।।ऽ ल. ९, (मिथुन में कर्त्तरी),
"	"	४ शु. (फा. प्र. ६) रेव. ।ऽ।।।ऽऽ।। ल. ९ (४ घं. ५४ मि. तक),
चैत्र	कृ.	१ बु. (फा. प्र. १८) उ.फा. ।।।।ऽ बु. ऽ रो. ।।।। ल. गोधू., ९. (मिथुन में कर्त्तरी)
"	"	४ श. (फा. प्र. २१) स्वाती ।।।।ऽ शु. ऽ अ ।ऽ।। ल. गोधू. ९,
"	"	९ गु. (फा. प्र. २६) मूल ।।ऽ गु. ।।।।ऽ।। दि. ल. १२,

निवेद्यम्—अत्र क्वचित्स्मृति-दृष्टि-दोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

(कोष्ठकों में दिए गए घं. मि. (भा. स्टैं. टा.) के हैं)

द्विरागमन मुहूर्त्त (सं. २०२८)

वैशा. कृ. ५शु. (वै. प्र. ३) मूल (१२ घं. १२ मि. बाद)
" " ११ बु. (वै. प्र. ८) शत.,
वैशा. शु. ५ गु. (वै. प्र. १६) मृग. (७ घं. २६ मि. तक)
" " ६ शु. (वै. प्र. १७) पुन. (७ घं. ४५ मि. बाद)
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. (९ घं. २५ मि. बाद)
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त,
ज्ये. कृ. २ बु. (वै. प्र. २९) अनु. (८ घं. ४५ मि. तक)
मार्ग. शु. १ शु. (मार्ग. प्र. ४) अनु. (८ घं. ५६ मि. से १२ घं. ४८ मि. तक)
" " ४ चं. (मार्ग. प्र. ७) उ.षा. (१७ घं. ६ मि. बाद)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ. भा., (१० घं. ६ मि. बाद)
चैत्र कृ. १ बु. (फा. प्र. १८) उ.फा.
" " २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त..

सूचना—विवाह दिन से १६ दिन के भीतर उपरोक्त मुहूर्त्त के बिना ही द्विरागमन हो सकता है। यदि नव विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृद्धि होती है ॥

यज्ञोपवीतमुहूर्त्तं (सं. २०२८)

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में पैदा हुए बालक प्रायः स्वजातियुक्त-गुण ९० प्रतिशत वीर्यगत-प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। यदि यज्ञोपवीतादि-वैदिक संस्कार वर्णोचित आयु एवं शुभ मुहूर्त्त में किए जायें तो उनमें उस सत्य शक्ति का क्रमशः विकास होता है।

चैत्र शु. २र. (चैत्र प्र. १५) अश्वि. (१० घं. २९मि. तक)
" " ५ बु. (चैत्र प्र. १८) रोहि.
" " १२ बु. (चैत्र प्र. २५) पू.फा. (९ घं. ३४ मि. बाद)
वैशा. शु. ३ मं. (वै. प्र. १४) रोहि. अभिजित् में (साम-वेदियों के लिए)
" " ५ गु. (वै. प्र. १६) आर्द्रा अभिजित् में,
" " १०बु. (वै. प्र. २२) पू. फा.
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् में,
ज्ये. शु. ३ गु. (ज्ये. प्र. १४) आर्द्रा, ल. ५, अभिजित्,
" " १० गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, ल. ५, अभिजित्,
माघ शु. २ मं. (माघ प्र. ५) धनि. अभिजित् में (साम-वेदियों के लिए)

(कोष्ठकों में दिए गए घं. मि. (भा. स्टै. टा.) के हैं)

यज्ञोपवीतमुहूर्त्त (क्रमागत)

माघ शु. ४ गु. (माघ प्र. ७) पू.भा. (१० घं. २५ मि. से ११ घं. १० मि. तक) लग्न चिन्त्य
" " ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. (८ घं. २३ मि. तक)
" " ११ बु. (माघ. प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
फाल्गु.कृ. ५गु. (माघप्र. २२) हस्त अभिजित् में ल. १२ (शु.दा.)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ म. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) पू. भा. (१० घं. ६ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ.भा. अभिजित् में
चैत्र कृ. २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त अभिजित् में
" " ५ र. (फा. प्र. २२) स्वा., अभिजित् में

विशेष—अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर किसी सतीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषि-तर्पण का दिन (श्राव. शु. १५) भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सं० २०२८)

वैश. शु. १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् में,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, अभिजित् में,
ज्ये. शु. १० गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, अभिजित् में,
" " १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा, स्वा., ल. ५, अभिजित्
कार्ति. शु. १३ चं. (का. प्र. १६) रेव., (१० घं. २५ मि. तक)
माघ शु. ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
" " १२गु. (माघ.प्र.१४) मृग. (११ घं. ५७मि.तक)
चैत्र कृ. १बु. (फा.प्र.१८) उ.फा. (११ घं. ३० मि.तक)
" " २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त, अभिजित् में
" " ४श (फा. प्र. २१) स्वा. (१६ घं. ३० मि. बाद),

—गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सं. २०२८)—

वैशा. शु. ७ श. (वै. प्र. १८) पुष्य, अभिजित् में (पुराने घर में प्रवेश)
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. (१५ घं. ४४मि.बाद
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, अभिजित् में,
ज्ये. शु. १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा, स्वा., लग्न ५, अभिजित्
माघ शु. ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा., अभिजित् में,
" " ११बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि.तक)
" " १२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. ११ घं. ५७ मि.तक अभिजित् में
फाल्गु. कृ. ९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. (११ घं. ३३ मि. से १३ घं. ७ मि. तक)

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०२८)

वैशा. शु. ६ शु. (वै. प्र. १७) पुन., अभिजित् में,
" " ७ श. (वै. प्र. १८) पुन. पुष्य,
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् ल. ३,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, ल. ३, अभि.,
ज्ये. कृ. ५ श. (ज्ये. प्र. २) उ.षा. अभिजित् में.
" " ६ र. (ज्ये. प्र. ३) उ.षा. (९ घं. ५६ मि. तक)
ज्ये. शु. २ बु. (ज्ये. प्र. १३) मृग., ल. ५,
" " ५ श. (ज्ये. प्र. १६) पुष्य, अभिजित् में,
" " १०गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, ल. ५, अभि.,
" " १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा. स्वा.,
" " १३ र. (ज्ये. प्र. २४) स्वा; अभिजित् में,
माघ शु. ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. अभिजित् में,
" " ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
" " १२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. (११ घं. ५७ मि.तक) अभिजित् में
फाल्गु. कृ. ५ शु. (माघ प्र. २२) हस्त, ल. १२ अभिजि.,
" " ६ श., (माघ प्र. २३) चित्रा ल. १२, अभि;
" " ८ चं. (माघ प्र. २५) स्वा.,
" " ९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. (११ घं. ३३ मि. से १३ घं. ७ मि. तक)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ. भा. अभिजित् में

अभिजिन्मुहूर्त्त—नित्य मध्याह्न संधिकाल की एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ मिनट से १२ बजकर १२ मिनट दुपहर तक अभिजित् मुहूर्त रहता है। इस मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभलग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजिन्मुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा—"अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्य-दोष विनाशकृत्। मध्येदिने गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिताह्वयः ॥ नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा ॥"

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त—(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। (२) अक्षय तृतीया (वैशा. शुक्ल तृतीया) (३) विजयादशमी (आश्वि. शुक्ल दशमी) (४) दीपावली (प्रदोष के समय)

ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें "अणपुच्छ मुहूर्त्त" कहती है। इनमें कोई भी+

+शुभ कार्य करने के लिए नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

(अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त वि. सं. २०२८)

यहां अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की सूची दी जा रही है, साथ २ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण इन मुहूर्त्तों में विवाह नहीं हो सकते।

वैशा. कृ. ३ बु. अनु. संक्रान्ति
" " ४ गु. मू. परिघार्ध
" " ६ श. उ.षा.)
" " ७ र. उ.षा.) भौमयुति
" " ७ र. श्रव. रेखा ५, तिथिक्षय,
" " ९ चं. धनि.)
" " १० मं. धनि.) राहुयुति
" " १२ गु. उ.भा. शुक्रयुति,
वैशा. शु. ४ बु. रोहि. लग्नाभाव
" " ४ बु. मृग.)
" " ५ गु. मृग.) भौमवेध
" " ९ चं. मघा. लग्नाभाव, मृत्यपं.;
" " १० मं. मघा मृत्यु पं.,
" " १० बु. उ.फा. भद्रा.,
" " १३ श. स्वा. लग्नाभाव
" " १४ र. स्वा.लग्नाभाव, व्यती., भद्रा
ज्ये. कृ. २ बु. अनु. लग्नाभाव
" " ३ गु. मू. मासान्त
" " ४ शु. मू. संक्रान्ति
" " ६ र. उ.षा. लग्नाभाव,
" " ६ र. श्रव. }
" " ७ चं. श्रव. } भौमयुति
" " ७ चं. धनि }
" " ८ मं. धनि. } राहुयुति
" " १० गु. रेव. लग्नाभाव
" " १२ शु. अश्वि. शुक्रयुति,
ज्ये. शु. १ मं. रोहि. क्षीण चन्द्र मृत्यु पं.,
" " १ मं. मृग. मृत्यु पं.,
" " २ बु. मृग. मृत्यु पं., लग्नाभाव,
" " ६ र. मघा)
" " ७ चं. मघा) भौमवेध
" " ८ मं. उ.फा. लग्नाभाव,
" " ११ शु. हस्त व्यतीपात

ज्ये. शु. ११ शु. चि. व्यती., भद्रा, लग्नाभाव
ज्ये. शु. १२ श. चित्रा लग्नाभाव
" " १४ मं. अनु. भद्रा.,

आषा. कृ. त्रयोदश दिनात्मक पक्ष

आषा. शु ५ र. मघा)
" " ५ चं. मघा) राहुवेध
" " ७ बु. हस्त, भद्रा, लग्नाभाव परिघार्ध
" " ८ गु. हस्त, परिघार्ध लग्नाभाव
" " १२ चं. अनु. मृत्यु पं., लग्नाभाव
" " १३ मं. मूल)
" " १४ बु. मूल) सूर्यवेध
" " १५ गु. उ.षा. वैधृति
श्राव. कृ. १ शु. श्रव. }
" " २ श. श्रव. } राहुयुति
" " २ श. धनि. }
" " ३ र. धनि. } भौमयुति
" " ७ बु. उ.भा. भद्रा, लग्नाभाव,
" " ७ बु. रेव., लग्नाभाव, मृत्यु पं.,
" " ८ गु. रेव. मासान्त,
" " ८ गु. अश्वि. मासान्त
" " ९ शु. अश्वि. संक्रान्ति,
" " ११ र. रोहि. मृत्यु पं., लग्नाभाव
श्राव. शु. २ श. मघा)
" " ३ र. मघा) राहुवेध
" " ४ चं. उ.फा. परिघार्ध लग्नाभाव
" " ५ मं. हस्त., मृत्यु पं.,
" " ६ बु. चित्रा. लग्नाभाव
" " ७ गु. स्वा. भद्रा
" " ११ मं.मूलवैधृति, शुक्रवार्धक्य

श्राव. शु. १४ गु. से कार्त्ति. कृ. ११ गु. तक शुक्रास्त

कार्त्ति. शु. ६ चं. मूल, लग्नाभाव
" " ८ बु. उ.षा. भद्रा नक्षत्रान्त.
" " ८ बु. श्रव.)
" " ९ गु. श्रव.) राहुयुति
" " ९ गु. धनि.)
" " १० शु. धनि) भौमयुति
" " १३ चं. अश्वि. लग्नाभाव,
" " १५ मं. अश्वि. लग्नाभाव, भद्रा

मार्ग कृ. ३ शु. रोहि. भद्रा,
" " ४ श. मृग. मृत्यु पं.,
" " ८ बु. मघा)
" " ९ गु. मघा) राहुवेध
" " १० शु. उ.फा. वैधृति,
" " ११ श. हस्त, लग्नाभाव,
" " १२ र. चित्रा क्षीण चन्द्र,

मार्ग. शु. २ श. मू. चन्द्रकर्त्तरी
" " ३ र. मू. चन्द्रकर्त्तरी
" " ५ मं. उ.षा. धनु में कर्त्तरी, मीन में क्रान्ति साम्य,
" " ५ मं. श्रव.)
" " ६ बु. श्रव.) राहुयुति
" " ६ बु. धनि. गुरु वार्द्धक्य

मार्ग शु. ९ श. से पौष शु. ६ तक गुरु अस्त

सूर्य धनु में

माघ शु. १ चं. श्रव. राहुयुति
" " ५ शु. रेव.)
" " ७ श. रेव.) भौमयुति,
" " ७ श. अश्वि.)
" " ८ र. अश्वि.) चन्द्रकर्त्तरी
" " १० मं. रोहि. लग्नाभाव,
" " ११ बु. मृग. भद्रा. लग्नाभाव,

फाल्गु. कृ. १ चं. मघा)
" " २ मं. मघा) सूर्यराहुवेध
" " ३ बु. उ.फा. मृत्यु पं.

फाल्गु. कृ. ६ श. स्वाती भद्रा,
" " १० गु. मूल लग्नाभाव,
" " ११ शु. मूल मृत्यु पं.,
" " १२ श. उ.षा. मासान्त
फाल्गु. शु. ५ श. अश्वि. भौमयुति,
" " ७ चं. रोहि. वैधृति,

होलाष्टक

चैत्र कृ. २ गु. हस्त, भुजंग पात,
" " ३ शु. हस्त, भुजंगपात,
" " ३ शु. चित्रा मृत्यु पंचक, सूर्यवेध
" " ४ श. चित्रा सूर्यवेध,
" " ५ र. स्वा. मिथुन में कर्त्तरी,
" " ६ चं. अनु.)
" " ७ मं. अनु..) भौमवेध
" " ८ बु. मूल लग्नाभाव
" " १० शु. उ.षा.)
" " ११ श. उ.षा.) राहुयुति
" " १२ र. श्रव. मृत्यु पं., मासान्त
" " १२ र. धनि. मृत्यु पं., मासान्त

१४ अप्रैल को वैशाखी क्यों ?

(आकाश में राशियों की स्थिति, सूर्य की गति आदि खगोल सम्बन्धी जटिल सिद्धान्तों का बालबोध शैली में विवेचन)

लेखक--प्रियव्रत शर्मा

(विगत लगभग ३० वर्षों से वैशाखी (निरयण मेष संक्रान्ति) लगातार १३ अप्रैल को ही होती आ रही है। इस वर्ष (सं. २०२८ में) यह १४ अप्रैल को होगी। सर्वसाधारण जनता में मेष संक्रान्ति की तारीख में यह अन्तर कुछ शङ्का पैदा कर सकता है। अनेक लोगों को यह भी कहते सुना है कि वैशाखी को तारीख स्थायी रूप से १३ अप्रैल ही है; परन्तु ऐसी बात नहीं है। प्रत्येक संक्रान्ति की अंग्रेजी तारीख मध्यमान से लगभग प्रत्येक ७१ वर्षों में एक तारीख आगे खिसक जाती है--यह बात सायन एवं निरयण पद्धति का ज्ञान रखने वाले ज्योतिषी समझते हैं। प्रस्तुत लेख में--"भारतीय पंचांगों में लिखी जाने वाली (निरयण) संक्रान्तियां किस प्रकार और क्यों आगे २ खिसक रही हैं"--इसका सरलतम बाल बोध शैली में विवेचन किया गया है। निरयण संक्रान्तियों की तारीखों में इस परिवर्तन को समझने के लिए आकाश में राशियों की स्थिति, सूर्य की गति आदि खगोल सम्बन्धी ज्ञान की आवश्यकता है, इसलिए पाठकों को प्रारम्भ से ही ये खगोल सम्बन्धी सिद्धान्त यहां विस्तारपूर्वक समझाए गए हैं। सरलता और स्पष्टता के लिए संक्षेप की उपेक्षा की गई है। किसी कठिन बात को अनेक शैलियों से घुमा फिरा कर समझाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। सरलता के लिए शीर्षक पद्धति अपनाई गई है। लेखक की प्रतिज्ञा है कि इस लेख एवं इस लेख में दिए गए चित्र के परिशीलन से ज्योतिषानभिज्ञ पाठक को भी पाश्चात्य और भारतीय ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान हो जाएगा। अतः उन सभी पाठकों से जो ज्योतिष में रुचि रखते हैं, अनुरोध है--वे इस लेख को दत्तचित्त होकर आद्योपान्त अवश्य पढ़ें। इस लेख में ज्योतिष एवं भूगोल सम्बन्धी सूक्ष्म कुछ उन आंकड़ों तथा सिद्धान्तों की उपेक्षा कर दी गई है जिनके बिना सूर्य की गति आदि से सम्बन्ध रखने वाले सिद्धान्त सर्व साधारण पाठक को सरलता पूर्वक समझ में आ सकें।)

पृथ्वी का अक्षभ्रमण--हमारी पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती हुई लगभग २४ घण्टों में पूरा एक चक्कर लगाती है। 卐 जिसके कारण हमें पृथ्वी के चारों ओर आकाशस्थ सभी नक्षत्र (तारे) पूर्व से पश्चिम की ओर चलते दीख पड़ते हैं। ये नक्षत्र लगभग स्थिर हैं, ये अपने २ स्थानों से प्रायः विचलित नहीं होते। सभी तारों को प्रतिदिन देखिए--ये तारे पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर चलते अवश्य दीख पड़ते हैं, परन्तु ये अपनी २ जगह नहीं छोड़ते, अर्थात्--जो तारा जिस तारे से जितनी दूरी पर जिस दिशा में है, वह उससे उतनी ही दूरी पर उसी दिशा में रहता है। उदाहरण के रूप में सप्तर्षि तारों को देखिए--उन सातों तारों की परस्पर स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता। पृथ्वी के इसी अक्ष भ्रमण के ही कारण सूर्य चन्द्र आदि ग्रह भी, जो नक्षत्रों से कहीं नीचे हैं, पृथ्वी के चारों ओर लगभग २४ घण्टों में पूर्व से पश्चिम की ओर नक्षत्रों के साथ ही घूमते दीख पड़ते हैं।

सूर्य की दैनिक गति और क्रान्ति वृत्त--सूर्य प्रतिदिन पूर्व में चढ़कर पश्चिम में अस्त होता है। यह सूर्य की अपनी गति के कारण नहीं अपितु, जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं, यह पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण है। यदि किसी प्रकार हमें दिन में भी तारे दिखाई पड़ सकें तो हमें पता चलेगा कि सूर्य प्रतिदिन १ अंश पूर्व की ओर खिसक जाता है। अर्थात्--सूर्य आज जिस तारे के नीचे दिखलाई देता है, कल वह उस तारे से लगभग १ अंश पूर्व की ओर खिसका होता है। क्योंकि--दिन में तारे दिखाई नहीं पड़ते, अतः सूर्य की गति के ज्ञान के लिए सर्वसाधारण के लिए एक आसान तरीका बतलाते हैं--प्रातः काल लगभग ४ बजे पूर्व क्षितिज में कोई तारा पुंज देखिए। उसे प्रतिदिन प्रातः उसी वक्त देखते रहिए। आप कुछ दिनों में देखेंगे कि वह तारा पुंज जो पहिले दिन पूर्व क्षितिज से कुछ ही ऊपर था, अब वह उससे बहुत ऊपर है। तीन मास बाद वह तारा पुञ्ज प्रातः ४ बजे ही आपके सिर पर होगा। इसी प्रकार वह उत्तरोत्तर पश्चिम की ओर बढ़ता दीखेगा। इससे स्पष्ट है कि सूर्य का उस तारा पुञ्ज से पूर्व की ओर अन्तर बढ़ता जा रहा है, दूसरे शब्दों में सूर्य पूर्व की ओर आगे चल रहा है और एक वर्ष बाद सूर्य आकाश का पूरा चक्कर लगाकर उसी तारा पुञ्ज से आकर मिल जाएगा। सूर्य जिस गोल मार्ग से आकाश में पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ नजर आता है उसे हम 'क्रान्ति वृत्त' कहते हैं (देखें चित्र)। ✤

नाड़ी वृत्त--भूगोल पर बनी भूमध्य रेखा (Equator) के बिल्कुल ऊपर पृथ्वी के चारों ओर सुदूर नक्षत्रों तक विस्तृत एक वृत्त की कल्पना की गई है जिसे नाडीवृत्त (Celestial Equator) कहते हैं। यह नाडी वृत्त पृथ्वी पर बनी भू-मध्य रेखा का ही बड़ा रूप है। भूमध्य रेखा और नाडी वृत्त दोनों एक ही धरातल में हैं।

卐 चित्र देखें--उ द पृथ्वी का अक्ष है, जो पृथ्वी के केन्द्र से गुजरने वाली रेखा है पृथ्वी इस उ द अक्ष पर चारों ओर इस प्रकार घूमती है, जिस प्रकार कातने की तकली पर लगा सूत का गोला घूमता है। पृथ्वी के इस भ्रमण को 'अक्ष भ्रमण' कहते हैं।

✤ वास्तविकता यह है कि--सूर्य स्थिर है और पृथ्वी चलती है। अक्ष पर भ्रमण करती हुई पृथ्वी लगभग वृत्ताकार मार्ग में (जिस का व्यासार्ध लगभग ९॥ करोड़ मील है) सूर्य के चारों ओर लगभग १ अंश पश्चिम से पूर्व की ओर खिसक जाती है, जिससे पृथ्वी पर रहने वाले हम लोगों को स्थिर सूर्य भी प्रतिदिन लगभग १ अंश पश्चिम से पूर्व की ओर चलता नजर आता है। पृथ्वी की इस लगभग १ अंश दैनिक गति के कारण सूर्य जिस वृत्त में चलता नजर आता है उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं। ज्योतिष में नया प्रवेश पाने वाले पाठकों को पृथ्वी के स्थान पर सूर्य को गतिमान मानना सुविधाजनक है, अतएव हमने यहां पृथ्वी की जगह सूर्य को ही गतिशील माना है। भारतीय ज्योतिष में भी ऐसा ही माना गया है।

स्पष्टता के लिए यों समझिए,—यदि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का प्रभाव नक्षत्र मण्डल तक हो जाए और वायु आदि का विक्षोभ न हो तो इस नाडीवृत्त की परिधि के किसी भी बिन्दु से छोड़ा गया पत्थर बिल्कुल भूमध्य रेखा पर ही गिरेगा। यह नाडी वृत्त सारे आकाश को दो भागों में विभक्त करता है—(१) उत्तर गोल (नाडी वृत्त से उत्तर की ओर का आकाश), (२) दक्षिण गोल (नाडी-वृत्त से दक्षिण की ओर का आकाश), (चित्र भी देखें)। सूर्य या कोई ग्रह अथवा नक्षत्र नाडी वृत्त से जितने अंश उत्तर में होता है, भूमध्य रेखा पर रहने वाले लोगों को भी वह उतने ही अंश उत्तर की ओर झुका दीखता है, इसी प्रकार वह (सूर्य, नक्षत्र या ग्रह) नाडीवृत्त से जितने अंश दक्षिण की ओर होता है भूमध्य रेखा-वासियों को भी वह उतने ही अंश दक्षिण की ओर झुका दीखता है। यह नाडीवृत्त क्रान्तिवृत्त (सूर्य के मार्ग) को दो स्थानों पर काटता है (देखें—चित्र)—एक 'व' बिन्दु पर, दूसरे 'श' बिन्दु पर। इन दो बिन्दुओं को क्रमशः वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात कहा जाता है। ये दोनों सम्पात क्रान्तिवृत्त को १८०-१८० अंशों के समान दो भागों में विभक्त करते हैं। चित्र देखने से स्पष्ट है—आधा क्रान्तिवृत्त दक्षिण गोल में और आधा उत्तर गोल में है। सूर्य वसन्त-सम्पात पर आने के बाद उत्तर गोल में और शरत्सम्पात पर आने के बाद दक्षिण गोल में आ जाता है। वसन्त सम्पात पर आने के बाद सूर्य का नाडीवृत्त से उत्तर की ओर अन्तर बढ़ता जाता है और 'ग' बिन्दु पर (वसन्त सम्पात से ९० अंश=३ राशि आगे) वह परम (लगभग २३ अं. २७ क.) हो जाता है। तदनन्तर 'ग' बिन्दु से आगे सूर्य का नाडीवृत्त से उत्तर की ओर अन्तर घटने लगता है, और 'श' बिन्दु (शरत्सम्पात) पर वह शून्य हो जाता है। इसी प्रकार 'श' से चलकर सूर्य का नाडीवृत्त से दक्षिण की ओर अन्तर 'ञ' बिन्दु (वसन्त सम्पात से २७० अंश—९ राशि आगे, अथवा शरत्सम्पात से ३ राशि आगे) तक बढ़ता जाता है। 'ञ' बिन्दु पर भी यह अन्तर लगभग २३ अं. २७ क. होता है। 'ञ' से आगे सूर्य का नाडी वृत्त से दक्षिण की ओर अन्तर घटने लगता है और 'व' बिन्दु (वसन्त सम्पात) पर वह पुनः शून्य हो जाता है। इस प्रकार सूर्य नाडीवृत्त से उत्तर एवं दक्षिण की ओर अधिक से अधिक २३ अं. २७ क. जाता है। 'ग' बिन्दु से सूर्य दक्षिण की ओर और 'ञ' बिन्दु से उत्तर की ओर हटना शुरू हो जाता है, अतः ग बिन्दु को दक्षिणायन बिन्दु और 'ञ' बिन्दु को उत्तरायण बिन्दु कहा जाता है।

सायन सौर वर्ष :—सूर्य को वसन्त सम्पात से चलकर पूरे क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर लगाकर पुनः वसन्त-सम्पात पर आने में जितना समय लगता है उसे सायन सौर वर्ष या ऋतु वर्ष (Tropical Year) कहते हैं। इस वर्ष में ३६५ दिन ५ घं. ४८.८ मि. होते हैं। अंग्रेजी कैलेण्डर (Gregorian Calender) का वर्ष✤सायन सौर वर्ष ही है।

सायन राशियां :—वसन्त सम्पात से लेकर पूरे क्रान्ति वृत्त को ३०-३० अंशों के बराबर बराबर, बारह भागों में विभाजित किया गया है, जिन्हें क्रमशः सायन मेष, सायन वृष आदि राशियों के नाम से पुकारा जाता है। अर्थात्—'व' (वसन्त-सम्पात) से सायन मेष प्रारम्भ होता है, इससे आगे ३० अंश पर 'क' बिन्दु पर सायन वृष और ६० अंश पर सायन मिथुन—इत्यादि। (चित्र देखें)❀ क्योंकि सायन सौर वर्ष और अंग्रेजी कैलेण्डर के वर्ष की लम्बाई एक ही है, अतः इन सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (क, ख, ग आदि) पर सूर्य के पहुँचने की तारीखें, जो चित्र में लिखी हैं, प्रतिवर्ष यही रहती हैं। अर्थात्—प्रति वर्ष सूर्य २२ मार्च को 'व' (वसन्त सम्पात) पर होता है, २१ अप्रैल को 'क' (सायन वृषारम्भ बिन्दु पर होता है, २२ मई को 'ख' (सायन मिथुनारम्भ बिन्दु) पर होता है—आदि २।卐

ऋतुएं :—भारतीय ज्योतिष में दो-दो मासों की ६ (वसन्त आदि) ऋतुएं वर्ष में मानी जाती हैं। वसन्त ऋतु तब प्रारम्भ होती है जब सूर्य सायन मीन राशि के प्रारम्भ बिन्दु 'ठ' पर होता है और वसन्त ऋतु तब समाप्त होती है जब सूर्य सायन वृष के प्रारम्भ बिन्दु 'क' पर होता है। इस प्रकार बाकी वर्षा आदि ऋतुएं भी चित्रानुसार होती हैं। अर्थात्—वसन्त ऋतु हमेशा २० फर. से २१ अप्रैल तक रहती है, २१ अप्रै. से ही ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होकर २२ जून तक रहती है—इस प्रकार शेष सभी ऋतुओं के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखें भी प्रतिवर्ष निश्चित हैं, जो चित्रों में दिखाई गई हैं।

अयन चलन :—वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात—दोनों का आकाशस्थनक्षत्रों (तारों) से कोई सम्बन्ध नहीं है। आज ये सम्पात जिन नक्षत्रों के नीचे हैं, अगले वर्ष वे नक्षत्र इनसे लगभग ५०-५० विकला आगे की ओर खिसक जाते हैं। अर्थात्—आज सायन मेषारम्भ बिन्दु (वसन्त सम्पात) में बैठा सूर्य ऊपर सुदूर आकाशस्थ जिस तारे के नीचे होता है अगले वर्ष वसन्त सम्पात में आने पर वह (सूर्य) उस तारे से लगभग ५० वि. पीछे होगा, यही बात शरत्सम्पात में बैठे सूर्य के लिए भी है। इसका कारण यह है—कि—सारा तारा मण्डल नाडीवृत्त के सापेक्ष लगभग ५० वि. आगे (पूर्व की तरफ) खिसक रहा है। स्पष्टता के लिए यों समझिए,—क्रान्तिवृत्त में या क्रान्ति वृत्त के आसपास रहने वाले तारे आज वसन्त सम्पात या शरत्सम्पात से जितनी दूरी पर हैं, वे एक वर्ष बाद उनसे उतनी दूरी पर नहीं रहेंगे। वसन्त सम्पात से पीछे (शरत्सम्पात से आगे) रहने वाले तारे १ वर्ष बाद लगभग ५० वि. वसन्त सम्पात के पास आ जाते हैं और शरत्सम्पात से इतना ही आगे चले जाते हैं। इसी प्रकार वसन्त सम्पात से आगे (पूर्व में) शरत्सम्पात से पीछे रहने वाले तारे एक वर्ष में वसन्त सम्पात से लगभग ५० वि. आगे और शरत्सम्पात के इतना ही समीप हो जाते हैं ✾(चित्र देखकर समझिए)।

✤जनवरी, फरवरी आदि मासों वाला वर्ष

❀इन राशियों को सायन क्यों कहते हैं—यह आगे स्पष्ट हो जाएगा।

卐इन अंग्रेजी तारीखों में एक तारीख का अन्तर लीप इयर के कारण कभी २ रहता है, परन्तु यह अन्तर अस्थायी होता है।

✾वास्तविकता यह है, कि—तारामण्डल नहीं, अपितु वसन्त-सम्पात और शरत्सम्पात—दोनों ही प्रतिवर्ष लगभग ५०-५० वि. की समान गति से नक्षत्रों के सापेक्ष पीछे की ओर खिसकते जा रहे हैं, जिससे सभी तारे इन सम्पातों से प्रति वर्ष ५०-५० वि. पूर्व की ओर खिसकते नजर पड़ते हैं।

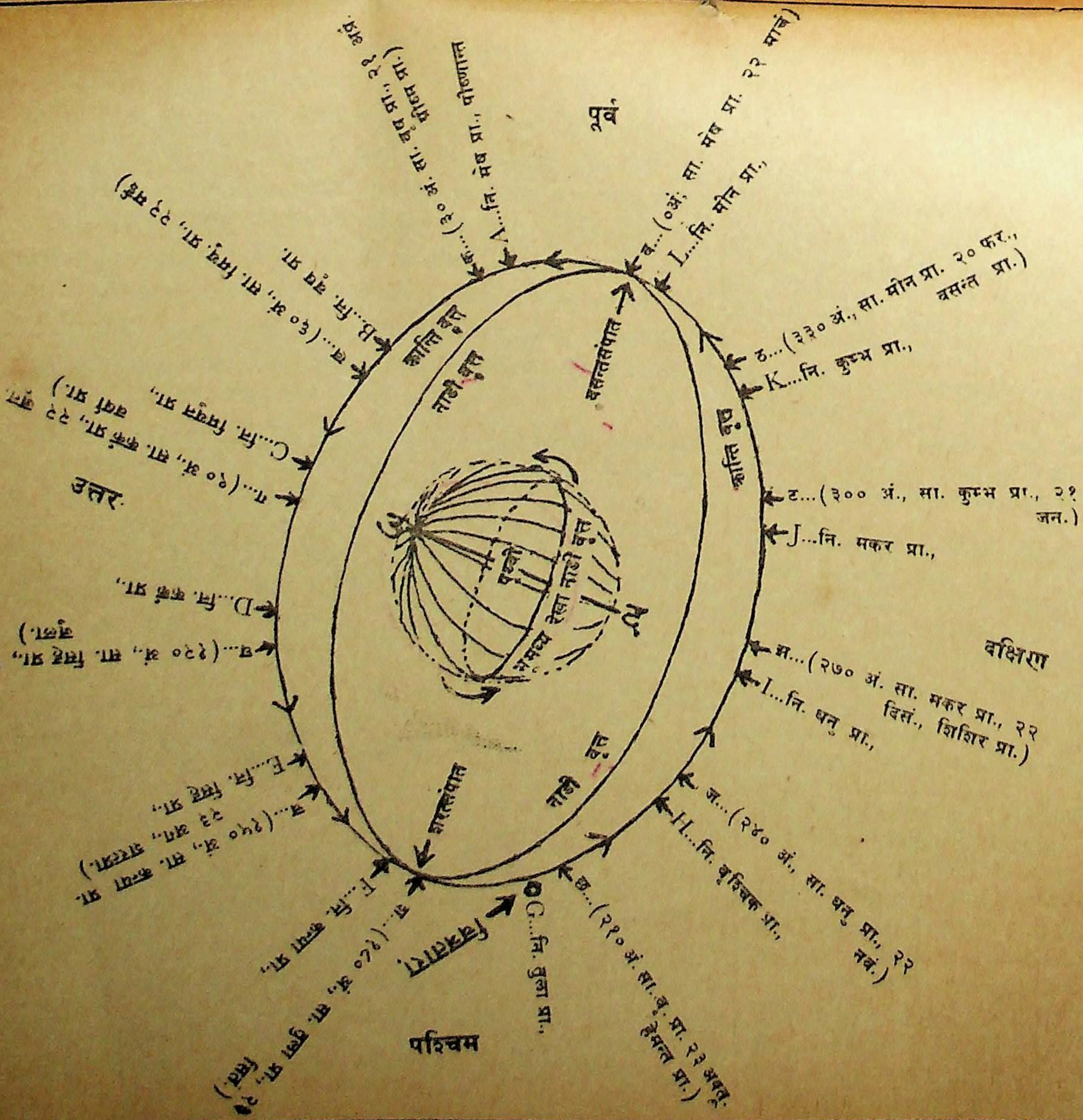

अं.---अंश
प्रा---प्रारम्भ
नि.---निरयण
सा.---सायन
द.---दक्षिणध्रुव
उ.---उत्तर ध्रुव

इस चित्र का अध्ययन करते समय इस चित्र को इस प्रकार रखें कि चित्र में अंकित 'पूर्व' शब्द पूर्व दिशा में और 'पश्चिम' शब्द पश्चिम दिशा में हो। इस प्रकार रखने पर 'दक्षिण' दक्षिण दिशा में और 'उत्तर' उत्तर दिशा में स्वतः हो जाएगें।

इस चित्र में दिखाए गए ब, क, ख, ग, घ, च, श, छ, ज, झ, ट और ठ बिन्दुओं पर जब सूर्य पहुंचता है तब क्रमशः राष्ट्रीय चैत्रादि मास (Indian Calendar Reform Committee द्वारा प्रचालित मास) प्रारम्भ होते हैं।

इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए, कि—क्रान्तिवृत्त में स्थित सभी तारे प्रति वर्ष लगभग ५० वि. की गति से पश्चिम से पूर्व की ओर धीरे २ खिसक रहे हैं। यदि आज कोई तारा वसन्त सम्पात में है तो वह ५० वि. वार्षिक गति से धीरे २ A, क, B, ख आदि बिन्दुओं (चित्र देखें) में से गुजरता हुआ लगभग २६ हजार वर्ष बाद क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर काट कर पुनः वसन्त सम्पात पर पहुँच जाएगा। अथवा यूं कहिए,—धीरे २ प्रति वर्ष ५० वि. की गति से पीछे (पश्चिम) की ओर हटते २ वसन्तसम्पात और शरत्सम्पात—दोनों २६ हजार वर्ष बाद पुनः क्रान्तिवृत्त का उल्टा पूरा चक्कर लगाकर उन्हीं तारों पर आ जाएंगे, जिन तारों पर आज वे हैं। तारों का या सम्पातों का यह वार्षिक चलन "अयन चलन" कहलाता है।✠

अयनांश :—क्रान्तिवृत्त पर एक बिन्दु (स्थान) है, जिसे पौष्णान्त बिन्दु या रेवत्यन्त बिन्दु कहते हैं। यह बिन्दु चित्रा तारे से १८० अंश पर है (चित्र देखें—चित्रा तारा शरत्संपात से आगे G बिन्दु के पास क्रान्तिवृत्त से लगभग २ अंश दक्षिण की ओर है।) भारतीय ज्योतिष में इस पौष्णान्त बिन्दु को निरयण मेष राशि का आरम्भ बिन्दु (स्थान) माना जाता है* अर्थात्—चित्रा तारा से १८० अंश पर क्रान्तिवृत्त में जब सूर्य आता है, तब भारतीय ज्यौतिषी कहते हैं, कि—सूर्य निरयण मेष के प्रारम्भ में आ गया है। यह पौष्णान्त बिन्दु आजकल वसन्त सम्पात से लगभग २३ अं. २७ क. आगे 'A' बिन्दु पर है (चित्र देखें)। अयन चलन के कारण अन्य सभी तारों के साथ साथ ज्यों २ चित्रा तारा ५० वि. प्रति वर्ष पूर्व की ओर खिसकता जाता है, त्यों २ पौष्णान्त बिन्दु भी प्रति वर्ष ५० वि. आगे खिसकता जाता है। वसन्त सम्पात से पौष्णान्त बिन्दु का अन्तर ही '**अयनांश**' कहलाता है। आजकल अयनांश (अर्थात्—वसन्त सम्पात से पौष्णान्त बिन्दु का अन्तर) २३ अं. २७ क. के लगभग है।

कुछ विद्वानों के मत में पौष्णान्त बिन्दु चित्रा तारे से लगभग १७७ अंश आगे है। पौष्णान्त बिन्दु की स्थिति के बारे में कई अन्य मत भी हैं। इन विभिन्न मतों के अनुसार अयनांश भी भिन्न २ होंगे। मैंने यहां चित्र में पौष्णान्त बिन्दु चित्रा तारे से १८० अं. की दूरी पर माना है। इसके अनुसार जो अयनांश होंगे वे "चित्रापक्षीय अयनांश" कहलाते हैं। चित्रा पक्षीय अयनांश ही भारत के ९९ प्रतिशत पंचांगों में प्रयुक्त होते हैं।

निरयण सौर वर्ष :—पौष्णान्त बिन्दु से चलकर सूर्य क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर लगाकर जितने समय में पुनः पौष्णान्त बिन्दु पर पहुँच जाता है, वह निरयण सौर वर्ष (Sidereal Year) कहलाता है। यह वर्ष ३६५ दिन ६ घं. ९.२ मि. का होता है, जो सायन सौर वर्ष से २०.४ मि. बड़ा है।❧

निरयण सौर वर्ष सायन सौर वर्ष से २०.४ मि. इसलिए बड़ा है क्योंकि—सायन सौर वर्ष में सूर्य जितना चलता है, निरयण सौर वर्ष में उसे उससे लगभग ५० वि. अधिक चलना पड़ता है। ५० वि. चलने में सूर्य को २०.४ मिनट लगते हैं।

निरयण राशियाँ :—पौष्णान्त बिन्दु निरयण मेष का प्रारम्भ बिन्दु है। वहां से आगे क्रान्ति वृत्त ३०–३० अंशों के अन्तर पर शेष निरयण वृष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु हैं। चित्र में निरयण मेष आदि के प्रारम्भ बिन्दु (A, B, C, आदि) आजकल के अयनांश के अनुसार अंकित किए गए हैं। अयन-चलन के कारण पौष्णान्त बिन्दु (A) जितना आगे खिसकता जाएगा, ये निरयण वृषादि के सभी प्रारम्भ बिन्दु (B, C, D, आदि) भी उतना उतना आगे २ खिसकते जाएंगे। जैसा कि पहिले बतला चुके हैं—आजकल अयनांश २३ अं. २७ क. के लगभग हैं। चित्र में भी निरयण मेषारम्भ बिन्दु (पौष्णान्त) को वसन्त सम्पात से २३ अं. २७ क. आगे दिखलाया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि—आजकल निरयण मेषारम्भ बिन्दु (A) सायन वृषारम्भ बिन्दु (क) से ६ अं. ३३ क. पीछे (पहिले) है,—इसी प्रकार शेष सभी निरयण वृष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (B.C. आदि क्रमशः सायन मिथुन आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (ख, ग आदि) से ६ अं. ३३ क. पहिले पड़ते हैं। दूसरे शब्दों में यूं कहिए कि—आजकल निरयण मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (A, B, C आदि सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (A.B.C. आदि) सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (व, क, ख आदि) से लगभग २३ अं. २७ क. बाद (आगे) पड़ते हैं।

निरयण, सायन—अब पाठक 'सायन' और 'निरयण' शब्द समझ सकते हैं। 'सायन' का अर्थ है "जिसमें अयनांश मिले हुए हैं"। निरयण का अर्थ है—"जिसमें अयनांश मिले हुए नहीं हैं"। चित्र देखने से स्पष्ट है—सायन मेष-वृष आदि के ०, ३०, ६० आदि अंश वसन्त सम्पात से गिने गए हैं, पौष्णान्त और वसन्त सम्पात के मध्य स्थित अयनांश इनमें जुड़े हुए हैं, जब कि निरयण मेष आदि राशियों की गणना में ऐसी बात नहीं है, वहां अयनांश छोड़कर पौष्णान्त (A) बिन्दु से मेष आदि राशियों की गणना की गई है। भारत के लगभग सभी पंचांगों में निरयण राशियों का ही प्रयोग होता है।

✠कुछ प्राचीन भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों के अनुसार वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात दोनों ज्यादा से ज्यादा २७ अंश पूर्व की ओर और २७ अं. पश्चिम की ओर खिसकते हैं, अर्थात् २७ अंश पूर्व की ओर ५० वि. वार्षिक गति से चलकर ये दोनों सम्पात पुनः अपने प्रारम्भ (मूल) स्थान पर आकर फिर २७ अं. पीछे (पश्चिम) की ओर जाते हैं : और वहां से फिर मूल स्थान पर पहुँच कर २७ अंश पूर्व की ओर जाकर पुनः मूल-स्थान पर लौट आते हैं। दोनों सम्पात इसी प्रकार आगे पीछे चलते रहते हैं। इस सिद्धान्त को अयन दोलन सिद्धान्त कहते हैं। आधुनिक उच्च भौतिक शास्त्रीय अनुसन्धानों में इस सिद्धान्त का खण्डन कर दिया है। हमने अपने "शास्त्र शुद्ध पंचांग निर्णय" में इस सिद्धान्त का गणितनिर्देशपूर्वक खण्डन किया है।

*निरयण सायन शब्दों का स्पष्टीकरण आगे किया गया है।

❧सूर्यसिद्धान्त में निरयण सौर वर्ष की लम्बाई ३६५ दि. ६ घं. १२.६ मि. दी गई है, जो शुद्ध लम्बाई से ३.४ मि. ज्यादा है।

सायन और निरयण स्पष्ट-ग्रहः—इस पंचांग में दिए गए स्पष्ट ग्रह अन्य भारतीय पंचांगों के ग्रहों की भान्ति निरयण हैं। उदाहरण के रूप में—यदि भारतीय पंचांग में किसी समय निरयण स्पष्ट सूर्य ३ रा. १० अं. १४ क. १५ वि. लिखा हो, तो समझना चाहिए, कि उस समय सूर्य क्रान्ति वृत्त में पौष्णान्त बिन्दु से ३ रा. १० अं. (९०+१० =१०० अं.) और १४ क. १५ वि. आगे है। यदि हम उस समय सूर्य के सायन राशि आदि (वसन्त सम्पात से दूरी) जानना चाहते हैं तो हमें ३ रा. १० अं. १४ क. १५ वि. में अयनांश (वसन्त सम्पात) और पौष्णान्त बिन्दु के बीच का अन्तर) जोड़ना होगा। इसी प्रकार सायन स्पष्ट ग्रह को निरयण स्पष्ट बनाने के लिए अयनांश उसमें से घटाने होंगे —यह स्पष्ट ही है।+

निरयण संक्रान्तियों की तारीखें आगे २ क्यों होती जा रही हैं ?—पौष्णान्त बिन्दु (निरयण मेषारम्भ बिन्दु) अयन, चलन के कारण उत्तरोत्तर ५० वि. प्रति वर्ष आगे २ खिसकता जा रहा है, अतः सभी वृष आदि निरयण राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी उत्तरोत्तर आगे २ प्रतिवर्ष ५० वि. की ही गति से खिसकते जा रहे हैं। आज से लगभग ५०० वर्ष बाद निरयण मेषारम्भ बिन्दु सायन वृषारम्भ बिन्दु (क) पर होगा, निरयण वृषारम्भ बिन्दु सायन मिथुनारंभ बिन्दु 'ख' पर होगा—आदि २। उस समय (५०० वर्ष बाद) सायन मेष आदि राशियां निरयण मेष आदि राशियों से पूरी एक-एक राशि पीछे होंगी। उस समय २१ अप्रै. को जब सूर्य सायन वृष में प्रविष्ट होगा (अर्थात्—सायन वृष संक्रान्ति होगी) तब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रविष्ट माना जाएगा अर्थात्—निरयण मेष संक्रान्ति होगी), इसी प्रकार उस समय २२ मई को जब सूर्य सायन मिथुन में प्रविष्ट होगा, तब सूर्य निरयण वृष राशि में प्रविष्ट माना जाएगा (अर्थात्—निरयण वृष संक्रान्ति होगी)...आदि २। इस प्रकार निरयण मेष वृष आदि संक्रान्तियां, जो आजकल क्रमशः १३ अप्रै. १४ मई आदि को होती हैं, लगभग ५०० वर्ष बाद क्रमशः २१ अप्रै. २२ मई आदि को होंगी। इसी भान्ति सभी निरयण संक्रान्तियों की तारीखें उत्तरोत्तर आगे २ बढ़ती जा रही हैं। गणित से स्पष्ट है—प्रत्येक निरयण संक्रान्ति मध्यम मान से प्रति ७१ वर्षों में १–१ तारीख आगे २ होती जा रही है,* अर्थात् लगभग सवा दो हजार वर्षों में निरयण संक्रान्तियां १–१ अंग्रेजी महीना आगे २ होती जाती हैं, और लगभग ४॥ हजार वर्षों में २ मास या १ ऋतु आगे खिसकती जा रही हैं। इस भान्ति लगभग २६ हजार वर्षों में प्रत्येक निरयण संक्रान्ति प्रत्येक ऋतु में से गुजर जाएगी।

निरयण मेष संक्रांतियों की तारीखों में इस अन्तर का परिणाम :—निरयण संक्रान्तियों के अनुसार ही सौर मास और चान्द्र मासों के नामों का निर्णय होता है। निरयण मेष संक्रान्ति से सौर वैशाख प्रारम्भ होता है, निरयण वृष संक्रान्ति से सौर ज्येष्ठ प्रारम्भ होता है—आदि २। किंच जिस शुक्लादि चान्द्र मास में निरयण मेष संक्रान्ति होती है, वह शुक्लादि चैत्र मास होता है, जिस शुक्लादि चान्द्र मास में निरयण वृष संक्रान्ति होती है, वह शुक्लादि वैशाख मास होता है—आदि २। हम पहिले बतला चुके हैं—कोई भी निरयण संक्रान्ति अयन चलन के कारण कालक्रम से किसी भी ऋतु में हो सकती है। इससे यह सिद्ध होता है। कि—सौर और चान्द्र चैत्र आदि मासों की वे ऋतुएं, जो आजकल उपलब्ध होती हैं, कालान्तर में नहीं रहेंगी। अयनांश की वृद्धि के कारण प्रत्येक सौर एवं चान्द्र मास भविष्य में एक-एक करके प्रत्येक ऋतु में अनिवार्य रूप से पड़ेगा, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे शरत्पूर्णिमा, शारद-नवरात्र, वसन्त-पंचमी आदि पर्व भी, जो साक्षात् ऋतुओं से ही सम्बद्ध हैं, अपनी २ ऋतुओं में नहीं पड़ेंगे। इस समस्या के समाधान का एक मात्र उपाय सायन गणित ही है।

विगत वर्षों की वैशाखी (निरयण मेष संक्रान्ति) की तारीखें:—लगभग ५वीं शताब्दी में ('सूर्य सिद्धान्त' के निर्माण के समय) जब कि—पौष्णान्त बिन्दु वसन्त सम्पात पर ही था, निरयण संक्रान्ति भी २२ मार्च (New Style date) को ही हुआ करती थी। धीरे २ अयन चलन के कारण प्रति ७१ वर्षों में १-१ दिन आगे बढ़ती हुई यह वैशाखी आज १३-१४ अप्रैल को हो रही है। इस २०वीं शताब्दी में सूर्यसिद्धान्त' की गणित तथा भारतीय पद्धति के अनुसार सन् १९००, १९०१, १९०४, १९०५, १९०८, १९०९, १९१२, १९१६, १९२०, १९२४, १९२८, १९३२, १९३६, तथा १९४० में वैशाखी १२ अप्रै. को होती रही है। ध्यान रहे—भारतीय पद्धति के अनुसार वार सूर्योदय से बदलता है, अंग्रेजी पद्धति के समान अर्धरात्रि से नहीं। अतः यदि संक्रान्ति रात्रि के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले हुई तो भारतीय पंचांगकार उसे पिछले वार और पिछली अंग्रेजी तारीख को ही लिखते हैं।

आगामी १३० वर्षों की निरयण मेष संक्रान्तियां :—आगामी १३० वर्षों (ई. सन् १९७२ से २१०१ तक) की निरयण मेष संक्रान्तियों की तारीखें वार और काल (भा.स्टे.टा.) को मैंने स्वयं दृश्य गणितानुसार निकाल कर यहां कोष्ठक में दिया है। संक्रांति काल में कहीं २ कुछेक मिनटों की स्थूलता सम्भव है। इस कोष्ठक को देखने से स्पष्ट है, कि—कुछ वर्षों तक लीप-इयर और लीप-इयर के आगे आने वाले दो वर्षों में मेष संक्रान्ति १३ अप्रै. को और लीप इयर से पूर्ववर्ती वर्ष में १४ अप्रै. को होगी। संक्रान्ति की तारीख के परिवर्तन के समय यह नियम सर्वत्र लागू होता है।

अब आगे ई. सन् २१०० में सर्व प्रथम १५ अप्रै. को मेष संक्रान्ति भारतीय पंचांगों में लिखी जाएगी :

+ लगभग सभी भारतीय पंचांगों में निरयण स्पष्ट ग्रह ही होते हैं, अतः इन पंचांगों में अक्सर 'निरयण' शब्द का प्रयोग नहीं करते, 'निरयण स्पष्ट ग्रहों' को केवल 'स्पष्ट ग्रह' ही लिख देते हैं। यही बात संक्रान्तियों के लिए भी है, 'निरयण मेष संक्रान्ति, 'निरयण वृष संक्रान्ति'—आदि न लिख कर केवल 'मेष संक्रान्ति' आदि ही लिख दिया जाता है।

*निरयण सौर वर्ष सायन सौर वर्ष (अंग्रेजी कैलेण्डर के वर्ष) से २०.४ मि. बड़ा है। अतः ७१ निरयण सौर वर्षों में १ दिन (७१×२०.४१=१४४८.४ मिनट= लगभग १ दिन) बढ़ जाता है। अर्थात् अंग्रेजी कैलेण्डर के ७१ वर्षों में जितने दिन होते हैं, ७१ निरयण सौर वर्षों में उससे १ दिन अधिक होता है।

ई. सन् १९७२ से सन् २१०१ तक की निरयण मेष संक्रान्तियों की तारीख, वार और काल भा.स्टॅ.टा.

इस कोष्ठक में दी गई संक्रान्ति की तारीखें और वार अंग्रेजी पद्धति के अनुसार है। यदि संक्रान्ति काल रात्रि के १२ बजे के बाद और स्थानीय सूर्योदय से पहिले हो तो उसे भारतीय पद्धति के अनुसार पिछले वार और तारीख में समझना चाहिए।

मेषसंक्रान्ति का वारेश ही वर्ष का मन्त्री होता है, अतः इस कोष्ठक से आगामी १३० वर्षों के मन्त्री भी ज्ञात होते हैं। ईस्वी सन् में ५७ जोडने से वि. संवत् बन जाता है।

निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.			
ई. सन्	ता	वार	घ. मि.	ई. सन्	ता	वार	घ. मि.	ई. सन्	ता.	वार	घ. मि	ई सन	ता.	वार	घ. मि.
१९७२	१३	गु.	१३। १	२००५	१४	गु.	०। ५	२०३८	१४	बु.	११।११	२०७१	१४	म.	२२।१७
१९७३	१३	शु.	१९।१०	२००६	१४	शु.	६।१५	२०३९	१४	गु.	१७।२०	२०७२	१४	गु.	४।२६
१९७४	१४	र.	१।१९	२००७	१४	श.	१२।२४	२०४०	१३	शु.	२३।२९	२०७३	१४	शु.	१०।३५
१९७५	१४	च.	७।२८	२००८	१३	र.	१८।३३	२०४१	१४	र.	५।३९	२०७४	१४	श.	१६।४५
१९७६	१३	म.	१३।३८	२००९	१४	मं.	०।४२	२०४२	१४	च.	११।४८	२०७५	१४	र.	२२।५४
१९७७	१३	बु	१९।४७	२०१०	१४	बु.	६।५१	२०४३	१४	मं.	१७।५७	२०७६	१४	म.	५। ३
१९७८	१४	गु.	१।५६	२०११	१४	गु.	१३। २	२०४४	१४	गु.	०। ६	२०७७	१४	बु.	११।१२
१९७९	१४	श.	८। ५	२०१२	१३	शु.	१९।११	२०४५	१४	शु.	६।१५	२०७८	१४	गु.	१७।२१
१९८०	१३	र.	१४।१४	२०१३	१४	र.	१।२०	२०४६	१४	श.	१२।२५	२०७९	१४	शु.	२३।३१
१९८१	१३	च.	२०।२५	२०१४	१४	च.	७।२९	२०४७	१४	र.	१८।३४	२०८०	१४	र.	५।४०
१९८२	१४	बु.	२।३४	२०१५	१४	म.	१३।३८	२०४८	१४	म	०।४३	२०८१	१४	च.	११।४९
१९८३	१४	गु.	८।४३	२०१६	१३	बु.	१९।४८	२०४९	१४	बु.	६।५२	२०८२	१४	म.	१७।५८
१९८४	१३	शु.	१४।५२	२०१७	१४	शु.	१।५७	२०५०	१४	गु.	१३। १	२०८३	१५	गु.	०। ८
१९८५	१३	श.	२१। १	२०१८	१४	श.	८। ६	२०५१	१४	शु	१९।११	२०८४	१४	शु.	६।१७
१९८६	१४	च.	३।११	२०१९	१४	र	१४।१५	२०५२	१४	र	१।२१	२०८५	१४	श.	१२।२६
१९८७	१४	म.	९।२०	२०२०	१३	च.	२०।२४	२०५३	१४	च	७।३०	२०८६	१४	र.	१८।३६
१९८८	१३	बु.	१५।२९	२०२१	१४	बु.	२।३४	२०५४	१४	म.	१३।३९	२०८७	१५	म.	०। ४
१९८९	१३	गु.	२१।३८	२०२२	१४	गु.	८।४३	२०५५	१४	बु.	१९।४८	२०८८	१४	बु.	६।५४
१९९०	१४	श.	३।४७	२०२३	१४	शु.	१४।५२	२०५६	१४	शु.	१।५८	२०८९	१४	गु.	१३। ३
१९९१	१४	र.	९।५७	२०२४	१३	श.	२१। १	२०५७	१४	श.	८। ७	२०९०	१४	शु.	१९।१२
१९९२	१३	चं.	१६। ६	२०२५	१४	चं.	३।१०	२०५८	१४	र.	१४।१६	२०९१	१५	र.	१।२२
१९९३	१३	मं.	२२।१५	२०२६	१४	मं.	९।२०	२०५९	१४	चं.	२०।२५	२०९२	१४	च.	७।३२
१९९४	१४	गु.	४।२४	२०२७	१४	बु.	१५।२९	२०६०	१४	बु.	२।३४	२०९३	१४	मं.	१३।४१
१९९५	१४	शु.	१०।३३	२०२८	१३	गु.	२१।३८	२०६१	१४	गु	८।४४	२०९४	१४	बु.	१९।५०
१९९६	१३	श.	१६।४३	२०२९	१४	श.	३।४७	२०६२	१४	शु.	१४।५३	२०९५	१५	शु.	१।५९
१९९७	१३	र.	२२।५२	२०३०	१४	र.	९।५६	२०६३	१४	श.	२१। २	२०९६	१४	श.	८। ९
१९९८	१४	म.	५। १	२०३१	१४	च.	१६। ७	२०६४	१४	चं.	३।११	२०९७	१४	र.	१४।१८
१९९९	१४	ब.	११।१०	२०३२	१३	मं.	२२।१६	२०६५	१४	म	९।२०	२०९८	१४	चं.	२०।२७
२०००	१३	गु.	१७।१९	२०३३	१४	गु.	४।२५	२०६६	१४	बु	१५।३०	२०९९	१५	बु.	२।३६
२००१	१३	शु	२३।२९	२०३४	१४	शु.	१०।३४	२०६७	१४	गु	२१।३९	२१००	१५	गु.	८।४५
२००२	१४	र.	५।३८	२०३५	१४	श.	१६।४३	२०६८	१४	श	३।४८	२१०१	१५	शु.	१४।५५
२००३	१४	च	११।४७	२०३६	१३	र.	२२।५३	२०६९	१४	र	९।५७				
२००४	१३	म.	१३।५६	२०३७	१४	म.	५। २	२०७०	१४	च	१६। ६				

आचार्य विकाशचन्द्र सूरिजी द्वारा प्राप्त जैनपर्व-निर्णय

वीर सं. २४९७-९८, आत्म सं. ७५-७६, शाके १८९३, विक्रम संवत् २०२८

सन् १९७०-७१	तिथि	तारीख
श्री वृद्धिविजय (बुटेराय) जी म० स्वर्ग दिन और श्री विजयानदसूरि, आत्मारामजी म. का जन्मदिन	चैत्र सुद १ शनि	२७- ३-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र सुद ७ शुक्र	२- ४-७१
,, महावीर स्वामी जन्मदिन (जयंति)	चैत्र सुद १३ गुरु.	८- ४-७१
आंबिल ओली पूर्ण चैत्र पूर्णिमा-सि. का मेला	चैत्र सुद १५ शनि.	१०-४-७१
,, ऋषभदेव वर्षीतप पारणा.	वैशाख सुद ३ मगल	२७-४-७१
,, विजयानदसूरि (आत्माराम जी) म. स्वर्ग दिन	ज्येष्ठ सुद ८ मगल.	१- ६-७१
,, चौमासी अट्ठाई प्रारभ	आषाढ़ सुद ७ बुध.	३०- ६-७१
,, ,, चौमासी चोदस.	आषाढ़ सुद १४ बुध.	७- ७-७१
,, चौमासी अट्ठाई सम्पूर्ण.	आषाढ़ सुद १५ गुरु.	८- ७-७१
,, नेमनाथ भगवान का जन्म दिवस.	श्रावण सुद ५ मगल.	२७-७-७१
,, पर्युषणपर्व अट्ठाई प्रारंभ	भाद्रपद वद १३ बुध.	१८- ८-७१
,, कल्पसूत्र गृहस्थापना रात्रि जागरण	भाद्रपद वद ३० शुक्र.	२०- ८-७१
,, कल्पसूत्र वाचना प्रारभ	भाद्रपद सुद १ शनि.	२१-८-७१
,, महावीर जन्म वाचना	भाद्रपद सुद १ रवि.	२२- ८-७१
,, संवत्सरी पर्व.	भाद्रपद सुद ४ बुध.	२५- ८-७१
,, जगद्गुरु विजयहरीसूरि स्वर्गदिन	भाद्रपद सुद ११ बुध.	१- ९-७१
,, युगवीर आ. श्री. विजयवल्लभ सूरि स्वर्ग दिन	आसो. वद ११ बुध.	१५- ९-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	आसो. सुद ६ रवि.	२६- ९-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली सम्पूर्ण.	आसो. सुद १५ सोम.	४-१०-७१
,, महावीर प्रभु निर्वाण दीपावली पर्व.	कार्तिक वद १५ मगल	१९-१०-७१
,, गोतम स्वामी केवल ज्ञान वीर सं. २४९८	कार्तिक सुद १ बुध.	२०-१०-७१
,, भाई दूज श्री विजय वल्लभ सूरि जन्म दिवस.	कार्तिक सुद २ गुरु.	२१-१०-७१
,, ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	कार्तिक सुद ५ रवि.	२४-१०-७१
,, चौमासी अट्ठाई प्रारंभ	कार्तिक सुद ६ सोम.	२५-१०-७१
,, चौमासी चोदस.	कार्तिक सुद १४ सोम.	१-११-७१
,, चौमासी अट्ठाई पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा	कार्तिक सुद १५ मंगल	२-११-७१
,, हस्तिनापुर शौरीपुर का मेला	,, ,,	,,
,, मौन एकादशी १५ (कल्याणक दिन)	मगसर सुद ११ रवि.	२८-११-७१
,, पोष दशमी श्री पार्श्वनाथ जन्म दिन.	पोष वद १० रवि.	१२-१२-७१
,, मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन.	माघ वद १३ शुक्र.	१४- १-७२
,, चौमासी अट्ठाई आरंभ.	फागुण सुद ७ सोम.	२१- २-७२
,, चौमासी अट्ठाई पूर्ण कांगडा तीर्थ मेल	फागुण सुद १५ मंगल.	२९- २-७२
ऋषभदेव जन्मदिन वर्षीतप की शुरुआत	चैत्र वदी ८ बुध.	८- ३-७२

हमारे अत्यन्त उपयोगी आयुर्वेद के प्रकाशन

अष्टांग हृदय : लालचन्द्र वैद्य कृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित। सम्पूर्ण। बड़े ८४० पृष्ठ, पक्की कपड़े की जिल्द। मूल्य सिर्फ १५ रु०

आयुर्वेद चिकित्सा मार्ग दर्शिका (आयुर्वेदिक गाइड) : आयुर्वेद की अनेक पुस्तकों के रचयिता अत्रिदेव विद्यालंकार। यह रचना शुद्ध आयुर्वेद-प्रणाली से चिकित्सा करने वाले प्रत्येक वैद्य के लिए मार्ग-प्रदर्शक है। वैद्यों को सदैव पास रखने वाली पुस्तिका का मूल्य सिर्फ ५ रु०

चरक संहिता : श्री जयदेव विद्यालंकार कृत। बड़े आकार में १२३३ पृष्ठ। दो जिल्दों में, अत्यन्त प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद सहित मूल्य ३० रु०। इसकी उपयोगिता इसी से प्रमाणित हो जाती है कि थोड़े समय में ही इसके सात संस्करण हो गए हैं।

चिकित्सा तत्त्व दीपिका : पं. महावीर प्रसाद पाण्डेय। इसके चिकित्सा विषयक ज्ञान, रोगों के सम्प्राप्ति लक्षण, साध्यासाध्यता, उपक्रम तथा प्रयोग उपयोगी और सारगर्भित आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों से लेकर सरल भाषा में दिए गए हैं। मूल्य दो भागों का १८.५० रु०

द्रव्य गुण विज्ञान (पूर्वार्द्ध) सुप्रसिद्ध आचार्य यादव जी कृत सरल हिन्दी में आयुर्वेद के छात्रों की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पृष्ठ सं. १८० मूल्य ४.००

नाड़ी दर्शन : श्री ताराशंकर मिश्र वैद्य। पृ. सं. १७२। इसमें सरल हिन्दी में चरक, सुश्रुत तथा आधुनिक विज्ञान पर आधारित नाड़ी संबंधित सभी विषयों पर संपूर्ण प्रकाश डाला गया है। नया परिवर्द्धित संस्करण मूल्य ३.५०

भाव प्रकाश : (सम्पूर्ण) : सर्वांग सुन्दरी भाषा टीका सहित। टीकाकार पं. लालचन्द्र जी वैद्य। बड़े आकार के १००० पृष्ठ। दो जिल्दों में मूल्य २५ रु०। हिन्दी अनुवाद द्वारा इस विशाल ग्रंथको पढ़कर साधारण जन भी हर प्रकार के रोगों का इलाज कर सकता है।

भाव प्रकाश (निघंटु) : (हरीतक्यादि)। पं. विश्वनाथ द्विवेदी कृत ललितार्थकरी टीका सहित। पृ. सं. ७००। प्रस्तुत ग्रन्थ भावप्रकाश में से वनस्पति-शास्त्र व तत्समवर्गों को लेकर सरल और सुबोध हिन्दी में सर्व-साधारण के लाभार्थ तैयार किया गया है। अपनी उपयोगिता के कारण ही कुछ ही समय में इसके सात संस्करण हो गए हैं। मूल्य ९ रु०

भैषज्य रत्नावली : मू. ले. गोविन्द दास : नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा परिवर्धित तथा संशोधित अनु. जयदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८४० पृष्ठ। परिवर्धित तथा संशोधित सातवां संस्करण। मूल्य १२.०० रु०

मेघ विनोद : मेघ मुनि प्रणीत : सौदामिनी भाषाभाष्य। भाष्यकर्ता श्री नरेन्द्रनाथ शास्त्री। ६५० पृष्ठ, तृतीय सं.। हर प्रकार की बीमारी के ऊपर अनुभव से आजमाए बढ़िया तथा सस्ते नुस्खे जो सभी जगह आसानी से उपलब्ध हैं, दिये गये हैं। मूल्य ६ रु०

रस तरंगिणी : मूल ले. पं. सदानन्द। पं. हरिदत्त शास्त्री कृत संस्कृत टीका तथा पं. धर्मानन्द जी द्वारा हिन्दी अनुवाद। इसमें स्वर्ण, ताम्र, वंग, लौह, सीसा, पारद, गंधकादि का व्यापक तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। अपनी विशेषता के कारण सात संस्करण हाथोंहाथ निकल गए। मूल्य १२.००

रसरत्न समुच्चय : श्री धर्मानन्द जी द्वारा विस्तृत हिन्दी टीका तथा अत्रिदेव विद्यालंकार द्वारा संशोधित। बड़े आकार के ५६६ पृष्ठ। भारतीय रस शास्त्र-संबंधी अनुपम ग्रंथ। मूल्य १० रु०

रसामृत : श्री यादव जी त्रिकम जी। रस शास्त्र के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए सरल से सरल तरीके से लिखा गया एक मार्गदर्शक ग्रंथ। मूल्य ५.०० रु०

राजयक्ष्मा : सी. द्वारकानाथ : आयुर्वेदीय सम्बोधपरक प्रबंध मूल्य १.००

वैद्यावतंस : लोम्बिराज प्रणीत : पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका १.५०

सुश्रुत संहिता : सम्पूर्ण : अनु० अत्रिदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८२० पृष्ठ : प्रस्तुत पुस्तक आयुर्वेद का अत्यन्त प्राचीनतम शल्य चिकित्सा परक ग्रन्थ है जिसमें आठों अंगोंका विवरण शल्य कर्म को प्रधानता देकर किया गया है प्रथम मूल देकर उसका सरल एवं प्रांजल हिन्दी भाषा में अनुवाद दिया गया है। मूल्य १८ रु०

सुश्रुत संहिता : शारीर स्थान : डा. जे. डी. शर्मा। आयुर्वेदिक शारीरशास्त्र पर उठाई गई शंकाओं का वैज्ञानिक समाधान। मूल्य ५.००

अपक्व भोजन

तेहरान (इरान) के एक मुसलमान सज्जन इस पुस्तक के मूल लेखक अंग्रेजी में हैं। उन्होंने सारी उमर मांस आदि खाया और उनकी हालत ऐसी हो गई कि दुनियां की सभी प्रसिद्ध बीमारियां उन्हें थीं और उनसे थोड़ी दूर भी चलना कठिन हो गया। लाचारी खोजते २ उन्होंने कच्ची सब्जी भाजी का इस्तेमाल किया और उनकी सब बीमारियां दूर हो गईं, वह पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लग गये, फिर उन्होंने पूरी खोज और छान-बीन के बाद यह पुस्तक लिखी और डाक्टरों को चैलेंज भी किया। ऐसी उपयोगी पुस्तक का हम सरल हिन्दी अनुवाद जनता के उपकार के लिये छाप रहे हैं। प्रतीक्षा करें शीघ्र ही तैयार हो जायेगी।

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड जवाहर नगर, दिल्ली-७

अत्यन्त उपयोगी एलोपैथिक तथा यूनानी के प्रकाशन

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान : एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक : ४९० पृष्ठ डा. आशानन्द पञ्चरत्न (प्रथम भाग) : इसमें एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा संबंधी विषयों का तुलनात्मक रूप से रोगों का निदान एवं सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा भी साथ-साथ दी गई है। एतावत आविष्कृत एन्टी बायटिक्स औषधियों और इंजेक्शनों का भी समावेश है। मू. १०.००

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र : (A Text Book of Modern Medicine) : श्री धर्मदत्त वैद्य : १५०० पृष्ठ : एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा का ज्ञान कराने के लिए आधुनिकतम आविष्कारों के साथ हर रोगों के कारण, लक्षण, चिकित्सा विस्तार के साथ दिये गये हैं। मूल्य ३६.०० रु०

कफ परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : विकृति विज्ञान का ज्ञान कराने वाला हिन्दी में प्रथम ग्रंथ। १३ चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। श्लेष्मा की भौतिक, रासायनिक और अणुवीक्षणीय परीक्षा पद्धति का विस्तृत वर्णन है। मूल्य १.२५ रु०

क्लीनिकल मेडिसिन : श्री अत्रिदेव गुप्त : दो भाग। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक शैवल की 'क्लीनिकल मेडिसिन', मजूमदार की 'बेड साइड मेडिसन,' और चेम्बरलेन की 'क्लिनिक' आदि प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर आयुर्वेदीय संहिताओं के तुलनात्मक बहुमूल्य उद्धरणों के साथ भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया सर्वोत्तम ग्रंथ। द्वितीय संस्करण मूल्य २५.०० रु०

नव्य-जन-स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य विज्ञान : डा. मुकुन्द स्वरूप वर्मा : पृ. सं. ४३२ : प्रस्तुत पुस्तक में जन-स्वास्थ्य-संबंधी सभी प्रश्नों पर विचार किया गया है और स्वास्थ्य के प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य ८ रु०

मलेरिया : मनमोहन धूप : मलेरिया रोग के कारण, भेद और विकास के वर्णन के साथ-साथ अचूक चिकित्सा भी बतलाई गई है। मलेरिया चिकित्सा में नवीनतम औषधियों का उपयोग तथा उनके गण दोष का भी उल्लेख किया गया है। मूल्य २.२५

मानव शरीर रचना : डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा। ग्रे के एनाटमी आदि ग्रन्थों के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण पर लिखी गई आयुर्वेदिक तथा मेडिकल कालेजों के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ। अनेक चित्रों सहित पहला भाग मूल्य २८ रु०

पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटीरिया मेडिका) प्रथम खण्ड ले. डा. आर. एस. सिंह तथा डा. बी. एन. सिंह

विषयानुक्रमणिका

पूर्वार्द्ध : १ सामान्य द्रव्यगुणविज्ञानीय २ सामान्य द्रव्य विज्ञानीय ३ मान परिभाषा ४ औषध शक्ति मानकीकरण ५ फार्माकोपियल एवं नान फार्माकोपियल योग ६ द्रव्य-गुण कर्मविधि ७ भेषजप्रयोग विधि ८ योगौषधविज्ञानीय ९ भेषज कल्पना एवं औषध भोजनविज्ञानीय।

उत्तरार्द्ध : १ क्षार तथा क्षारीय मृदा एवं अम्लविज्ञानीय-क्षार तथा क्षारीय मृदा २ अम्ल.। जल एवं इलेक्ट्रोलाइट संतुलन ३ धातुविज्ञानीय ४ उपधातुविज्ञानीय ५ तंत्रिकातंत्र पर कार्य करने वाली औषधियां—केन्द्रीय तंत्रिकायंत्र पर उत्तेजक क्रिया करने वाली औषधियां—प्रमस्तिष्क—उत्तेजक (सेरिब्रल स्टिमुलेंट्स) औषधियां—मानसिक क्रियोत्तेजक या मानसिक—चेष्टोत्तेजक- मेडुला उत्तेजक—सुषम्नोत्तेजक औषधियां—उल्लासकद्रव्य—सार्वदैहिक संज्ञाहर औषधियां—अनुत्पन् सार्वदैहिकण्संज्ञाहर औषधियां—अन्तः शिरामार्ग द्वारा प्रयुक्तसंज्ञाहर द्रव्य—वेदनाहर एवं ज्वरहर औषधियां—निद्रायक एवं शामक औषधियां—मनः प्रशान्तक औषधियां—आक्षेपरहर एवं अपस्मारोघी औषधियां—पेशियों पर कार्य करने वाली औषधियां।

पृष्ठ संख्या ७६२+९४+१६ बृहत्काय ग्रन्थ का मूल्य रु. ३०.००

पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान : (दूसरा भाग) : डा. राम सुशील सिंह। बड़े आकार के १०२८ पृष्ठ। इसमें अधिक से अधिक एलोपैथिक, आयुर्वेदिक तथा यूनानी द्रव्यों का विस्तृत, सचित्र, तुलनात्मक एवं सभी दृष्टि से ऐसा सर्वांगीण हृदयग्राही एवं उद्बोधक विवरण दिया गया है जो अंग्रेजी व किसी अन्य भाषा में किसी एक ही मेटीरिया मेडिका में उपलब्ध नहींहै। मूल्य ३०.०० रु०

यूनानी चिकित्सा विधि : (यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया) हकीम मनसाराम शुक्ल : हकीम अजमल खां, उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों का संग्रह। साथ ही साथ इसमें प्रत्येक रोगों का खुलासा तथा पथ्य भी दिया गया है। मूल्य ५.००

यूनानी चिकित्सा सागर : हकीम मनसाराम शुक्ल : प्रस्तुत पुस्तक में संसार प्रसिद्ध हकीम अजमल खां तथा अन्य प्रसिद्ध हकीमों के सभी गुप्त नुस्खों का संग्रह। मूल्य १० रु०

वर्मा एलोपैथिक गाइड : डा. रामनाथ वर्मा : पृ. सं. ७४०। एलोपैथिक प्रणाली से शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों, उनके कार्य, रचना, रक्त संचार, नाड़ी परीक्षा, पाखाना, मूत्रादि परीक्षा, विटामिन्स, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न मार्ग, इंजेक्शन, मुख्य-मुख्य रोग और अनुभूत नुस्खे, नवीनतम औषधियों तथा चिकित्सा संबंधी आविष्कार, औषधियों के गुण दोष, प्रयोग, उपचार आदि दिए गए हैं। इसकी लोक-प्रियता इसी से साबित होती है कि इसके अब यह आठवा संस्करण तैयार हो गया है। मूल्य १४.००

वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर : डा. रामनाथ वर्मा : पृ, सं. ७००। इस पुस्तक में डाकटरी चिकित्सा में नित्य प्रयोग में आने वाले आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के समग्र नुस्खों, योगों, पेटेन्ट, साधारण औषधियों तथा इन्जेक्शनों का संग्रह है। मूल्य १३.००

मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

वर्मा एलौपैथिक निघंटु (अर्थात् मेटेरिया मेडिका)

सुप्रसिद्ध लेखक डा. रामनाथ वर्मा । प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने अपने दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर पाश्चात्य औषधियों को तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां नाप तोल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी.सी, किलोग्राम, स्टोन आदि) ब्रिटिश फार्माकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप एसिटा, ऐसिड्स, ऐक्स-ट्रैक्टस, डिकोक्शन्स, लिनिमेन्टस, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स इत्यादि) एम्प्यूल्स, बाथ्स, कैप्स्यूल्स, ड्रश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखने वाली औषधियां, विस्फोटक संयोग, औषधियां की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न२ औषधियों की मात्रा, घुलनशीलता, अंगों पर प्रभाव, भांति २ के लोशन तैयार करना आदि, सभी को एक स्थान पर संकलित कर गागर में सागर भर दिया है और नवीनतम आविष्कारों तथा अनुभवों को जोड़कर इसकी उपयोगिता और बढ़ा दी गई है। इतनी उपयोगी होने के कारण ही यह इसका छठा संस्करण है। १५ रु.

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा--सुप्रसिद्ध लेखक डा. रामनाथ वर्मा

उपसर्ग--जन्यरोग--वातरोग अर्थात् नाड़ी संस्थान के रोग--मांस पेशियों के रोग--श्वासोच्छ्वास के अंगों के रोग--हृदय के रोग--रक्तवाहिनियों के रोग--मुंह, कंठ-मूल ग्रन्थि और कंठ के रोग--चूत्र पैदा करने वाली ग्रंथियों के रोग--जीभ के रोग--आमाशय के रोग--अंत्र रोग--यकृत रोग--क्लोमग्रंथि के रोग--उदरकला के रोग--रक्त रोग--प्लीहा रोग--लसीका ग्रन्थियों तथा वाहिनियों के रोग-प्रणाली विहीन ग्रंथियों के रोग--मूत्रयन्त्र के रोग--चर्मरोग--अस्थियों और संधियों के रोग--रोग जिनका संबंध परिपोषण और संवर्त्तन से है--नेत्र रोग--कर्ण रोग--मसूड़ों और दांतों के रोग--स्त्री रोग--गर्भावस्था के रोग--स्त्री रोग २--बाल रोग--विविध रोग--पुरुषों के जननेन्द्रिय के रोग। मूल्य रु. १२.००

व्याधि विज्ञान : डा. आशानन्द पञ्चरत्न : दो भागों में पृ. सं. ११००। निदान-विषयक इस अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ में पाश्चात्य एवं पौर्वात्य मतानुसार चिकित्सा, तुलनात्मक अध्ययन वैद्य बन्धुओं तथा एलोपैथिक डाक्टरों के लिए समान रूप से उपयोगी है। दो भागों का मूल्य २२ रु०

सूचीवेध विज्ञान : रमेशचन्द्र वर्मा : इसमें शरीर विज्ञान, रोग और जीवाणुओं का विस्तृत परिचय, विशोधन कार्य, इंजेक्शन लगाने की संपूर्ण विधियों और सूचीवेध से होने वाले उपद्रव तथा उनकी चिकित्सा के साथ १००० से अधिक इंजेक्शनों का भी विस्तृत वर्णन है। मूल्य ७.५० रु.

हिन्दी माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट : ए.एल. गुजराल : लेखक ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी भाषा-भाषी विद्यार्थियों को एलोपैथिक चिकित्सा के नवीनतम आविष्कारों तथा आधुनिकतम चिकित्सा प्रणाली से परिचित कराया है। मूल्य २० रु०

हृदय परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : हृदय की व्याधियों और आधुनिक प्रणाली तथा उपकरणों से उनकी परीक्षा का विस्तृत वर्णन, चित्रों सहित विषयको अच्छी तरह समझाया गया है। मूल्य २.००

ज्योतिष संबंधी अनुपम प्रकाशन

ज्योतिष कलानिधि श्री गोपेश कुमार ओझा के अद्वितीय ग्रंथ

अंकविद्या (ज्योतिष)

अंकविद्या (ज्योतिष) : क्राउन आठ पेजी, सं० २००। अंग्रेजी में अंकविद्या पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं पर हिन्दी में इनका पूर्ण अभाव है, यद्यपि इसका ज्ञान भारतवर्ष में अनादि काल से चला आ रहा है। ज्योतिष के अन्तर्गत 'अंक' से फलादेश करने की पद्धति शुद्ध भारतीय है। इसी कारण अंक विद्या के मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों को अनेक संस्कृत तथा अंग्रेजी के ग्रंथों से संग्रह कर यह पुस्तक तैयार की गई है। इसमें जन्म की अंग्रेजी तारीख से जीवन के शुभाशुभ वर्ष, दिन, घंटे आदि निकालने के जो सुगम सिद्धान्त बताए गए हैं उन्हें साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य भी समझकर लाभ उठा सकता है। अंक से प्रश्न-विचार तथा जन्मकुण्डली एवं हस्तरेखा से अंकविद्या का सामंजस्य ऐसा विषय है जो प्रत्येक ज्योतिषी और ज्योतिष-प्रेमी को जानना आवश्यक है। कम पढ़ा-लिखा भी व्यक्ति इस पुस्तक के द्वारा अंकों के जोड़ द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवनभर के शुभाशुभ तथा स्वभाव आदि बता सकता है। मूल्य सिर्फ ४ रु०

हस्त रेखा विज्ञान

हस्त रेखा विज्ञान : क्राउन आठ-पेजी, पृष्ठ सं. ५६०। हस्तरेखा शास्त्र पर, हस्त-रेखा तथा शरीर-लक्षण संबंधी संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत में मिलती सभी पुस्तकों के गंभीर अध्ययन के बाद ही यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें हस्त रेखा के सभी विषयों पर भारतीय तथा पाश्चात्य मत के आधार पर बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है। विषय को सुस्पष्ट करने के लिए अनेक चित्र तथा भाषा को सरल और रोचक रखा गया है। हाथ की बहुत-सी सूक्ष्म और जटिल रेखाओं को समझाने का बड़ा परिश्रम किया गया है। इसका सबसे महत्त्व पूर्ण खण्ड शरीर लक्षण है जिसमें कोई ऐसा अंग उपांग नहीं छोड़ा गया है जिसकी पूरी जानकारी न दी गई हो। स्थान-स्थान पर संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से प्रमाण देकर उपा-देयता और भी बढ़ा दी गई है। इस अकेले पुस्तक के अध्ययन और मनन से साधारण पाठक भी अच्छा ज्योतिषी थोड़े समय में ही हस्त रेखा का पूर्ण ज्ञाता बनकर आशातीत लाभान्वित हो सकता है। मूल्य १२ रु० मात्र।

जातकादेशमार्ग [चन्द्रिका]

यह प्राचीन ग्रन्थ कई सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में लिखा गया था। इसकी विस्तृत व्याख्या छप रही है। मूल श्लोक भी साथ दिये हैं। संज्ञा, निषेक, अरिष्ट, अरिष्टभंग, आयुर्विभाग, आयुर्योग, मरण निर्णय, योग, अष्टकवर्ग, भावविचार, चारफल, दशापहारछेद, भार्या विचार, आनुकूल्य, पुत्रचिन्ता, संतानचिन्ता, मिश्र प्रकरण।

भावार्थबोधिनी फलदीपिका

दक्षिण भारत में कई सौ वर्ष पूर्व सुविख्यात तपस्वी मंत्रेश्वर विरचित फलदीपिका मूल संस्कृतमें है। इसकी व्याख्यायें अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, मलयालम आदि भाषाओं में हो चुकी हैं। हिन्दी में प्रथम बार विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित पुस्तक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। भावार्थरत्नाकर नाम दक्षिण भारतीय फलित ग्रन्थ के ४५० योग भी व्याख्याकार ने इसी पुस्तक में दे दिये हैं। इसलिये यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक हो गई है।

पृष्ठ ६७९ मू. १५.००

त्रिफला (ज्योतिष)

फलित विषयक तीन प्राचीन ग्रन्थों (१) सुश्लोक शतक, (२) शतमंजरी राजयोग तथा (३) बेड़ाजातक हिन्दी व्याख्या सहित उपलब्ध नहीं थे। मूल ग्रन्थ भी अप्राप्य हैं। विद्वान् लेखक ने मूल संस्कृत सहित विशद हन्दी-व्याख्या में दुरूह ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन के विषय को पाठकों के हृदयंगम कराने का सफल प्रयास किया है। शीघ्र ही तैयार हो जायेगा।

सुगम ज्योतिष प्रवेशिका

प्राचीन विचार के सज्जन तो सदैव से ही ज्योतिष में विश्वास रखते चले आए हैं पर आज का नवयुवक पढ़ा-लिखा समाज भी ज्योतिष की ओर आकृष्ट हो रहा है। परन्तु यह शास्त्र संस्कृत के दुरूह ग्रंथों में निबद्ध होने के कारण जन-साधारण के लिए अप्राप्य है। अनुवादित ग्रंथों में जैसी सुगमता होनी चाहिए वैसी होती नहीं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक शास्त्रों का मंथन कर उनका सार संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इसके चार भाग हैं: १—जातक विचार, २—वर्षफल विचार, ३—प्रश्न विचार और ४—मुहूर्त विचार। अब तक हिन्दी भाषा में ऐसी कोई पुस्तक नहीं थी जिसमें इन चारों विषयों का मार्मिक ज्ञान सरल हिन्दी में कराया गया हो। इसमें प्रामाणिकता के लिए संस्कृत के श्लोक भी दे दिए गए हैं। कतिपय विषय बिलकुल नवीन दिए गए हैं और सभी विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है। वैताल शास्त्रीजी के विचार भी दिए गए हैं। लाघवार्थ सारिणी भी जो अब तक हिन्दी में दृष्टिगोचर नहीं थी दी गई है। इसकी सहायता से एक साधारण ज्योतिष का ज्ञान रखनेवाला भी एक दिन में ही ५० जन्म कुण्डलियां शुद्ध-शुद्ध तथा प्रामाणिक तैयार कर धन तथा यश दोनों साथ-साथ कमा सकता है। तृतीय संस्करण पृष्ठ सं. ३३४। मूल्य सिर्फ ६-५०

ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्व

—ले. केदारनाथ जोशी : भविष्य ज्ञान के लिए फलित ज्योतिष की अनेकविध सारणियों में स्वर-विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र की एक सर्वमान्य पद्धति है जिसमें मनुष्य के नाम के अनुसार भविष्य का ज्ञान किया गया है। इस ग्रंथ में ज्योतिष की सरलतम विधि सारणियों को दृष्टिपथ में रखते हुए उसके विभिन्न अंगों और उपांगों के विश्लेषण किए गए हैं। इसमें तीन विभाग हैं। प्रथम में स्वर साधन की पृष्ठ भूमि एवं उदाहरण स्वरूप दिए गए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों के आधार पर उसकी प्रक्रियाओं का तर्क-सम्मत विश्लेषण, परिचय, दूसरे विभाग में प्रमाण स्वरूप दिए गए उक्त सभी ३० या इससे भी अधिक व्यक्तियों के नामों के सभी स्वर उनके साधन तथा कारणकार्य संबंध को स्पष्ट किया गया है। साथ ही साथ इस संबध में शंकाओं का समाधान भी किया गया है। तृतीय भाग में भारत, नेपाल, चीन और पाकिस्तान चार राष्ट्रों तथा भारत की राजधानी दिल्ली आदि के भविष्य का फलाफल दिया गया है अंत में दो परिशिष्ट भी हैं जिनमें मानव जीवन के साथ ज्योतिष के संबंध और ज्योतिष शास्त्र की अटूट परम्परा का भी परिचय कराया गया है। मूल्य ३ रु०

शकुन विज्ञान

+—ले. पं. हीरालाल : शकुन विद्या विशारदों का यह अनुभव है कि शुभाशुभ कर्मों के विपाक से प्रति क्षण प्रत्येक मानव जो शुभाशुभ फल भोगता है उसे शकुन द्वारा पहले ही जान सकता है। पश्चात् धार्मिक अनुष्ठानों से अशुभ का प्रतिकार और शुभ का परिष्कार कर सुख सम्पत्ति से समृद्ध हो सकता है। इसलिए शकुन विद्या आज भी प्रकाश स्तम्भ बनी हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने शकुन प्रदीप, शकुन शास्त्र तथा वास्तु निर्माण के सम्बन्ध में विद्वत्तापूर्वक लिखा है। भाषा इतनी सरल है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इसे समझ सकता है। इसके पढ़ने से आने वाले शुभाशुभों का आपको पूर्व ही ज्ञान हो जाता है और आप उससे लाभान्वित हो जाते हैं। परीक्षा के समय अगर आने वाले प्रश्नों का ज्ञान परीक्षार्थियों को हो जाता है तो उनके लिए वरदान हो जाता है वैसे ही प्रस्तुत पुस्तक जीवन परीक्षा के पूर्व ही प्रश्नोत्तर सहित सर्वसाधारण के लिए एक नुपम देन है। मूल्य ४-५० रु० जिल्द वाली ५-००

श्री बी. एल. ठाकुर कृत

सचित्र ज्योतिष शिक्षा प्रथम भाग

इस पुस्तक के अध्ययन से ज्योतिषसम्बन्धी बहुत-सी महत्वपूर्ण मुख्य बातें ज्ञात हो जाती हैं जैसे किसी का जन्म सम्वत्, मास, पक्ष, दिन, समय आदि न ज्ञात हो तो केवल कुण्डलीचक्र को ही देखकर सभी बातें बताई जा सकती हैं या बिना पंचांग के तिथि, नक्षत्र, करण, वार, सूर्य, चन्द्र, स्पष्ट आदि किस प्रकार बताए जा सकते हैं समझाया गया है और अनन्त वर्षों की जंत्री देकर जंत्री बनाने की युक्ति भी बताई गई है। अंत में फलित संबंधी मुख्य-मुख्य बातें बताई गई हैं। डिमाई आठ पेजी : पृष्ठ सं० ३००। मूल्य ९रु०

सचित्र ज्योतिष शिक्षा-द्वितीय खण्ड [गणित]

बृहत्काय ग्रन्थ के ८७१ पृष्ठ तथा आठ भिन्न प्रकार के नक्शों सहित मूल्य रु. २५.०० फलित ज्योतिष में कुण्डली का फल बताने के लिये यह परमावश्यक है कि शुद्ध कुण्डली बनाई जाये। प्रस्तुत खंड में गणित द्वारा शुद्धतापूर्वक पूरी जन्म-पत्रिका बनाना बताया गया है और प्रत्येक गणित करने की सोदाहरण रीति देकर पूरी गणित क्रिया भी दी गई है। लग्न, ग्रह, संधियों को स्पष्ट करने की पूर्ण रीति दी गई है। लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिये सारणियां बना दी गई हैं। इसके सहारे बिना गुरु के कोई भी चलित कुण्डली बना सकता है।

इन सब के अतिरिक्त विंशोपका बल निकालना, दृष्टिसाधन करना और दृष्टि साधन करने की सारणी भिन्न-भिन्न प्रकार के होरा द्रेष्कोण आदि वर्ग साधन करना और उनकी कुण्डलियां बनाना, दशवर्ग पर से पारिजातक आदि संज्ञा जानना, अष्टक वर्ग साधन कर उनके भिन्न २ चक्र और कुण्डलियां बनाना, इष्ट-कष्टबल, उच्चबल, चेष्टाबल उच्चरश्मि चेष्टा, रश्मि साधन, इष्ट कष्ट दृष्टि साधन, शुभ-अशुभ अनेक प्रकार के आवश्यक चक्र साधन करना इसमें दिया गया है अर्थात् जन्मपत्रिका बनाने के लिये जिसकी आवश्यकता है ऐसा कोई विषय नहीं रह गया है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी पंचांग से ग्रह साधन करना, नक्षत्र काल निकालना तथा उससे लग्न और भाव निकालना आदि भी दिया गया है।

इसके अन्य खण्ड——फलित खंड, वर्षफल खड, गणित खंड, प्रश्न खंड, मुहूर्त खण्ड और संहिता खण्ड——प्रेस में हैं।

ज्योतिष-जगत

ले. पं. दुर्गादत्त शर्मा। यह पुस्तक सुबोध भाषा में वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है। प्रत्येक विषय को बड़े सरल तरीके से समझाया गया है जिससे साधारण व्यक्ति भी ज्योतिष का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसमें नक्षत्र, योग, करण, राशि-चक्र, स्थिति, प्राच्य एवं पाश्चात्य, नाम तथा चिह्न, नक्षत्रों द्वारा राशिचक्र का विभाजन, १२ राशि परिचय, ग्रह परिभाषा, गुण स्वभाव के आधार पर प्रकार, प्रभाव, अवस्थाएं, ग्रह परिचय द्वादशभाव, संज्ञा, विभिन्न नाम तथा उनके विचारणीय विषय, सूर्य आदि सभी ग्रहों को द्वादशभावस्थ फल, जन्म लग्न फल; १२ राशियों का पृथक्-पृथक् लग्न फल——जैसे जातक का स्वभाव एवं प्रकृति सम्भावित व्यवसाय, मित्र, पत्नी, लग्न, भाग्योन्नति, कारक वर्ष एवं मारक ग्रह, संभावित रोग, उदाहरणार्थ कुंडली, द्वादशभाव फलविचार आदि सभी विस्तार से जो भी संभावित फल हो सकते हैं पृथक्-पृथक् भाव दिए गए हैं। मूल्य २.५० रु.

ज्योतिष-रहस्य-गणित खण्ड

——लेखक गुप्त और अज्ञात। मूल्य केवल रु. ५.००

विषसूची——कुण्डली निर्माण और मुहूर्त काल साधन, सूक्ष्मनवांश एवं शुभ षड्वर्ग काल बोधक सारणी, देशकाल सुबोधिनी तालिका, विदेशकाल सुबोधिनी तालिका, मध्यम अयनांश सारणी, स्पष्ट अयनांश सारिणी, काशी की लग्न सारणी और सर्वत्र उपयोगी सारणी, सांपातिक काल कोष्ठक, षड्वर्ग बलसाधन, त्रिभागीय महादशान्तरदशाकोष्ठक, वर्ष प्रवेश सारणी, ग्रहदृष्ट्यादि विवरणचक्र, राशि-शील चक्र, जन्म चंद्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशासाधन सारणी, दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर्दशा सारणी, विंशोत्तरी दशा की प्रत्येक अन्तर-दशा में मुक्त समय कोष्ठक लग्न सारणियों का विवरण, सर्वघातचक्र, उत्तर और मध्यभारत की छः निरयण लग्न सारणियां, बंबई-नई दिल्ली की निरयण लग्न सारणी, काशी की चार सारणी, अक्षांश २ से ५५ की चरसारणी, स्पष्ट मध्याह्न, सूर्योदयास्त एवं दिनमानादि साधन, सूर्यकांति और बेलान्तर कोष्ठक लाघवांक कोष्ठक, राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग, ग्रहस्पष्टीकरण सारणियां, विकलांत सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण, इष्टकाल पर विकलांत सूक्ष्म ग्रहस्पष्टीकरण की सारणियां, लग्न परिवर्तन तालिका, होडाचक्र।

दशाफलविचार

श्री जगजीवनदास गुप्त। भारतीय ज्योतिष के अन्तर्गत ग्रहों के दशा-अन्तर्दशा फलादेश को क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित करने का यह प्रथम प्रयास है। इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न भावगत और राशिगत ग्रहों की महादशा का फल सरल और सुगम रीति से उपस्थित किया गया है; ग्रहों की अन्तर्दशा के फलों का निर्णय करने की अष्टसूत्री विधि इस पुस्तक में विस्तार-पूर्वक दी गई है। अन्य प्रकरणों के साथ-साथ गोचर प्रकरण अतीव उपयोगी है। इसमें सूर्यादि नव ग्रहों के गोचर फलादेश के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम-सूत्र दिए हैं। गोचर शनि के फल-विचार में साढ़ेसाती और कण्टक शनि के प्रभाव का हम सूक्ष्म अध्ययन पाते हैं।

मूल्य १.५०

ज्योतिष के प्रकांड विद्वान श्री चन्द्रदत्त पंत के अद्भुत ग्रंथ

चन्द्र हस्त विज्ञान

प्रस्तुत पुस्तक में हस्त-रेखा के साथ-साथ ग्रह योगों की दृष्टि से संपूर्ण जीवन वृत्तान्त आधुनिक ढंग पर द्वादश ग्रह-योगों के आधार पर, भाग्य, हृदय, मस्तिष्क, आयु, स्वास्थ्य, विवाह, संतान आदि रेखाओं के सम्मिलित सहयोग से यश, कीर्ति, नौकरी, धन-सम्पत्ति, संतान, अकल्पित लाभ, प्रेम की

मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

सफलता आदि घटनाओं का वर्णन इतनी सरल भाषा में किया गया है कि साधारण साक्षर व्यक्ति भी इसको पढ़कर अच्छे-अच्छे ज्योतिषियों के समान भूत, भविष्य और वर्तमान सभी बातों को बता सकता है। इसमें १२०० चित्र प्रत्येक प्रकार की रेखाओं का यथेष्ट ज्ञान करा देते हैं। पुस्तक और हाथ खोल लीजिए। चित्र के अनुसार रेखाएं मिलाते चले जाएँ और सभी बातें सही-सही बताते जाएँ। इसमें उंगली के पोरुओं और नाखूनों से लेकर हथेली सहित मणिबंध तक आनेवाले सभी रेखाओं के पर्वत चित्रों, बिन्दुओं, त्रिभुजों, वर्गों, जाल कन्दुक, पद्म, त्रिशूल, शंख, चक्र आदि सभी का यथासम्भव वर्णन बड़े ही अनुभव के साथ किया गया है। हस्तरेखा पर हिन्दी में आज तक अन्य ऐसी कोई पुस्तक नहीं छपी है। पृष्ठ सं. १०००, चित्र स. लगभग १२००, मूल्य २०रु. मात्र

वर्ष चन्द्र प्रकाश

आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, स्वास्थ्य, भाग्योदय आदि की जानकारी के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने वर्षफल का ज्ञान होना चाहिए जिससे वह लाभ के लिए प्रयत्न और हानि से बचाव कर सके। आधुनिक पंचांगों में वर्षफल बनाने का गणित मिलता है किन्तु वह अधूरा है क्योंकि केवल उसके सहारे कोई भी नवीन ज्योतिषी ध्रुवक आदि नहीं बना सकता। इस पुस्तक ने उक्त न्यूनता की पूर्ति की है। इस पुस्तक में ध्रुवक, वर्षेष्ट ध्रुवाङ्क सारिणी, वर्ष की महादशा, दशाओं के मास-दिवस, योगिनीदशा, उसके मास-दिवस आदि बनाने की शास्त्रीय पद्धति को सुगम तथा सरल रीति से समझाया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें वर्षफल बनाने के उपयोगी पञ्चवर्गी चक्र, त्रिपताकी चक्र, निसर्ग मैत्री शत्रु चक्र आदि कई चक्र भी दिए हैं। सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावगत शुभाशुभ फल भी दिया है। अन्त में वर्षफल जानने योग्य कुछ बातें दी गई हैं जो इसी पुस्तक में ही मिलती हैं। मूल्य सिर्फ १ रु०

प्रश्न चन्द्र प्रकाश

इस पुस्तक से प्रत्येक मनुष्य केवल वार्षिक ही नहीं बल्कि मासिक, साप्ताहिक, दैनिक दिन चर्या के साथ-साथ घन्टों, मिन्टों का भी भूत भविष्य तथा वर्तमान का हाल भी जान सकता है। इसके द्वारा नौकरी, सट्टा, व्यापार, लाटरी, रेस, चोरी गई वस्तु आदि का सभी हाल प्रश्न द्वारा पाने का यथोचित साधन है। किसी भी प्रश्नकर्ता को आता देखकर उसी समय प्रश्न कुण्डली तैयार करके विषय सूची के अनुसार पृष्ठ निकालो और तुरन्त प्रश्न बनाकर सही उत्तर देने में समर्थ हो जाओ और उसके मार्ग का विवरण बताकर उसे अवाक् कर दो। ताकि वह स्तब्ध ही खड़ा रह जावे। अपने प्रश्न का यथेष्ट उत्तर पाकर वह आपकी प्रशंसा करता हुआ जाये। मूल्य केवल रु. ४.००

दीवान रामचन्द्र कपूर की पुस्तकें

लघुपाराशरी भाष्य

लघुपाराशरी भाष्य : डिमाई आक्टेवा : पृष्ठ स. ४००। काल चक्र दशा सहित : भारतीय फलित ज्योतिष की विंशोत्तरी दशापद्धति के प्रामाणिक ग्रंथ उडुदाय-प्रदीप का भाष्य है। इसमें श्लोकों का अनुवाद तो है ही पर बहुत-सी ऐसी सामग्री समाविष्ट की गई है जिससे विषय के समझने में पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। आवश्यकतानुसार सारिणियां भी दी गई हैं जो श्लोकों के साथ ही साथ हैं जिससे अध्ययन के साथ ही सारिणियाँ भी उपलब्ध रहें। प्रस्तुत पुस्तक में ग्रहों का योगज फल दिया गया है और उसके जानने के लिए क्लिष्ट श्लोक हैं अतः उन्हें सरल बनाने की दृष्टि से परिशिष्ट हैं। परिशिष्ट की योगावली के द्वारा सरलता से ग्रहों की दशा तथा अन्तर फल ज्ञात हो जाता है। साथ ही इसको और भी उपयोगी बनाने के लिए सविस्तार, सोदाहरण, ससारणी, फलित ज्योतिष संबंधी जिज्ञासाओं के उत्तर आदि सभी बातें दी गई हैं। मूल्य ८ रु०

कालचक्र

फलित ज्योतिष में अनेक नक्षत्र-दशा पद्धतियां हैं। उनमें चार प्रसिद्ध हैं: विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी और कालचक्र। इन चारों की दशा का आधार चन्द्रनक्षत्र है। कालचक्र दशा भी चन्द्रनक्षत्र की दशा है। यह दशा प्रत्येक चन्द्र नक्षत्र के प्रत्येक चरण से आरम्भ होती है। इस दशा का उल्लेख तथा दशा आनयन की रीति बृहद्पाराशर होराशास्त्र तथा जातक पारिजात में है पर कोई ऐसी टीका नहीं थी जिसके आधार पर सही फलादेश किया जा सके। लेखक ने अनेक कुण्डलियों पर कालचक्र दशा का उपयोग किया और उसे मारक तथा अरिष्ट प्रसंग में उपयोगी पाया। इसमें लेखक ने हिन्दी टीका मात्र ही नहीं दिया है अपने अनुभव तथा उदाहरण भी दिए हैं। मूल्य ३.००

रमल प्रश्नोत्तरी

इस प्रश्नोत्तरी के सम्बन्ध में यह कथा है कि नेपोलियन महान् इसका प्रयोग किया करता था इसीलिये इस पद्धति को Napolean's oraculum कहा जाता है। इस प्रश्नोत्तरी में प्रायः सभी सामान्य जिज्ञासाओं का उत्तर सन्निहित है। मूल्य रु० १.५०

—;o:—

आचार्य रजनीश

समन्वय, विश्लेषण और संसिद्धि

ले. डा. रामचन्द्र प्रसाद, पटना विश्वविद्यालय, पटना मूल्य ७.५०

इस पुस्तक में जीवन के आनन्द तथा आत्मा के रहस्य को जानने का सरल मार्ग मिलेगा। आचार्य जी के रहस्यपूर्ण विचारों को समझने के लिए यह कृति अतीव उपयोगी है।

विषयक्रम I औपनिषद दर्शन, जेन और कृष्णमूर्ति, बाइबिल आत्मज्ञान, धर्म, प्रेम
II मैं कौन हूं ? ज्ञान और अहिंसा और अहंकार, अहंकार, सत्य और शून्यता।
III संसिद्धि और परिणति

मोतीलाल बनारसीदास

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता बंगलो रोड जवाहर नगर दिल्ली-७

के यहाँ मिलने वाले संस्कृत-हिन्दी ग्रन्थ

पुस्तकें मंगाने से पहले नीचे लिखे नियम अवश्य पढ़ें।

१. अपना पता गांव डाकखाना आदि साफ अक्षरों में लिखें। २. पुस्तकें मंगाते समय मनीआर्डर से चौथाई रु० अवश्य पहले भेजें क्योंकि लोग पुस्तकें मंगाकर वी. पी. वापिस कर देते हैं इसलिए लाचारी ऐसा करना पड़ा है। ३. दो रु० से कम का वी. पी. नहीं भेजा जायेगा।

कर्मकाण्ड

क्रम सं०	पुस्तक का नाम	मूल्य—रु० पैसे
१	अर्कीविवाह—भाषाटीका	०–२४
२	अग्निष्टोम पद्धति–आध्वर्यं पद्धति औदगात्र	९–००
३	अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानन्द	४–००
४	आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आह्निक	१–५०
५	आचारार्क (ऋग्वेदीय)—खुला पत्रा	१–५०
६	अपात्रिकपार्वण श्राद्ध	०–५५
७	आधानपद्धति—वामन शास्त्री	३–००
८	आह्निक सूत्रावली (शुक्ल यजुर्वेदीय) बम्बई	६–००
९	आर्याभिविनय—अजमेर	०–४०
१०	आर्यविधानम—दो भाग	२०–००
११	उग्ररथ शांतिप्रयोग	५–००
१२	उपनयन पद्धति—भाषाटीका	१–८०
१३	उपनयन पद्धति—(माध्यन्दिन) गौड़	१–५०
१४	उपनयन मार्तण्ड–भा. टी.–पं. विध्याचल दत्त	०–७५
१५	उपाध्यायरत्नचन्द्रिका	१०–५०
१६	ऋग्वेदोक्त नित्यविधि—खुला पत्रा	२–००
१७	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग—(सांवत्सरिक)	०–५०
१८	और्ध्वदैहिक कर्मपद्धति	४–००
१९	कर्मठगुरु—राज. ज्योतिषी पं. मुकुन्दवल्लभ कृत। नित्यकर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं–जैसे–सिद्धपुत्रेष्टि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा	६–००
२०	कर्मकांडभास्कर	५–५०
२१	कर्मकाण्ड-प्रकाशिका–मूल–वैष्णवदास	०–७५
२२	कर्मप्रदीप—छान्दोग्य परिशिष्ट	२–२५
२३	कलशप्रतिष्ठा—पूजाविधि	०–२५
२४	कातीय तर्पण पद्धति	०–३०
२५	कातीयेष्टि दीपक–(दर्शपौर्णमास पद्धति)	२–००
२६	कात्यायनी शान्ति	०–५०
२७	कृत्यशिरोमणि—तुफानी शर्मा	४–००
२८	कृतितत्वसंग्रह	८–००
२९	कृत्यसार समुच्चय–श्री अमृतनाथ शर्मा	२–१०
३०	कृत्यसार समुच्चय (अमृतनाथ) पं. गंगाधर	५–००
३१	कूपाराम मीमांसा भा. टी.	०–६४
३२	कूपोत्सर्ग	०–२५
३३	गणपति पूजा होम	०–२५
३४	गयाश्राद्धपद्धति—भाषाटीका सहित	१–००
३५	गायत्रीपूजा पद्धति	०–२५
३६	गोत्रावलि	०–४०
३७	गोदान	०–२०
३८	गौडीय श्राद्धप्रकाश महानिबन्ध–खुला पत्रा	९–६०
३९	गौरीशंकर गुटका	३–५०
४०	ग्रहयज्ञप्रयोग	०–९०
४१	ग्रहशान्तिप्रयोग	३–००, ५–००
४२	ग्रहशान्ति भा. टी. बम्बई	१–५०
४३	चूड़ाकरण पद्धति–(माध्यन्दिनी शाखा)	०–२५
४४	जन्मदिन पूजा पद्धति	०–२५
४५	तुलसीपूजा पद्धति	०–१५
४६	तुलसीविवाह विधि	०–३५
४७	दशकर्मपद्धति—भाषाटीका	२–४०
४८	दशकर्मपद्धति—पं. जनार्दन पांडे मूल	८–००
४९	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन	०–३०
५०	दुर्गापूजातत्त्व	२–८०

५१ धनिष्ठापञ्चक शांति	०-५०
५२ नित्यकर्म पद्धति-भाषाटीका	०-५०
५३ नित्यकर्मप्रयोग—गोरखपुर	०-५५
५४ नित्यकर्म प्रयोग माला—श्री चतुर्थीलाल	२-४०
५५ नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय-(यजुर्वेदीय)	६-००
५६ पंचदान पद्धति	०-४०
५७ पंचदेवतापूजन	०-२०
५८ पंचनारायणबलि	१-२५
५९ पंचमंगल	०-४०
६० पंचरत्नविवाहपद्धति—फलाहारी	२-००
६१ पञ्चयज्ञ—भाषा टीका समेत	०-६०
६२ पार्थिव पूजन विधान—भा. टी.	०-३५
६३ पितृकर्म निर्णय—पं. त्रिलोकनाथ	३-००
६४ पुत्तलविधान पद्धति—मूल	०-४०
६५ पूतना शांति—भा. टी.	०-६२
६६ पौरोहित्य कर्मसार	१-६५
६७ प्रयोगरत्न—नारायण भट्टी—ऋग्वेदीय	३-५०
६८ प्रतिष्ठाप्रभु दूसरा भाग केवल	४-००
६९ प्रेतमञ्जरी—भा. टी. २-५०,	१-५०
७० बगलोपासन पद्धति	१-००
७१ ब्रह्मकर्म समुच्चय—हिरण्यकेशीय (३८८)	१०-००
७२ भारतीयव्रतोत्सव	३-००
७३ मंगलाष्टक शाखोच्चार	०-५०
७४ महालक्ष्मी पूजा पद्धति—भाषाटीका	१-२५
७५ मूलशान्ति विधि	०-६०
७६ यज्ञोपवीत पद्धति—भा. टी. १-५०,	०-७५
७७ यजुःशाखीय कर्मकांड प्रदीप	१०-००
७८ रामार्चन पद्धति	०-४०
७९ रामनवमी पूजा	०-४०
८० लघुपूजानुष्ठान	०-५६
८१ लक्ष्मी पूजन प्रयोग	१-००
८२ वर्षकृत्य दो भाग	११-००
८३ वर्षकृत्यदीपक—पं० नित्यानन्द	१०-००
८४ वरदगणेशपूजा	०-३०
८५ वार्षिकव्रतरत्नावली	४-००
८६ वास्तु शान्ति प्रयोग	०-९०
८७ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह	३-००
८८ वास्तुरत्नावली	२-५०
८९ वासिष्ठी हवन पद्धति—हिन्दी टीका ०-७५,	०-९०
९० विजयादशमी पूजा	०-१५
९१ विनयपद्यपंचाशिका	.-५०
९२ विनायक शान्ति	०-३०
९३ विवाहपटल	१-००
९४ विवाह पद्धति—चतुर्थीलाल भा. टी.	१-००
९५ विवाह पद्धति—भैयाराम कृत भा. टी.	२-००
९६ विवाह पद्धति—आर्यसमाज	०-७५
९७ विवाह पद्धति-वायुनंदन	१-२५
९८ विवाह पद्यावली—भाषा टीका सहित	१-८०
९९ विवाहसोपाङ्गविधि भा. टी.	३-६०
१०० विश्वकर्मापूजा	०-०५
१०१ विष्णु पूजा	०-३५
१०२ विज्ञप्ति रत्नावली—अन्वयार्थ सहित	१-२०
१०३ व्रत परिचय	२-२५
१०४ व्रतोद्यापन प्रकाश	४-५०
१०५ वैदिक सन्ध्या	०-१५
१०६ शांतिप्रकाश—चतुर्थीलाल	७-८०
१०७ शिवार्चन पद्धति	१-५०
१०८ शुद्धि प्रदीप-प्रायश्चित्त कृत्य	३-००
१०९ शूद्रविवाह पद्धति	०-२५
११० श्राद्धप्रयोगदीपिका	१-२५
१११ श्राद्धविवेक—रुद्रधर	२-५०
११२ शोडश-संस्कार-विधि—सनातन भाषाटीका	५-००
११३ सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी	०-२०
११४ सन्ध्योपासन-सातवलेकर	१-५०
११५ सन्ध्या—यजुर्वेदीय मूल ६ पै. भा. टी.	०-१२
११६ सन्ध्या-(शु. यजुर्वेदीय) तर्पण भा. टी	०-२५
११७ सन्ध्यादर्पण—देवीदत्त	४-००
११८ सपिण्डीकल्पलतिका	२-००
११९ संस्कारविधि (सनातन) श्रीकण्ठ उपाध्याय	६-००
१२० संस्कार दीपक—हर्षनाथ	३-००
१२१ संस्कार दीपक-तीन भाग, नित्यानन्द पर्वतीय	१८-००
१२२ संस्कारपद्धति-भास्कर शास्त्री संशोधित	३-७५
१२३ संस्कारविधि-श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित	१-२५
१२४ सर्वदेवप्रतिष्ठा—गोपालदत्त	१-००
१२५ सर्वपूजा	०-५०, ०-३१
१२६ सरस्वती पूजा	०-२५
१२७ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति—तुलादान पद्धति सहित	०-२०
१२८ स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा	०-२५
१२९ स्मार्तोल्लास-शिवप्रसाद २, ३ भाग	३-६२
१३० स्मार्थप्रभु--प्रथम भाग	३-००
१३१ सामवेदोपाकर्मप्रयोग	१-२५
१३२ सामवेद श्राद्धप्रयोग	१-२५
१३३ हिन्दु धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ	३-००
१३४ हिन्दुओं के व्रतपर्व और त्यौहार—रामप्रताप	७-००
१३५ हरदीमातृपूजा	०-२०
१३६ त्रिकाल सन्ध्या-यजुर्वेदीय ०-१९ ऋग्वेदीय	०-३६
१३७ त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति—वायुनन्दन	१-००

धर्मशास्त्र

१३८ अग्निहोत्रचन्द्रिका-वामन शास्त्री देवव्रतभाष्य	४-२५
१३९ आङ्गिरस स्मृति-ए. एन. कृष्णा अयंगर	१२-००
१४० अब्धिनौयान मीमांसा-श्री वेंकटाचल शास्त्री	२-४०
१४१ अहिर्बुध्न्य संहिता २ भाग	४०-००
१४२ अशौचकाण्ड	०-२०
१४३ अशौचनिर्णय	०-२५, ०-५०
१४४ आचारभूषण—(त्र्यम्बक) हिरण्यकेश्याह्निक	६-५०
१४५ आचारमयूख-(नीलकण्ठ भट्ट विरचित)	२-००
१४६ आपस्तम्बीयधर्मसूत्र-मूल, पाठभेद, टिप्पणी	१०-००
१४७ आचारेन्दु—त्र्यम्बक विरचित	६-००
१४८ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल	३-००
१४९ उद्वाहतत्त्व—रघुनन्दन	५-६२
१५० कर्मविपाक भाषाटीका	४-००
१५१ कालतत्त्व विवेचन, दो भाग	८-५०
१५२ कालमाधवकारिका-(माधवाचार्य प्रणीत)	०-७५
१५३ कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण	३-६०
१५४ कालविवेक	६-२५
१५५ कुण्डमंडपसिद्धि	०-६०
१५६ कृत्यकल्पतरु-लक्ष्मीधर विरचित ९ खंड	१५९-००
ब्रह्मचारिकांड १५ रु० गृहस्थकांड १५ रु० नियतकाल	

 मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-७

२२ रु० श्राद्ध १८-०० व्रत २०-०० तीर्थ-विवेचन १२ रु० शुद्धि १२ रु० राजधम १५ रु० व्यवहार ३०-००

१५७ कृत्यरत्नाकर—श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६-००
१५८ क्यों (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य दो भाग २०-००
१५९ गदाधरपद्धति आचार सार ४-५०
१६० गौतम धर्मसूत्र—मिताक्षरा ४-५०
१६१ गौतम धर्मसूत्र भा. टी. १०-००
१६२ गृहस्थ रत्नाकर—चण्डेश्वर ५-२५
१६३ चतुर्विंशतिमतसंग्रह-भट्टोजिदीक्षित संकलित ६-००
१६४ जयसिंह कल्पद्रुम—मूलमात्र बम्बई १४-४०
१६५ टोडरानन्द—(सर्गसौख्य, अवतारसौख्य) प्रथम १०-००
१६६ तिथ्यर्क-दिवाकर-कृत—तिथियों के निर्णयआदि २-००
१६७ तिथिचिन्तामणि ०-७५
१६८ तिथिनिर्णय—भट्टोजि दीक्षित ३-००
१६९ तीर्थचिन्तामणि—वाचस्पति मिश्र ३-७५
१७० दत्तकमीमांसा—नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५-५०
१७१ दर्शपूर्णमास प्रकाश—भाष्यवृत्ति दीपिका १०-००
१७२ दानक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द २-२५
१७३ दानचंद्रिका—मूल १-३०
१७४ दानदीपिका—भाषाटीका ०-५०
१७५ दानमयूख—(नीलकंठ भट्ट) मूल ३-००
१७६ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भागसम्पूर्ण ३०-००
१७७ दायभाग—भा. टी. (याज्ञवल्क्य) १-५०
१७८ दीक्षाप्रकाशिका—श्री विष्णुभट्ट विरचित १-००
१७९ धर्मकल्पद्रुम—स्वा. दयानन्दकृत सनातन धर्म का अत्युत्तम ग्रन्थ १ से ८ भाग तक ३२-५०
१८० धर्मकोश—व्यवहार कांड व्यवहार मातृका ८०-००
१८१ धर्म कोश संस्कारकाण्ड प्रथम भाग ४५-००
१८२ धर्मतत्त्व निर्णय—(वासुदेव शास्त्री) पूना १-००
१८३ धर्मतत्त्वनिर्णय परिशिष्ट—(वासुदेव शास्त्री) १-२५
१८४ धर्मप्रदीप—मूलमात्र २-४०
१८५ धर्मविज्ञान ३ भाग सनातन धर्म १५-००
१८६ धर्मशास्त्र का इतिहास तीनभाग-काणे हिन्दी ५४-००
१८७ धर्मशास्त्र व्याख्यान—श्रीधर ५-००
१८८ धर्मसिन्धु—हिन्दी टीका बम्बई १४-४०
१८९ धर्मसिन्धु भा. टी. काशी २५-००
१९० धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पत्रसंग्रह १०-००
१९१ धर्मानुबन्धि श्लोकचतुर्दशी १-००
१९२ धार्मिक विमर्श समुच्चय—(नरहरि शास्त्री) ३-५०
१९३ नवरात्र प्रदीप—नंदपंडित २-००
१९४ नवीन आह्निक सूत्रावली ८-००
१९५ नारदस्मृति बंगला ४-००
१९६ निर्णयसिन्धु—मूलमात्र ६-०० टिप्पणी सहित १०-००
१९७ नित्याचार पद्धति ५-२५
१९८ नित्याचार प्रदीप १२-७५
१९९ नीतिमयूख—नीलकंठ भट्ट प्रणीत २-००
२०० नृसिंह प्रसाद दलपतिराज विरचित ४ भाग ११-००
२०१ पशवालम्भ मीमांसा—वामन शास्त्री १-००
२०२ पंचरात्ररक्षा—वेदान्तदेशिक २०-००
२०३ पाञ्चरात्र प्रसाधनम ४-००
२०४ पाराशर स्मृति—भा. टीका २-००, १-५०
२०५ पुरुषार्थ चिन्तामणि—पूना ९-००, बम्बई ५-००
२०६ पुरुषार्थ सुधानिधि १४-००
२०७ प्रायश्चित कदम्ब—भा. टी. १-५०
२०८ प्रायश्चित्त मयूख ३-००
२०९ प्रायश्चित्त प्रकाश बम्बई २-१०
२१० प्रायश्चित्त प्रकरण ६-००
२११ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर कुण्डार्कश्च—नागोजी भट्ट २-५०
२१२ बीस स्मृतियां भा. टी. १४-००
२१३ बौधायन धर्मसूत्र—गोविन्द कृत विवरण २०-००
२१४ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—हिन्दी टीका सहित १२-००
२१५ भारतीय व्रतोत्सव ३-००
२१६ मदन महार्णव—(कर्मविपाक के ऊपर) २६-००
२१७ मदनरत्नप्रदीप—मदनसिंहकृत तीन भाग ६-५०
२१८ मनुस्मृति—हिन्दी टीका काशी ५-०० बंबई ७-२०
२१९ मनुस्मृति-हिन्दी टीका सहित १-४ अध्याय २-५०
२२० मनुस्मृति—मेधातिथि बंगला में २४-५०
२२१ मनुस्मृति—(द्वितीयाध्याय) सं. हि. टीका ०-७५
२२२ यज्ञतत्त्व प्रकाश—चिन्हस्वामी ४-००
२२३ यतिधर्म संग्रह—(विश्वेवर सरस्वती) २-७५
२२४ यात्रातत्व २-२०
२२५ याज्ञवल्क्यस्मृति आचाराध्याय भा. टी. ४-००
२२६ याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्कटीका १९-५०
२२७ याज्ञवल्क्य-स्मृति-मिताक्षरा हि. टीकासंपूर्ण २०-००
२२८ याज्ञवल्क्य स्मृति—मिताक्षरा टीका बंबई १०-००
२२९ याज्ञवल्क्यस्मृति—बालम्भट्टीव्यवहाराध्याय ३३-००
२३० राजधर्म कौस्तुभ—(अनन्तदेव) अंग्रेजी भूमिका २०-०
२३१ वर्षक्रियाकौमुदी ५-२५
२३२ वसन्तोत्सवनिर्णय ०-२५
२३३ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण ५-००
२३४ विधान पारिजात (अनन्तदेव) १५-००
२३५ विधानमाला—नृसिंह भट्ट शंकर ६-००
२३६ विवादचिन्तामणि—मूल ३-००
२३७ विवाद रत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६-००
२३८ विष्णु स्मृति मूल १०-००
२३९ विष्णुस्मृति—सटीक दो भाग ६०-००
२४० वीरमित्रोदय—पूजाप्रकाश १६-००
२४१ वीरमित्रोदय—शुद्धिप्रकाश ९-००
२४२ वीरमित्रोदय—आह्निक प्रकाश २४-००
२४३ वीरमित्रोदय लक्षणप्रकाश २८-००
२४४ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश १८-००
२४५ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ६-००
२४६ वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश १५-००
२४७ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ९-००
२४८ वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश १२-००
२४९ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण ३०-००
२५० व्यवहारप्रकाश पृथिवीचन्द्र प्रथम भाग १२-००
२५१ व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल २-५०
२५२ व्यवहार मयूख (श्रीनीलकंठ) पी. वी. काणे २५-००
२५३ व्यवहारमाला—पूना १-५०
२५४ व्रतकोश—जगन्नाथ शास्त्री संगृहीत ६-००
२५५ व्रतरत्नाकर ३-००
२५६ व्रतराज—हिन्दी टीका सहित सजिल्द १९-२०
२५७ व्रात्यताप्रायश्चितनिर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि ३-००
२५८ शास्त्रतत्त्वनिर्णय—नीलकंठ कृत ५-००
२५९ शवसूतकोचक प्रकरण ५-६२
२६० शुद्धिकौमुदी ३-७५
२६१ शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल १-५०
२६२ श्राद्धकल्पलता—नन्द पंडित ९-००
२६३ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविंदानन्द प्रणीत ५-२५

२६४ श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट्ट ५–००
२६५ श्राद्धप्रयोग दीपिका १–२५
२६६ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल २–००
२६७ श्राद्धमञ्जरी—बापूभट्टविरचित ३–००
२६८ षडशीति–(आदित्याचार्य) शुद्धि चन्द्रिका ६–००
२६९ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती ४–००
२७० सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में भा. टी. २०–००
२७१ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १–२५
२७२ समय मयूख—नीलकंठ मूल ३–००
२७३ संस्कारपद्धति—पूना ३–७५
२७४ संस्कारमयूख २–००
२७५ संस्कार रत्नमाला–दो भाग संपूर्ण पूना १८–५०
२७६ संस्कार गणपति–श्री रामकृष्णप्रणीत २५–००
२७७ सर्वशिरोमणि सिद्धान्तसार ४–५०
२७८ साधन चन्द्रिका २–००
२७९ सुरिसर्वस्व अपूर्ण २–२५
२८० स्मृतिचंद्रिका—देवनभट्ट १५–५०
२८१ संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त ३–५०
२८२ स्मृति समुच्चय–(२७ स्मृतियों का संग्रह) ७–५०
२८३ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २–५०
२८४ स्मृतिसारोद्धार–श्री विश्वम्भरत्रिपाठीकृत १२–००
२८५ हारलता २–२५
२८६ हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ ३–००
२८७ हिन्दू संस्कार–(हिन्दी)–डा. राजबली पांडे १६–००
२८८ त्रिशच्छ्लोकी—शंकर शास्त्री विरचित ४–५०
२८९ त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार १–५०
२९० त्रिस्थली सेतु—नारायण भट्ट प्रणीत ५–५०

महापुराण-उपपुराण

२९१ अग्निपुराण मूल—उपाध्याय २०–००
२९२ अग्निपुराण भाषाटीका २ भाग बरेली १४–००
२९३ अग्निपुराण—मूल मात्र संपूर्ण पूना १०–००
२९४ अग्निपुराण विशयानुक्रमणी—भट्टाचार्य ८–००
२९५ आदि पुराण भा. टी. खुला पत्रा बम्बई ७–००
२९६ इतिहास पुराण का अनुशीलन–भट्टाचार्य १०–००
२९७ कल्कि पुराण—भा. टी. पुराना जीर्ण २–००
२९८ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १८–००
२९९ काशीयात्रा ०–५०
३०० केदारकल्प ४–२०
३०१ केदार खंड—मूल बम्बई १२–००
३०२ कृष्णस्य शांति प्रयासः २–००
३०३ कूर्मपुराण मूल काशी १०–००
३०४ गरुड़ पुराण—सम्पूर्ण मूल बुक साइज ४–००
३०५ गरुडपुराण भा. टी. बरेली १४–००
३०६ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा. टी. खुला ३–५०
३०७ गरुड़पुराण—सारोद्धारसंस्कृत टीका ३–००
३०८ देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप १०–००
३०९ देवी भागवत मूल—गुटका ८–००
३१० देवी भागवत—भा. टी. खुला पत्रा बम्बई ४८–००
३११ देवी भागवत भा. टी. खुला—काशी ३२–००
३१२ देवीभागवत–भा०टी० बरेली १४–००
३१३ पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०–००
३१४ पद्मपुराण भा० टी० बरेली १४–००
३१५ पुराण कथा कौमुदी भाषा १०–००
३१६ पुराण काव्यस्तोत्र संग्रह ५–००
३१७ पुराणेतिहाससंग्रह ७–५०
३१८ पुराणदिग्दर्शन हिन्दी १०–००
३१९ पुराण विमर्श–बलदेव उपाध्याय हिन्दी २०–००
३२० पुराण संहिता–आलमंदार संहिता आदि १२–००
३२१ पुराण विषयानुक्रमणिका–राजनीति १५–००
३२२ पुराणविषयानुक्रमणिका विश्वेश्वरानंद ६–००
३२३ पुराणों में गुजरात–गुजराती ५–००
३२४ प्रेमसुधा सागर भागवत दशम स्कन्ध हिन्दी ४–५०
३२५ प्रेमसागर-भाषा ४–००
३२६ पौराणिक कथाये २–५०
३२७ ब्रह्मवैवर्तपुराण–मूल बुक साइज पूना २ भाग १४–२५
३२८ ब्रह्मोत्तर खंड—भा. टी. ४–२०
३२९ भविष्य पुराण—मूल बुक साइज ३०–००
३३० भविष्य पुराण भा. टी. बरेली १४–००
३३१ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९–००
३३२ भागवत मूल गुटका गोरखपुर४) स्थूलाक्षर ७–५०
३३३ भागवत–अन्वितार्थ प्रकाशिका काशी ४८–००
३३४ भागवत—सर्चूर्णिका सं. टीका बम्बई खुला ३०–००
३३५ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४–००
३३६ भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४–००
३३७ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २४–००
३३८ भागवत–सरस्वती भाषा टीका काशी ३५–००
३३९ भागवत—भा. टी. बुक साइज दो भाग २०–००
३४० भागवत १० टीका ३००–००
३४१ भागवत श्लोकानुक्रमणिका ७–००
३४२ भागवत सुधा सागर—केवल भाषा १०–००
३४३ भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला बम्बई १२–००
३४४ भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला काशी ८–००
३४५ भागवत–एकादशस्कन्ध भा०टी० खुला ४–८०
३४६ भागवत-एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी ६–५०
३४७ भागवत—राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत १०–५०
३४८ भागवत कथा—पं. राममूर्ति ११–२५
३४९ भागवत कथा —मेहता ४–००
३५० भागवतामृत २–००
३५१ मल्ल पुराण १०–००
३५२ मत्स्यपुराण—केवल हिन्दी— रामप्रताप २०–००
३५३ मार्कण्डेय पुराण भा. टी. २ भाग बरेली १४–००
३५४ मार्कण्डेय पुराण भा. टी. खुला १८–००
३५५ ,, एक अध्ययन ४–५०
३५६ महाभागवत—देवी ३–००
३५७ युगपुराण २–००
३५८ रामाभ्युदययात्रा ३–५०
३५९ रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराण) मोटा अक्षर ५–१०
३६० रामाश्वमेध—भाषा ५–५०
३६१ रामाश्वमेध—भा. टी. खुला पत्रा १३–२०
३६२ ललितोपाख्यान मूल खुला ४–२०
३६३ लेखसंग्रह—स्वा. जी पीतांबरा ४–००
३६४ वामनपुराण—संशोधित संस्करण मूल १२५–००
३६५ वामन पुराण भा. टी. ५०–००
३६६ वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १४–४०
३६७ वायुपुराण–केवल भाषा पं. रामप्रताप शास्त्री १२–००
३६८ वायुपुराण भा. टी. बरेली १४–००
३६९ विष्णुधर्मोत्तर पुराण–मूल खुला पत्रा २१–६०
३७० विष्णुधर्मोत्तर—तीसरा कांड चित्र प्रकरण ४०–००
३७१ विष्णुपुराण भा. टी. २ भाग बरेली १४–००

३७२ विष्णुपुराण—भा०टी० गोरखपुर ५–००
३७३ विष्णु पुराण विषयसूची ५–००
३७४ शिवपुराण मूल सम्पूर्ण गुटका १०–००
३७५ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २४–००
३७६ शिवपुराण मूल खुला पत्रा बंबई २१–६०
३७७ शिवपुराण भा. टी. गुटका बरेली १४–००
३७८ शिवपुराण भा. टी. बम्बई खुला पत्रा ६०–००
३७९ शिवपुराण केवल भाषा १०–००
३८० शिवभारत—संस्कृत २–२५
३८१ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९–००
३८२ सुखसागर—मध्यम १६–००
३८३ सूरसागर—संपूर्ण १४–४०
३८४ सौर पुराण—मूल पूना ४–५०
३८५ स्कन्द महापुराण बुक साइज मूल (नागर और प्रभास खंड छोड़कर) ९०–००
३८६ हरिवंशपुराण सटीक खुला २४–००
३८७ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला काशी ३२–००
३८८ हरिवंश का सांस्कृतिक विवेचन ४–५०
३८९ हरिवंशपुराण भा. टी. बरेली १४–००
३९० हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १४–४०
३९१ हरिवंश सटीक बुक साइज ५०–००

रामायण-महाभारत

३९२ अध्यात्मरामायण भा. टी. बम्बई १२–००
३९३ अध्यात्मरामायण भा. टी. गोरखपुर ४–००
३९४ आनंद रामायण भा. टी. १६–००
३९५ आर्य संगीत महाभारत ५–५०
३९६ आर्यसंगीत रामायण—भाषा ५–००
३९७ इतिहास गुरु खालसा ६–००
३९८ कम्बर और तुलसी ६–७५
३९९ कम्ब रामायण दो भाग २०–५०
४०० गर्ग संहिता प्रथम भाग—बुक साइज १०–००
४०१ गर्ग संहिता—मूल —खुला १३–२०
४०२ जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ५–१०
४०३ जैमिनी अश्वमेध—भा. टी. खुला १३–२०
४०४ जैमिनी अश्वमेध—भाषा ४–२०
४०५ जैमिनी अश्वमेध भा. टी. गोरखपुर ६–००
४०६ नासिकेतोपाख्यान—हिन्दी टीका सहित १–५०
४०७ बालरामायण—संस्कृत ०–७५
४०८ ब्रजविहार ५–४०
४०९ ब्रजविलास ८–४०
४१० बृहद्भजनरत्नावली भाषा ४–८०
४११ भक्तमाला—भाषा १०–००
४१२ भक्तमाला—संस्कृत खुला पत्रा ६–००
४१३ भक्तमाल रामरसिकावली १४–४०
४१४ भक्तमाल—राघवदास ६–७५
४१५ भजनरामायण ०–५०
४१६ भारत सार—केवल भाषा ८–४०
४१७ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका २–४०
४१८ महाभारत—मूल—संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में २६–५०
४१९ महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण ३००–००
४२० महाभारत—शैलेन्द्र १२–००
४२१ महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध—सातवलेकर १०–००
४२२ महाभारत—केवल हिन्दी छोटा टाइप १० भाग २०–००
४२३ महाभारत सटीक विराटपर्व १०–००
४२४ महाभारत नामानुक्रमणिका ३–५०
४२५ महाभारत—उद्योगपर्व सटीक २०–००
४२६ महाभारत कोष दो भाग ४०–००
४२७ मूल रामायण—शीलनिरूपणाध्याय सं. हि. ०–७५
४२८ राधामाधवचिन्तन ५–००
४२९ रामकथा—फा. बुलके, उत्पत्ति, विकास २०–००
४३० रामचरितमानस मूल काशीराज ६–५०
४३१ रामचरितमानस मूल गुटका ०–९०
४३२ ,, भा. टी. गोरखपुर ८–५०
४३३ रामचरितमानस भा. टीका विजया टीका ३०–००
४३४ रामचरितमानस भा. टी. गीता प्रेस ४–५०
४३५ रामचरितमानस की आध्यात्मिक राजनीति ५–००
४३६ रामायणकालीन संस्कृति—हिन्दी ६–००
४३७ रामायण कालीन समाज—हिन्दी ६–००
४३८ रामायण—तुलसी भा. टी. ज्वालाप्रसाद ३०:००
४३९ ,, , मध्यम १६–८०
४४० रामाश्वमेध—मूल खुला पत्रा ५–१०
४४१ रामाश्वमेध—भा. टी. खुला पत्रा बम्बई १३–२०
४४२ रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ५–४०
४४३ रास पञ्चाध्यायी भा. टी. १०–००
४४४ रंगनाथ रामायण ६–५०
४४५ रामायण बालकांड की समालोचना—सातवलेकर २–००
४४६ वाल्मीकि रामायण—मूल गुटका ९–६०
४४७ वाल्मीकि रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर २०–४०
४४८ वाल्मीकि रामायण मूल ९–००
४४९ वाल्मीकि रामायण शुद्ध मूल बालकांड ५५–००
४५० वाल्मीकि अरण्यकांड शुद्ध मूल ५५–००
४५१ ,, ,, अयोध्याकांड ११०–००
४५२ ,, ,, किष्किन्धाकांड ५५–००
४५३ वाल्मीकि रामायण सुन्दर कांड शुद्ध मूल ५५–००
४५४ वाल्मीकि रामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा ७२–००
४५५ ,, बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ७२–००
४५६ वाल्मीकि रामायण—३ टीका सं. बारीक ६५–००
४५७ वाल्मीकि रामायण—कतक व्या. बाल, अयोध्या, किष्किन्धा, अरण्य कांड ६०–००
४५८ वाल्मीकि रामायण—पं. ज्वालाप्रसाद कृत भा. टी. खुला बम्बई ४८–०० काशी पं रामतेज ४०–००
४५९ वाल्मीकि रामायण—भाषा टीका द्वारका प्रसाद १० भाग २४–००
४६० वाल्मीकि रामायण—बालकांड—पं. सातवलेकर ८–००
४६१ वाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर ८–००
४६२ वाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड—सातवलेकर ८–००
४६३ वाल्मीकि रामायण—युद्धकांड २ भाग सातवलेकर १६–०
४६४ वाल्मीकि रामायण—उत्तरकांड सातवलेकर ८–००
४६५ वाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड—मूल गुटका २–५०
४६६ वाल्मीकि रामायण—सुन्दर कांड—मूल खुला ५–१०
४६७ वाल्मीकि रा०सुन्दरकाँड भा. टी. रामतेज ३–००
४६८ वाल्मीकि रामायण—केवल भाषा मोटा बम्बई ३०–००
४६९ वाल्मीकि रामायण कोष २०–००
४७० वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन १६–००
४७१ विजयादशमी—सातवलेकर ०–५०

२६४	श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट्ट	५-००
२६५	श्राद्धप्रयोग दीपिका	१-२५
२६६	श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल	२-००
२६७	श्राद्धमञ्जरी—बापूभट्टविरचित	३-००
२६८	षडशीति-(आदित्याचार्य) शुद्धि चन्द्रिका	६-००
२६९	सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती	४-००
२७०	सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में भा. टी.	२०-००
२७१	सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन	१-२५
२७२	समय मयूख—नीलकंठ मूल	३-००
२७३	संस्कारपद्धति—पूना	३-७५
२७४	संस्कारमयूख	२-००
२७५	संस्कार रत्नमाला-दो भाग संपूर्ण पूना	१८-५०
२७६	संस्कार गणपति-श्री रामकृष्णप्रणीत	२५-००
२७७	सर्वसिरोमणि सिद्धान्तसार	४-५०
२७८	साधन चन्द्रिका	२-००
२७९	सूरिसर्वस्व अपूर्ण	२-२५
२८०	स्मृतिचंद्रिका—देवनभट्ट	१५-५०
२८१	संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त	३-५०
२८२	स्मृति समुच्चय-(२७ स्मृतियों का संग्रह)	७-५०
२८३	स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत	२-५०
२८४	स्मृतिसारोद्धार-श्री विश्वम्भरत्रिपाठीकृत	१२-००
२८५	हारलता	२-२५
२८६	हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ	३-००
२८७	हिन्दू संस्कार-(हिन्दी)-डा. राजबली पांडे	१६-००
२८८	त्रिंशच्छलोकी—शंकर शास्त्री विरचित	४-५०
२८९	त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार	१-५०
२९०	त्रिस्थली सेतु—नारायण भट्ट प्रणीत	५-५०

महापुराण-उपपुराण

९१	अग्निपुराण मूल—उपाध्याय	२०-००
९२	अग्निपुराण भाषाटीका २ भाग बरेली	१४-००
९३	अग्निपुराण—मूल मात्र संपूर्ण पूना	१०-००
९४	अग्निपुराण विशयानुक्रमणी—भट्टाचार्य	८-००
९५	आदि पुराण भा. टी. खुला पत्रा बम्बई	७-००
९६	इतिहास पुराण का अनुशीलन—भट्टाचार्य	१०-००
९७	कल्कि पुराण—भा. टी. पुराना जीर्ण	२-००
२९८	काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा	१८-००
२९९	काशीयात्रा	०-५०
३००	केदारकल्प	४-२०
३०१	केदार खंड—मूल बम्बई	१२-००
३०२	कृष्णस्य शांति प्रयासः	२-००
३०३	कूर्मपुराण मूल काशी	१०-००
३०४	गरुड़ पुराण—सम्पूर्ण मूल बुक साइज	४-००
३०५	गरुडपुराण भा. टी. बरेली	१४-००
३०६	गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा. टी. खुला	३-५०
३०७	गरुड़पुराण—सारोद्धारसंस्कृत टीका	३-००
३०८	देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप	१०-००
३०९	देवी भागवत मूल—गुटका	८-००
३१०	देवी भागवत—भा. टी. खुला पत्रा बम्बई	४८-००
३११	देवी भागवत भा. टी. खुला—काशी	३२-००
३१२	देवीभागवत-भा०टी० बरेली	१४-००
३१३	पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना	३०-००
३१४	पद्मपुराण भा० टी० बरेली	१४-००
३१५	पुराण कथा कौमुदी भाषा	१०-००
३१६	पुराण काव्यस्तोत्र संग्रह	५-००
३१७	पुराणेतिहाससंग्रह	७-५०
३१८	पुराणदिग्दर्शन हिन्दी	१०-००
३१९	पुराण विमर्श-बलदेव उपाध्याय हिन्दी	२०-००
३२०	पुराण संहिता-आलमंदार संहिता आदि	१२-००
३२१	पुराण विषयानुक्रमणिका-राजनीति	१५-००
३२२	पुराणविषयानुक्रमणिका विश्वेश्वरानंद	६-००
३२३	पुराणों में गुजरात-गुजराती	५-००
३२४	प्रेमसुधा सागर भागवत दशम स्कन्ध हिन्दी	४-५०
३२५	प्रेमसागर-भाषा	४-००
३२६	पौराणिक कथाये	२-५०
३२७	ब्रह्मवैवर्तपुराण-मूल बुक साइज पूना २ भाग	१४-२५
३२८	ब्रह्मोत्तर खंड—भा. टी.	४-२०
३२९	भविष्य पुराण—मूल बुक साइज	३०-००
३३०	भविष्य पुराण भा. टी. बरेली	१४-००
३३१	भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई	९-००
३३२	भागवत मूल गुटका गोरखपुर४) स्थूलाक्षर	७-५०
३३३	भागवत-अन्वितार्थ प्रकाशिका काशी	४८-००
३३४	भागवत—सचूर्णिका सं. टीका बम्बई खुला	३०-००
३३५	भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी	२४-००
३३६	भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला	२४-००
३३७	भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक	२४-००
३३८	भागवत-सरस्वती भाषा टीका काशी	३५-००
३३९	भागवत—भा. टी. बुक साइज दो भाग	२०-००
३४०	भागवत १० टीका	३००-००
३४१	भागवत श्लोकानुक्रमणिका	७-००
३४२	भागवत सुधा सागर—केवल भाषा	१०-००
३४३	भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला बम्बई	१२-००
३४४	भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला काशी	८-००
३४५	भागवत-एकादशस्कन्ध भा०टी० खुला	४-८०
३४६	भागवत-एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी	६-५०
३४७	भागवत—राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत	१०-५०
३४८	भागवत कथा—पं. राममूर्ति	११-२५
३४९	भागवत कथा —मेहता	४-००
३५०	भागवतामृत	२-००
३५१	मल्ल पुराण	१०-००
३५२	मत्स्यपुराण—केवल हिन्दी— रामप्रताप	२०-००
३५३	मार्कण्डेय पुराण भा. टी. २ भाग बरेली	१४-००
३५४	मार्कण्डेय पुराण भा. टी. खुला	१८-००
३५५	„ एक अध्ययन	४-५०
३५६	महाभागवत—देवी	३-००
३५७	युगपुराण	२-००
३५८	रामाभ्युदययात्रा	३-५०
३५९	रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराण) मोटा अक्षर	५-१०
३६०	रामाश्वमेध—भाषा	५-५०
३६१	रामाश्वमेध—भा. टी. खुला पत्रा	१३-२०
३६२	ललितोपाख्यान मूल खुला	४-२०
३६३	लेखसंग्रह—स्वा. जी पीतांबरा	४-००
३६४	वामनपुराण—संशोधित संस्करण मूल	१२५-००
३६५	वामन पुराण भा. टी.	५०-००
३६६	वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर	१४-४०
३६७	वायुपुराण-केवल भाषा पं. रामप्रताप शास्त्री	१२-००
३६८	वायुपुराण भा. टी. बरेली	१४-००
३६९	विष्णुधर्मोत्तर पुराण-मूल खुला पत्रा	२१-६०
३७०	विष्णुधर्मोत्तर—तीसरा कांड चित्र प्रकरण	४०-००
३७१	विष्णु पुराण भा. टी. २ भाग बरेली	१४-००

३७२	विष्णुपुराण—भा०टी० गोरखपुर	५-००
३७३	विष्णु पुराण विषयसूची	५-००
३७४	शिवपुराण मूल सम्पूर्ण गुटका	१०-००
३७५	शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई	२४-००
३७६	शिवपुराण मूल खुला पत्रा बंबई	२१-६०
३७७	शिवपुराण भा. टी. गुटका बरेली	१४-००
३७८	शिवपुराण भा. टी. बम्बई खुला पत्रा	६०-००
३७९	शिवपुराण केवल भाषा	१०-००
३८०	शिवभारत—संस्कृत	२-२५
३८१	श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य	९-००
३८२	सुखसागर—मध्यम	१६-००
३८३	सूरसागर—संपूर्ण	१४-४०
३८४	सौर पुराण—मूल पूना	४-५०
३८५	स्कन्द महापुराण बुक साइज मूल (नागर और प्रभास खंड छोड़कर)	९०-००
३८६	हरिवंशपुराण सटीक खुला	२४-००
३८७	हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला काशी	३२-००
३८८	हरिवंश का सांस्कृतिक विवेचन	४-५०
३८९	हरिवंशपुराण भा. टी. बरेली	१४-००
३९०	हरिवंश पुराण—भाषा बंबई	१४-४०
३९१	हरीवंश सटीक बुक साइज	५०-००

रामायण-महाभारत

३९२	अध्यात्मरामायण भा. टी. बम्बई	१२-००
३९३	अध्यात्मरामायण भा. टी. गोरखपुर	४-००
३९४	आनंद रामायण भा. टी.	१६-००
३९५	आर्य संगीत महाभारत	५-५०
३९६	आर्यसंगीत रामायण—भाषा	५-००
३९७	इतिहास गुरु खालस।	६-००
३९८	कम्बर और तुलसी	६-७५
३९९	कम्ब रामायण दो भाग	२०-५०
४००	गर्ग संहिता प्रथम भाग—बुक साइज	१०-००
४०१	गर्ग संहिता—मूल —खुला	१३-२०
४०२	जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला	५-१०
४०३	जैमिनी अश्वमेध—भा. टी. खुला	१३-२०
४०४	जैमिनी अश्वमेध—भाषा	४-२०
४०५	जैमिनी अश्वमेध भा. टी. गोरखपुर	६-००
४०६	नासिकेतोपाख्यान—हिन्दी टीका सहित	१-५०
४०७	बालरामायण—संस्कृत	०-७५
४०८	ब्रजविहार	५-४०
४०९	ब्रजविलास	८-४०
४१०	बृहद्भजनरत्नावली भाषा	४-८०
४११	भक्तमाला—भाषा	१०-००
४१२	भक्तमाला—संस्कृत खुला पत्रा	६-००
४१३	भक्तमाल रामरसिकावली	१४-४०
४१४	भक्तमाल—राघवदास	६-७५
४१५	भजनरामायण	०-५०
४१६	भारत सार—केवल भाषा	८-४०
४१७	मन्त्र रामायण—सटीक गुटका	२-४०
४१८	महाभारत—मूल-संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में	२६-५०
४१९	महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीकासंपूर्ण	३००-००
४२०	महाभारत—शैलेन्द्र	१२-००
४२१	महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध—सातवलेकर	१०-००
४२२	महाभारत—केवल हिन्दी छोटा टाइप १० भाग	२०-००
४२३	महाभारत सटीक विराटपर्व	१०-००
४२४	महाभारत नामानुक्रमणिका	३-५०
४२५	महाभारत—उद्योगपर्व सटीक	२०-००
४२६	महाभारत कोष दो भाग	४०-००
४२७	मूल रामायण—शीलनिरूपणाध्याय सं. हि.	०-७५
४२८	राधामाधवचिन्तन	५-००
४२९	रामकथा—फा. बुल्के, उत्पत्ति, विकास	२०-००
४३०	रामचरितमानस मूल काशीराज	६-५०
४३१	रामचरितमानस मूल गुटका	०-९०
४३२	,, भा. टी. गोरखपुर	८-५०
४३३	रामचरितमानस भा. टीका विजया टीका	३०-००
४३४	रामचरितमानस भा. टी. गीता प्रेस	४-५०
४३५	रामचरितमानस की आध्यात्मिक राजनीति	५-००
४३६	रामायणकालीन संस्कृति—हिन्दी	६-००
४३७	रामायण कालीन समाज—हिन्दी	६-००
४३८	रामायण—तुलसी भा. टी. ज्वालाप्रसाद	३०-००
४३९	,, ,, मध्यम	१६-८०
४४०	रामाश्वमेध—मूल खुला पत्रा	५-१०
४४१	रामाश्वमेध—भा. टी. खुला पत्रा बम्बई	१३-२०
४४२	रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक	५-४०
४४३	रास पञ्चाध्यायी भा. टी.	१०-००
४४४	रंगनाथ रामायण	६-५०
४४५	रामायण बालकांड की समालोचना—सातवलेकर	२-००
४४६	वाल्मीकि रामायण—मूल गुटका	९-६०
४४७	वाल्मीकि रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर	२०-४०
४४८	वाल्मीकि रामायण मूल	९-००
४४९	वाल्मीकि रामायण शुद्ध मूल बालकांड	५५-००
४५०	वाल्मीकि अरण्यकांड शुद्ध मूल	५५-००
४५१	,, ,, अयोध्याकांड	११०-००
४५२	,, ,, किष्किन्धाकांड	५५-००
४५३	वाल्मीकि रामायण सुन्दर कांड शुद्ध मूल	५५-००
४५४	वाल्मीकि रामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा	७२-००
४५५	,, बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर	७२-००
४५६	वाल्मीकि रामायण—३ टीका सं. बारीक	६५-००
४५७	वाल्मीकि रामायण—कतक व्या. बाल, अयोध्या, किष्किन्धा, अरण्य कांड	६०-००
४५८	वाल्मीकि रामायण—पं. ज्वालाप्रसाद कृत भा. टी. खुला बम्बई ४८-०० काशी पं रामतेज	४०-००
४५९	वाल्मीकि रामायण—भाषा टीका द्वारका प्रसाद १० भाग	२४-००
४६०	वाल्मीकि रामायण—बालकांड—पं. सातवलेकर	८-००
४६१	वाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर	८-००
४६२	वाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड—सातवलेकर	८-००
४६३	वाल्मीकि रामायण—युद्धकांड २ भाग सातवलेकर	१६-०
४६४	वाल्मीकि रामायण—उत्तरकांड सातवलेकर	८-००
४६५	वाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड—मूल गुटका	२-५०
४६६	वाल्मीकि रामायण—सुन्दर कांड—मूल खुला	५-१०
४६७	वाल्मीकि रा०सुन्दरकांड भा. टी. रामतेज	३-००
४६८	वाल्मीकि रामायण—केवल भाषा मोटा बम्बई	३०-००
४६९	वाल्मीकि रामायण कोष	२०-००
४७०	वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन	१६-००
४७१	विजयादशमी—सातवलेकर	०-५०

४७२ ज्ञानदीपिका—भीष्म पर्व व्याख्या ५–००
४७३ ज्ञानदीपिका—सभापर्व व्याख्या ५–००

व्रत, कथा, महात्म्य आदि

४७४ अनन्त व्रत कथा—भा. टी. ०–५०
४७५ अन्नपूर्णा व्रत कथा—भा. टी. ०–४०
४७६ अक्षय नवमी व्रत कथा—भा. टी. ०–२०
४७७ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा. टी. ०–५०
४७८ एकादशी माहात्म्य—भा. टी. ४–०० ३–००
४७९ एकादशी माहात्म्य केवल भाषा २–००
४८० कृष्ण जन्माष्टमी—भा. टी. ०–५०
४८१ कार्तिक माहात्म्य—भा. टी. ४–००, ३–००
४८२ कार्तिक माहात्म्य—३५ अध्याय क्षेमंकरी ४–५०
४८३ काशी केदार माहात्म्य—भा. टी. ३–००
४८४ गणेश संकट चतुर्थी मूल ०–७५
४८५ गया माहात्म्य—गया पद्धति सहित हिन्दी टीका २–१०
४८६ चन्दनषष्ठी—सूर्यषष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०–५०
४८७ चान्द्रायण व्रत कथा—हिन्दी टीका सहित ०–५०
४८८ चित्रगुप्त व्रतकथा ०–५०
४८९ जीवत्पुत्रिका—व्रतकथा—भा. टी. ०–५०
४९० ज्येष्ठमास माहात्म्य—भा. टी. ३–००
४९१ पुरुषोत्तम माहात्म्य—भा. टी. अधिक मास ४–८०
४९२ पौषमाहात्म्य मूल ०–७५
४९३ फाल्गुणमाहात्म्य मूल १–५०
४९४ बुधाष्टमी व्रतकथा ०–३५
४९५ बहुलाव्रत कथा ०–५०
४९६ बृहस्पतिवारकथा ०–३५
४९७ भीष्मपञ्चक कथा १–५०
४९८ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा. टी. ०–५०
४९९ महालक्ष्मी व्रतकथा—भा. टी. ०–५०
५०० महाशिवरात्रि माहात्म्य—भा. टी. १–००
५०१ माघ माहात्म्य—भा. टी. ४–००
५०२ माघभादों गणेश चतुर्थी ०–५०
५०३ मुक्ताभरण सप्तमी—भा. टी. ०–५०
५०४ रविषष्ठी व्रत कथा—भा. टी. ०–५०
५०५ रामनवमी व्रतकथा ०–५०
५०६ वट सावित्री व्रत कथा—भा. टी. ०–५०
५०७ वामन द्वादशी व्रत कथा ०–५०
५०८ व्यतीपात कथा—भा. टी. ०–५०
५०९ वैशाख माहात्म्य—भा. टी. ४–००
५१० सप्तवार व्रत कथा ०–५०
५११ श्रावण मास माहात्म्य भा. टी. ४–००
५१२ सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०–५०
५१३ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा. टी. ०–७५
५१४ सत्यनारायण—भा. टी. ५ अध्याय ०–६२
५१५ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०–५०
५१६ सोमवती अमावस्या कथा—भा. टी. ०–५०
५१७ सोलह सोमवार कथा ०–६०
५१८ हरितालिकाव्रतकथा ०–५०
५१९ हलषष्ठी व्रतकथा ०–२५

वेदान्त

(शंकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५२० अच्युत लेखमाला—विद्वानों के लेख हिन्दी २–००
५२१ अणुभाष्य सटीक ४५–००
५२२ अद्वैत तत्त्वसुधा दो भाग ५५–००
५२३ अद्वैतदीपिका २ भाग २५–००
५२४ अद्वैत पंचरत्न ०–५६
५२५ अद्वैतरत्नरक्षण—मधुसूदन ०–७५
५२६ अद्वैतरत्नाकर ०–७०
५२७ अद्वैत विद्यातिलक १–२५
५२८ अद्वैत वेदान्तविद २–००
५२९ अद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रह ०–७५
५३० अद्वैतसिद्धि—(मधुसूदन सरस्वती) सटीक ३०–००
५३१ अद्वैतसिद्धि सिद्धान्तसार ९–००
५३२ अद्वैतामोद—वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३–००
५३३ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०–४५
५३४ अध्यात्म विकास १–५०
५३५ अध्यात्मविद्योपदेश ०–५०
५३६ अनुभव प्रकाश—(बनानाथकृत) हिन्दी पद्यों में २–२५
५३७ अपरोक्षानुभूति—भा. टी. बम्बई ०–९०
५३८ अपरोक्षानुभूति—हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०–२५
५३९ अभिलाष सागर—भाषा ४–८०
५४० आत्मतत्त्व विवेक नारायणी १५–००
५४१ आत्मतत्त्वविवेक—शंकरमिश्र १८–००
५४२ आत्मप्रबोध १–५०
५४३ आत्मबोध प्रकरण—दिनेशचन्द्र ५–६२
५४४ आत्मबोध—(शंकराचार्य) अन्वय—भाषार्थसहित ०–६०
५४५ आनन्दामृत वर्षिणी—स्वामी आनन्दगिरि भाषा २–४०
५४६ आभोग-कल्पतरु व्याख्या २०–००
५४७ ओंकारमहिमाप्रकाश—(ऊंकार सेवर्षाक्षर) १–५०
५४८ उपदेश साहस्री—(शंकराचार्य प्रणीत) भा. टी. २–००
५४९ उपदेशसाहस्री सटीक ४–००
५५० उपासना ०–७५
५५१ कायपरिशुद्धि—वासुदेव शास्त्री प्रणीत २–००
५५२ कौशल्यगीतावली २ भाग १–२५
५५३ क्रियासार—नीलकण्ठ ३ भाग १८–५०
५५४ क्रम दीपिका—केशव भट्ट ९–००
५५५ खंडन खण्ड खाद्य—भा. टी. ८–००
५५६ ख्याले फकीर १०–००
५५७ गूढार्थ दीपिका १२–००
५५८ गोविन्दाष्टक ०–३०
५५९ चतुर्विंशत्युपनिषत्सारसंग्रह भाषा ४–८०
५६० चंद्रकान्त—(वेदान्त) भाषा ३ भागों में ३०–००
५६१ चैतन्य चरितावली—५ भाग सचित्र ५–६५
५६२ जयतीर्थस्तुति १–७५
५६३ जीवन्मुक्तिविवेक—मराठी ८–००
५६४ ढाई हजार अनमोल मोल—हिन्दी १–२०
५६५ तत्त्वचिन्तामणि—भा. टी. जयदयाल ६–७०
५६६ तत्त्वदीपन २४–००
५६७ तत्त्वप्रकाशिका व्याख्या १५–००
५६८ तत्त्वबोध शंकराचार्य भा. टी. ०–६०
५६९ तत्त्व सन्दर्भ—भा. टी. १–५०
५७० तत्त्वसार—सव्याख्या ६–००
५७१ दहरविद्याप्रकाश ०–७५
५७२ दासबोध—भाषा ३–५०

५७३ दृष्टान्तदर्पण भाषा २-५०
५७४ दृष्टान्त दीपक २-००
५७५ दृष्टान्त मंजूषा-भाषा स्वा. परमानन्द २-४०
५७६ दृष्टान्तसागर १०-५०
५७७ द्वैतनिर्णय सिद्धान्तसंग्रह १-००
५७८ नयद्युमणि मेघनादनी ९-७५
५७९ नवधा भक्ति-हिन्दी ०-१५
५८० नारदभक्तिसूत्र १-००
५८१ न्यायचंद्रिका-स्वरूपानन्द १८-७५
५८२ नैष्कर्म्य सिद्धि--मराठी टीका २-००
५८३ न्यायभास्करखंडन ३-००
५८४ न्यायरत्नदीपावली ११-२५
५८५ पंचकोशविवेक १-५०
५८६ पंचदशी पीतांबरी भा. टी. ८-००
५८७ पंचदशी--सटीक ४-८०, ६-५०
५८८ पंचपादिका विवरण सटीक २८-७५
५८९ पंचप्रक्रिया--सर्वस्व २-९१
५९० पंचीकरण सटीक ३-००
५९१ पंचीकरण--केवल भाषा ३-००
५९२ पद्यावली--रूपगोस्वामी २-६०
५९३ परतत्त्वभ्रमनिरासनक्षत्रमाला १-२५
५९४ परमार्थ भूषण २५-००
५९५ परमार्थसार ०-५०
५९६ पक्षपात रहित-अनुभव प्रकाश स्वा. विशुद्धानन्द ९-६०
५९७ पारसमणि पारस भाग का सरल हिन्दी अनुवाद ६-००
५९८ पूजातत्व--म. म. गोपीनाथ ४-००
५९९ प्रकरणपञ्चक-श्री शंकराचार्य भा. टी. ०-७५
६०० प्रकटार्थ विवरण दूसरा भाग ७-८८
६०१ प्रणवकल्प--(स्कन्दपुराणान्तर्गत) ३-००
६०२ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि-सदानन्द व्यासकृत ५-००
६०३ प्रस्थान भेद-मधुसूदन सरस्वती कृत ०-२५, ०-३१
६०४ प्रपन्नपरिजात ३-४०
६०५ प्रस्थानरत्नाकर--पुरुषोत्तम ६-००
६०६ प्रश्नोत्तरसागर --योगानन्द ४-००
६०७ प्राणतत्त्व १-५०
६०८ प्रेमपत्तन--चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १-२५
६०९ प्रेमयोग--वियोगी हरि हिन्दी १-९०
६१० प्रेमदर्शन-भा. टी. (भक्तिसूत्र) ०-९०
६११ बोधसार--नरहरि ३०-००
६१२ बोधसार--भाषा १०-००
६१३ बृहदारण्यकवार्त्तिकसार सटीक २०-००
६१४ बृहदारण्यकवार्त्तिकसार--भा. टी. दो भाग १२-००
६१५ ब्रह्ममीमांसाभाष्य-(निम्बार्काचार्य) ३-००
६१६ ब्रह्मवाद संग्रह--शुद्धाद्वैत भा. टी. २-००
६१७ ब्रह्म सिद्धान्त-पं. मधुसूदन १२-००
६१८ ब्रह्मसिद्धि व्याख्या भावशुद्धि २४-००
६१९ ब्रह्मसूत्र--शांकरभाष्य ३-५०
६२० ब्रह्मसूत्र-शांकरभाष्य, रत्नप्रभा,भामती न्याय२४-००
६२१ ब्रह्मसूत्र-भामती कल्पतरु परिमल ३५-००
६२२ ब्रह्मसूत्र--कल्पतरु परिमल चतुस्सूत्री ६-५०
६२३ ब्रह्मसूत्र भाष्यसिद्धान्त ब्रह्मयोग २-५०
६२४ ब्रह्मसूत्र-ब्रह्मतत्त्वविमर्शनी हिन्दी चतुस्सूत्री २-५०
६२५ ब्रह्मसूत्रवृत्ति--मरीचिका ६-००
६२६ ब्रह्मसूत्र चतुस्सूत्री विश्वेश्वर ५-००
६२७ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य मूल बंबई ८-००
६२८ ब्रह्मसूत्र--देवाचार्य ९-००
६२९ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति-श्री रामानन्दप्रणीत १-२५
६३० ब्रह्मसूत्रवृत्ति---मिताक्षरा ७-००
६३१ ब्रह्मसूत्रवृत्ति-शंकर प्रणीत अद्वैत मंजरी १-००
६३२ ब्रह्मसूत्र-शाकर भाष्यार्थरत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत६-७५
६३३ ब्रह्मसूत्रवृत्ति--हरिदीक्षित कृत ३-७५
६३४ ब्रह्मसूत्र भा. टी. दो भाग हनुमानदास ३०-००
६३५ ब्रह्मसूत्र-शांकर भाष्य भाषानुवाद १०-००
६३६ ब्रह्मसूत्र-मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६-००
६३७ ब्रह्मसूत्र--विद्योदय उदयवीर भा. टी. २०-००
६३८ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्यआनंदगिरिकेवलदूसराभाग९-००
६३९ ब्रह्मसूत्र--शंकरभाष्य सत्यानन्द भा. टी. १६-००
६४० ब्रह्मसूत्रवृत्ति ब्रजनाथ ५-००
६४१ ब्रह्मसूत्र दीपिका ६-००
६४२ ब्रह्मसूत्र--सुषमा हनुमानदास ४-००
६४३ ब्रह्मसूत्र द्वैताद्वैतदर्शन ९-००
६४४ ब्रह्मसूत्र भूमिका श्री गोपीनाथ १-००
६४५ ब्रह्मसूत्र और वैष्णवभाष्य १-२५
६४६ ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव भाष्यों का
तुलनात्मक अध्ययन १०-००
६४७ ब्रह्मसूत्रसिद्धांतमुक्तावली ३-७५
६४८ ब्रह्मसंकीर्त्तन-डोंगरीवेदान्त ८-२५
६४९ बोधैक्यसिद्धि--अच्युतराय सटीक ६-००
६५० भक्तिचंद्रिका १०-२४
३५० (क) भक्तिदर्शन १-५०
६५१ भक्ति चन्द्रिका-शांडिल्य सूत्र व्या० दूसरा १-५०
६५२ भक्ति चन्द्रिका-भाषा पद्यात्मक-गणेशसिंह १-००
६५३ भक्ति निर्णय-(अनन्तदेव) तथा नाम माहात्म्य ०-६२
६५४ भक्तिप्रकाश-पौराणिक-भा. टी. गोपालदास २-४०
६५५ भक्त्यधिकरण माला-(नारायण तीर्थकृत) १-२५
६५६ भक्तिरसामृतसिन्धु-भा. टी. २५-००
६५७ भक्ति रसायन भा. टी. ३-००
६५८ भवरोग की रामबाण दवा ०-३५
६५९ भगवच्चरणोत्प्रेक्षा २-००
६६० भगवद्रामानुज ग्रन्थमाला २०-००
६६१ भगवन्नाम कौमुदी-लक्ष्मीधर कृत-प्रकाशटीका ०-७५
६६२ भगवन्नाम माहात्म्य-(रघुनाथ यति) सटीक २-७५
६६३ भावरसामृत-बोधप्रकाश स्वा. गुलाबसिंह ०-७०
६६४ भेदरत्न १-५०
६६५ मणिरत्नमाला भा. टी. ३-००
६६६ मध्वतन्त्र मुख मर्दन-अप्पय दीक्षित विरचित २-५०
६६७ मध्वतन्त्रमुखमर्दन अप्पय दीक्षित कृत १-५०
६६८ मध्व मुखालंकार-वनमालि मिश्र विरचित -५०
६६९ मध्व मंत्र रत्नाकर-टी. आर. कृष्णाचार्य ६-२५
६७० महावाक्य १-५०
६७१ महावाक्यरत्नावली-- ०-५०
६७२ महावाक्यविवरण-भा. टी. १-३५
६७३ यतीन्द्रमत दीपिका-श्रीनिवासदास प्रकाश व्या. स. २-०
६७४ यतीन्द्र दीपिका---सटिप्पण ०-५५
६७५ युक्तिप्रकाश भाषा २-०
६७६ योगवासिष्ठ-भा. टी. चतुर्थ १०) पांचवां ८-०
६७७ योगवासिष्ठ-मराठी प्रथम भाग ७-०
६७८ योगवासिष्ठ कथा १५-०
६७९ लघुयोगवासिष्ठ-वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित १०
६८० लोक परलोक सुधार-भाषा ५ भाग २-७
६८१ वाक्यवृत्ति-शंकराचार्यप्रणीत-विश्वेश्वर टी. ०-७

६८२ वाक्यवृत्ति भा. टी. १–१२
६८३ वाक्यसुधा—भा. टी. १–५०
६८४ विचारचन्द्रोदय–पीताम्बरी भाषा बम्बई ३–६०
६८५ विचारचन्द्रोदय–स्वा. निगमानन्द सरल हिन्दी २–००
६८६ विचार माला–स्वा. गोविन्द दास सटीक २–६०
६८७ विचारसागर—निगमानन्द ७–५०
६८८ विचारसागर–संस्कृत में १५–००
६८९ विचारसागर–पीतांबरी १२–००
६९० विद्वन्मंडन ७–५०
६९१ विवरणप्रमेयसंग्रह–(विद्यारण्य) हिन्दी टीका ६–५०
६९२ विवरणोपन्यास—रामानन्द ६–००
६९३ विवरणादि प्रस्थान विमर्श १–००
६९४ विवेकचूडामणि ०–४०
६९५ विवेक चिन्तामणि–मराठी ६–७५
६९६ विवेकमकरन्द–वासुदेव यतीन्द्र ३–००
६९७ विषवाक्य दीपिका ६–००
६९८ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०–२५
६९९ विशिष्टाद्वैताधिकरण माला–पं. सुदर्शनाचार्य १–००
७०० विष्णु तत्त्व दीपिका २–२५
७०१ वेदान्त कल्पलतिका ५–००
७०२ वेदान्त कौमुदी–रामाद्वयाचार्य प्रणीत १३–५०
७०३ वेदान्त छन्दावली–५ भाग—भोले बाबा हिन्दी ३–५०
७०४ वेदान्तदर्शन भा. टी. २–५०
७०५ वेदान्तदर्शन—भा. टी. श्रीराम शर्मा ४–००
७०६ वेदान्तदीपिका २–५०
७०७ वेदान्ततत्त्वविवेक—नृसिंहाश्रम १७–००
७०८ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५–००
७०९ वेदान्तडिण्डिम ०–७५
७१० वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९–००
७११ वेदान्तप्रदीप ७–५०
७१२ वेदान्तप्रदीपिका २–४०
७१३ वेदान्त परिभाषा सटीक ३–००
७१४ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४–००
७१५ वेदान्तपरिभाषा—हिन्दी टीका १०–००
७१६ वेदान्त प्रबोध २–००
७१७ वेदान्त रत्न मंजूषा—पुषोत्तमाचार्य ६–००
७१८ वेदान्तरत्नावली भाषा ०–५०
७१९ वेदान्तरहस्य भाषा १–००
७२० वेदान्तसार–जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
७२१ वेदान्तसार भा. टी. रेन्द्र २–५०
७२२ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २–५०
७२३ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह–वनमाली कृत ९–००
७२४ वेदान्त सूत्र मुक्तावलि–ब्रह्मानंद सरस्वती–पूना ३–५०
७२५ वेदान्त संज्ञा—भा. टी. १–००
७२६ वेदान्तस्तोत्र संग्रह १–००
७२७ वेदार्थसंग्रह ५–५०
७२८ वैयासिक न्यायमाला ४–००
७२९ वृत्ति प्रभाकर–स्वा. आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६–००
७३० शंकरदिग्विजय भा. टी. १३–५०
७३१ शांकरग्रन्थावलि–६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६–५०
७३२ शांकरग्रन्थावलि—दशोपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा भगवद्गीता ३ भाग में ११–७५
७३३ शांकर पादभूषण–रघुनाथ सूरि–दो भाग १२–५०
७३४ शंकराचार्यकृत–प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२–५०
७३५ शिवतत्त्वरत्नाकर ११–००
७३६ शिवस्तोत्रावली भा. टी. १०–००
७३७ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड ५–००
७३८ श्रीभाष्य—सटीक संपूर्ण २८–१२
७३९ श्रीभाष्य प्रकाशिका–श्री निवासाचार्य ६–५०
७४० श्रीभाष्यवार्तिक ६–००
७४१ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९–००
७४२ श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर ४–२०
७४३ श्रुत्यन्त कल्पवल्ली—पुषोत्तमदास ६–००
७४४ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ९–००
७४५ संक्षेप शारीरिक–अन्वयार्थ कालिका व्याख्या १३–००
७४६ संक्षेप शारीरिक–सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ १३–५०
७४७ सदाचार १–१२
७४८ सनत्सुजातीय–शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक २–००
७४९ सनत्सुजातीय भा. टी. २–५०
७५० सन्तवचनामृत १–२५
७५१ साधनसम्पदा २–००
७५२ साधन संग्राम—भागीरथ जी ६–५०
७५३ साधनापथ—शिवोमप्रकाश १–००
७५४ सत्संग के बिखरे मोती–भाषा ०–९०
७५५ स्तुतिकुसुमांजलि भा. टी. १५–००
७५६ सारुक्तावली—(भाषा) ०–३५, ०–७५
७५७ सिद्धान्तकल्पवल्ली ०–७५
७५८ सिद्धान्तदर्शन–विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जन-भाष्य २–००
७५९ सिद्धान्त बिंदु–वासुदेव अभ्यंकर सं. टी. ७–००
७६० सिद्धान्तसिद्धाञ्जन-रत्नतूलिका सहित १७–००
७६१ सुन्दर विलास बम्बई ३–२०
७६२ सूतसंहिता—तात्पर्य दीपिका सहित ९–००
७६३ सूतसंहिता ३ भाग १७–२५
७६४ सूत्रार्थामृतलहरी ३–२५
७६५ स्वानंदानुभव ०–६२
७६६ स्वानुभवादर्श ६–००
७६७ हरिभक्ति रसामृतसिन्धु भा. टी ९–५०
७६८ हरिहराद्वैत भूषण ६–६२
७६९ ज्ञानमाला–भाषा ०–४०
७७० ज्ञान वैराग्यछन्दावली २–२५
७७१ ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वा. परमानंद भाषा २–४०

तंत्र-मंत्र

७७२ अनुष्ठान प्रकाश चतुर्थीलाल विरचित खुला १४–४०
७७३ अक्षयवट ०–५०
७७४ अष्टसिद्धि–हिन्दी टीका सहित १–६०
७७५ इन्द्रजाल भाषा ४–८०
७७६ उच्छिष्ट गणपति २–१०
७७७ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १–७५
७७८ उड्डीश तन्त्र–भाषा टीका १–००
७७९ उपदेशमुक्तावली ६–५०
७८० कर्पूरादिस्तोत्र–सटीक ८–००
७८१ कामकला विलास–पुण्यानन्द विरचित सटीक १–२५
७८२ ककारादि कृष्णसहस्रनाम १–००
७८३ कामधेनुतन्त्र २–५०
७८४ कालीतन्त्र २–००

७८५ कुलाणर्वतंत्र	३-५०
७८६ कौलोपनिषद्	४-५०
७८७ क्रमदीपिका-केशव भट्ट कृत काशी	९-००
७८८ क्रियोड्डीशतंत्र	१-५०
७८८क गायत्री तत्त्व विमर्श वेदान्त	२-००
७८९ गायत्री तन्त्र-भाषभाष्य समेत	१-००
७९० गायत्रीरहस्य	४-५०
७९१ गायत्रीपुरश्चरण	४-००
७९२ गायत्रीपूजापद्धति-(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य	०-२५
७९३ चक्रपूजा के स्तोत्र	१-५०
७९४ चण्डी का विशेष अंक	२०-००
७९५ जयाख्यसंहिता	५०-००
७९६ तत्त्वनिधि-कृष्ण राज संगृहीत बम्बई	८-४०
७९६क तंत्रकौमुदी देवनाथ	८-००
७९७ तन्त्रसार-कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत	३-००
७९८ तंत्रसार संग्रह-(विषनारायणीय) सव्याख्या	१५-२५
७९८क तंत्रसंग्रह नीलकण्ठ	३-४०
७९९ तंत्रालोक-अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में	३९-००
८०० तांत्रिक पंचांग	१-००
८०१ तारिणी पारिजात	४-००
८ २ तोडल तन्त्र	१-५०
८०३ त्रिपुरारहस्य—माहात्म्य खंड	१२-००
८०४ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड	९-००
८०५ त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड हि. टीका	१३-००
८०६ दत्तात्रेय तंत्र—भा. टी.	१-२०
८०७ दुर्गा पञ्चाङ्ग-मूल-मातृप्रसाद पाण्डेय	१-२५
८०८ दुर्गा सप्तशती-गुटका-मूल	०-७५
८·९ दुर्गा सप्तशती-गुटका निर्णयसागर	३-००
८१० दुर्गा-गीता प्रेस भा. टी.	१-००
८११ दुर्गा सप्तशती-पत्रात्मक	२-७०
८१२ दुर्गा सप्तशती-मूल बम्बई खुला ३-५० जिल्द	४-००
८१३ दुर्गा सप्तशती-भाषा टीका सहित ३-००,	२-५०
८१४ दुर्गा सप्तशती-पंडित रामेश्वर भाषा टीका	२-४०
८१५ दुर्गा शान्तनवी सं. टीका खुला	३-६०
८१६ धनप्राप्ति के प्रयोग	१-५०
८१७ धन्वन्तरी तंत्रशिक्षा-हिन्दी टीका सहित	३-००
८१८ नित्यषोडशिकार्णव तंत्र	२५-००
८१९ निरुत्तरतंत्र	३-००
८१९क निर्वाण तंत्र	२-००
८२० नीलतन्त्र	२-००
८२१ नेत्रतंत्र-क्षेमराज कृत व्याख्या दो भाग	६-५०
८२२ परमसंहिता	१५-००
८२३ परशुरामतंत्र	१-००
८२४ परातंत्र	२-००
८२५ परायणविधि	२-००
८२६ पुरश्चरणपद्धति	१-५०
८२७ प्रपंचसार संग्रह दो भाग	३९-००
८२७क पंचमकार तथा भावत्रय	४-००
८२८ बटुकभैरवोपासनाध्याय-मूल खुला पत्रा	३-६०
८२९ बृहत् इंद्रजाल बड़ा १०-५० तथा	४-८०
८३० बगुलामुखी रहस्य	४-५०
८३०क भगवती गीत	५-००
८३१ भुवनेश्वरी रहस्य	३-००
८३१क भैरवोपदेश	३-५०
८३२ महामृत्युञ्जय जपविधि-भा. टी.	०-५०
८३३ महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग-मातृप्रसाद पाण्डेय	१-२५
८३४ भैरवीचक्र पूजन	१-००
८३५ मातृ उपासना	२-५०
८३६ महात्रिपुरासुन्दरीपूजाकल्प	१-२५
८३६क मातृका भेद	२-५०
८३७ मातृका भेद तंत्र संस्कृत	१२-००
८३८ मंत्रकोश	२-००
८३९ मंत्रकौमुदी-देवनाथ मूल	६-००
८४० मंत्रमहोदधि-सटीक खुला	१०-८०
८४१ मंत्ररामायण-सटीक	२-४०
८४२ मंत्र और मातृकाओं का रहस्य	१६-००
८४३ मंत्र सिद्धि का उपाय	२-५०
८४४ मंत्रविद्या	१-८०
८४५ मालिनी विजय तन्त्र-आगम शास्त्र	३-५०
८४६ माहेश्वर तन्त्र-श्री कृष्णप्रियाचार्य	९-००
८४६क मुद्राएं एवं उपचार	२-००
८४६ख मुमुक्षु मार्ग	२-००
८४७ मृगेन्द्रतन्त्र-विद्यापाद-योगपाद व्याख्या	३-००
८४८ मृगेन्द्रागम	१८-००
८४९ यंत्रचिन्तामणि	१-६०
८५० योगिनीतन्त्र-हिन्दी टीका सहित	८-५०
८५१ योगिनीहृदय-दीपिका व्याख्या	१०-००
८५२ रौरव आगम	१८-००
८५३ रुद्रयाम ऌतंत्र	१-२०
८५४ ललित सहस्रनाम--मूल मात्र बम्बई	०-५०
८५५ ललितस्तवमणिमाला-बम्बई	०-७५
८५६ लक्ष्मीतन्त्र-पाञ्चरात्र	३०-००
८५७ वंध्यातंत्र	०-५५
८५८ वामकेश्वरीमत विवरण-जयरथ कृत	१-००
८५८ वाममार्ग	४-००
८५८क वारिवास्य रहस्य	१५-००
८५९ वैदिक नवरात्र पूजापद्धति	१-००
८६० वैदिक श्री बगुला पूजा पद्धति	२-००
८६१ शतचण्डीविधान	३-७५
८६२ शाक्तदर्शन	३-००
८६३ शारदा तिलक सटीक	१५-००
८६४ शैव मनोरंजनी	१-००
८६५ श्रीकमलास्तव मंजरी	२-००
८६५क श्री कल्प द्रुम	५-५०
८६५ख श्री कमला नित्यार्चन	३-००
८६५ग श्री काली नित्यार्चन	४-००
८६५घ श्री काली स्वरूप तत्व	२-००
८६५ङ श्री काली स्तव मञ्जरी	३-५०
८६५च श्री छिन्नमाता नित्यार्चन	२-००
८६५छ श्री तारा स्वरूप तत्व	२-००
८६६ श्री तारा नित्यार्चन	३-००
८६६क श्री तारास्तव मञ्जरी	२-५०
८६७ श्रीदुर्गा नित्यार्चन	३-००
८६८ श्रीदुर्गास्तव मंजरी	२-५०
८६९ श्रीनारायणस्वरूप तत्व	२-००
८७० श्रीनाथादिगुरुत्रय	३-५०
८७१ श्रीबगुला नित्यार्चन	२-००
८७२ श्रीबाला नित्यार्चन	४-००

८७३ श्रीबालास्तवमंजरी २–५०
८७४ श्री भुवनेश्वरी नित्यार्चन ४–००
८७५ श्रीललिता नित्यार्चन ४–००
८७५क श्रीविद्या खड्गमाला १) हि, टीका ४–००
८७६ श्रीविद्या नित्याह्निकम् ५–७५
८७७ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी ३–४०
८७८ श्रीविद्यास्तवमंजरी ४–५०
८७९ श्रीविद्यासपर्यापद्धति ६–२५
८७९क श्री विद्या नित्यार्चन ५–५०
८८० श्री विद्यार्णव प्रथम भाग १५–००
८८०क श्रीश्यामापूजा पद्धति ३–००
८८१ श्रीश्यामासपर्यावासना ४–५०
८८२ श्रीत्रिपुरामहोपनिषद् १–५०
८८३ षट्चक्रनिरूपण ०–७५
८८३क श्री षोडशी नित्यार्चन ४–००
८८४ सप्तशती मीमांसा २–५०
८८५ सप्तशती रहस्य ३–५०
८८६ सविधिबापदुद्धार बटुक भैरव ०–७५
८८७ सविधि काली कर्पूरस्तव १–००
८८८ सात्वत तंत्र ३–००
८८९ सार्थ सौन्दर्य लहरी ५–५०
८९० सावरि तन्त्र–(सेवड़े का जादू) भाषा ३–००
८९०क सार व्यापन तंत्र ३–००
८९०ख साधक संवाद ४–५०
८९०ग संतान सुख प्राप्ति के प्रयोग १–००
८९१ स्वच्छन्दतंत्र–क्षेमराज कृतव्याख्या। सातभाग १६–५०
८९२ सोमशम्भुपद्धति २५–००
८९३ सौन्दर्य लहरी–स्वा. विष्णुतीर्थ कृतहिन्दी ५–००
८९४ सौन्दर्य लहरी–अंग्रेजी अनु.सचित्र अमरीका५५–२४
८९५ सौन्दर्यलहरी (आनंद लहरी) २–२५
८९६ सौभाग्य लक्ष्मी–भाषा टीका सहित १–३०
८९७ संक्षिप्त तान्त्रिक आह्निक ४–५०
८९८ हंसविलास–हंसमिट्टू कृत १२–००
८९९ हि. कौलावलीनिर्णय ५–००
९०० हि. तन्त्रसार ३ भाग ८–००
९०१ हि. शाक्तनंद तरंगिणी ३–५०
९०२ ज्ञानार्णव तंत्र–मूलमात्र पूना २–००
९०३ ज्ञानसंकलिनी तंत्र १–५०

स्तोत्र

९०४ अन्नपूर्णा स्तोत्र ०–१५
९०५ अपराजिता स्तोत्र ०–२०
९०६ आदित्य हृदय ०–६०
९०७ आदित्यहृदय–मोटा अक्षर सूर्यकवच ०–८०
९०८ आदित्यहृदय–छोटा अक्षर ०–३४
९०९ आदित्यहृदय–नवग्रहसहित ०–९०
९१० आनन्दलहरी स्तोत्र—डिण्डिमभाष्य, सटीक २–२५
९११ आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तोत्र ०–२०
९१२ आरतीसंग्रह–भाषा ०–२५
९१३ आलबंदार स्तोत्र ०–१५
९१४ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०–१०
९१५ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०–१५
९१६ कपूरस्तवराज ०–४०
९१७ कर्पूरस्तवराज–(महाकाल) सटीक ८–००
९१८ कंठाभरण हिं. अनु. ०–५०
९१९ कमलनेत्र स्तोत्र ०–१५
९२० कालिकासहस्रनाम ०–६०
९२१ कालीकवच ०–१०
९२२ कुञ्जिकास्तोत्र ०–४०
९२३ गंगालहरी–मूल ०–१५
९२४ गंगालहरी ०–२५
९२५ गंगालहरी–पीयूषलहरी सं. टीका १–००
९२६ गंगालहरी–भाषा टीका ०–४०
९२७ गजेन्द्रमोक्ष–भाषा टीका ०–२५
९२८ गणपतिस्तोत्र–गणेशमहिम्न ०–२०
९२९ गणेशकवच ०–२०
९३० गणेशमहिम्न स्तोत्र ०–१०
९३१ गणेशसहस्रनातोत्र १–२५
९३२ गणेशसहस्रनमसटीक ०–७०
९३३ गणेशाष्टकामावली ०–०६
९३४ गायत्री रामायण ०–१०
९३५ गायत्री स्तोत्र ०–१५
९३६ गोपाल सहस्रनाम–मूल ०–५०, ०–७५
९३७ गोपाल सहस्रनाम–भा. टी. १–००
९३८ गोपाल सहस्रनामावली ०–५०
९३९ चर्पटपंजरी ०–१५, भा. टी. योगानन्द १–५०
९४० चतुःश्लोकी भागवत ०–१३
९४१ तुलसी कवच ०–२०
९४२ दत्तात्रेय सहस्रनामावली ०–६०
९४३ दत्तात्रेयसहस्रनाम० ०–६०
९४४ दत्तात्रेयस्तोत्र ०–२०
९४५ दक्षिणामूर्तिस्तोत्र ०–१५
९४६ देवीपुष्पांजली स्तोत्र ०–१२
९४७ देवीसहस्रनाम ०–५०
९४८ देवी सहस्रनामावली ०–६०
९४८क देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र ०–१५
९४९ दुर्गाकवच ०–२५
९५० नर्मदाष्टक ०–१०
९५१ नवग्रह स्तोत्र ०–२५
९५२ नृसिंहसहस्र नाम ०–६०
९५३ नवग्रहस्तोत्र–यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित १–००
९५४ नारायण कवच ०–२५
९५५ बगुलामुखी स्तोत्र ०–१५
९५६ ब्रह्मज्ञानावली ०–०६
९५७ बटुक भैरव सहस्रनाम ०–५६
९५८ बृहत्स्तोत्र रत्नाकर–मोटा अक्षर काशी ४, ४–५०
९५९ ,, ,, बम्बई ४–२०
९६० बृहत्स्तोत्र रत्नाकर सचित्र गुटका केवल दो भाग ८–००
९६१ भवानीसहस्रनाम –भुवनेश्वरी स्तोत्र ०–६०
९६२ भुवनेश्वरी महास्तोत्र ३–७५
९६३ मृत्संजीवनी ०–३०
९६४ मृत्युञ्जय स्तोत्र ०–१२
९६५ महाकालशनिमृत्युञ्जय ०–२०
९६६ महामृत्यंजयजप ०–२५
९६७ महालक्ष्मीस्तोत्र ०–५०, ०–२०
९६८ महालक्ष्मीकवच ०–१०

९६९ महिम्नस्तोत्र—मधुसूदनी टीका ०—७५, ०—६०
९७० राम महिम्न ०—२०
९७१ राम सहस्रनाम ०—२५
९७२ रामस्तवराज ०—४०
९७३ रामरक्षास्तोत्र ०—१५
९७४ रामपटल ०—६०
९७५ राधिकासहस्रनाम ०—१२
९७६ रेणुकासहस्रनाम ०—३५
९७७ ललितासहस्रनाम स्तोत्र ०—७५, ०—५०
९७८ ललितास्तवर्मणिमाला ०—५०
९७९ लक्ष्मीनारायणहृदय ०—७५
९८० लक्ष्मीस्तोत्र ०—१५
९८१ लक्ष्मी सहस्रनाम ०—३५
९८२ विष्णु सहस्रनाम मूल ०—१५, ०—६०, ०—४४
९८३ „ नामावली ०—७०, ०—५०
९८४ „ भा. टी. १—००
९८५ वेंकटेश्वराष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र ०—१०
९८६ शनिस्तोत्र ०—१५
९८७ शिवकवच ०—४०
९८८ शिवस्तोत्र ०—१५
९८९ शिवस्तोत्रावली भा. टी. १०—००
९९० शिवताण्डव स्तोत्र ०—२०
९९१ शिवताण्डव भाषा टीका ०—२०
९९२ शिवापराधक्षमापन स्तोत्र ०—२०
९९३ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०—३०
९९४ „ „ भाषाटीका ०—२०
९९५ शिवसहस्रनाम मूल ०—५०, ०—६५
९९६ शिवसहस्रनाम भा. टी. ०—६०
९९७ शिवसहस्रनामावली ०—५०
९९८ शीतलाष्टक ०—१०
९९९ संतानगोपालस्तोत्र ०—२५
१००० सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०—१५
१००१ सीतासहस्रनाम ०—१०
१००२ सूर्यद्वादशस्तवी ०—२०
१००३ स्तोत्रार्णव २०—३०
१००४ स्तोत्ररत्नावली ०—५०
१००५ स्तवसार्वभौम ०—२५
१००६ स्तोत्रसमाहार ३—५०
१००७ सूर्यकवच ०—१२
१००७क सूर्यसहस्र नामावली ०—७५
१००८ख हनुमत्कवच ०—२५
१००८ हनुमान चालीसा ०—२०
१००९ हनुमत्सहस्रनाम ०—२०
१०१० हरिहरस्तोत्र २—००

अच्युत ग्रन्थमाला

१०११ अच्युत लेख माला—महात्माओं के सुन्दर लेख २—००
१०१२ भगवन्नामकौमुदी—श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं. ०—७५
१०१३ शुल्वसूत्र—(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट) ०—३७
१०१४ खण्डन खण्ड खाद्य हिन्दी टीका सहि. ८—००
१०१५ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—सदानन्द व्यास सटीक ५—००
१०१६ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रंथ २—००
१०१७ परमार्थसार—सटीक ०—५०
१०१८ प्रेमपत्तन—श्री रसिकोत्तमकृत सटीक १—२५
१०१९ काशीकेदारमाहात्म्य—ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत ३—००
१०२० प्रकरणपञ्चक—श्री शंकराचार्य भा. टी. ०—७५
१०२१ विवरण प्रमेय संग्रह—श्रीविद्यारण्यमुनि भा. टी. ६—५०
१०२२ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—श्री सदाशिवेन्द्र ०—७५
१०२३ बृहदारण्यकवार्तिकसार—दो भागों में भा.टी. १२—००
१०२४ षट्सन्दर्भ—तत्त्वसन्दर्भ—व्याख्याद्वयोपेत १—५०
१०२५ योगवासिष्ठ भा. टी. चतुर्थ १०—००, पंचम ८—००
१०२६ भागवत एकादशस्कन्ध भा.टी. दो भाग ६—५०
१०२७ शिवस्तुति—श्री गोकुलनाथ सटीक, हि. टी. ०—६२
१०२८ सिद्धान्तलेशसंग्रह—हिन्दी अनुवाद सहित ६—००
१०२९ स्तुतिकुसुमांजलि—हिन्दी टीका सहित १५—००

ज्योतिष

१०३० अंकविद्या—श्रीगोपेशकुमार ओझा ४—००
अखंडत्रिकालज्ञ ज्योतिष ४—५०
१०३१ अखंडभाग्योदय दर्पण—भगवानदास ३—००
१०३२ अंगविज्जा—प्राकृत भाषा में—मु.पुण्यविजय जी सं. २१—०
१०३३ अर्घ मार्तण्ड—राज ज्योतिषी पं. मुकुन्दवल्लभ जी कुराली वालों की अभूतपूर्व पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित १२—००
१०३४ अर्घप्रकाश—भा. टी. ०—७५
१०३५ अथर्ववेदीय ज्योतिष १—००
१०३६ आर्यभट्टीय—सं. तथा हि. टीका ८—००
१०३७ आर्या सन्तति ०—५०
१०३८ आशुबोध ज्योतिष ०—३८
१०३९ अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञान १३—००
१०४० अहिबल चक्र—हिन्दी टीका सहित ०—२५
१०४१ करण कौस्तुभ—कृष्णदैवज्ञ ०—७५
१०४२ करणप्रकाश ३—००
१०४३ करणोत्तम २—२५
१०४४ करलक्खण—सामुद्रिक—भाषा टीका ०—७५
१०४५ कर्मविपाक—नक्षत्रचरणगत भा० टी० ४—००
१०४६ कालचक्र दी. रामचंद कपूर ३—००
१०४७ कुट्टाकारशिरोमणि—(देवराज) सं. व्याख्या १—००
१०४८ केरलीय प्रश्नरत्न—भाषा टीका १—२०
१०४९ केशवीय जातक पद्धति—भाषा टीका ३—००
१०५० खण्डखाद्यक २—५०
१०५१ खेट कौतुक ०—२५
१०५२ गणकतरंगिणी २—००
१०५३ गणित का इतिहास—व्रजमोहन ९—५०
१०५४ गदावली—चक्रधर ३—००
१०५५ गोल परिभाषा ०—५०
१०५६ गोल दीपिका ३—७५
१०५७ गोलाध्याय—भास्कराचार्य दो भाग पूरा ८—७५
१०५८ गौरीजातक—भाषा टीका ०—६०
१०५९ ग्रहगोचर—भाषा टीका ०—३०
१०६० ग्रहगणित मीमांसा ५—५०
१०६१ ग्रहचारनिबंध १—१२
१०६२ ग्रहण न्याय दीपिका ७—००
१०६३ ग्रहण मण्डन ५—००

१०६४ ग्रहनक्षत्र–त्रिवेणीप्रसाद ४–२५
१०६५ ग्रहरत्नभूषण १–२५
१०६६ ग्रहलाघव–हिन्दी टीका ३–६०, ४–२०
१०६७ ग्रहलाघव करण–मल्लारि सुधाकर द्वि. ६–००
१०६८ ग्रहलाघवसारिणी २–१०
१०६९ चंद्रहस्तविज्ञान–हस्तरेखा पर इससे बढ़िया ग्रन्थ आज तक नहीं छपा २०–००
१०७० चमत्कारचिन्तामणि–भाषा टीका ०–७५
१०७१ चलनकलन प्रश्नोत्तर ०–७५
१०७२ चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द १–५०
१०७३ जन्मपत्र के फार्म (तीन का सेट) ०–१९
१०७४ जन्मपत्रिका बुक फार्म ०–६५
१०७५ जन्मपत्रदीपक १–५०
१०७६ जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका १–२५
१०७७ जयपाहुड–निमित्त शास्त्र–प्राकृत ६–६०
१०७८ जातकचंद्रिका १–५०
१०७९ जातक पारिजात–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १२–००
१०८० जातक शिरोमणि–भाषा टीका ४–२०
१०८१ जातकाभरण–भाषाटीका ६–००, ४–००
१०८२ जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १–००, ०–७५
१०८३ जैन सामुद्रिक–चार ग्रन्थ २०–००
१०८४ जैमिनीय पद्यामृत १–५०
१०८५ जैमिनीय सूत्र–संस्कृत टीका २) हि. टी. १–५०
१०८६ ज्योतिषकल्पद्रुमभाषा ३–२०
१०८७ ज्योतिष की पहुंच १०–००
१०८८ ज्योतिषजगत्–पं. दुर्गादत्त, ज्योतिष सीखने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ २–५०
१०८९ ज्योतिष गणित फलितज्ञान अजीतमल ३–५०
१०९० ज्योतिषतत्त्व विवेक ३–००
१०९१ ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त ०–३०
१०९२ ज्योतिषफल ज्ञानप्रदेश अजीतमल ३–२५
१०९३ ज्योतिषरत्नमाला–संस्कृत १२–००
१०९४ ज्योतिषरत्नाकर–देवकीनंदन प्रथम भागनद १२–००
१०९५ ज्योतिषविज्ञान–विशुद्धानन्द ६–००
१०९६ ज्योतिषविज्ञान १२–००
१०९७ ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्त्व–केदारदत्त ३–००
१०९८ ज्योतिषशास्त्रसोपान २–००
१०९९ ज्योतिष सर्वसंग्रह–भाषा टीका २–५०
१०९९क ज्योतिष सार ३–६०
११०० ज्योतिष सिद्धान्तसंग्रह–संस्कृत ६–००
११०१ ज्योतिर्विज्ञानम्–संस्कृत ९–००
११०२ ताजिकनीलकंठी–सं. टीका खुला २–५०
११०३ ताजिक नीलकंठी–भाषा टीका ४–२०
११०४ तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका ०–५०
११०५ तिथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ ०–८७
११०६ तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम १–५०
११०७ दयाविलास–महन्त दयाराम जी ४–००
११०८ दशवर्षीय पंचांग ९–००
११०९ दीपिका–शुद्धदीपिका–भाषा टीका ४–२०
१११० देवकेरलम् ३ भाग २३–७५
११११ दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका १–००
१११२ दैवज्ञाभरणम्–संस्कृत ६–२५
१११३ द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा. टी. ०–१२
१११४ दृक्सिद्ध पंचांग निर्माण पद्धति ६–००
१११५ दृग्गणित (परमेश्वर) ६–००
१११६ धराचक्र–भाषा टीका ०–३५
१११७ धराभ्रम—सुधाकर द्वि. ०–३७
१११८ नरपतिजयचर्या सं. टीका ५–२५
१११९ नन्दिदत्त पंचविंशतिका ०–१३
११२० नाड़ीमान विवाह पटल ०–५०
११२१ पद्मकोश–भाषा टीका ०–५०
११२२ पद्मपंचाशिका ०–६०
११२३ परमसिद्धान्त ज्योतिष ८–४०
११२४ पत्रीमार्ग प्रदीपिका–वर्षदीपक २–७०
११२५ परवलयक्षेत्र ०–५०
११२६ पल्लीपवन कारिका ०–२५
११२७ पंचांगमंजूषा–भाषा टीका १–७०
११२८ पंचांगविज्ञान ०–५०
११२९ पंचवर्षीय मानवपंचांग ३–००
११३० पंचस्वरा १–७५
११३१ प्रतिभाबोधक ०–६५
११३२ प्रश्नचण्डेश्वर–भाषा टीका १–५०
११३३ प्रश्नज्ञानप्रदीप–भाषा टीका १–८०
११३४ प्रश्नभूषण–संस्कृत हिन्दी टीका ०–७५
११३५ प्रश्न वैष्णव–भाषा टीका १–२०
११३६ प्रश्नशिरोमणि ४–२०
११३७ प्रश्नांकचूड़ामणि ०–२५
११३८ प्रस्तारचक्र–भाषाटीक ०–१५
११३९ फलित संग्रह–रामयत्न भाषाटीका १–००
११४० फलित मार्त्तण्ड–पं. मुकुन्दवल्लभ फलित के ऊपर महत्त्व का ग्रन्थ १२–००
११४१ फलित प्रकाश २–००
११४२ बीजगणित–संस्कृत-हिन्दी टीका ८–००
११४३ बीजगणित–भास्करीय ३–००
११४४ बीजपल्लवम् ३–७५
११४५ बृहज्जातक–भाषा टीका ३–५०, ४–२०
११४६ बृहज्जातक सं. टीका ३–६०
११४७ बृहज्ज्योतिषसार–भाषा टीका ४–५०
११४८ बृहत्पाराशरहोरा भा. टी. २०–००
११४९ बृहत्संहिता भाषा टीका ९–००
११५० बृहत्संहिता–भट्टोत्पली टीका सहित ३८–००
११५१ बृहत्–होडाचक्रविवरण–भाषाटीका ०–५०
११५२ बृहदवकहोडाचक्र भा. टी. बम्बई १–२०
११५३ बृहद्यवनजातक–भाषाटीका ३–००
११५४ बृहद्वास्तुमाला ३–००
११५५ भङ्गीविभंगीकरण २–००
११५६ भद्रबाहुसंहिता–मूलमात्र ५–७५ भा. टी. ८–००
११५७ भविष्यफलभास्कर–भाषाटीका ४–२०
११५८ भाग्य रहस्य १–५०
११५८क भाग्यरहस्य–श्री जगजीवनदास ५–००
११५९ भारतीय कुण्डली विज्ञान–हिन्दी ५–५०
११६० भारतीय ज्योतिष नेमीचन्द्र ८–००
११६१ भारतीय ज्योतिष–(दीक्षित) मराठी का हिन्दी ८–००
११६२ भावकुतूहल भा. टी. २–४०
११६३ भावप्रकाश–भाषा टीका १–२५
११६४ भावफलाध्याय–भाषा टीका ०–५०
११६५ भृगुसंहिता मथुरा ५०–००
११६६ भृगुसूत्र ०–९०

११६७ भृगुसंहिता पद्धति भाषा १०—००
११६८ महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या २—००
११६९ महाभास्करीयम् भास्कराचार्य सटीक ११—००
११७० मानसागरी—भाषा टीका ८—००
११७१ मुहूर्तकल्पद्रुम—बिट्ठल दीक्षित २—००
११७२ मुहूर्तचिन्तामणि—पीयूषधारा ५—००
११७३ मुहूर्त चिन्तामणि प्रमिताक्षरा सटीक ३—६०
११७४ मुहूर्तचिन्तामणि—भाषा टीका ३—००
११७५ मुहूर्तम तंण्ड—भाषा टीका ३—००
११७६ मुहूर्तसंग्रहदर्पण—भाषा टीका ४—२०
११७७ मुहूर्तमंजरी ०—७०
११७८ मेघमाला—भड्डली ०—६०
११७९ यंत्रराजरचना १—७५
११८० यन्त्रराज—यन्त्रशिरोमणि (महेन्द्र) २—५०
११८१ याजुष ज्योतिष २—००
११८२ योगिनी जातक—भाषा टीका ०—५०
११८३ रत्नगर्भाचक्र—भाषा टीका ०—२०
११८४ रत्नद्योत ०—७५
११८५ रत्नदीपिका—रत्नशास्त्र प्राचीन २—२५
११८६ रत्नपरीक्षादि सप्त संग्रह ९—२५
११८७ रमलगुलजार—केवल हिन्दी ४—८०
११८८ रमलनवरत्न—भाषाटीका २—००, २—१०
११८९ रमलरहस्य—संस्कृत मूल १०—८०
११९० रविसिद्धान्तमंजरी १—००
११९१ लग्नचन्द्रिका—भाषा टीका १—८०
११९२ लग्नरत्नाकर—भाषा टीका ०—४०
११९३ लग्नवाराही—भाषा टीका ०—२०
११९४ लघुजातक—भाषा टीका १—५०
११९५ लघुपाराशरी—भाष्य दीवान रामचन्द्र कपूर कृत
अनेक परिशिष्ट, व्याख्या सारणियां ८—००
११९६ लघुपाराशरी—भा. टी. ०—६५, १—२५
११९७ लघुभास्करीय—(भास्कराचार्य) सटीक २—००
११९८ लघुभास्करीय—शंकर विवरण २—००
११९९ लघुमानस—परमेश्वर व्याख्या ०—७५
१२०० लीलावती—विवरण व्याख्या दो भाग ४—७५
१२०१ लीलावती सटीक १४—००
१२०२ लीलावती—भा. टी. ४—००
१२०३ लोहगोलखंडन तथा लोहगोलसमर्थन २—००
१२०४ वटेश्वर सिद्धांत—भा. टी. ३०—००
१२०५ वनमाला—भाषा टीका ०—७५
१२०६ वर्षचन्द्रप्रकाश—चंद्रदत्त पन्त कृत १—००
१२०७ वर्षयोगसमूह—भा. टी. १—५०
१२०८ वास्तुमाणिक्यरत्नाकर ३—००
१२०९ वास्तुरत्नाकर ४—००
१२१० वास्तुरत्नावली—सं. हि. दोनों टीका २—५०
१२११ वाक्यकरण—सटीक १३—५०
१२१२ वाराही (बृहत्) संहिता भा. टी. ९—६०
१२१३ विचित्ररहस्य २—००
१२१४ विमण्डलवक्रविचार ३—००
१२१५ विवाहवृन्दावन—सं. हि. टीका ३—००
१२१६ विश्वकर्मविद्याप्रकाश ०—५०
१२१७ विश्वकर्मप्रकाश—भाषा टीका ३—००
१२१८ विश्वहितम् १—५०
१२१९ वेङ्कटेश्वर शताब्दी पञ्चांग ४०—००
१२२० वृन्दावली—भा. टी. ०—६०
१२२१ शकुनविचार ०—२५
१२२२ शकुन विज्ञान—हीरालाल ५—००
१२२३ शिवजातक—भाषा टीका ०—२०
१२२४ शिशुबोध—भाषा टीका ०—६५
१२२५ शीघ्रबोध—भाषा टीका १—२०
१२२६ शुद्धिदीपिका—भाषा टीका ४—२०
१२२७ षटपंचाशिका—सं. हि. टीका ०—५०
१२२८ सचित्रज्योतिष शिक्षा प्रथम ज्ञान खंड ९—००
१२२९ समरसार—सं. हिन्दी टीका २—१०
१२३० सरल रेखा गणित १—००
१२३१ सरलत्रिकोणमिति ५—००
१२३२ सर्वतोभद्रचक्र—भाषा टीका १—५०
१२३३ सर्वार्थचिन्तामणि—भाषा टीका ७—२०
१२३४ सामुद्रिक लक्षण संस्कृत ६—९०
१२३५ सारावली भा. टी. ८—००
१२३६ सिद्धान्तसार्वभौम ५—००
१२३७ सिद्धान्ततत्वविवेक १२—५०
१२३८ सिद्धान्तदर्पण २—५०
१२३९ सिद्धान्तशिरोमणि—वासनाभाष्य समेत ३भाग ४५—०
१२४० सिद्धान्त शिरोमणि—प्रभा-वासना प्रथम भाग ५—००
१२४१ सिद्धान्तशिरोमणि—ग्रहगणिताध्याय दो भाग ६—५०
१२४२ सिद्धान्त शिरोमणि—गोलाध्याय-वासना ८—७५
२२४३ सिद्धान्तशिरोमणि गोलाध्याय २—४०
१२४४ सिद्धान्तशेखर—(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग २४-३७
१२४५ सुगम ज्योतिष—गोपेशकुमार ओझा ६—००
१२४६ सुलभ भविष्य ज्ञान ०—७५
१२४७ सूर्यग्रहण—डा. कृष्णचन्द्र द्विवेदी १२—००
१२४८ सूर्यसिद्धान्त—सटीक हि. टी. ६—००
१२४९ सूर्य सिद्धान्त सटीक ४—००
१२५० स्त्रीजातक—हिन्दी टीका १—८०
१२५१ स्वप्नाध्याय ०—२५
१२५२ स्वप्नविचार ०—१५
१२५३ हनुमान ज्योतिष—भाषा टीका ०—७५
१२५४ हस्त परीक्षा—रतलाम ६—५०
१२५५ हस्तरेखाविज्ञान गोपेश कुमार १२—००
१२५६ हस्तसामुद्रिक शास्त्र ६—००
१२५७ हायनबोध ०—७०
१२५८ हयतग्रन्थ ६—००
१२५९ हायनरत्न—मूल खुला पत्रा ४—२०
१२६० होराभिप्राय निर्णय २—२५
१२६१ होराशास्त्र—प्रथम भाग (वाराहमिहिर) २५—००

चिकित्सा

१२६२ अंगूर के गुण उपयोग ०—७५
१२६३ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य १५—००
१२६४ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी—
डा. अग्निहोत्री २०—००
१२६५ अगदतन्त्र—रमानाथ द्विवेदी ०—७५
१२६६ अचार चटनी और मुरब्बा २—५०
१२६७ अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी ०—७०
१२६८ अञ्जननिदान हिन्दी टीका १—००
१२६९ अनुपानदर्पण—हिन्दी टीका १—८०

१२७० अनुभूतयोगचिन्तामणि–दो भाग डा. गणपतिसिंह ९-००
१२७१ अनुभूतयोगचिन्तामणि–अमोलकचन्द्र १२-००
१२७१क अनुभतयोग पाँच भाग ५-००
१२७२ अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह ६-२५
१२७३ अनुभूतयोगावली १-५५
१२७३क अनार के गुण ०-६२
१२७४ अपना इलाज आप करो १-२५
१२७५ अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर २२-००
१२७६ अ. शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रत शर्मा १०-००
१२७७ अभिनवशवच्छेदनविज्ञान–हरिस्वरूप १८-००
१२७८ अमृतसागर ११-००
१२७९ अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान ०-५०
१२८० अरंड के गुण उपयोग १-२५
१२८१ अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका ३-००
१२८२ अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी. ८-००
१२८३ अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव दो भाग हिन्दी ३७-००
१२८४ अष्टांगहृदय सूत्रस्थान सटीक ९-६०
१२८५ अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर ६-००
१२८६ अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी ४-००
१२८७ अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित पं. लालचंद १५-००
१२८७क अश्वशास्त्र ११-००
१२८८ आक गुण उपयोग हिन्दी २-५०
१२८९ आँख का अचूक इलाज २-२५
१२९० आत्मसर्वस्व ६-३०
१२९१ आदर्श आहार–डा. एस. सी. दास १-२५
१२९२ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११-००
१२९३ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानन्द प्र. भाग १०-००
१२९४ आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र १-८०
१२९५ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—श्री धर्मदत्तजी
१ एलोपैथिक संपूर्ण चिकित्सा पर इससे बढ़िया
ग्रन्थ आज तक नहीं छपा ३६-००
१२९६ आनन्दकंद संस्कृत १०-५०
१२९७ आपके बच्चे की खूराक ३-३७
१२९७क आम्र के गुण १-५०
१२९८ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा २-७५
१२९९ आयुर्वेद का इतिहास—सुरमचंद्र ८-००
१३०० आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव छोटा ५-००
१३०१ आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु) ५-४०
१३०१क आयुर्वेद परिषद निबन्धावली ५-००
१३०२ आयुर्वेद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी १२-००
१३०३ आयुर्वेद विज्ञान—हिन्दी टीका २-००
१३०४ आयुर्वेद प्रकाश भा. टी. १२-५०
१३०५ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १-२५
१३०५क आयुर्वेदीय त्वचा रोग चिकित्सा अमरनाथ
शास्त्री कृत १५-००
१३०६ आयुर्वेदीय परिभाषा १-२५
१३ ७ आयुर्वेदीय यंत्र शस्त्रपरिचय १-७५
१३०८ आयुर्वेदादर्शसंग्रह २-००
१३०९ आयुर्वेदमहोदधि १-२५
१३१० आरोग्य के अमूल्य साधन (स्वमूत्र) ३-५०
१३११ आरोग्यचिन्तामणि ९-००
१३११क आरोग्य प्रकाश रामनारायण ४-००
१३१२ आरोग्य लेखांजलि १-००
१३१३ आरोग्यविज्ञान २-००
१३१४ आरोग्यशिक्षा ०-६०
१३१५ आर्गेनन–हिन्दी ४-००
१३१६ आसन सातवलेकर ०-५०
१३१७ आसवारिष्ट विज्ञान ३-००
१३१८ आहार ५-००
१३१९ इंजेक्शन–डा. सुरेशप्रसाद १०-००
१३२० इंजेक्शन–शिवनाथ खन्ना ११-००
१३२१ इंजेक्शन तत्व प्रदीप–गणपतिसिंह ५-००
१३२२ इन्द्रायणगुणविधान—हिन्दी १-००
१३२३ इन्फ्लुएन्जा ०-५०
१३२४ इलाजुलगुर्बा–यूनानी इलाज ३-६०
१३२५ उपयोगी नुस्खे, तरकीबें ३-००
१३२६ उपवास के लाभ १-५०
१३२७ एक औषधिगुण विधान–गणपति सिंह १-८०
१३२८ एकौषधिचिकित्सा ४-००
१३२९ एनीमा और कथेटर–डा० सुरेशप्रसाद ०-५०
१३३० एलन्स की नोट्स ५-५०
१३३१ एलोपैथिक गाइड डा० रामनाथ वर्मा ऐसी
उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज
तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह
इसका आठवां संस्करण अभी छपा है।
परिवर्धित संस्करण १४-००
१३३२ एलोपैथिक चिकित्सा १२-७५
१३३३ एलोपैथिक निघंटु मेटीरिया मेडिका–ले. डा.
रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित षष्ठ संस्करण १३-००
१३३४ एलोपैथिक पाकेट गाईड–डा. सुरेश ३-००
१३३५ एलोपैथिक पाकेट प्रेस्काइबर ५-००
१३३६ एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन–अयोध्यानाथपाठक ५-००
१३३७ एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा २-००
१३३८ एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका–शिवदयाल १२-७५
१३३९ एलोपैथिक मिक्सचर २-५०
१३४० एलोपैथिक योगरत्नाकर–डा. रामनाथ १३-००
१३४१ एलोपैथिक सफल औषधियां ४-००
१३४२ औपसर्गिक रोग दो भाग २२-००
१३४३ औषधगुण धर्म विवेचन २-००
१३४४ औषधिगुणधर्म विवेचन–कालेडा बोगला ४-५०
१३४५ कपड़े और तन्दरुस्ती ०-५६
१३४६ कफ परीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन);
डा. रमेशचन्द्र वर्मा कृत १-२५
१३४७ कब्ज या कोष्ठबद्धता १-००, ०-७५
१३४८ कल्पपंचकप्रयोग ०-३५
१३४९ कम्पाउण्डज गाइड–द्वारकाप्रसाद ३-००
१३५० कम्पाउन्डरी शिक्षा ५-००, ८-००
१३५१ करिकल्पलता–छन्दोबद्ध हानियों की चिकित्सा ३-००
१३५२ कषाय कल्पना विज्ञान १-५०
१३५३ काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र २-००
१३५४ कामकुञ्जलता–मूलमात्र २०-००
१३५५ कामरत्न–नित्यनाथ हिन्दी टीका ६-००
१३५६ कामसूत्र–वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला
संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल
तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २४-००
१३५७ कामसूत्र–भा. टी. देवदत्त जयमंगला १६-००
१३५८ कद्दू के गुण उपयोग ०-६२
१३५९ कायचिकित्सा–गंगासहाय २५-००

१३६० „ रामरक्षपाठक २५–००
१३६१ कायचिकित्सा परिचय–द्वारकानाथ २०–००
१३६२ कालज्ञान–हि. टी. ०–६०
१३६३ काश्यप संहिता–(वृ०) भा. टी. १६–००
१३६४ किगहोम्योमिक्सचर १–००
१३६५ क्लिनिकल पॅथोलोजी–शिवनाथ १२–००
१३६६ क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान १२–००
१३६७ कुमारतन्त्र ०–९०
१३६८ कुल्लियात–हकीम दलजीतसिंह १–२५
१३६९ कौतुकुतूहल–मूल संस्कृत ले. म. म. पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत संस्कृत में २–००
१३७० कोकसार–वैद्यक नारायण प्रसाद ६–००
१३७१ कौमारभृत्य–रघुवीरप्रसाद ८–००
१३७२ क्लीनिकल मेडिसिन–एम. बी.बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक् ज्ञान कराने वाला हि. भा. में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५–००
१३७३ गदनिग्रह हिन्दी प्रथम भाग १५–००
१३७४ गर्भरक्षा तथा शिशु पालन–डा. मु. स्वरूप ४–५०
१३७५ गर्भसूत्र ३–००
१३७६ गाजर गुण उपयोग ०–७५
१३७७ गर्भस्थ शिशु की कहानी २–००
१३७८ गांव के पौधे १–००
१३७९ गांवों में औषधरत्न–३ भाग में १०–००
१३८० गुणविज्ञान जगन्नाथ २–५००
१३८१ गुलरगुण विकास (आरोग्यप्रकाश) १–००
१३८२ ग्रन्थि और ग्रन्थी प्रणाली के रोग–श्रीमहेन्द्रनाथ १–००
१३८३ गुलाब के गुण १–००
१३८४ गुणों की पिटारी–परमानन्द २–४०
१३८५ गृहस्थ सूत्र ६–००
१३८६ घर का वैद्य–अमोलकचन्द शुक्ल ७–५०
१३८७ घरेलू डाक्टर–चार डाक्टरों द्वारा ४–००
१३८८ घरेलू सस्ती दवाएं ३–००
१३८९ घीक्वार (गवार फल) के गुण उपयोग २–००
१३९० घृत के गुण -००
१३९१ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १२–००
१३९२ चक्रदत्त–भा. टी. बम्बई ८–४०
१३९३ चर्याचन्द्रोदय–हिन्दी टीका ५–१०
१३९४ चरक–मूल बंबई ८–००
१३९५ चरकसंहिता–चक्रपाणिकृत आयुर्वेद दीपिका ३०–००
१३९६ चरकसंहिता–आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल **हिंदी** अनुवाद सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा ३०–००
१३९७ चरक संहिता का अनुशीलन २–००
१३९८ चरक का निर्माण-काल २–००
१३९९ चर्मरोग चिकित्सा—नारायणसिंह ५–००
१४०० चारुचिकित्सा–उत्तरार्द्ध २–५०
१४०१ चिकित्सा चन्द्रोदय–ले० हरिदास वैद्य, सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ५८–००
१४०२ चिकित्सातत्त्व दीपिका महावीर प्रसाद पाण्डेय दो भाग १८–००
१४०३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप–दो भाग १९–५०
१४०४ चिकित्सांजन–हिन्दी १–५०
१४०५ चिकित्साव्यवहार विज्ञान ०–५०
१४०६ चिकित्सातिलक श्रीनिवास ९–२५
१४०७ चिकित्सामंजरी ५–००
१४०८ चिकित्सादर्श ३ भाग राजेश्वरदत्त १८–००
१४०८क चिकित्सा ज्ञान संग्रह ५–००
१४०९ छाछ के गुण उपयोग ०–७५
१४१० जटिल रोगों की सफल चिकित्सा २–००
१४११ जन स्वास्थ्य विज्ञान ४–००
१४१२ जन्मनिरोध–सचित्र ६–००
१४१३ ज्वरचिकित्सा–श्रीमहेन्द्रनाथ २–७५
१४१४ ज्वरतिमिरनाशक–भाषा टीका २–१०
१४१५ ज्वरनिर्णय २–५०
१४१६ जीवन का आनंद दो भाग ५–००
१४१७ जीवनतत्त्व १–५०
१४१८ ज्वरविज्ञान—(हि.) ३–५०
१४१९ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २–००
१४२० टोटका चिकित्सा ०–७५
१४२१ डाक्टरी गाइड ४–००
१४२२ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा–(एलोपैथी तथा होमियो) (हि.) ५–४०
१४२३ ढाक के गुण और उपयोग ०–७५
१४२४ तात्कालिक चिकित्सा १–२५
१४२५ तंदुरुस्त कैसे रहें ३–००
१४२६ तापगान—राजकुमार ०–२५
१४२७ तीन महामारी १–५०
१४२८ तीमारदारी ०–७५
१४२९ तुलसी चिकित्सा विधान ०–३७
१४३० तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०–७५
१४३१ तुलसी के गुण, उपयोग ३–००
१४३२ तरबूज के गुण उपयोग ०–६५
१४३३ दांतों का डाक्टर २–५०
१४३४ दही के गुण उपयोग २–५०
१४३५ दीर्घायु १–२५
१४३६ दुग्ध गुण उपयोग २–००
१४३७ दुग्धचिकित्सा ०–२५
१४३८ दूध से सर्व रोगों के इलाज १–००
१४३९ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १३–००
१४४० देहाती जड़ी-बूटियां ७-५०
१४४१ देहातियों की तन्दुरुस्ती–केदारनाथ ०-६५
१४४२ दोषकारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १–५०
१४४३ द्रव्यगुण मंजूषा प्रथम भाग २–००
१४४४ द्रव्यगुण भा. टी. २–४०
१४४५ द्रव्यगुणविज्ञान—ले. आचार्य यादवजी त्रिकमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) ४–००
१४४६ द्रव्यगुणविज्ञान–प्रियव्रत १९–५०
१४४७ धतरा गुण विधान— १–१२
१४४८ धनिया के गुण उपयोग ०–५०
१४४९ धात्री विज्ञान २–५०
१४५० धन्वन्तरी पूजा कथादर्श ०–७५
१४५१ नपुंसक चिकित्सा व यौवन गुप्त ३–००
१४५२ नपुंसकामृतार्णव २–१०

१२७० अनुभूतयोगचिन्तामणि–दो भाग डा. गणपतिसिंह ९-००
१२७१ अनुभूतयोगचिन्तामणि–अमोलकचन्द्र १२–००
१२७१क अनुभूतयोग पाँच भाग ५–००
१२७२ अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह ६–२५
१२७३ अनुभूतयोगावली १–५५
१२७३क अनार के गुण ०–६२
१२७४ अपना इलाज आप करो १–२५
१२७५ अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर २२–००
१२७६ अ. शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रत शर्मा १०–००
१२७७ अभिनवशवच्छेदनविज्ञान–हरिस्वरूप १८–००
१२७८ अमृतसागर ११–००
१२७९ अरिष्टक (रीठा) गुणविधान ०–५०
१२८० अरंड के गुण उपयोग १–२५
१२८१ अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका ३–००
१२८२ अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी. ८–००
१२८३ अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव दो भाग हिन्दी ३७–००
१२८४ अष्टांगहृदय सूत्रस्थान सटीक ९–६०
१२८५ अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर ६–००
१२८६ अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी ४–००
१२८७ अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित पं. लालचंद १५–००
१२८७क अश्वशास्त्र ११–००
१२८८ आक गुण उपयोग हिन्दी २–५०
१२८९ आँख का अचूक इलाज २–२५
१२९० आत्मसर्वस्व ६–३०
१२९१ आदर्श आहार–डा. एस. सी. दास १–२५
१२९२ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११–००
१२९३ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानन्द प्र. भाग १०–००
१२९४ आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र १–८०
१२९५ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—श्री धर्मदत्तजी
१ एलोपैथिक संपूर्ण चिकित्सा पर इससे बढ़िया
ग्रन्थ आज तक नहीं छपा ३६–००
१२९६ आनन्दकंद संस्कृत १०–५०
१२९७ आपके बच्चे की खूराक ३–३७
१२९७क आम्र के गुण १–५०
१२९८ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा २–७५
१२९९ आयुर्वेद का इतिहास—सूरमचंद्र ८–००
१३०० आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव छोटा ५–००
१३०१ आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु) ५–४०
१३०१क आयुर्वेद परिषद निबन्धावली ५–००
१३०२ आयुर्वेद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी १२–००
१३०३ आयुर्वेद विज्ञान—हिन्दी टीका २–००
१३०४ आयुर्वेद प्रकाश भा. टी. १२–५०
१३०५ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १–२५
१३०५क आयुर्वेदीय त्वचा रोग चिकित्सा अमरनाथ
शास्त्री कृत १५–००
१३०६ आयुर्वेदीय परिभाषा १–२५
१३ ७ आयुर्वेदीय यंत्र शस्त्रपरिचय १–७५
१३०८ आयुर्वेदादर्शसंग्रह २–००
१३०९ आयुर्वेदमहोदधि १–२५
१३१० आरोग्य के अमूल्य साधन (स्वमूत्र) ३–५०
१३११ आरोग्यचिन्तामणि ९–००
१३११क आरोग्य प्रकाश रामनारायण ४–००
१३१२ आरोग्य लेखांजलि १–००
१३१३ आरोग्यविज्ञान २–००
१३१४ आरोग्यशिक्षा ०–६०
१३१५ आर्गेनन–हिन्दी ४–००
१३१६ आसन सातवलेकर ०–५०
१३१७ आसवारिष्ट विज्ञान ३–००
१३१८ आहार ५–००
१३१९ इंजेक्शन–डा. सुरेशप्रसाद १०–००
१३२० इंजेक्शन–शिवनाथ खन्ना ११–००
१३२१ इंजेक्शन तत्त्व प्रदीप–गणपतिसिंह ५–००
१३२२ इन्द्रायणगुणविधान—हिन्दी १–००
१३२३ इन्फ्लुएन्जा ०–५०
१३२४ इलाजुलगुर्बा–यूनानी इलाज ३–६०
१३२५ उपयोगी नुस्खे, तरकीबें ३–००
१३२६ उपवास के लाभ १–५०
१३२७ एक औषधिगुण विधान–गणपति सिंह १–८०
१३२८ एकौषधिचिकित्सा ४–००
१३२९ एनीमा और कथेटर–डा० सुरेशप्रसाद ०–५०
१३३० एल्न्स की नोट्स ५–५०
१३३१ एलोपैथिक गाइड डा० रामनाथ वर्मा ऐसी
उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज
तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह
इसका आठवां संस्करण अभी छपा है।
परिवर्धित संस्करण १४–००
१३३२ एलोपैथिक चिकित्सा १२–७५
१३३३ एलोपैथिक निघंटु मेटीरिया मेडिका–ले. डा.
रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित षष्ठ संस्करण १३–००
१३३४ एलोपैथिक पाकेट गाईड–डा. सुरेश ३–००
१३३५ एलोपैथिक पाकेट प्रेस्क्राइबर ५–००
१३३६ एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन–अयोध्यानाथपाठक ५-००
१३३७ एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा २–००
१३३८ एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका–शिवदयाल १२–७५
१३३९ एलोपैथिक मिक्सचर २–५०
१३४० एलोपैथिक योगरत्नाकर–डा. रामनाथ १३–००
१३४१ एलोपैथिक सफल औषधियां ४–००
१३४२ औपसर्गिक रोग दो भाग २२–००
१३४३ औषधगुण धर्म विवेचन २–००
१३४४ औषधिगुणधर्म विवेचन–कालेडा बोगला ४–५०
१३४५ कपड़े और तन्दरुस्ती ०–५६
१३४६ कफ परीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन);
डा. रमेशचन्द्र वर्मा कृत १–२५
१३४७ कब्ज या कोष्ठबद्धता १–००, ०–७५
१३४८ कल्पपंचकप्रयोग ०–३५
१३४९ कम्पाउण्डज गाइड–द्वारकाप्रसाद ३–००
१३५० कम्पाउन्डरी शिक्षा ५–००, ८–००
१३५१ करिकल्पलता–छन्दोबद्ध हानियों की चिकित्सा ३–००
१३५२ कषाय कल्पना विज्ञान १–५०
१३५३ काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र २–००
१३५४ कामकुञ्जलता–मूलमात्र २०–००
१३५५ कामरत्न–नित्यनाथ हिन्दी टीका ६–००
१३५६ कामसूत्र–वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला
संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल
तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २४–००
१३५७ कामसूत्र–भा. टी. देवदत्त जयमंगला १६–००
१३५८ कद्दू के गुण उपयोग ०–६२
१३५९ कायचिकित्सा–गंगासहाय २५–००

१३६० ,, रामरक्षपाठक २५–००
१३६१ कायचिकित्सा परिचय–द्वारकानाथ २०–००
१३६२ कालज्ञान–हि. टी. ०–६०
१३६३ काश्यप संहिता–(बृ०) भा. टी. १६–००
१३६४ किंगहोम्योमिक्सचर ९–००
१३६५ क्लिनिकल पैथोलोजी–शिवनाथ १२–००
१३६६ क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान १२–००
१३६७ कुमारतन्त्र ०–९०
१३६८ कुल्लियात–हकीम दलजीतसिंह १–२५
१३६९ केलिकुतूहल–मूल संस्कृत ले. म. म. पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत संस्कृत में २–१०
१३७० कोकसार–वैद्यक नारायण प्रसाद ६–००
१३७१ कौमारभृत्य–रघुवीरप्रसाद ८–००
१३७२ क्लीनिकल मेडिसिन–एम. बी.बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक् ज्ञान कराने वाला हिं. भा. में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५–००
१३७३ गदनिग्रह हिन्दी प्रथम भाग १५–००
१३७४ गर्भरक्षा तथा शिशु पालन–डा. मु. स्वरूप ४–५०
१३७५ गर्भसूत्र ३–००
१३७६ गाजर गुण उपयोग ०–७५
१३७७ गर्भस्थ शिशु की कहानी २–००
११७८ गांव के पौधे १–००
१३७९ गांवों में औषधरत्न–३ भाग में १०–००
१३८० गुणविज्ञान जगन्नाथ २–५००
१३८१ गुलरगुण विकास (आरोग्यप्रकाश) १–००
१३८२ ग्रन्थि और ग्रन्थी प्रणाली के रोग–श्रीमहेन्द्रनाथ १–००
१३८३ गुलाब के गुण १–००
१३८४ गुणों की पिटारी–परमानन्द २–४०
१३८५ गृहस्थ सूत्र ६–००
१३८६ घर का वैद्य–अमोलकचन्द शुक्ल ७–५०
१३८७ घरेलू डाक्टर–चार डाक्टरों द्वारा ४–००
१३८८ घरेलू सस्ती दवाएं ३–००
१३८९ घीक्वार (गवार फल) के गुण उपयोग २–००

१३९० घृत के गुण –००
१३९१ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १२–००
१३९२ चक्रदत्त–भा. टी. बम्बई ८–४०
१३९३ चर्याचन्द्रोदय–हिन्दी टीका ५–१०
१३९४ चरक–मल बंबई ८–००
१३९५ चरकसंहिता–चक्रपाणिकृत आयुर्वेद दीपिका ३०–००
१३९६ चरकसंहिता–आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिंदी अनुवाद सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा ३०–००
१३९७ चरक संहिता का अनुशीलन २–००
१३९८ चरक का निर्माण-काल २–००
१३९९ चर्मरोग चिकित्सा—नारायणसिंह ५–००
१४०० चारुचिकित्सा–उत्तरार्द्ध २–५०
१४०१ चिकित्सा चन्द्रोदय–ले० हरिदास वैद्य, सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ५८–००
१४०२ चिकित्सातत्त्व दीपिका महावीर प्रसाद पाण्डेय दो भाग १८–००
१४०३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप–दो भाग १९–५०
१४०४ चिकित्सांजन–हिन्दी १–५०
१४०५ चिकित्साव्यवहार विज्ञान ०–५०
१४०६ चिकित्सातिलक श्रीनिवास ९–२५
१४०७ चिकित्सामंजरी ५–००
१४०८ चिकित्सादर्श ३ भाग राजेश्वरदत्त १८–००
१४०८क चिकित्सा ज्ञान संग्रह ५–००
१४०९ छाछ के गुण उपयोग ०–७५
१४१० जटिल रोगों की सफल चिकित्सा २–००
१४११ जन स्वास्थ्य विज्ञान ४–००
१४१२ जन्मनिरोध–सचित्र ६–००
१४१३ ज्वरचिकित्सा–श्रीमहेन्द्रनाथ २–७५
१४१४ ज्वरतिमिरनाशक–भाषा टीका २–१०
१४१५ ज्वरनिर्णय २–५०
१४१६ जीवन का आनंद दो भाग ५–००
१४१७ जीवनतत्त्व १–५०
१४१८ ज्वरविज्ञान—(हि.) ३–५०
१४१९ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २–००

१४२० टोटका चिकित्सा ०–७५
१४२१ डाक्टरी गाइड ४–००
१४२२ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा–(एलोपैथी तथा होमियो) (हि.) ५–४०
१४२३ ढाक के गुण और उपयोग ०–७५
१४२४ तात्कालिक चिकित्सा १–२५
१४२५ तंदुरुस्त कैसे रहें ३–००
१४२६ तापमान—राजकुमार ०–२५
१४२७ तीन महामारी १–५०
१४२८ तीमारदारी ०–७५
१४२९ तुलसी चिकित्सा विधान ०–३७
१४३० तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०–७५
१४३१ तुलसी के गुण, उपयोग ३–००
१४३२ तरबूज के गुण उपयोग ०–६५
१४३३ दांतों का डाक्टर २–५०
१४३४ दही के गुण उपयोग २–५०
१४३५ दीर्घायु १–२५
१४३६ दुग्ध गुण उपयोग २–००
१४३७ दुग्धचिकित्सा ०–२५
१४३८ दूध से सर्व रोगों के इलाज १–००
१४३९ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १३–००
१४४० देहाती जड़ी-बूटियां ७-५०
१४४१ देहातियों की तन्दुरुस्ती–केदारनाथ ०–६५
१४४२ दोष कारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १–५०
१४४३ द्रव्यगुण मंजूषा प्रथम भाग २–००
१४४४ द्रव्यगुण भा. टी. २–४०
१४४५ द्रव्यगुणविज्ञान—ले. आचार्य यादवजी विक्रमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) ४–००
१४४६ द्रव्यगुणविज्ञान–प्रियव्रत १९–५०
१४४७ धतरा गुण विधान— १–१२
१४४८ धनिया के गुण उपयोग ०–५०
१४४९ धात्री विज्ञान २–५०
१४५० धन्वन्तरी पूजा कथादर्श ०–७५
१४५१ नपुंसक चिकित्सा व यौवन गुप्त ३–००
१४५२ नपुंसकामृतार्णव २–१०

१४५३ नमक के गुण उपयोग ०–५०
१४५४ नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १–७५
१४५५ नवीन चिकित्सा पद्धति १–२५
१४५६ नव्यचिकित्सा विज्ञान—डा. मु. स्वरूप १६–००
१४५७ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान—ले० —डाक्टर मुकुन्द स्वरूप शर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषय को बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ८–००
१४५८ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि. ०–७५
१४५९ नाड़ीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी २–५०
१४६० नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०–५०, ०–३५
१४६१ नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हिं. ०–३५
१४६२ नाड़ीज्ञान दर्पण—हिन्दी टीका ०–५०
१४६३ नाड़ीचक्रम्—मूल ३–५०
१४६४ नागरसर्वस्व ५–१०
१४६५ निघंटु कल्पद्रुम—त्रिवेदी १०–००
१४६६ निबगुण उपयोग ०–७५
१४६७ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १–२५
१४६८ नित्योपयोगी गुटिका संग्रह २–००
१४६९ नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १–२५
१४७० निदान नवनीतचार्टस ८–००
१४७१ निरोग कैसे रहें—महेन्द्रनाथ ०–६४
१४७२ नीम के गुण उपयोग १–२५
१४७३ नीम चिकित्सा ०–६२
१४७४ न्यायवैद्यक विषतंत्र अत्रिदेव ४–००
१४७५ नेत्ररोगचिकित्सा—जादवजी हंसराज ११–२५
१४७६ नेत्ररोग १–००
१४७७ नैसर्गिक आरोग्य २–००
१४७८ पंचविधकषाय कल्पना १–५०
१४७९ पंचभूत विज्ञान—उपेन्द्रनाथ दास ४–००
१४८० पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १–००
१४८१ पथ्यापथ्य—हिं० टी० १–८०
१४८२ पदार्थविज्ञान—वागीश्वर ८–००
१४८३ पेट और आँतों के रोग— २–५०
१४८४ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद २–५०
१४८५ परिवार चिकित्सा ३–५०
१४८६ पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०–७५
१४८७ पर्यायमुक्तावली संस्कृत ५–५०
१४८८ पशुचिकित्सा— २–४०, ३–६०
१४८९ पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६–००
१४९० पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १–३०
१४९१ पर्यायरत्नमाला—माधवकर ६–००
१४९२ पाचन प्रणाली के रोग —महेन्द्रनाथ २–२५
१४९३ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान–मैटीरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत दूसरा भाग ३०–००
१४९४ पीपल गुणविधान ०–७५, ०–५०
१४९५ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा ३–००, १–२५
१४९६ पुरुषविज्ञान—जगन्नाथ ७–००
१४९७ पेटन्ट प्रेस्क्राइबर–डा. रमानाथ ८–००
१४९८ पेटेन्ट अदवियात—बंसल ६–००
१४९९ पैसे पैसे के चुटकले ४–००. ३–००
१५०० प्रत्यक्ष शरीर कोष–श्री सेनगुप्त ८–००
१५०१ प्रमाणविज्ञान—जगन्नाथ २–५०
१५०२ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी १–१२
१५०३ प्रत्यक्षशरीर हिन्दी दो भाग २५–००
१५०४ प्रयोग पुष्पावली १–२५
१५०५ प्रतापकंठाभरण १–५०
१५०६ प्रसूतितन्त्र—रामदयाल कपूर ५–७५
१५०७ प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी १०–००
१५०८ प्रारंभिक जीव विज्ञान–टंडन ४–४०
१५०९ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय १–००
१५१० प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय १–००
१५११ प्रारम्भिक उपचार–गणेशदत्त १–०००
१५१२ प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र (बनस्पति) बलवन्तसिंह ४-५०
१५१३ प्रारम्भिक भौतिकी—निहालकरण ५–५०
१५१४ प्रारम्भिक रसायन–फूलदेवसहाय ४–५०
१५१५ प्राकृतिक चिकित्सा–अमोलकचन्द्र ५–००
१५१६ प्राकृतिक जीवन की ओर—मोदी ३–००
१५१७ प्रारंभिक उपचार १–००
१५१८ प्रारंभिक स्वास्थ्य ०–३७
१५१९ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा ०–३५
१५२० फलसंरक्षण २–५०, १–००
१५२१ फलाहार चिकित्सा–महेन्द्रनाथ २–७५
१५२२ फिटकरी– २–५०
१५२३ फिटकरी गुण उपयोग २–५०
१५२४ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा १–५०
१५२५ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग ३–००
१५२६ बबूल गुण उपयोग १–००
१५२७ बरगद ०–८८
१५२८ बादाम के गुण उपयोग ०–७५
१५२९ बस्तिशलाका प्रवेश ०–४०
१५३० बायोकेमिक चिकित्सा–सुरेश प्रसाद ४–५०
१५३१ बायोकेमिकचिकित्सा सार २–००
१५३२ बायोकेमिक पाकेट गाइड–डा. सुरेशप्रसाद हिं. १–००
१५३३ बायोकेमिक रिपर्टरी ८–००
१५३४ बांसा के गुण उपयोग १–२५
१५३५ बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान ६–५०
१५३६ बालतन्त्र–(कल्याण वद्य विरचित) ३–००
१५३७ बालरोग चिकित्सा ५–००
१५३८ बोपदेव शतक ०–८७
१५३९ बीसवीं शताब्दी की औषधियां ८–००
१५४० बुखार का अचूक इलाज ०–७५
१५४१ बुढ़ापा और उससे बचने के उपाय १–५०
१५४२ बूढ़ों का आरोग्य ५–००
१५४३ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २–५०
१५४४ बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथम भाग १०–२०
१५४५ बृहन्निघंटुरत्नाकर हिं. टी. चतुर्थ भाग ९–६०
१५४६ बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचम भाग १९–२०
१५४७ „ „ छठा भाग १४–४०
१५४८ बृहद् पशुचिकित्सा ५–००
१५४९ बृहद्योगतरंगिणी त्रिमल्लभट्ट १६–२५
१५५० बृहद् रसराज सुन्दर हिन्दी १२–००
१५५१ भारतीय जड़ी-बूटी डा. गनपतसिंह ६–००
१५५२ भारतीय रस पद्धति—अत्रिदेव १–५०

१५५३ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद ०–७५
१५५४ भावप्रकाश–पं. लालचन्द्रजी कृत अद्वितीय हिन्दी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु २०-००
१५५५ भावप्रकाशनिघण्टु –सटिप्पण मूल १–५०
१५५६ भावप्रकाशनिघण्टु–आचार्य श्री विश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित ८–००
१५५७ भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा १–००
१५५८ भिषक्कर्मसिद्धि २०–००
१५५९ भूलोक का अमृत ०–५०
१५६० भेलसंहिता––मूल १०–००
१५६१ भैषज्यसंहिता अत्रिदेव ४–५०
१५६२ भैषज्यकल्पना–ले. श्री अत्रिदेव गुप्त १–७५
१५६३ भैषज्यकल्पना विज्ञान ५–००
१५६४ भैषज्यरत्नावली––अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२–००
१५६५ भोजन कुतूहल संस्कृत ४–००
१५६६ भारत भैषज्यरत्नाकर दूसरा, पांचवां १८–००
१५६७ मदनपाल निघंटु–भाषा टीका बंबई ४–८०
१५६८ मधुचिकित्सा विधान ०–५०
१५६९ मधुगुण उपयोग २–५०
१५७० मर्मविज्ञान–ले. श्रीरामरक्ष पाठक ३–५०
१५७१ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा–एलोपैथिक ३–००
१५७२ मलेरिया–श्री मनमोहन घष–मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २–२५
१५७३ मलेरिया और मोती झारा १–२५
१५७४ मलेरिया और कालाजार १–७५
१५७५ महामारी विवेचन–हिन्दी टीका सहित ०–३५
१५७६ माडर्न मैडिकल ट्रीटमेंट–डा. एम. ए. गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपैथिक चिकित्सा २०–००
१५७७ मानव शरीर दीपिका ६–००
१५७८ मानव शरीर रचना विज्ञान दो भाग १४–००
१५७९ मानव शरीर रचना प्रथम भाग (ग्रे एनाटमी के आधार पर) डा. मुकुन्द स्वरूप सचित्र २८–००
१५८० माधव निदान––सटिप्पण १–५०
१५८१ माधवनिदान–मधुकोष आतंकदर्पण ७–००
१५८२ माधवनिदान–मधुकोष सं. टीका तथा मधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं. दीनानाथकृत संपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८–००
१५८३ माधवनिदान–मधुकोष तथा विद्योतनी १४–००
१५८४ माधवनिदान––माधवी हिन्दी टी. २–५०
१५८५ माधवनिदान–मधुकोश मनोरमा हिन्दी ६–००
१५८६ माधवनिदान–पं. दत्तराम चौबे ६–००
१५८७ माधवनिदान–सर्वांगसुन्दरी भा. टी. ४–५०
१५८८ मानसिक आरोग्य ४–००
१५८९ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र–बलवन्त सिंह कृत २–१०
१५९० मिक्सचर (एलोपैथिक) २–५०
१५९१ मिजानतिब्ब ४–२०
१५९२ मिट्टी चिकित्सा ०–७५
१५९३ मोटापा दूर करने के उपाय १–००
१५९४ मुकलावा बहार ६–००
१५९५ मूली के गुण उपयोग ०–७०
१५९६ मूत्र के रोग–घाणेकर ६–००
१५९७ मेंहदी के गुण ०–७०
१५९८ मेघविनोद–श्रीमेघमुनिप्रणीत–सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज–दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६–००
१५९९ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा ५–००
१६०० यूनानी चिकित्सा विधि–अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है। किस हालत में कौन दवाई देनी है। शरीर परिचय सहित हिन्दी ५–००
१६०१ यूनानी चिकित्सासागर–लेखक हकीम मन्साराम–इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमाये हुए नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आने हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं है अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०–००
१६०२ योगचिकित्सा–अत्रिदेव ३–५०
१६०३ योगचिकित्सा ०–५०
१६०४ योगचिन्तामणि–हिन्दी टीका सहित ४–८०
१६०५ योग रत्नाकर–मूल संस्कृत ६–००, ७–५०
१६०६ योगरत्नाकर भा. टी. १८–००
१६०७ योगतरंगिणी भा. टी. ७–२०,
१६०८ रक्तविक्षेप या ब्लड प्रैशर ०–७५
१६०९ रतिमंजरी ०–४०
१६१० रतिरत्न प्रदीपिका ३–००
१६११ रसकौमुदी १–५०
१६१२ रसचिकित्सा ६–००
१६१३ रसतत्त्वविवेचन ३–५०
१६१४ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह––कालेडा बोगला वालों का
१६१५ रसतरंगिणी–लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्रनाथ जी के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं. हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्द जी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण है सफेद कागज पर छपा। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं। सभी जगह पाठ्य ग्रन्थ है १०–००
१६१६ रस प्रदीप ०–६०
१६१७ रसमंजरी २–४०
१६१८ रसयोगशतक २–००
१६१९ रसशास्त्र–अत्रिदेव ७–००
१६२ रसशास्त्रप्रवेशिका २–००
१६२१ रसहृदयतन्त्र––भाषा टीका ५–००
१६२२ रसरत्नसमुच्चय–मूल संस्कृत ३१) सटीक ३–७५

१६२३ रसरत्नसमुच्चय–पं. धर्मानन्द जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००
१६२४ रसराजमहोदधि—सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ९–६०
१६२५ रसादिपरिज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद २–५०
१६२६ रसाध्याय–संस्कृत टीका सहित १–००
१६२७ रसामृत–ले. व यादव जी विक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि रस-योग आदि के ठीक निर्माण मे उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
१६२८ रसायनखंड–नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०–७५
१६२८क रसायन तत्र ०–३०
१६२९ रसवनसार—ले० श्यामसुन्दराचार्य ८–००
१६३० रसायन और वाजीकरण २–००
१६३१ रसार्णव–नाम रसतन्त्र–सटिप्पण ३–००
१६३२ रसोपनिषत् प्रथम भाग ५–००
१६३३ रसेन्द्रपुराण–पं रामप्रसाद कृत ८–४०
१६३४ रसेन्द्रसारसंग्रह–भाषा टीका ३–००, ७–२०
१६३४क रसेन्द्र सारसंग्रहसं० टी० जीवानन्द ७–००
१६३५ राजनिघंटु संहिता–धन्वन्तरीय निघंटु ९–५०
१६३६ राजवल्लभ निघंटु–हिन्दी टीका ३–००
१६३७ राजयक्ष्मा सी द्वारकानाथ १–००
१६३८ राजमार्तण्ड २–५०
१६३९ राजमृगाङ्क २–६६
१६४० राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह १–५०
१६४१ रीठा गुणविज्ञान ०–८८
१६४२ रोगनामावली कोश— ३–५०
१६४३ रोगनिदान चिकित्सा २–००
१६४४ रोगपरिचय शिवनाथ १५–००
१६४५ रोगनिवारण १५–००
१६४६ रोगों की सरल चिकित्सा–बिट्ठलदास ५–००
१६४७ रोगीरोगविमर्श २–००
१६४८ रोगी की सेवा और पथ्य–डा. मुरश ३–००
१६४९ रोग परीक्षाविधि–श्री प्रियव्रत ६–००
१६५० रोगी मृत्यु विज्ञान–पं. मथुराप्रसाद १–५०
१६५१ रोगीपरीक्षा–शिवनाथ ६–००
१६५२ लहसुन के गुण उपयोग ०–६२
१६५३ लक्ष्मीमोदतरंगिणी १–५०
१६५४ लीडर्स इन होम्योपैथिक थैराप्युटिक्स ६–५०
१६५५ लोहसर्वस्व हि. टी. २–००
१६५६ वनौषधिदर्शिका २–५०
१६५७ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०–००
१६५८ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा. रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति नया सं. १२–००
१६५९ वसवराजीयम्–दो भाग भाषा ८–५०
१६६० वाग्भट विवेचन–प्रियव्रत २०–००
१६६१ वादिखंड [illegible] ३–००
१६६२ विटेमिन्स २–२५
१६६३ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि. टी. २–१०
१६६४ विषविज्ञान–अगदतन्त्र २–००
१६६५ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ४–२०
१६६६ वोपदेवशतक ०–८५
१६६७ वृन्दमाधव–सिद्धयोगकण्ठदत्तकृतसंस्कृत व्या. १०-००
१६६८ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ८–४०
१६६९ वृषकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा ३–५०
१६७० वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा. टी. बंबई १–८० १–५०
१६७१ वैद्यकीयसुभाषित साहित्य २५–००
१६७२ वैद्यकीय सुभाषितावली–डा. मेहता २–००
१६७३ वैद्यकशब्दनिधि १–००
१६७४ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिन्दी टीका १–२५
१६७५ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई ३–००
१६७६ वैद्यमनोत्सव–हिन्दी (नैनसुख) ०–६०
१६७७ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ६–००
१६७८ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–२०
१६७९ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट्ट ३–९०
१६८० वैद्यचन्द्रोदय १–००
१६८१ वैद्यकलाधर
१६८२ वैद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका २–[illegible]
१६८३ वैद्यावतंस भा. टी. १–५०
१६८४ वैद्यसन्मित्र २–००
१६८५ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ५–००
१६८६ व्याधिविज्ञान–डा. आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित छठा संस्करण दो भाग २०–००
१६८७ व्रणशोथविमर्श ३–००
१६८८ व्रणोपचारपद्धति ०–५०
१६८९ वृक्षविज्ञान चिकित्सा २–२५
१६९० शरीरप्रदीपिका:–डा. मुकुन्दस्वरूप ५–५०
१६९१ शरभेन्द्र वैद्यरत्नावली १०–६२
१६९२ शरीरपुष्टिविधान ०–७०
१६९३ शहतूत के गुण उपयोग ०–५०
१६९४ शर्बत विज्ञान २–५०
१६९५ शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा १०–००
१६९६ शल्य प्रदीपिका डा. मुकुन्दस्वरूप १५–००
१६९७ शाङ्र्गधरसंहितामूल अंजन निदानसहित गुटका २–००
१६९८ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं. व्याख्या १०–००
१६९९ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
१७०० शार्ङ्गधर संहिता–भाषा टीका ५–००
१७०१ ″ ″ दुर्गादत्त १०–००
१७०१क शालाक्य तंत्र श्री रमानाथ द्विवेदी ९–००
१७०२ शालिग्रामोषधि शब्दसागर ५–४०
१७०३ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
१७०४ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
१७०५ शिवनाथसागर हिन्दी–डा. शिवनाथ ८–४०
१७०६ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–५०
१७०७ शीतला परिहार ३-००
१७०८ शुभसन्ततियोग प्रकाश–हिन्दी टीका ३–००
१७०९ शुद्ध आयुर्वेद गाईड–श्री अत्रिदेव कृत। आयुर्वेद की प्रैक्टिस करने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ५–००
१७१० संस्कार विधि विमर्श ३–००
१७११ संक्रामक रोग विज्ञान ६–५०

१७१२	मज्जा पचक विमर्श	३-००
१७१३	मतरा गुण उपयोग—हिन्दी	०-५०
१७१४	सन्यासी चिकित्सा शास्त्र—अथवा साधु की चुटकी	५-००
१७१५	सामान्य रोगों की रोकथाम	३-५०
१७१६	सत्यानासी गुणविधान	०-७५
१७१७	सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय	१२-००
१७१८	सचित्र इंजेक्शनविज्ञान	८-००
१७१९	सचित्र क्लीनिकल पथालोजी	१०-००
१७२०	सचित्र नेत्र रोग विज्ञान—डा. शिवदयाल	८-००
१७२१	सरल प्राकृतिक चिकित्सा	३-००
१७२२	सरल शरीर विज्ञान	१-५०
१७२३	सरलचिकित्सा विज्ञान	३-२५
१७२४	सेब के गुण उपयोग	०-५०
१७२५	सिद्धान्तनिदान दो भाग संस्कृत	१४-००
१७२६	सिद्धपरीक्षा पद्धति—प्रथम खण्ड कालेडा बोगला	८-००
१७२७	सिद्धभैषज्यसंग्रह—युगलकिशोर गुप्त	८-००
१७२८	सिद्धरसायन—दूसरा	१०-००
१७२९	सुश्रुतसंहिता—मूलशास्त्र परिचायक परिशिष्ट	१०-००
१७३०	सुश्रुतसंहिता—कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं. लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित	१८-००
१७३१	सुश्रुत-सूत्रनिदान—घाणेकर	१२-००
१७३२	” ” केवल सूत्र	९-००
	सामान्य शल्यविज्ञान	१२-००
१७३३	सुश्रुतसंहिता-(शारीरस्थान) डा. जे. डी. शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्य मत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र	५-००
१७३४	सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान—डा. घाणेकर	१५-००
१७३५	सूचीवेध—राजकुमार	२-५०
१७३६	सूचीवेध विज्ञान—आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण	७-५०
१७३७	संक्षिप्त औषध परिचय	१-२५
१७३८	सौंफ के गुण तथा उपयोग	१-२५
१७३९	सौश्रुति—रामनाथ द्विवेदी	१०-००
१७४०	स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां	२-००
१७४१	स्वास्थ्य विवेचन—शिवकुमार	५-००
१७४२	स्वास्थ्य प्रदीपिका	२-००
१७४३	स्वास्थ्य और सद्वृत्त	२-००
१७४४	स्वाभाविक भोजन	०-७५
१७४५	स्टेथिस्कोपविज्ञान	१-३७
१७४६	संक्षिप्त शल्य विज्ञान	१२-००
१७४७	स्टेथस्कोप नाड़ी परीक्षा—जोशी	०-७५
१७४८	स्वप्नदोषविज्ञान—सरल हिन्दी	२-००
१७४९	स्वर्णक्षीरी	०-७५
१७५०	स्वस्थवृत्त समुच्चय—राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका	७-००
१७५१	स्वास्थ्य रक्षा—ले. श्री हरिदास वैद्य	६-००
१७५२	स्वास्थ्यविज्ञान—अजमेर	१-२५
१७५३	स्वास्थ्य संहिता—श्री नानकचन्द हिं.	२-५०
१७५४	स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित	०-७०
१७५५	स्त्री रोग विज्ञान—डा. रमानाथ	३-५०
१७५६	हमारे भोजन की समस्या—रामअवध	१-५०
१७५७	हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव	१-७५
१७५८	हमारी आखें—अग्रवाल	४-००
१७५९	हमें क्या खाना चाहिए	१-२५
१७६०	हल्दी के गुण तथा उपयोग	०-८८
१७६१	हस्त्यायुर्वेद—पालकाप्य मुनि विरचित	११-००
१७६२	हारीत संहिता—हिन्दी टीका	१०-२०
१७६३	होमियो पारिवारिक चिकित्सा	९-००
१७६४	होम्योपैथी चिकित्सा सिद्धान्त	५-००
१७६५	होम्यो पाकेट गाईड	१-००
१७६६	होम्यो थाइसिस चिकित्सा	०-७०
१७६७	होम्यो टाइफाइड चिकित्सा	०-७५
१७६८	होम्यो गृहचिकित्सा	२-५०
१७६९	होम्योमैटीरिया मेडीका	४-२५
१७७०	होम्यो इंजेक्शन चिकित्सा	१-७५
१७७१	होमियो भैषज्यलक्षण संग्रह	२५-००
१७७२	होम्योचिकित्साविज्ञान	३-५०
१७७३	होम्यो न्यूमोनिया चिकित्सा	०-७५
१७७४	होम्यो भैषज्यसार	२-००
१७७५	हिन्दी मैटीरिया मेडिका होमियो केवल दूसरा भाग	१-८०
१७७६	हिक्मतप्रकाश	३-६०
१७७७	हितोपदेश वैद्यक	३-६०
१७७८	हैजा (विसूचिका) चिकित्सा	०-७५
१७७९	हींग के गुण	३-००
१७८०	हरीतक्यादिनिघंटु	७-२०
१७८१	त्रिदोष परिज्ञान	३-५०
१७८२	त्रिफला गुण	१-००
१७८३	त्रिदोषविज्ञान—उपेन्द्रनाथ	४-००
१७८४	त्रिशति	३-००
१७८५	त्रिदोष संग्रह —धर्मदत्त	३-५०
१७८६	ज्ञानभैषज्यमंजरी	०-७५

★

इनके अतिरिक्त हर प्रकार के संस्कृत हिन्दी ग्रंथ हमारे यहां से मिलते हैं

१६२३ रसरत्नसमुच्चय—पं. धर्मानन्द जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००
१६२४ रसराजमहोदधि—सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ९-६०
१६२५ रसादिपरिज्ञान—जगन्नाथ प्रसाद २-५०
१६२६ रसाध्याय—संस्कृत टीका सहित १-००
१६२७ रसामृत—ले. व यादव जी विक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रस-योग आदि के ठीक निर्माण मे उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
१६२८ रसायनखंड—नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०-७५
१६२८क रसायन तंत्र ०-३०
१६२९ रसायनसार—ले० श्यामसुन्दराचार्य ८-००
१६३० रसायन और वाजीकरण २-००
१६३१ रसार्णव—नाम रसतन्त्र—सटिप्पण ३-००
१६३२ रसोपनिषत् प्रथम भाग ५-००
१६३३ रसेन्द्रपुराण—पं. रामप्रसाद कृत ८-४०
१६३४ रसेन्द्रसारसंग्रह—भाषा टीका ३-००, ७-२०
१६३४क रसेन्द्र सारसंग्रहसं० टी० जीवानन्द ७-००
१६३५ राजनिघंटु संहिता—धन्वन्तरीय निघंटु ९-५०
१६३६ राजवल्लभ निघंटु—हिन्दी टीका ३-००
१६३७ राजयक्ष्मा सी द्वारकानाथ १-००
१६३८ राजमार्तण्ड २-५०
१६३९ राजमृगाङ्क २-६६
१६४० राष्ट्रीयचिकित्सा—सिद्धयोगसंग्रह १-५०
१६४१ रीठा गुणविज्ञान ०-८८
१६४२ रोगनामावली कोश— ३-५०
१६४३ रोगनिदान चिकित्सा २-००
१६४४ रोगपरिचय शिवनाथ १५-००
१६४५ रोगनिवारण १५-००
१६४६ रोगों की सरल चिकित्सा—बिट्ठलदास ५-००
१६४७ रोगीरोगविमर्श २-००
१६४८ रोगी की सेवा और पथ्य—डा. सुरेश ३-००
१६४९ रोग परीक्षाविधि—श्री प्रियव्रत ६-००
१६५० रोगी मृत्यु विज्ञान—पं. मथुराप्रसाद १-५०
१६५१ रोगीपरीक्षा—शिवनाथ ६-००
१६५२ लहसुन के गुण उपयोग ०-६२
१६५३ लक्ष्मीमोदतरंगिणी १-५०
१६५४ लीडर्स इन होम्योपैथिक थैराप्युटिक्स ६-५०
१६५५ लोहसर्वस्व हि. टी. २-००
१६५६ वनौषधिदर्शिका २-५०
१६५७ वनौषधि चन्द्रोदय—१० भाग ४०-००
१६५८ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा—घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा. रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति नया सं. १२-००
१६५९ वसवराजीयम्—दो भाग भाषा ८-५०
१६६० वाग्भट विवेचन—प्रियव्रत २०-००
१६६१ वादिखंड [illegible] ३-००
१६६२ विटेमिन्स २-२५
१६६३ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश—हि. टी. २-१०
१६६४ विषविज्ञान—अगदतन्त्र २-००
१६६५ वीरसिंहावलोक—मूलसंस्कृत ४-२०
१६६६ वोपदेवशतक ०-८५
१६६७ वृन्दमाधव—सिद्धयोगकण्ठदत्तकृतसंस्कृत व्या. १०-००
१६६८ वृन्दवैद्यक—(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ८-४०
१६६९ वृषकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा ३-५०
१६७० वैद्यक परिभाषा प्रदीप—भा. टी. बंबई १-८० १-५०
१६७१ वैद्यकीयसुभाषित साहित्य २५-००
१६७२ वैद्यकीय सुभाषितावली—डा. मेहता २-००
१६७३ वैद्यकशब्दनिधि १-००
१६७४ वैद्यजीवन—(लोलिबराज) हिन्दी टीका १-२५
१६७५ वैद्य जीवन—संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई ३-००
१६७६ वैद्यमनोत्सव—हिन्दी (नैनसुख) ०-६०
१६७७ वैद्यरहस्य—(विद्यापति) हिन्दी टीका ६-००
१६७८ वैद्यवल्लभ—हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १-२०
१६७९ वैद्यविनोदसंहिता—शंकरभट्ट ३-९०
१६८० वैद्यचन्द्रोदय १-००
१६८१ वैद्यकलाधर
१६८२ वैद्यमनोरमा धाराकल्प—हिन्दी टीका २-१०
१६८३ वैद्यावतंस भा. टी. १-५०
१६८४ वैद्यसन्मित्र २-००
१६८५ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान—युगलकिशोर ५-००
१६८६ व्याधिविज्ञान—डा. आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित छठा संस्करण दो भाग २०-००
१६८७ व्रणशोथविमर्श ३-००
१६८८ व्रणोपचारपद्धति ०-५०
१६८९ वृक्षविज्ञान चिकित्सा २-२५
१६९० शरीरप्रदीपिका—डा. मुकुन्दस्वरूप ५-५०
१६९१ शरभेन्द्र वैद्यरत्नावली १०-६२
१६९२ शरीरपुष्टिविधान ०-७०
१६९३ शहतूत के गुण उपयोग ०-५०
१६९४ शर्बत विज्ञान २-५०
१६९५ शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा ७-००
१६९६ शल्य प्रदीपिका डा. मुकुन्दस्वरूप १५-००
१६९७ शार्ङ्गधरसंहितामूल अंजन निदानसहित गुटका २-००
१६९८ शार्ङ्गधर संहिता—दो सं. व्याख्या १०-००
१६९९ शार्ङ्गधर संहिता—श्यामा हिन्दी टीका ४-००
१७०० शार्ङ्गधर संहिता—भाषा टीका ५-००
१७०१ ,, ,, दुर्गादत्त १०-००
१७०१क शालाक्य तंत्र श्री रमानाथ द्विवेदी ९-००
१७०२ शालिग्रामौषधि शब्दसागर ५-४०
१७०३ शालिहोत्र—संस्कृत भोजविरचित ८-००
१७०४ शिलाजीत विज्ञान ०-७५
१७०५ शिवनाथसागर हिन्दी—डा. शिवनाथ ८-४०
१७०६ शिशुपालन—बलवन्तसिंह १-५०
१७०७ शीतला परिहार ३-००
१७०८ शुभसन्ततियोग प्रकाश—हिन्दी टीका ३-००
१७०९ शुद्ध आयुर्वेद गाईड—श्री अत्रिदेव कृत। आयुर्वेद की प्रैक्टिस करने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ५-००
१७१० संस्कार विधि विमर्श ३-००
१७११ संक्रामक रोग विज्ञान ६-५०

७१२ मज्जा पचक विमर्श ३—००
१७१३ मतरा गुण उपयोग—हिन्दी ०—५०
१७१४ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र—अथवा साधु की चुटकी ५—००
१७१५ सामान्य रोगों की रोकथाम ३—५०
१७१६ सत्यानासी गुणविधान ०—७५
१७१७ सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय १२—००
१७१८ सचित्र इंजेक्शनविज्ञान ८—००
१७१९ सचित्र क्लीनिकल पथालोजी १०—००
१७२० सचित्र नेत्र रोग विज्ञान—डा. शिवदयाल ८—००
१७२१ सरल प्राकृतिक चिकित्सा ३—००
१७२२ सरल शरीर विज्ञान १—५०
१७२३ सालचिकित्सा विज्ञान ३—२५
१७२४ सेब के गुण उपयोग ०—५०
१७२५ सिद्धान्तनिदान दो भाग सस्कृत १४—००
१७२६ सिद्धपरीक्षा पद्धति—प्रथम खण्ड कालेडा बोगला ८—००
१७२७ सिद्धभषज्यसंग्रह—युगलकिशोर गुप्त ८—००
१७२८ सिद्धरसायन—दूसरा १०—००
१७२९ सुश्रुतसंहिता—मूलशास्त्र परिचायक परिशिष्ट १०—००
१७३० सुश्रुतसंहिता—कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा प. लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित १८—००
१७३१ सुश्रुत-सूत्रनिदान—घाणेकर १२—००
१७३२ " " केवल सूत्र ९—००
सामान्य शल्यविज्ञान १२—००
१७३३ सुश्रुतसहिता—(शारीरस्थान) डा. जे. डी. शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्य मत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५—००
१७३४ सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान—डा. घाणेकर १५-००
१७३५ सूचीवेध—राजकुमार २—५०
१७३६ सूचीवेध विज्ञान—आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७—५०
१७३७ सक्षिप्त औषध परिचय १—२५
१७३८ साफ के गुण तथा उपयोग १—२५
१७३९ सौश्रुति—रामनाथ द्विवेदी १०—००
१७४० स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां २—००
१७४१ स्वास्थ्य विवेचन—शिवकुमार ५—००
१७४२ स्वास्थ्य प्रदीपिका २—००
१७४३ स्वास्थ्य और सद्वृत्त २—००
१७४४ स्वाभाविक भोजन ०—७५
१७४५ स्टैथिस्कोपविज्ञान १—३७
१७४६ संक्षिप्त शल्य विज्ञान १२—००
१७४७ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा—जोशी ०—७५
१७४८ स्वप्नदोषविज्ञान—सरल हिन्दी २—००
१७४९ स्वर्णाक्षीरी ०—७५
१७५० स्वस्थवृत्त समुच्चय—राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ७—००
१७५१ स्वास्थ्य रक्षा—ले. श्री हरिदास वैद्य ६—००
१७५२ स्वास्थ्यविज्ञान—अजमेर १—२५
१७५३ स्वास्थ्य संहिता—श्री नानकचन्द हि. २—५०
१७५४ स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ०—७०
१७५५ स्त्री रोग विज्ञान—डा. रमानाथ ३—५०
१७५६ हमारे भोजन की समस्या—रामअवध १—५०
१७५७ हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव १—७५
१७५८ हमारी आंखें—अग्रवाल ४—००
१७५९ हमें क्या खाना चाहिए १—२५
१७६० हल्दी के गुण तथा उपयोग ०—८८
१७६१ हस्त्यायुर्वेद—पाल्काप्य मुनि विरचित ११—००
१७६२ हारीत संहिता—हिन्दी टीका १०—२०
१७६३ होमियो पारिवारिक चिकित्सा ९—००
१७६४ होम्योपैथी चिकित्सा सिद्धान्त ५—००
१७६५ होम्यो पाकेट गाईड १—००
१७६६ होम्यो थाइसिस चिकित्सा ०—७०
१७६७ होम्यो टाइफाइड चिकित्सा ०—७५
१७६८ होम्यो गृहचिकित्सा २—५०
१७६९ होम्योमैटीरिया मेडीका ४—२५
१७७० होम्यो इंजेक्शन चिकित्सा १—७५
१७७१ होमियो भैषज्यलक्षण संग्रह २५—००
१७७२ होम्योचिकित्साविज्ञान ३—५०
१७७३ होम्यो न्यूमोनिया चिकित्सा ०—७५
१७७४ होम्यो भैषज्यसार २—००
१७७५ हिन्दी मैटीरिया मेडिका होमियो केवल दूसरा भाग १—८०
१७७६ हिक्मतप्रकाश ३—६०
१७७७ हितोपदेश वैद्यक ३—६०
१७७८ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा ०—७५
१७७९ हीग के गुण ३—००
१७८० हरीतक्यादिनिघंटु ७—२०
१७८१ त्रिदोष परिज्ञान ३—५०
१७८२ त्रिफला गुण १—००
१७८३ त्रिदोषविज्ञान—उपेन्द्रनाथ ४—००
१७८४ त्रिशति ३—००
१७८५ त्रिदोष संग्रह —धर्मदत्त ३—५०
१७८६ ज्ञानभैषज्यमंजरी ०—७५

★

इनके अतिरिक्त हर प्रकार के संस्कृत हिन्दी ग्रंथ हमारे यहां से मिलते हैं

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० [illegible]) दिल्ली ७

१६२३ रसरत्नसमुच्चय–पं. धर्मानन्द जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००
१६२४ रसराजमहोदधि—सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ९–६०
१६२५ रसादिपरिज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद २–५०
१६२६ रसाध्याय–संस्कृत टीका सहित १–००
१६२७ रसामृत–ले. व यादव जी विक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि रस-योग आदि के ठीक निर्माण मे उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
१६२८ रसायनखंड–नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०–७५
१६२८क रसायन तंत्र ०–३०
१६२९ रसयनसार—लें० श्यामसुन्दराचार्य ८–००
१६३० रसायन और वाजीकरण २–००
१६३१ रसार्णव–नाम रसतन्त्र–सटिप्पण ३–००
१६३२ रसोपनिषत् प्रथम भाग ५–००
१६३३ रसेन्द्रपुराण–पं रामप्रसाद कृत ८–४०
१६३४ रसेन्द्रसारसंग्रह–भाषा टीका ३–००, ७–२०
१६३४क रसेन्द्र सारसंग्रहसं० टी० जीवानन्द ७–००
१६३५ राजनिघंटु संहिता–धन्वन्तरीय निघंटु ९–५०
१६३६ राजवल्लभ निघंटु–हिन्दी टीका ३–००
१६३७ राजयक्ष्मा सी द्वारकानाथ १–००
१६३८ राजमार्तण्ड २–५०
१६३९ राजमृगाङ्क २–६६
१६४० राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह १–५०
१६४१ रीठा गुणविज्ञान ०–८८
१६४२ रोगनामावली कोश— ३–५०
१६४३ रोगनिदान चिकित्सा २–००
१६४४ रोगपरिचय शिवनाथ १५–००
१६४५ रोगनिवारण १५–००
१६४६ रोगों की सरल चिकित्सा–बिट्ठलदास ५–००
१६४७ रोगीरोगविमर्श २–००
१६४८ रोगी की सेवा और पथ्य–डा. सुरेश ३–००
१६४९ रोग परीक्षाविधि–श्री प्रियव्रत ६–००
१६५० रोगी मृत्यु विज्ञान–पं. मथुराप्रसाद १–५०
१६५१ रोगीपरीक्षा–शिवनाथ ६–००
१६५२ लहसुन के गुण उपयोग ०–६२
१६५३ लक्ष्मीमोदतरंगिणी १–५०
१६५४ लीडर्स इन होम्योपैथिक थैराप्युटिक्स ६–५०
१६५५ लोहसर्वस्व हि. टी. २–००
१६५६ वनौषधिदर्शिका २–५०
१६५७ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०–००
१६५८ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा. रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति नया सं. १२–००
१६५९ वसवराजीयम्–दो भाग भाषा ८–५०
१६६० वाग्भट विवेचन–प्रियव्रत २०–००
१६६१ वादिखंड [illegible] ३–००
१६६२ विटेमिन्स २–२५
१६६३ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि. टी. २–१०
१६६४ विषविज्ञान–अगदतन्त्र २–००
१६६५ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ४–२०
१६६६ वोपदेवशतक ०–८५
१६६७ वृन्दमाधव–सिद्धयोगकण्ठदत्तकृतसंस्कृत व्या. १०–००
१६६८ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ८–४०
१६६९ वृषकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा ३–५०
१६७० वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा. टी. बंबई १–८० १–५०
१६७१ वैद्यकीयसुभाषित साहित्य २५–००
१६७२ वैद्यकीय सुभाषितावली–डा. मेहता २–००
१६७३ वैद्यकशब्दनिधि १–००
१६७४ वैद्यजीवन–(लोलिबराज) हिन्दी टीका १–२५
१६७५ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई ३–००
१६७६ वैद्यमनोत्सव–हिन्दी (नैनसुख) ०–६०
१६७७ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ६–००
१६७८ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–२०
१६७९ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट्ट ३–९०
१६८० वैद्यचन्द्रोदय १–००
१६८१ वैद्यकलाधर
१६८२ वैद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका २–१०
१६८३ वैद्यावतंस भा. टी. १–५०
१६८४ वैद्यसन्मित्र २–००
१६८५ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ५–००
१६८६ व्याधिविज्ञान–डा. आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित छठा संस्करण दो भाग २०–००
१६८७ व्रणशोथविमर्श ३–००
१६८८ व्रणोपचारपद्धति ०–५०
१६८९ वृक्षविज्ञान चिकित्सा २–२५
१६९० शरीरप्रदीपिका:–डा. मुकुन्दस्वरूप ५–५०
१६९१ शरभेन्द्र वैद्यरत्नावली १०–६२
१६९२ शरीरपुष्टिविधान ०–७०
१६९३ शहतूत के गुण उपयोग ०–५०
१६९४ शर्बत विज्ञान २–५०
१६९५ शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा १०–००
१६९६ शल्य प्रदीपिका डा. मुकुन्दस्वरूप १५–००
१६९७ शार्ङ्गधरसंहितामूल अंजन निदानसहित गुटका २–००
१६९८ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं. व्याख्या १०–००
१६९९ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
१७०० शार्ङ्गधर संहिता–भाषा टीका ५–००
१७०१ ,, ,, दुर्गादत्त १०–००
१७०१क शालाक्य तंत्र श्री रमानाथ द्विवेदी ९–००
१७०२ शालिग्रामोषधि शब्दसागर ५–४०
१७०३ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
१७०४ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
१७०५ शिवनाथसागर हिन्दी–डा. शिवनाथ ८–४०
१७०६ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–५०
१७०७ शीतला परिहार ३–००
१७०८ शुभसन्ततियोग प्रकाश–हिन्दी टीका ३–००
१७०९ शुद्ध आयुर्वेद गाईड–श्री अत्रिदेव कृत। आयुर्वेद की प्रैक्टिस करने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ५–००
१७१० संस्कार विधि विमर्श ३–००
१७११ संक्रामक रोग विज्ञान ६–५०

१७१२ मज्जा पचक विमर्श ३-००
१७१३ मतरा गुण उपयोग—हिन्दी ०-५०
१७१४ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र—अथवा साधु की चुटकी ५-००
१७१५ सामान्य रोगों की रोकथाम ३-५०
१७१६ सत्यानासी गुणविधान ०-७५
१७१७ सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय १२-००
१७१८ सचित्र इंजेक्शनविज्ञान ८-००
१७१९ सचित्र क्लीनिकल पथालोजी १०-००
१७२० सचित्र नेत्र रोग विज्ञान—डा. शिवदयाल ८-००
१७२१ सरल प्राकृतिक चिकित्सा ३-००
१७२२ सरल शरीर विज्ञान १-५०
१७२३ सरलचिकित्सा विज्ञान ३-२५
१७२४ सेब के गुण उपयोग ०-५०
१७२५ सिद्धान्तनिदान दो भाग संस्कृत १४-००
१७२६ सिद्धपरीक्षा पद्धति—प्रथम खण्ड कालेडा बोगला ८-००
१७२७ सिद्धभैषज्यसंग्रह—युगलकिशोर गुप्त ८-००
१७२८ सिद्धरसायन—दूसरा १०-००
१७२९ सुश्रुतसंहिता—मूलशास्त्र परिचायक परिशिष्ट १०-००
१७३० सुश्रुतसंहिता—कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं. लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित १८-००
१७३१ सुश्रुत-सूत्रनिदान—घाणेकर १२-००
१७३२ ″ ″ केवल सूत्र ९-००
सामान्य शल्यविज्ञान १२-००
१७३३ सुश्रुतसंहिता—(शारीरस्थान) डा. जे. डी. शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्य मत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५-००
१७३४ सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान—डा. घाणेकर १५-००
१७३५ सूचीवेध—राजकुमार २-५०
१७३६ सूचीवेध विज्ञान—आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७-५०
१७३७ संक्षिप्त औषध परिचय १-२५
१७३८ सौंफ के गुण तथा उपयोग १-२५
१७३९ सौश्रुति—रामनाथ द्विवेदी १०-००
१७४० स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां २-००
१७४१ स्वास्थ्य विवेचन—शिवकुमार ५-००
१७४२ स्वास्थ्य प्रदीपिका २-००
१७४३ स्वास्थ्य और सद्वृत्त २-००
१७४४ स्वाभाविक भोजन ०-७५
१७४५ स्टैथिस्कोपविज्ञान १-३७
१७४६ संक्षिप्त शल्य विज्ञान १२-००
१७४७ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा—जोशी ०-७५
१७४८ स्वप्नदोषविज्ञान—सरल हिन्दी २-००
१७४९ स्वर्णक्षीरी ०-७५
१७५० स्वस्थवृत्त समुच्चय—राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ७-००
१७५१ स्वास्थ्य रक्षा—ले. श्री हरिदास वैद्य ६-००
१७५२ स्वास्थ्यविज्ञान—अजमेर १-२५
१७५३ स्वास्थ्य संहिता—श्री नानकचन्द हिं. २-५०
१७५४ स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ०-७०
१७५५ स्त्री रोग विज्ञान—डा. रमानाथ ३-५०
१७५६ हमारे भोजन की समस्या—रामअवध १-५०
१७५७ हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव १-७५
१७५८ हमारी आंखें—अग्रवाल ४-००
१७५९ हमें क्या खाना चाहिए १-२५
१७६० हल्दी के गुण तथा उपयोग ०-८८
१७६१ हस्त्यायुर्वेद—पालकाप्य मुनि विरचित ११-००
१७६२ हारीत संहिता—हिन्दी टीका १०-२०
१७६३ होमियो पारिवारिक चिकित्सा ९-००
१७६४ होम्योपैथी चिकित्सा सिद्धान्त ५-००
१७६५ होम्यो पाकेट गाईड १-००
१७६६ होम्यो थाइसिस चिकित्सा ०-७०
१७६७ होम्यो टाइफाइड चिकित्सा ०-७५
१७६८ होम्यो गृहचिकित्सा २-५०
१७६९ होम्योमैटीरिया मेडीका ४-२५
१७७० होम्यो इंजेक्शन चिकित्सा १-७५
१७७१ होमियो भैषज्यलक्षण संग्रह २५-००
१७७२ होम्योचिकित्साविज्ञान ३-५०
१७७३ होम्यो न्यूमोनिया चिकित्सा ०-७५
१७७४ होम्यो भैषज्यसार २-००
१७७५ हिन्दी मैटीरिया मेडिका होमियो केवल दूसरा भाग १-८०
१७७६ हिक्मतप्रकाश ३-६०
१७७७ हितोपदेश वैद्यक ३-६०
१७७८ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा ०-७५
१७७९ हींग के गुण ३-००
१७८० हरीतक्यादिनिघंटु ७-२०
१७८१ त्रिदोष परिज्ञान ३-५०
१७८२ त्रिफला गुण १-००
१७८३ त्रिदोषविज्ञान—उपेन्द्रनाथ ४-००
१७८४ त्रिशति ३-००
१७८५ त्रिदोष संग्रह —धर्मदत्त ३-५०
१७८६ ज्ञानभैषज्यमंजरी ०-७५

★

इनके अतिरिक्त हर प्रकार के संस्कृत हिन्दी ग्रंथ हमारे यहां से मिलते हैं

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० [illegible]) दिल्ली ७

पुस्तकें व्ही.पी.पी.द्वारा मंगाइये

हस्त रेखा विज्ञान की पुस्तकें वी॰पी॰पी॰द्वारा मंगाइये

आपका हाथ : अंगूठा, उंगली, नाखून, हथेली तथा हाथ की सम्पूर्ण बनावट के आधार पर स्त्री-पुरुषों के चरित्र एवं स्वभाव का ज्ञान कराने वाली सैकड़ों चित्रों से युक्त अनुपम सजिल्द पुस्तक मू॰ १०॥) रु॰।

जीवन रेखा (आयु रेखा) आपकी आयु कितनी है, आप जीवन में कब-कब बीमार पड़ेंगे, आकस्मिक दुर्घटना, अपघात, मृत्यु, जीवन, स्वास्थ्य आपकी मृत्यु आपकी पत्नी से पहले होगी या बाद में आदि प्रत्येक जानकारी इस सचित्र पुस्तक से प्राप्त करें। मू॰ ७॥)

मस्तक रेखा (विद्या रेखा) हथेली पर पाई जाने वाली मस्तक रेखा द्वारा विद्या-बुद्धि, व्यवसाय योग्यता आदि विषयों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। पुस्तक में सैकड़ों चित्र देकर विषय को विस्तार पूर्वक समझाया है। मू॰ ७॥) साढ़े सात रुपया।

भाग्य रेखा (धन रेखा) आप धनी होंगे या निर्धन, कितने वर्ष की आयु में आपको किन्न २ साधनों से कितना धन प्राप्त होगा, जमीन में गड़ा हुआ, सट्टे-लॉटरी आदि के द्वारा अचानक बहुत धन प्राप्त कर लेना, आपके पास में पैसा है या नहीं इसे जानने के लिए प्रस्तुत पुस्तक पढ़िये, सैकड़ों चित्र मू॰ ७॥)

हृदय रेखा : आपका हृदय कमजोर है या शक्तिशाली आपके शत्रु परास्त होंगे या आप पर छाये रहेंगे, आपको कोई दिल की बीमारी तो नहीं होगी आदि विषयों की जानकारी इस पुस्तक से प्राप्त कीजिये। मू॰ ७॥) साढ़े सात रुपया

सूर्य रेखा (सम्मान यश रेखा) : मान, प्रतिष्ठा, यश, अपयश की प्राप्ति अथवा हानि, दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति और भाग्य को प्रबल बनाने सम्बंधी सब विषयों की जानकारी के लिये इस पुस्तक को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। मू॰ ७॥) साढ़े सात रु.

विवाह रेखा (संतान रेखा सहित) : आपका विवाह होगा या नहीं, कब होगा, कैसे होगा, पत्नी कैसी मिलेगी एक से अधिक विवाह होंगे या नहीं, पत्नी की आयु आप से कम होगी या अधिक इन सब विषयों की जानकारी के लिये इस सचित्र पुस्तक का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। मू॰ ७॥)

स्वास्थ्य रेखा आपका शरीर स्वास्थ्य रहेगा या बीमार किस आयु में कौन सा रोग होगा। आकस्मिक दुर्घटना तथा जीवन सम्बन्धी अन्य विषयों का ज्ञान कराने वाली अनुपम पुस्तक, सैकड़ों चित्र मू॰ ७॥) रुपये।

प्रभाव रेखायें : स्त्री-पुरुष के किसी भी अंग पर पाये जाने वाले तिल, मस्सा, लहसन तथा अन्य चिह्नों का जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है, इन सब विषयों की जानकारी के लिये इस सचित्र पुस्तक का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। मूल्य साढ़े दस रुपये।

हस्त चिह्न विचार हथेली पर पाये जाने वाले त्रिकोण, क्रास, फल, द्वीप, नक्षत्र आदि के चिह्न मनुष्य के जीवन पर कैसा और कितना प्रभाव डालते हैं, इस विषय को इस पुस्तक में विस्तार पूर्वक समझाया गया है। मूल्य १०॥) साढ़े दस रुपये।

शरीर-लक्षण विज्ञान : मनुष्य के हाथ, पांव, नाक, मुंह, आंख, कान आकृति आदि की बनावट, रंग, बोली, लिखावट, चाल-ढाल, वेषभूषा, रुचियों आदि के द्वारा उसके जीवन का सम्पूर्ण वृत्तान्त बताने वाली अनुपम सचित्र पुस्तक। मूल्य १०॥) साढ़े दस रु॰।

स्त्री-सामुद्रिक : शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट, रूप, आकृति, रंग आदि के द्वारा स्त्री के स्वभाव, चरित्र, रुचि एवं जीवन में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराने वाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। हाथ की रेखाओं के विशिष्ट योगों सहित सैकड़ों चित्र मूल्य १०॥) रु॰

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

पृष्ठ स॰ १२२४, फलित ज्योतिष-विद्या का अपूर्व ग्रंथ कु॰ १६३२

भृगु संहिता फलित-प्रकाश मूल ले॰—महर्षि भृगु

इस एक ही पुस्तक की सहायता से संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डलियों के फलादेश की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कौनसा ग्रह किस राशि तथा किस भाव में बैठकर क्या फल देता है? किस ग्रह की किस भाव पर कौनसी दृष्टि पड़ती है? दो-तीन, चार तथा अधिक ग्रह एक ही भाव में बैठे हों तो उनका क्या फल होता है? आदि विषयों के अतिरिक्त ग्रहों की महादशा का फलादेश तदा-जन्म-कुण्डली देखने सम्बन्धी ऐसी अनेक आवश्यक जानकारियाँ इस पुस्तक में दी गयी हैं जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। इस पुस्तक की सहायता से मामूली हिन्दी पढ़ा लिखा व्यक्ति भी जन्मकुण्डलियों के फलादेश को जान सकता है तथा गलत बनी हुई कुण्डली को ठीक कर सकता है। मू॰ 31/- इकत्तीस रुपया।

रत्न अंगुठी आपका भाग्य

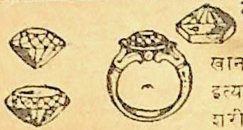

लेखक—राजेश दीक्षित

खानों से निकाले हुए रत्न, नीलम, हीरे, मोती, पुखराज इत्यादि सुन्दर और आकर्षक होने के कारण आपके शरीर की शोभा तो बढ़ाते ही हैं लेकिन साथ-ही-साथ इनमें से ब्रह्माड किरणें (Cosmic Rays) निकलती हैं जो आपको स्वस्थ और उत्साहित रखती है तथा आपके जीवन को सुखी और सौभाग्यशाली बनाती है। हमारी सचित्र पुस्तक में बताया गया है कि किस दिन अथवा किस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति को कौन-सा रत्न अंगूठी में धारण करना चाहिए जिससे वह समृद्धशाली बन सके तथा मन इच्छित फल प्राप्त कर सके। मूल्य 15/- पन्द्रह रुपया, पुस्तक आज ही मंगाकर अपनी मनोकामना सिद्ध करें।

लाट्री गाइड(मू. 8·25)

मेरी या मेरी धर्मपत्नि की या मेरे परिवार में किसी की भी लाट्री कब निकलेगी यह सोच आपको हर समय लगा रहता होगा। आपने किसी भी प्रांत (Province) की लाट्री टिकट क्यों न खरीदा हो, लाट्री आपके नाम निकल सकती है आशा और विश्वास पर दुनिया कायम है। इस पुस्तक में ऐसे-ऐसे उपाय बताए गए हैं जिनसे भगवान् चाहेगा तो भाग्य का पासा पलटकर आप लखपतियों की गिनती में आ सकते